॥ श्री ॥

सुखधारा । सुखधारा ।

शुद्धामृत

अर्थात्

अनेकों रोगों की एक ही दवा ।

आज कल विज्ञापन वाजी की संसार में बड़ी धूम है। जिधर देखो उधर ही बड़े २ लम्बे चौड़े विज्ञापन दृष्टिगोचर होते हैं। जिसे देखिए वही अपनी औषधि को सर्वोपरि बताता हुआ औरों की वस्तुओं को बुरी बतलाता है। ऐसी दशा में पाठकों को बड़ी अड़चल में पड़ना होता है और वे उन विज्ञापन दाताओं की मन हारिणी मीठी २ बातों में फँस कर अपना धन बर्बाद कर बाद में पश्चात्ताप किया करते हैं। पाठक! मैं स्वयं ऐसी विज्ञापन बाजी के फेर में आ चुका हूं। तभी से मैंने इस बात की खोज करनी आरम्भ कर दी, और अन्त में १० वर्ष के परिश्रम के पश्चात् कृत-कार्य हुआ हूं। उसी खोज के फल स्वरूप मैंने बड़ी पवित्रता के साथ नीचे लिखी दवाएँ तैयार की हैं ताकि पाठकों को वास्तविक स्थिति का पता लग सके।

शुद्धामृत

कफ, खांसी, मुंह के छाले, संग्रहणी, पेचिश, पेट का दर्द, अफरा, हैज़ा तथा हाथ पैर के फोड़े फुंसियों, आंख का दुखना, सूजन, कनफेड़ के अनेकों रोगियों पर परीक्षित दवा। मू० १) डाक खर्च ।=) दर्जन का दाम ११) डाकखर्च पृथक्।

नम्र निवेदकः—
मैनेजर,
शुद्ध बुद्ध पूर्ण एण्ड कम्पनी
डा० फुलेरा, जि० जयपुर

Mandal Series No. 4.

OM JAI SHIV

SAPTAKHANDI-JATI-NIRNAYA

Part II

OR

Kshattriya-Vans-Pradeep

Part I

CONTAINS

Final decision of Barber Caste, Their status among Hindu Nation, Complete reply of their pretendance to be a Braghmin: Caste decisions of Kachh, Koery, Murao, Ori, Mali, and Tamboli etc. etc. together with a valuable research of 1100 Sects of Kshattriya Caste etc.

COMPILED BY

Shrotriya Pandit Chhotey Lall Sharma, M. R. A. S., London, General Secretary Hindu Dharm Varna Vyavastha Mandal, Phulera, Member of the Sanskrit Vishva Vidyalaya Ajmere, Late Member of the Executive Committee of Gaur Maha Sabha, Secretary of Ram Lila Committee, Well wisher of Sanadhya Maha-Mandal etc.

AUTHOR OF

RESEARCHES INTO HINDU CASTES AND CREEDS, BRAHMAN-NIRNAYA, RAJKUMAR VANSH NIRNAYA, SAPTAKHANDI-JATI NIRNAYA PART I

WITH ALL UNIVERSAL AUTHORITIES
SUCH AS

Extracts of Hindu Dharm Shastras, Government Records, Census Reports, Quotations from the works of Civilian European and Indian Officers together with, Decisions of Learned Prominent Pandits of Kashi and other places and opinions of prominent news papers as well as Hindu Public etc.

—:-o-:—

First Edition, 2,500 Copies.

DECEMBER 1924.

Price Per Copy Rs. 2—8—0.

मंडल के उद्देश्य।

१ हिन्दू जाति निर्णय पर विचार, मंडल की सम्मत्यानुसार मासिक "व्यवस्था पत्र" निकालना, ३ हिन्दू धर्म के विरुद्ध आक्षेपों का उत्तर, ४ अल्पतम मूल्य पर व धर्मार्थ पुस्तक प्रचार, ५ देश स्थिति व राज्य स्थिति के अनुसार व्यवस्था विचार, ६ हिन्दू जाति वर्ण व्यवस्था कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ पर सम्मतियें, ७ देश देशान्तरों से पूछी हुई जात्युत्पत्ति आदि अन्य धार्मिक विषयों पर व्यवस्था प्रकाशित करना, ८ हिन्दू धर्म ग्रन्थों का संशोधन वेदों का प्रचार व हिन्दू शास्त्रों के प्रक्षिप्त विषयों पर परामर्श।

नियमोपनियम।

१—मंडल में दो सभायें होंगीं एक का नाम "धर्म्म व्यवस्था सभा" और दूसरी का नाम "हिन्दू सारभौम प्रबन्धकर्तृ" सभा होगी और इन दोनों का समुदाय नाम "हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल" फुलेरा—जयपुर होगा।

२—धर्म्म व्यवस्थापक सभा में केवल परीक्षोत्तीर्ण शास्त्रज्ञ ब्राह्मण विद्वान् होंगे अथवा परीक्षोत्तीर्ण न होने की दशा में जिस की संस्कृत विद्या के लिये धर्म व्यवस्था सभा के ४ सदस्य सिफारिश करें।

३—भारत के प्रसिद्ध २ स्थानों के चुनिन्दा विद्वान् धर्म्म व्यवस्थापक सभा में सम्मलित किये जायेंगे।

४—सेवा में पत्र भेज कर समय २ पर सदस्यों की सम्मतियें एकत्रित की जाकर मासिक व्यवस्था पत्र द्वारा प्रकाशित की जाया करेंगी।

५—गूढ़ व कठिन विवादास्पद विषयों के निर्णयार्थ महोत्सव किया जाकर सदस्य एकत्रित किये जावेंगे और बहुसम्मत्यानुसार निर्णय होगा।

६—प्रबन्धकर्तृ सभा में उदारभावों वाले दीर्घदर्शी कोई भी योग्य पुरुष सभासद हो सकेंगे।

७—धर्म व्यवस्था सभा में वह ही विषय व्यवस्थार्थ प्रविष्ट किये जा सकेंगे जिन को प्रबन्धकर्तृ सभा पास करदे परन्तु यह नियम उद्देश्य संख्या ७ का बाधक न होगा।

८—प्रत्येक विषयों को विचारार्थ दोनों सभाओं में महामंत्री प्रविष्ट किया करेंगे तथा महामंत्री को अधिकार होगा कि किसी विषय को किसी कारणविशेष से हानिकारक समझ कर प्रकाशित व प्रविष्ट न करे। प्रबन्धकर्तृ के सभ्यों को अपनी आय का शतांश मंडल को देना होगा और मंडल के धन की स्थिति के अनुसार धर्म व्यवस्था सभा के सदस्यों को भेंट दी जावेगी।

सूचना



सर्व सज्जनों को सूचना दी जाती है कि जो लोग जाति निर्णय सम्बन्ध में मंडल से कुछ पूछना चाहें, व महामंत्री जी को बुलाना चाहें व मंडल कार्य्यालय में स्वयं आकर मिलना चाहें उन्हें इस ग्रन्थ के पृष्ठ ३०४ से ३१४ तक में छपे नियमोपनियम व विज्ञप्ति पर ध्यान देना चाहिये अन्यथा उनके पत्रों का कोई उत्तर नहीं दिया जायगा।

मैनेजर—

हिन्दु धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल

फुलेरा (जयपुर)



भूमिका

विदित हो कि बीसों वर्षों के अतुल परिश्रम, देश देश में भ्रमण व अनुसन्धान करके तथा शास्त्रों के प्रमाणों के साथ साथ Government Records सरकारी कागज़ात के प्रमाणों को संग्रह करके और बड़े बड़े इतिहासवेत्ता विद्वान् व धर्माचार्यों से परामर्श करके अथवा वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर लेकर तथा कानपुर-लखनऊ और काशी तक में शास्त्रार्थ का नोटिस देकर अच्छे प्रकार से छान बीन करके हमने यह ग्रन्थ प्रकाशित किया है जिससे हिन्दु जाति का उपकार होने की सम्भावना है।

हमारे अनुसन्धान में बहुत सी क्षत्रिय जातियों का निर्णय करके हमने विवरण संग्रह किया है पर वह सबका सब इस ग्रन्थ में नहीं दिया जा सका अतः बहुत शीघ्र ही वह विवरण अगले भाग में प्रकाशित करेंगे। इस ग्रन्थ में यद्यपि ग्यारह सौ क्षत्रियों के वंश उपवंशों की सूची हमने दी है फिर भी बहुत से क्षत्रिय वंश सम्भव है छूट गये होंगे अतएव जिन जिन क्षत्रिय जातियों व वंशों के नाम इस सूची से रह गये हों वे वे जातियें तद्विषयक सूचना दें ताकि उस पर पूरा पूरा विचार किया जा सके।

जिन जिन जातियों ने मंडलस्थ वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर मंडल कार्य्यालय को नहीं भेजे हैं वे शीघ्रता करें अन्यथा उनका निर्णय नहीं छापा जा सकेगा।

शास्त्रार्थ कर लें

जिन जिन क्षत्रिय जातियों का निर्णय हमने इस ग्रन्थ में किया है यदि उनके क्षत्रियत्व पर किसी को किसी प्रकार का सन्देह हो वे महाशय हमें लिखकर अपनी शङ्का निवारण कर सकते हैं अथवा शास्त्रार्थ कर सकते हैं और भूल प्रमाणित कर देने पर हम उसे स्वीकार कर लेने को तय्यार हैं जो सज्जन शास्त्रार्थ न करना चाहें और उनके पास हमारे निर्णय के विरुद्ध कोई प्रबल प्रमाण हो तो कृपया वे अपने प्रमाणों को हमें भेज दें जिससे उन पर उचित विचार कर लिया जाय।

काछी, कुइरी, मुराव व तम्बोली तथा ओड़ आदि आदि जातियें जो वर्षों से अपनी गिरी हुई दशा में पड़ी हुई हैं जिन्हें उन के पड़ोसी ही शूद्र कहने का दुसाहस कर बैठते हैं उन्हें अपने को कार्य्य क्षेत्र में आकर दिखला देना चाहिये कि वे सच्ची क्षत्रिय जातियें हैं। यदि आपके जनेऊ न पहिनने व सन्ध्योपासनादि पञ्च

महा यज्ञों से रहित रहने से आपको लोग शूद्र समझते हैं तो उठो, कर्मक्षेत्र में प्रवृत्त हो और कुछ कर दिखलावो कि आप सच्चे वीर हैं।

जनेउ कराने,को

यदि आपको सच्चे गुरू और विद्वान् ब्राह्मण जनेऊ आदि संस्कार कराने को नहीं मिलते हैं अथवा वे आपका जनेऊ कराने में पाप समझते हैं तो आप हमें बुला सकते हैं, लिखने का भाव यह है कि आप अपने कर्म धर्म को पहिचान कर बुरे कर्मों को छोड़ें और अच्छे कर्मों को ग्रहण करें यही हमारा भाव है। हम लम्बी चौड़ी भूमिका लिखने व लचलची आकर्षण करने वाली विशेष वार्तायें लिखकर पाठकों का समय नष्ट नहीं करना चाहते हैं क्योंकि जनता ने हाथों हाथ हमारे अन्य अन्य ग्रन्थों को लेकर हमारा उत्साह बढ़ाया है इससे पाठक भले प्रकार हमसे परिचित हैं अतः उनके प्रति विशेष कहने की आवश्यकता नहीं।

जिन जिन विद्वानों के ग्रन्थ व लेखों के आधार पर हमने यह ग्रन्थ प्रकाशित किया है उनके हम कृतज्ञ हैं सर्वान्तिर्यामी उनको दीर्घायु करे यह ही हमारा आशीर्वाद है।

इस ग्रन्थ को हम सचित्र छपवाना चाहते थे तदर्थ अपने इष्ट मित्र व जाति हितैषी विद्वानों व मंडल के सभ्यों के चित्र हम प्रकाशित करना चाहते थे पर समय के अभाव से व ग्रन्थ प्रकाशन की शीघ्रता से थोड़े से ही चित्र हमारे पास आ सके विशेष नहीं तथापि उनके ही छपवाने का बहुत कुछ उद्योग किया पर कुशवाहा क्षत्रिय महासभा काशी के पहिले पहिले वे भी न छप सकें अतएव हमने अपना फोटू भी नहीं दिया।

प्रेस से हमारे बहुत दूर होने से स्वयं प्रूफ न देखने के कारण ग्रन्थ में कई अशुद्धियें भी रह गई हैं अतः पाठक सुधार कर पढ़ लें इस ग्रन्थ को हम चार खंडों में पूरा करना चाहते थे परन्तु ग्रन्थके बढ़ जाने व प्रकाशन की शीघ्रता के कारण केवल ब्रह्म खंड और क्षत्रिय खंड ही प्रकाशित किया जा सका है हिन्दु धर्म की रक्षा के हेतु इस ग्रन्थ में नाइयोंकी नई नई चाल व उनके वर्णत्व को कसौटी पर लगा कर भी दिखलाया है।

निवेदक—

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा

सप्तखंडी जाति निर्णय

द्वितीय भाग

(नाई वर्ण मीमांसाध्याय)



☞ नोटः—सप्तखंडी जाति निर्णय प्रथमभाग पृष्ठ १८२ से आगे।

इन्दौर काण्ड

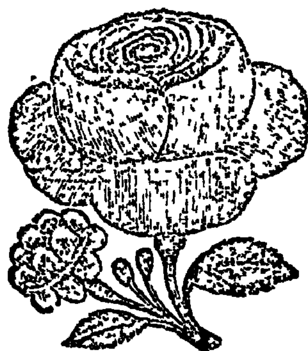
पाठक! आपको ज्ञात होगा कि ब्राह्मण बनने वाले नाई लोग शास्त्रार्थ का नोटिस दे देना तो सहज समझते हैं पर शास्त्रार्थ करने से ऐसे दूर भागते हैं जैसे बच्चे लोग हौआ से दूर भाग जाते हैं। इन्होंने अलीगढ़, कानपुर, मेरठ आदि आदि स्थानों में नोटिसबाजी तो बहुत की पर ये लोग अपने को ब्राह्मण सिद्ध करने से दूर ही रखते हैं और ऐसी चालें चलते रहे कि जिस से हा हू खूब मचे पर शास्त्रार्थ न हो। तदनुसार नाई समुदाय की ओर से श्रीयुत दीपचन्द जी नाई के पुत्र रेवतीप्रसाद जी इन्दौर पहुंचे और तारीख़ १७ मई सन् १९२३ को नाइयों के ब्राह्मणत्व सम्बन्ध में शास्त्रार्थ कर लेने का चेलेन्ज छपवा कर शहर में बटवा दिया अतएव वहां के हिन्दू समुदाय व नाइयों के बीच में शास्त्रार्थ के लिये परस्पर विज्ञापनों द्वारा चर्चा छिड़ी वे सब कतिपय विज्ञापन पत्रादि हमारे पास वहां के सनातनधर्मी ब्राह्मण व अन्य हिन्दू नाई समुदाय ने मुद्रितार्थ व सम्मत्यर्थ भेजे हैं। हमें पूरे विज्ञापन पत्रादि न मिले अतः जो कुछ मिल सके उन्हें ही हिन्दू जाति के उपकारार्थ सारांश रूप में प्रकाशित करते हैं।

फ़र्रुख़ाबाद शास्त्रार्थ में उपरोक्त नाइयोंने कैसी कैसी चालें चलीं? किस हिक़मत से काम लिया? शास्त्रार्थ में अपने को ब्राह्मण सिद्ध

करने से चुपकी कैसे साध ली ? और दुम दबा कर कैसे भागे ? तथा विपक्षी समुदाय से अपने को वर्णसंकर सिद्ध करा कर कैसे चुप होगये ? आदि आदि विवरण जानने जनाने को फर्रुखाबाद शास्त्रार्थ भी इस ही ग्रन्थ में हिन्दु जाति के लाभार्थ दिया गया है तहां दोनों ओर के पत्रों को देखने से सहज में ही निश्चय हो जायगा कि नाई जाति किस वर्ण में है ?

कानपुर के बसन्तलाल नाई ने गजल गुलज़ार नामक एक छोटी सी पुस्तिका छपवाकर उसमें नाई जाति की कैसी असलियत दिखलायी है ? यह पुस्तक भी कानपुर से समालोचनार्थ हमारे पास आयी है जो नाई जाति के वर्ण व असलियत को जानने के लिये काफी है उसके भी कतिपय अंश हमने आगे दिये हैं ।

ग्रन्थकर्त्ता



नराणां नापितो धूर्तः

प्रियनागरिक सज्जनगण !

अब तक आप लोगों ने केवल सुना ही है कि "नराणां नापितो धूर्तः" यानी मनुष्यों में नाइ धूर्त होता है। किन्तु अब प्रत्यक्ष में यह वाक्य चरितार्थ हो रहा है। ध्यान दीजिये कि एक नवकाल नाई ने इन्दौर में आकर यहां के बेचारे भले अन्य नइायों को जो कि शान्ति से अपना धर्म पालन कर रहे थे, किस प्रकार बरगलाया, और किस प्रकार वर्णाश्रम धर्म पालती हुई महाराजा साहब होलकर की प्रजा को क्षोभित की, ये सब बातें आपसे छिपी नहीं।

यद्यपि यह तो निश्चित है कि ये लोग ब्राह्मण तो हो ही नहीं सकते; रहेंगे नाई ही। अतः इनकी कुचेष्टाओं को केवल उपेक्षा की दृष्टि से देखना ही उचित था, तथापि वर्णाश्रम धर्म स्थिर हिन्दू जाति में धर्म ग्लानि का रोक और राष्ट्र के कल्याण, तथा उन बेचारे गरीब नाइयों को भावी दुर्दशा से बचाने के लिये ब्राह्मण मण्डल ने अपनी ओर से नोटिस निकाल कर उन कलियुगी नाइयों को चेतावणी दी! उचित था कि इस पर वे लोग अपनी बेजा हरकतों से बाज आते। परन्तु यहां तो ब्राह्मण बनने की धुन सवार है! यदि ब्राह्मण वर्ण से भी ऊंचा कोई वर्ण होता तो संभव है कि ये उस पर भी कूद पहुंचने की कोशिश करते, चाहे फिर औंधे मुंह ही क्योंना गिरना पड़ता!

अब हम उनकी प्रारंभ से अबतक की कुछ खास खास धूर्तताएं (जो कि पत्रों द्वारा प्रकट कर रहे हैं) आप लोगों के समक्ष प्रकट कर देते हैं:—

(१) तारीख १७।५।२३ को नाइयों ने एक विज्ञापन निकाल कर वर्णाश्रम धर्म पर स्थिर समस्त हिन्दू जाति को सूचित किया कि "वेद और शास्त्रों के आधार पर नाई जाति ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध है। यदि किन्हीं सज्जन को इसमें सन्देह वा निषेध हो तो वे लिखकर दें, जिस पर शास्त्रार्थ का समय आदि निश्चय करदिया जायगा" इत्यादि।

इस विज्ञापन को देख ब्राह्मण मण्डल ने आश्चर्य क्षोभ और दया से प्रेरित हो उन नाइयों की धार्मिक अज्ञानता दूर करने के लिये तारीख २०।५।२३ को लिखित पत्र द्वारा रेवती प्रसाद नाई से पूंछा कि आप नाइयों को ब्राह्मण वर्ण में किस वेद पुराण वा शास्त्र से सिद्ध करते हैं, वह सप्रमाण पत्र द्वारा सूचित करें, ताकि शास्त्रार्थ में सुभीता !

(२) उक्त पत्र का उत्तर रेवती प्रसाद ने कुछ नहीं दिया। लेकिन एक पत्र अन्य सज्जनों की ओर से "हिन्दुओं कब सम्हलोगे ?" शीर्षक निकाला किन्तु उससे भी हमारे प्रश्नों का निराकरण नहीं हुआ, न नाई ब्राह्मण सिद्ध हो सके। यह धूर्तता भी न चल सकी।

(३) पुनः ब्राह्मण मण्डल ने ता० २२–५–२३ को "सत्यं जयति नानृतम्" शीर्षक पत्र द्वारा रेवतीप्रसाद आदि नाइयों को चेलेंज दिया कि खाड़ी के मन्दिर में सवेरे ९ बजे आकर अपने पक्ष को साबित करो। लेकिन इस पत्र का भी कोई उत्तर उन्होंने नहीं दिया।

(४) उसी दिन पुनः एक लिखित पत्र भी उनके पास भेजा गया, जिसमें शास्त्रार्थ के निश्चित करने के लिए प्रतिनिधि भेजने का आदेश किया गया था। इसका उत्तर सायंकाल को ४ बज कर १० मिनट पर मिला कि हमारे दो प्रतिनिधि नियमादि तय करने को आयेंगे, प्रत्युत्तर में ता० २३ को मल्हारगंज में मुर्लीमनोहर के मन्दिर में नियमादि तय करने को प्रतिनिधि भेजने के लिये लिख दिया गया।

(५) ता० २३–५–२३ को नाइयों की तरफ से जगन्नाथ और नारायण नाई साढ़े दस बजे उक्त स्थान पर आये। शास्त्रार्थ के नियम आदि की चर्चा प्रारम्भ हुई। ब्राह्मण मण्डल की तरफ से दोनों प्रतिनिधियों से कहा गया कि "नाइयों को ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध करने के लिए किस वेद पुराण वा शास्त्र ग्रंथ को प्रमाण मानोगे; उनके नाम प्रकट करदो।"

इस पर नाइयों के प्रतिनिधि ने उत्तर दिया कि हमको कुछ नहीं मालूम। हम रेवतीप्रसाद जी से पूछ आयें; इसके लिए कुछ

समय की मुहलत दीजिये। ब्राह्मण मण्डल ने और भी कई प्रश्न किये थे यथा:—

"तुम लोग जाति को जन्म से मानते हो या गुण कर्म से।" इत्यादि। इसका भी वही उत्तर मिला कि रेवतीप्रसाद से पूछ आवें।

एक बात बड़ी मजेदार यह हुई कि नाइयों के प्रतिनिधियों ने स्वयं ब्राह्मण मण्डल से पूछा कि "आप लोग नाई जाति को किस वर्ण में मानते हैं"। इसका स्पष्ट उत्तर दिया गया कि "नाई जाति को प्रारंभ से शूद्र वर्ण में मानते आये और मानते हैं तथा आगे भी मानते रहेंगे।" तुम लोग शीघ्र ही अपने ब्राह्मणतत्व की सिद्धि के लिए प्रमाणिक ग्रंथों के नाम बतलाओ, जैसी कि पहले पत्र में तुम्हारे तरफ़ से दृढ़ता प्रकट की गई है।

हम रेवतीप्रसाद जी से पूछ कर आते हैं, यह कह कर दोनों प्रतिनिधि चले गये, और ऐसे गये कि फिर उन्होंने मुंह तक न दिखाया! उस दिन सायंकाल तक प्रतीक्षा की और दूसरे दिन दोपहर तक प्रतीक्षा करके जब तकादा भेजा तो उत्तर में नाइयों ने कहा कि 'दो घण्टे बाद हम आते हैं।'

(७) शाम को चार बजे के बाद "टांय टांय फिस" और "सफेद झूट" नामक दो नोटिस उनकी तरफ से निकले हुए देखने में आये। हालांकि उन्हें ये नोटिस निकालने के पेश्तर अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार स्वयं उपस्थित हो कर ग्रन्थों के नाम बतलाकर शास्त्रार्थ करने को चाहिये था।

पर बेचारे बतलावें कहां से! इतने पैर कहां जो सामने आते। वे तो केवल भड़कीली बातों और नोटिसों से ही अपना कार्य सिद्ध करना चाहते हैं। यह क्या कम धूर्तता है?

(८) "टांय टांय फिस" शीर्षक नोटिस में जो गलत बातें लिखी गई हैं उसका उत्तर नंबर ५ में आ गया है। दो एक बातें ऐसी हैं जिनका उत्तर देना आवश्यक है बाकी उपेक्षणीय हैं।

(अ) ता० १८–५–२३ के उनके पत्र में अपने स्थान पर बुलाने का जिक्र तक नहीं है।

नम्बर ५ में लिखित बातों के अतिरिक्त ब्राह्मण मण्डल की ओर से स्पष्ट कह दिया गया कि "नाई" शूद्र वर्ण में हैं हमारे प्रमाणिक ग्रन्थ वेद और धर्म शास्त्र हैं।

(९) "सफेद झूंट" शीर्षक पत्र में जो कुछ लिखा गया है, वह बिलकुल झूंठ है! ब्राह्मण मण्डल ने ब्राह्मण बनने वाले नाइयों की अदालत से हार शीर्षक जो पत्र छपवाया था वह "श्री गौतम" नामक मासिक पत्र के वर्ष२ अंक ६ से उद्धृत है। समाचार पत्र एकदम मिथ्या बात को प्रकाशित नहीं कर सकते। इतने पर भी यदि वह मिथ्या होती तो ये लोग उस पर कानूनी कार्रवाई करने से क्यों चूके। उस पत्र ने तो स्पष्ट तथा मजिस्ट्रेट के नाम तारीख आदि तक प्रकाशित कर दिये हैं। *

(१०) पं० अखिलानन्द जी के लिये "सफेद झूट" शीर्षक नोटिस में जो यह लिखा है कि वे शास्त्रार्थ से हट गये यह एकदम साफ झूट है। जैसे कि कोई सूर्य का उदय पूर्व के बदले पश्चिम से सिद्ध करे। ऐसे अगाद विद्वान् की शान में ऐसे शब्दों का प्रयोग करना एकदम धूर्तता है।

अंत में हम सर्वसाधारण के समक्ष उनकी धूर्तता रखने के बाद **नाई रेवतीप्रसाद** और इनके साथियों को नेक सलाह देते हैं कि वे इन झगड़ों को छोड़ कर अपने सनातन मार्ग पर आरूढ़ रहते हुए अपनी और देश की उन्नति में भाग लें।

---

* इसका पूरा विवरण, अदालत के फैसले की पूरी नकल तथा ब्राह्मण बनने की अदालत से हार आदि आदि विस्तृत विवरण तथा इन के छल कपट का खोका आदि आदि सब कुछ "समसंडी जाति निर्णय" प्रथम भाग में प्रकाशित किया जा चुका है वहां देख लेना।

ग्रन्थकर्त्ता

❀ स्पष्ट सारांश तथा अन्तिम पुनः च्यालेन्ज ❀

नाई जाति धर्म शास्त्र से शूद्र वर्णमें आदिसे मानी गई है मानी जा रही है, और शूद्र ही मानी भी जायगी । क्योंकि ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध होने के लिए शास्त्रों में कोई आधार नहीं ही है । ऐसी हालत में बाहर के आडम्बरों से काम लेकर जब तक बना व्यर्थ प्रलाप किया । अन्तिम कसौटी के समय "यः पलायेत सजीवति" को याद कर भाग जाने वाले रेवतीप्रसाद जैसे के झूटे दोषारोपण के अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है ।

एवं हम अपना कर्त्तव्य समझ कर जैसे कि. गीता में लिखा है. "स्वधर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मे भयावह" के अनुसार पुनः सूचित करते हैं कि यदि किसी प्रकार तुम्हारे रेवतीप्रसाद नाई में हिम्मत शेष हो तो वह हमारे मन्त्री समस्त ब्राह्मण मण्डल को नियमादि पुनः तय करने के हेतु से स्वतः अथवा कोई योग्य पठित प्रतिनिधियों का नाम निर्देश कर लेखी पत्र द्वारा अथवा छपे खुले विज्ञापन द्वारा निश्चित कर स्थित करें, ताकि उभय पक्ष में नियमादि तथा शास्त्रार्थ कार्यारंभ हो जाय । और तुम्हारे शूद्रत्व में आये हुए भ्रम को निवारण कर "तुम्हें तुम्हारे धर्म में" तत्पर कर दिया जायगा ।

इसके लिये ता० २९-५-२३ तक निम्नलिखित पतानुसार सूचित करें ।

इतनी अवधि में तुम्हारी तरफ से कोई योग्य उत्तर नहीं आया तो माना जायगा कि स्वतः तुम्हारा भ्रम निवारण हो गया । अन्यथा नोटिसबाजी पर ध्यान न दिया जायगा ।

मन्त्री

पं० गदाधर शास्त्री समस्त ब्राह्मण मण्डल

मुरलीमनोहर जी का मन्दिर मल्हारगंज इन्दौर शहर ।

जैनबन्धु प्रिं० प्रेस इन्दौर ।

॥ श्री ॥

क्रय विक्रय वेलायाम् काचःकाचो मणिर्मणिः



धर्म जिज्ञासु सज्जनों !

जब कसोटी का समय उपस्थित होता है तब उक्त वाक्यानुसार कांच कांच ही रहता है और मणि मणि ही रहता है, आज से प्रायः तीन सौ वर्ष पूर्व ही अपनी दिव्य दृष्टि से महात्मा तुलसीदास जी ने जो युगधर्म कथन किया है,

"वादहिं शूद्र द्विजन सन, हम तुम से कुछ घाटि ?
जानहिं वेद ते विप्रवर, आंखि दिखावहिं डाटि।"*

उसका अनुभव आज आप लोगों को भली प्रकार हो रहा है, इधर कई दिनों की विज्ञापन बाजियों से नाईयों के ब्राह्मणत्व संबन्धी दावे की बातें आप लोगों से अविदित न रही होंगी।

अच्छा होता कि इस प्रकार के पारस्परिक कांटा घसीटी के मार्ग में न पड़ कर नाई जाति भी अन्य मनुष्य जाति की भांति अपटूडेट बनते।

अपनी सामाजिक आर्थिक शारिरिक और मानसिक उन्नति करने में अग्रसर होते हुए इस समय के प्रगति हीन हिन्दुओं की रगों में रक्त संचालन कर सुयश के भागी होते, और यदि ऐसा होता तथा बाबू रेवतीप्रसाद या जिस ही किसी के द्वारा होता तो नाईगण तो क्यां अन्य सभी वर्ण के लोग उसके कार्य कलापों का अभिनन्दन करते, किन्तु ऐसा हो ही किस तरह सक्ता है एवं हमारे नीतिकार सतपुरुषों ने सत्य कहा है जैसे कि—

"मधुना सिञ्चये न्निम्बंनिम्बः किं मधुरायते ?
जाति स्वभाव दोषोऽयं कुटुकत्वं नमुञ्चति"

---

* नानक कथाओं में नाइओं को शूद्र लिखा है वे प्रमाण भी हमने इस ही ग्रन्थ में आगे लिखे हैं।

ग्रन्थकर्त्ता

हमारे त्रिकालज्ञ महर्षियों के त्रिकाल अबाधित् अटल सिद्धांत हैं ये कभी भूंट नहीं हो सकते तदनुसार प्रिय बाबू **रेवती प्रसाद** ने अपने जातीय भोलेभाले बंधुगणों को "नाई ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध हैं" भूठे आडम्बर द्वारा सब को मूंडकर महान् गुरु बनने की आकांक्षा कर स्वार्थान्धरूपी चसमा लगा कर

"घटं भिंद्यात् पटं छिंद्यात् कुर्याद्रासभरोहणं ।
येनकेनप्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत् ॥"

पर दुःख का विषय है कि प्रतिभा का पुरुष योग कर कर्त्तव्य पथ पर बेतहाश उलटी दौड़ दौड़कर दूसरे कर्म पथ पथिकों को भी अपने धक्के से गिरा देने के इच्छुक नाई जाति के स्वयम्भू नेता **बाबू रेवतीप्रसाद** आदि हमारी इस कृपा के पात्र न रहे कारण उपरोक्त वेदधर्म शास्त्रानुकूल वर्ण व्यवस्था के विपरीत कार्यवाहियों को देखकर हमें भी घोर प्रतिवाद करने के लिये नोटिसबाजी की हानिकर दलदल में उतरना पड़ा "विषस्य विष मौषधम्" का सहारा लाचार लेना पड़ा लाचारी इसलिये कि यदि नाई गण अपने आप अपनी मानसिक कल्पनाओं की पूर्ति अपने ही समाज में बैठे २ किया करते तो उसे

"मारग सोई जा कहं जोइ भावा ।
पंडित सोइ जो गाल बजावा ॥

की शिक्षा के अनुसार युग धर्म्म प्रवर्तन समझकर हम भी उधर ध्यान न देते अपना काम करते रहते पर वह तो प्रथम नोटिस में ही साभिमान प्रचारणा की गई **"जिस किसी को हमारे ब्राह्मणत्व का निषेध हो हमसे शास्त्रार्थ करने को तैयार हो"** अब ऐसा नोटिस पढ़ कर यदि "हमारा निषेध है" यह भी हम लोग जाहिर न कर देते तो मानों "मौनं चार्द्ध सम्मतम्" के न्याय से उनके कार्य्य पर हमारी व्यवस्था ही सी हो जाती इन्हीं विचारों से इन्दौरस्थ ब्राह्मण मंडल को अपना निषेध विज्ञापन के रूप में ही सर्व

साधारण के सामने प्रकट कर देने की आवश्यकता हुई और हमने साधिकार भाषा में प्रकट भी भी करा दिया कारण कि गुरू शास्त्रादि की विधि निषेध मय आज्ञायें सदैव ही जोरदार शब्दों में हुआ करती हैं।

हमारी ऐसी································उलझना पड़ा। समझते थें कि हमारे नाई भाई जल्दी मार्ग पर आजायंगे शास्त्रार्थ व जैसे बने हमारे निषेध को समझ लेंगे पर वैसा न होकर अब तो शाह राह छोड़कर कुत्सित कंकरीली गलियों में घूमने लगे हैं हम वार २ प्रयत्न करते हैं कि ये जिज्ञासु की भांति अपने मानसिक तर्कों का समाधान करने के लिये सामने आवें किन्तु वे चौंकते हुए टालम टूला करते जाते हैं. नोटिस बाजियों से उनकी जिज्ञासा कैसे शान्त होजायगी यह हम नहीं जानते हैं इसी हेतु से आज जन साधारण को उद्देश कर यह अन्तिम विज्ञप्ति बांट देते हैं कि हम ब्राह्मणों की भांति नगरस्थ क्षत्री, वैश्य, शूद्र सभी तो हिन्दू जाति के अंग हैं सो हम सभी मिलकर इस समस्या के सुलझाने में सन्नद्ध हों यदि नाई हमारे स्थान पर आने से चौंकते हैं तो हम भी तो उन्हें अपने स्थान पर आने को बाध्य नहीं करते अन्य किसी तटस्थ स्थान पर तटस्थ व्यक्ति की मध्यस्थता में हम सहर्ष मिलने को प्रस्तुत हैं चाहे नगर का कोई सम्भ्रान्त मंडल मध्यस्थ बन जाय अथवा नाई गण पत्र द्वारा स्वतः निश्चय कर लें नोटिस बाजी न तो शास्त्रार्थ है और न हृदय में उठी हुई शंकाओं के समाधान का साधन इससे व्यर्थ समय तथा अर्थ क्षय के सिवाय लाभ ही क्या है। एक तो पहिले ही से भारविके

"सहसा विदधीत न क्रियाम विवेकः परमा पदांपदम्
वृणुते हि विमृश्य कारिणं गुण लुब्धाः स्वयमेव संपदः"

के अनुसार नाई भाइयों ने कार्य्यारंभ कर जातिगत तथा समाज गत प्रेम में विद्वेष की होली दहका दी है और यदि अब भी वे तापने ही में आनन्द मानेंगे तो इसके सिवाय वह समाज का क्या हित कर सकेंगे कि **"जिमि हिम उपल कृषी दल गरहीं"**।

जिस अथर्ववेद के मंत्र की दुहाई देकर वे अपना ब्राह्मणत्व सिद्ध कर रहे हैं। ए प्रिय नाइयों! आज अन्धकार का समय नहीं है कि आज इस प्रकार के तुम्हारे मिथ्यालाप पर जनता विश्वास करे, इस मंत्र से तुम्हारी विद्वत्ता की कलई खुल गई है स्मरण रहे जिस समय प्रत्यक्ष शास्त्रार्थ करने का समय उपस्थित होगा ये कपोल कल्पित मनगढ़ंत स्वइच्छा से नाई जाति ब्राह्मण वर्ग में इस मंत्र से सिद्ध है कहना स्वप्नवत होजायगा त्रिकाल में भी रेवतीप्रसाद तथा उनके गुरु आदि भी आजायं तो भी ऐसे झूठ मनगढंत अर्थों की सिद्धी नहीं हो सकती है।

जनता को इस बात पर पूरा ध्यान देना चाहिये कि बाबू रेवती प्रसाद के सम्पूर्ण पुरुषार्थ का "स्थालीपुलाक"—न्याया-नुरूप अर्थात् पकते हुये चांवलों की हंडी में से एक चांवल की परीक्षा का नमूना है जो इस प्रकार विद्वद समाज के सन्मुख अत्यन्त कपोल कल्पित नितान्त झूंठे स्वमनगढंत वेद के मन्त्र का नाम मात्र लेकर पीछा छुड़ाना चाह रहे हैं इस प्रकार पीछा छूटना असंभव है और ऐसे ही श्रीयुत पं० अखिलानंदजी शास्त्री सरीखे प्रगाढ़ विद्वान को भी झूंठा कलंक लगाने से नहीं चूके कारण झूंटे आडम्बर की जैसी यहां रचना की है उसी प्रकार वहां भी करना प्रत्यक्ष सिद्ध होता है। यह तो इसी प्रकार की कहावत सिद्ध होती है "मुखमस्तीति वक्तव्यं दस हस्ता हरितकी" अर्थात् मुख अपना है इस लिये दस हाथ की लम्बी हरड होती है वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हैं और इनके शूद्रत्व के व्यवहारवाद में तो बौद्ध काल तक के जातक प्रमाण हैं जिनकी रचना को ही ढाई हजार वर्ष के लगभग हुए अस्तु यह सब बातें शास्त्रार्थ के समय की हैं। केवल इतना हां

कहना है कि ता० १०-६-२३ से १२-६-२३ तक यदि शास्त्रार्थ संबंधी वास्तविक चर्चा शुरू न होगई तो

"शूर समर करणी करहिं, कहि न जनावहिं आप ।
विद्यमान रण पाइ रिपु कायर करहिं प्रलाप ॥"

उक्त कथनानुसार कि कायर जन प्रलाप करते हैं। केवल अपने ही लिये भगवत से यह प्रार्थना करते हुवे कि "जेहि राखे रघुवीर सो बचहि काल मुंह" चुप रहेंगे किमधिकम् विज्ञवरेषु ।

मंत्री,

पं गदाधरशास्त्री समस्त ब्राह्मण मंडल सभा
मुरलीमनोहर का मंदिर मल्हारगंज इन्दौर सिटी ।

जैन बन्धु प्रेस इन्दौर

॥ श्री ॥



हे नाई भाइयो सावधान !

तथा

हे धूर्त नक्कालो ! खबरदार !

आपलोग खुद धर्म भ्रष्ट हो अब इन्दौर में आकर हम शान्त प्रकृति स्वधर्मपर आरूढ़ नाइयों को क्यों व्यर्थ में धर्म से गिरा रहे हो । जाओ-अपना २ काम देखो। क्या इन वे शिर पैर की बातों से हमारा भला होजाना समझते हो ? नहीं. हर्गिज नहीं. हम लोग

अपना कल्याण तब कर सक्ते हैं, जबकि-अपने वर्ण धर्म पर आरूढ़ बने रहें अपना असली पन छोड़ ब्राह्मणों की नकल करने से सब तर्फ से पतित होजायेंगे। इसलिये हम लोग नकल करना नहीं चाहते। क्या कोई अपने बाप के सिवा किसी और को बाप कह सक्ता है?

आओ! हम लोग तुम्हारी धूर्तता भरी बातों में न फँसेंगे. गीताजी में कहते हैं ऐसा लिखा है. अपना धर्म विगुण भी अच्छा बनिस्बत दूसरे के. और अपने धर्म पर मरना भी भला परन्तु पराया धर्म भय वाला होता है। इसके अनुसार हम लोग अपने (सेवक) धर्म पर रहते हुये ही देश और जाति का भला कर सक्ते हैं और परमात्मा के प्यारे हो सक्ते हैं इसलिये साफ है कि—जो आदमी हमको हमारे धर्म से हटाना चाहता है वह हमारा मित्र नहीं किन्तु शत्रु है।

प्यारे नाई भाइयों! सावधान

सोचो तो चारों वर्णों में कौन छोटा कौन बड़ा सब कोई अपने अपने धर्म पालते हुये उत्तम फल पाते हम लोग चतुर्थ वर्ण में हैं. अगर अपना धर्म न पालकर एकदम ऊपर को उछाल मारेंगे तो हमारी क्या दशा होगी! ब्राह्मण तो कभी होही नहीं सक्ते. उलटे अपने धर्म से भी गिर जायेंगे। न इधरके रहेंगे न उधर के।

एक बात और है वह यह है कि हमारे कलियुगी नाई भाई रेवतीप्रसाद जी हम लोगों को वेदशास्त्र के प्रमाण [ब्राह्मण बनाने के लिये] दिखा देने को कहते हैं पर आप सोचिये तो क्या उनमें वेद के मन्त्रों के या शास्त्रों के पढ़ने का भी सामर्थ्य या अधिकार है? जो हम को उसको मतलब समझाने को कहते हैं। पुस्तकें विकती हैं चाहे कोई भी हिन्दू या ईसाई मुसलमान मोल ले देख लेता है तो क्या इस से हम उसे धर्म गुरु समझलें? नहीं! कभी नहीं! जैसा धर्म जो पालता आया है उसे वही पालना अच्छा है।

मैंने एक समय एक ईसाई का व्याख्यान सुना था उस में वह कह रहा था कि देखो हिन्दुओं के वेदों में भी 'ईसा मसीह' का

नाम लिखा है-इसके लिये प्रमाण 'ईशावास्य मिदम्' इसमें 'ईसा' लिखा है बस तुम सब लोग ईसाई होजाओ इत्यादि—

नाई भाइयो! जैसे वहाँ पर वह..........अपना मतलब साधने को कह रहा था कि [असल में मतलब कुच्छ और ही है परिडत लोगों से पूछिये] उसी तरह **नाई रेवतीप्रसाद** भी हम को समझाने आये हैं इन को **आस्तीन का सांप** समझ बहुत जल्द यहां से विदा करदो। इसीमें अपना भला है:—

पूज्यपाद द्विजोंकी सेवा में

अति नम्रता से निवेदन है कि आप लोग यह न समझ लें कि इन्दौर के समस्त नाई धार्मिक क्षेत्र में वागी होगये हैं. नहीं २ असलमें इस की जड़ कलियुगी नाई रेवती प्रसाद है जो आगरे से आया है, उस के बहकाने में पांच सात बे लगाम हमारे नाई भाई आगये बस इसी पर नाइयों के नाम पर काम शुरू कर दिया।

लेकिन इस काम को बुरा और हानिकर समझने वाले नाइयों की संख्या बहुत अधिक है तथा हम लोग कोशिश कर रहे हैं कि जितना जल्द हो वह धर्मद्रोही एवं नाई जाति का घातिक नाई यहां से विदा करदिया जाय। इसलिये आप लोग सब नाइयो को अपराधी न समझ हम लोगों को क्षमा करते हुये जैसे हमेशः कृपादृष्टि रख कर हम लोगों से सेवा लेते रहे तथा लेते हैं वैसी ही लेते रहें।

आप लोगों का—

सूरजमल नाई. **सूरजमल नाई सेखावाटी**

व० इन्दौर निवासी।

नोट

प्यारे भाई भाइयों सोचो सैन सभा का नाम उठाकर ब्राह्मण सभा रक्खा है यह नकल नहीं तो क्या है जनेऊ लेने से ही मोक्ष होता है ऐसा कहीं सिद्ध नहीं है ईश्वर भजन से व उत्तम कर्म करने से मोक्ष होती है यह सर्व सिद्धान्त से सिद्ध है फ० राम २

नोटः—ब्राह्मण बनने वाले नाइयों की ओर से सूरजमल नाई के विरुद्ध जो नोटिस निकला वह हमें न मिल सका किन्तु उसका उत्तर निम्नलिखित हैः—

ग्रन्थकर्त्ता

॥ श्री परमात्मनेनमः ॥



समय की खूबी

कौवे हंस बनने को चले

प्यारे नाई भाइयों आप मुझे चौरासी का चोर लिखते हैं। इस योग्य आपही हैं मैं आप लोगों को चौरासी के आवागमन से मुक्त होने का रास्ता बताता हूँ अर्थात् इन योनियों की दृष्टि चुराकर भगवत प्राप्ति के मार्ग सूचित करता हूँ। आप लिखते हैं—यह नोटिस तुम्हारा लिखा नहीं किसी धूर्त से लिखाया होगा यह नहीं वह सर्वान्तरयामी ईश्वर अल्पज्ञ से भी ऊंचे और महत्व का काम करा सक्ता है. जैसे यह मैंने किसी धर्म की सहायता से आपको सतोपदेश लिखा वैसे आपने भी वह पत्र मुझे किसी धूर्तों की पट्टी में आ लिखवाया है तुममें तो इतनी अकल नहीं।

तुम कहते हो हमारी जाति अविद्या के कारण भूली हुई है सो भी सत्य नहीं हमारे पूर्वज इतने बुद्धिमान् थे अर्थात् सैनभगत धन्नाभगत जिनके काव्य को देख आज के विद्वानों का साहस हटता है आप उनके समान एक भी कर्त्तव्य को नहीं कर सक्ते उन सत्पुरुषों ने ईश्वर भक्ती कर नाम कमाया जिनका सुयश ग्रंथों में मौजूद है इसलिये पूर्वज विद्वान् थे आप मूर्ख हो उन्होंने इस प्रकार ब्राह्मणों का उच्छेदन नहीं किया जिससे उनका सुयश संसार गा रहा है और तुमको सब धिक्कार दे रहे हैं। प्यारे भाइयों नर्क और स्वर्ग के क्या चिन्ह होते हैं. जिनका सुयश संसार गावे वही स्वर्गवासी सत्व गुणी प्राणी है। आप "आधी गादी बैठयो माथा

ऊपर हाथ" यह लिखते हैं सो वेश्यायें पूर्ण गादी पर रहते भी श्रेष्ठ नहीं कहा सक्तीं हमें तो टाट ही मिलता है तथा हमारे पीछे मालिक को भी टाट पर बैठना पड़ता है। तुम दक्षिणा काव्य में लिखते हो उसका खुलासा रूप यह भी मालूम नहीं होता किसने किसको अपना प्रिय पुत्र कहा, तुम यजुर्वेद संहिता के ४० अध्याय के पहिले मंत्र का ब्राह्मणों द्वारा मुझे उपदेशक समझते हो सो नहीं. यह मंत्र मैंने एक ईसाई के व्याख्यान में सुना था इसलिये लिखा के आजकल वेद तो ईसाई भी पढ़ने लगे परन्तु लाभ क्या राज्य आज्ञा से हाकिम के मुख हुकम सोभता है तैसें ईश्वर आज्ञा से ब्राह्मणों के मुख वेदमंत्र सिद्ध है अन्य के नहीं। गंगाजल गटर में गिरने से शुद्ध नहीं रहता, आप लिखते हैं तुम्हें ब्राह्मण वेद न पढ़ावें तो हमारे शर्ण आवो यह कहना गलत है किसी के बुलाये कोई शर्ण नहीं होता आपमें किसी बात की करामात उन ब्राह्मणों से अधिक हो तो हमारा शर्ण होना ठीक है नहीं तो धोबी के गधे घर के न घाट के।

आप स्वतंत्रता जीवन परतंत्रता मृत्यु समझते हैं तो क्या अनेऊ लेने से हमें स्वतंत्रता प्राप्त हो जावेगी तथा इत्यादि दैविक तापसे हमें बचा सकोगे या बिना जाती कर्म किये हमारे जातिय भाइयों का पेट भर सकोगे सो तो हो ही नहीं सकता रा. चौ. 'परवश जीव स्ववस भगवन्ता।' जीव मात्र ही परतंत्र है फिर वृथा बातों से सिर पीटना धूर्तों का काम है। "हान लाभ जीवन मरण जस अपजस विधि हाथ" इसलिये शास्त्रविधि युक्त ईश्वर आज्ञा मानना योग्य है, ऐसें वृथा अभिमान धारण करने से क्या लाभ. हम तो जन्म से शूद्र अर्थात् हमारी परंपरा रजवीर्य योग्य शूद्र है यह नाई जाती दो जाती के मेल से है जाती निर्णय देखो जो आरंभ से संस्कार विरहित हैं वे लोग मध्य में कैसे उच्च जाती के धर्म ग्रहण कर सकेंगे यह नहीं हमें तो सेवा धर्म से ही मुक्ती मिलेगी. आप मुझे घोड़ा पशू लिखते हैं सो मैंने तो मनुष्यत्व ही दिखलाया और जहां तक हो दिखलाउंगा सायद जैसे को वैसे दिखता हो.

मुझे उस बात की शर्म है जो जाती चन्दा का रुप्या भगवान मंदिर या धर्म कार्य के लिये एकत्र किया

गया था सो आज इस अधर्मी की सेवा में लगाते हो जो चवर छत्र महाराजाओं के लिये बनाये हैं सो वे धूर्तों पर किये जांय बड़ी भूल है। क्या हम शर्मा बन अपनी जाती छिपा उन श्रेष्ठ वर्णों के सम्मिलित हो सकेंगे तथा उन ब्राह्मण क्षत्री वैश्य श्रेष्ठ शूद्रों के समान हमारा मान होगा।

भाई हमें अपनी जाति छिपा ब्राह्मण बण किसीका धर्म डुबाना अच्छा नहीं न तो हम उनकी रसोई बना सक्के न पानी पिलासक्के यदि भूलमें हमें यज्ञोपवित देख किसी ने पालागन किया तो आसिर्वाद देना यह भी हमारा धर्म नहीं अगर बलात्कार आपसे करें तो अवस्य नर्क के भागी होंगे कोई भी वर्ण के हमें नाई ही कहेंगे वरन जब चाहे जब निन्दित करेंगे हमारा यह पेशा छूटेगा नहीं। भाइयो ऐसा न करो शर्मा और वर्मा कहलाना मन मोदक बनाना है हमारे मनसें हम राजा नहीं बन सक्के देखो रामराज्य में संबुक नामक शूद्र ने ब्राह्मणों का कर्म आदर किया था जिस अवज्ञा के प्रताप पिता के सामने पुत्र की मृत्यु हुई वो धर्मात्मा नरेश श्री पर-ब्रह्म रामचन्द्रजी ने उचित कार्य का विचार कर उस नास्तिक का वध किया और प्रजा में वह धर्म स्थापित किये जिससें अकाल मृत्यु भय पीड़ा दूर हुई. अब कलिकाल में उन धर्मों की तरफ किसी की दृष्टि न होने से तथा गो ब्राह्मण देव प्रतिष्ठा पित्र कर्म यथार्था न करने से दुख होने लगे जैसे पं. रामेश्वरजी ने अपने परचे में लिखा है पढो.

भाई तुम्हारी बड़ी भूल है जो मुझे चौरासी का चोर बनाते हो सो मैं नहीं आपही हो जो हमारी गरीब जाती को इत्यादी कुमार्ग में लगा चौरासी के भ्रमण में डालते हो।

क्या तुम्हे सोते सिंह को जगाना वाजिब था जो ब्राह्मणों को नोटिस दिया जानते नहीं इन ब्राह्मण तें परमेश्वर हारे आज भी उन का वंस वही है अर्थात् गोत्र साखा प्रवर ऋषिनाम उन्हीं के वंस में है अन्य के नहीं।

पहले आप यह भी तो साबित करो किस ऋषी की औलाद हो और किस सवर्णा स्त्री से तुम्हारी उत्पत्ति है ।

आप उन ब्राह्मणों को जो के अट्ठारा वर्ण के राजा तिन्हें मजाक में ये लिखते हो टांय टाय फिस मूर्खो उसका उत्तर तुम्हारे लिये वही होगा तुम्हें उन्हें ढोल की पोल लिखना वाजिव नहीं था धिक्कार है स्वामी का हास्य कितनी बडी निमक हरामी है सफेद झूठ यह क्या शास्त्रार्थ है यह भी नहीं । ऐसा ही स्वामी अखिलानंदजी की भंगी वाली चिट्ठी का आक्षेप लगाके वो भंगी रेवतीदास का जोड़ीदार है ।

तुम्हारी इतनी भी बातें सुन उन्ह वर्णाश्रमी राजा महाराजा सेठ साहूकार भले मानषों की खामोश है जो कुछ न कहे खेल देखते हैं क्योंकि-'क्षमा बड़न को होत है छोटे को उतपात' अगर अब अपनी रक्षा चाहो तो उन ऋषिकुल ब्राह्मणों के शर्ण हो माफी लो नहीं तो

ब्रह्म सताये तीन गये धर्म लक्ष्मी वंस ।
ना मानो तो देखलो रावण कौरव कंस ॥

भाइयों मुझे जिनोंने चोर लिखा है वे खुद चोर हैं जो सिर मुड़ाया है और साधुवों के हक का पैसा इस अधर्मी की चाल में खर्च कर रहे हैं ।

और दो तो चमार से भी अधिक हैं जो मारवाडा साथ की और ढुडाडा साथ की जीते धणी की औरतों को वहका कर लेगये हैं वे दोनों चोरासी से बाहर हैं मैं विनती करता हूं कि निष्कपट जाति भाइयों से प्रार्थना है कि अपना धर्मादे का पैसा जिस निमित्त का है उसी निमित्त में लगावें,ये सिर मुंडवाकर सब पैसा खा रहे हैं और हंसी करा रहे हैं इस पर जाति माता ने विचार करना चाहिये ।

सूचनाः—प्रिय नाई भाइयों जो तुमने छिप छिप कर जनेऊ ली है । क्या ! त्रिकाल में भी तुम ब्राह्मण हो सक्ते हो कदापि नहीं आदि से जो तुम्हारे गुरू ब्राह्मण चले आ रहें हैं वो ब्राह्मण ब्राह्मण ही रहेंगे और आप लोग आज से महाब्राह्मण

(काद्या ब्राह्मण) होगये इसमें सन्देह नहीं रहा और जनता के सामने तुम्हारा नवीन क्रम विख्यात होने के हेतु से ही यह जाहिर किया है।

तुम्हारे "उपसंहार" वाले नोटिस में झूट लिखते शर्म नहीं आती लिखा है कि "ब्राह्मण शास्त्रार्थ के लिये समक्ष नहीं आये" ब्राह्मणों के हर एक नोटिस से सिद्ध है कि तुम्हें च्यालेंज देते आ रहे हैं और तुम शास्त्रार्थ के समय उपस्थित नहीं हुए और बाहने के रूप में शास्त्रार्थ के वास्ते नहीं आना भी तुम्हारे नोटिसों से सिद्ध है। **ऐ धूर्त रेवतीप्रसाद तथा उनके अनुयाइयो** याद रक्खो ऐसी धूर्तता से त्रिकाल में भी काम न चलेगा काम प्रत्यक्ष आकर कुछ शास्त्रार्थ करके दिखावोगे ऐसे झूठे नोटिस बाजियों से शास्त्रार्थ विजय प्राप्त नहीं होसक्ती। अब भी तुममें यदि शेष हिम्मत हो तो ब्राह्मणों के ता ६। ६। २३ के "क्रय विक्रय वेलायाम् काचःकाचो मणिर्मणि" वाले नोटिस से निरपेक्षस्थल अनुसार बिना किसी प्रकार का बहाना लिये उनके समक्ष में आजावें।

ढाकके तीन पात वाला नोटिस निकाला ए धूर्तो शर्म नहीं आई धिक्कार है अपने स्वामी ब्राह्मणों ने काचः काचो मणिर्मणी, वाले नोटिस में स्पष्ट लिख दिया है कि निरपेक्ष स्थल में हम आप मिल कर नियमानुकूल शास्त्रार्थ की चर्चा शुरू कर दी जाय धूर्तो तुमने फिर टालम टोल करने के वास्ते ही स्वतः अपने कालिका प्रसाद नाई के ही अड्डे में बुलाकर धोका दे रहे हो ए धूर्तो कोई निर्पेक्ष स्थल ही देखते इन लक्षणों से सबको साफ जाहिर होगया है कि विना शास्त्रार्थ करे ही भागजाने वाले हो यदि असल के औलाद होगे तो शास्त्रार्थ करके ही जाओगे (ए नकालो भागना मत)

आप लोग सूरज पर धूल डालने का भले ही प्रयत्न करें परंतु वह धूल सूरज तक कभी नहीं पहुंच सक्ती वरन आप लोगों के सर आंखों को ही खराब करती रहेगी॥

प्रकाशकः-सूरजमल* नाई राम २

मुद्रक—श्री सरस्वती विलास प्रेस इन्दौर, सिटी

---

* आप जैपुर राज्यान्तर्गत शेखावाटी प्रान्त के एक योग्य पुरुष हैं साहसी तथा धर्मात्मा हैं कई नाइयों ने आपकी हम से विशेष प्रशंसा की है अतः उन के प्रति हमारा भी आशीर्वाद है। ग्रन्थकर्ता।

॥ हरिःॐतत्सत् ॥

यतोधर्मस्ततो जय

चातुर्वर्ण्यं मयासृष्टं गुण कर्म विभागशः ।
तस्य कर्तार मपिनां विद्धकर्तार मव्ययम् ॥
अविद्वान् द्विजश्रेष्ठा न शूद्रो वेदपाठिता ।
अदुग्धा पूज्यते धेनु घट दुग्धं न गर्धभी ॥

रामायण चौ०—पूजिये विप्र शील गुण हीना ।
शूद्र न पूजिये वेद प्रवीना ॥

भागवत—अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मण मामकीतन्

हाल मु० खेडापती छंद

ऐ सनातन भाइयो अब सोरहे किस नींद में ।
धर्म जो था वह तुम्हारा सुक्खदाता हिन्द में ॥
चुराते हैं नास्ति दिन दिन जागते कैसे नहीं ।
मूढ़ता की वह निसा को त्यागते कैसे नहीं ॥
आयु बल, यश, सन्तती और सम्पती का बन्धु जो ।
था प्रकाशक हिन्द का वह पूर्ण प्यारा इन्दु जो ॥
सिद्धि सब अनुकूल थी जिस धर्म के परताप से ।
अक्षेप लख सो सिथिल भाजन नास्तिकों की ताप से ॥
वर्ण आश्रम जाति के जो धर्म स्मृति अनुसार थे ।
बेकार हो रहे हैं सभी इस दुष्टता व्यवहार से ॥
विप्र मुख, क्षत्री भुजा, उर वैश्य हैं भगवान् के ।
शूद्रपद सो सीश चढ़ने चहैं वश अग्यान के ॥

वर्णशंकर जाति के जो नाइ जग के दास हैं।
अपसोस हैं ब्राह्मण वर्ण जो रोम सत्रू खास हैं॥
धोते हैं धोती आपकी तन तेल मर्द लगावते।
पैसा निछावर लेत हैं भोजन भी दें सो पावते॥
नारी जिन्हों की मांडती पग भांडती मिहमान को।
प्रसूती मः सेवकाई कृत्य जाहिर जान को॥
मजालिस मः देय दर्पण मसालची हो ये फिरें।
धूर्त के उपदेश क्या सों द्विजों की सरवर करें॥
पांव की चप्पी करें लगवांयँगे क्या पांय सो।
कहो सज्जन गधी भी क्या श्रेष्ठ होगी गाय सों॥
गंड्यान का नक्षत्र अंतिम रेवतीप्रसाद है।
धिक्कार (शर्मा) हो फिरे जो जन्म से द्विज दास है॥
त्याग अपने धर्म को जो धर्मद्विज का चाहता।
क्या शुक्रत में फर्क है कि कहे किसी के साहता॥
शंबूक नामाक सूद्र के पढ़ चरित्रों को देखलो।
रामायण मह नास्तिस्थिति के परिचय का लेखलो॥
श्वपच और किरात कोलही नीच जन संन्यास ले।
उपदेशी हो फिरने लगे यमराज की कर पास ले॥
भृष्ट जाति निरादर लख भृष्ट सब जनता करें।
महत्वता के हरण हेत द्रोह बुद्धी चित धरें॥
अर्थका आनर्थ कर समझांय झूठे आप को।
देव मूर्ति तीर्थ नींदे पिण्ड ना दें बाप को॥
विगाड़ा इन दुष्टो ने वह मजा सब संसार का।
निज पिण्ड पोषण के लिये पथ तजा पूर्वाचार का॥
अहं ब्रह्म विवाद कह वह प्रेम पूरण खोदिया।
इष्ट से प्रीती छुड़ा कर धर्म मार्ग डुबो दिया॥

देवता थे मंत्र वश सो तन्त्र की शक्ती गई ।
रोग अघ दुष्काल चिन्ता व्यथा व्याधा छा गई ॥
प्लेग हैजा एन्फ्लयुन्जा रोग नये इस पाप से ।
प्रगट भै द्विज देव निन्दा पितृ के अनुताप से ॥
कटने लगी यहां धेनु जब से मन्त्र की सक्ती गई ।
सुक्ख था कुच्छ धर्मद्वारा ताहे यह आपत भई ।
अब देश की हालत सुधारा चाहो यदि जो भाइयों ।
वेद श्रुति अनुसार पूजो देव ब्राह्मण गाइयों ॥
यज्ञ तप वृत वृद्धी हेतू दान सह सनमान दो ।
पूज्य ऋषि कुल ब्राह्मणों की सहायता दिल ध्यान दो ॥
जबलो नहीं वह धर्म पहला सुक्ख भी तबलों नहीं ।
दुक्ख का निज मूल कारण सम्पदा असुरी भई ॥
अगर जो निज वंश के हो सनातन के बालका ।
स्वधर्म रक्षा कीजिये सब त्याग मत भ्रम जालका ॥
दुष्ट नीति कुरीतियां ये त्यागदो दिल जान से ।
रामेश्वर कहे धर्म रक्षा करो सास्त्र प्रमाण से ॥

लेखकः—पं० रामेश्वरप्रसाद
मु० गहाल तहसील हरदा ।

श्री सरस्वती विलास प्रेस इन्दौर ।

ॐ नमः शिवाय

ढोल की पोल !



आज एक नोटिस समस्त ब्राह्मण मण्डल के मन्त्री की ओर से निकला है जिसका हैडिंग "नराणां नापितो धूर्तः" है। यह कोई आप्त वचन नहीं किसी ऐसे गंजेडी भंगेडी को वकवाद है जिसने कि निम्नलिखित श्लोक की रचना की—

सारखा पारखा खण्डा गौडा गूजर संज्ञकाः।
पंच विप्रा न पूज्यन्ते वाचस्पति समा यदि ॥

ब्राह्मण निर्णय श्री० पं० छोटेलाल जी शर्म्मा महामन्त्री
हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल फुलेरा कृत

अर्थात् सारस्वत, पारीख, खंडेलवाल, गौड़ और गूजरगौड़ ये ब्राह्मण यदि बृहस्पति के समान भी हों तो अपूज्य हैं।

भगवान् की ....फूटने वाला है।

हम सर्व सज्जनों को सूचित कर देना चाहते हैं कि वेद में क्षौर कर्म को ब्राह्मण कर्म वतलाया है।देखो अथर्व वेद काण्ड ६ सू० ६८ मन्त्र ३) इसलिये नायी ब्राह्मण हैं † और नायी लोग क्षौर कर्म और यजमानी (याजन) जो कि ब्राह्मण कर्म हैं करते हुए हीं जन समुदाय का हित साधन करते रहना चाहते हैं। नायियों के ब्राह्मण कहलाने तथा जनेऊ धारण करके वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करने से संसार की अथवा नायी ब्राह्मणों की कुछ भी हानि नहीं हो सकती। विद्या पढ़कर नायी ब्राह्मण संसार का अधिक उपकार कर सकेंगे। सनातन धर्म की सब से वड़ी धार्मिक संस्था श्री

† इस का उत्तर सप्तखण्डी जाति निर्णय प्रथम भाग के पृष्ठ १५५ में देखिये तहां श्री भारत धर्म महामंडल काशी की सम्मति भी मिलेगी।

भारत धर्म महामण्डल काशी के उपमन्त्री श्रीयुत गोविंद शास्त्री जी ने अपने पत्र में लिखा है किः—*

"ब्राह्मण हो कर भी वे (नायी) अपना चौर कर्म अवाधित रखना चाहते हैं यह संतोष की बात है। रही बात ब्राह्मण आचार की ब्राह्मण ही अपना धर्म कर्म इस कलि काल में नहीं निवाह सकते तो हज्जाम कैसे निवाहेंगे। यदि इसमें सफल हुए तो हमें संतोष ही होगा।"

और सम्पूर्ण सज्जन विद्वान् पुरुषों के ऐसे ही विचार हैं। उन उपद्रवी पुरुषों का समस्त ब्राह्मण मण्डल के नाम से नायीयों के पवित्र धर्म कार्य में वाधा करना सर्वथा निंदनीय है।

आज के नोटिस में दस नंबर देकर जो बातें लिखी गई हैं उन का उत्तर निम्न प्रकार हैः—

नम्बर १, २, ३, ४ का उत्तर पहिले नोटिस द्वारा दिया जा चुका है, इसलिये उन्हें दुहराने की आवश्यकता नहीं है।

---

* यह बिलकुल मिथ्या है हम तथा पं० धरणीधर जी शास्त्री और पं० विरधीचन्द जी तीनों काशी भारतधर्म महामण्डल में गये तहां श्री स्वामी विवेकानन्द जी आदि २ विद्वान् नाइयों की इस नवीन चाल पर हंसने लगे और उन्होंने कहा "आज कल कलि काल है वे जो चाहें सो कहें पर नाई कभी ब्राह्मण नहीं हो सकते" हमने काशी में विद्वद्परिषद के महामहोपाध्यायादि विद्वज्जन व संस्कृत कालेजों के अनेकों विद्वानों से पूछा तो सबने नाई जाति को वर्णशंकर शूद्र बतलाया।

यह देख कर कि नाई लोग आज कल बहुत उछलते हैं अतः शास्त्रों के अन्वेषण से पता चला कि नाई जाति "वर्णशंकर शूद्र है" तदनुसार हमने अनेकों विद्वानों की सम्मति भी संग्रह की फिर भी इस सिद्धांत पर महोर छाप लगाने के हेतु हमने काशी यात्रा की और काशी की समस्त विद्वजन मंडली के समक्ष हमने अपना उपरोक्त निश्चय रक्खा और सम्पूर्ण विद्वानों की सम्मतियें हमारे निश्चय के पोषक रहीं। इसी तरह हमने लखनऊ में भी शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया परन्तु किसी ने शास्त्रार्थ नहीं किया वरन सब ही ने उपरोक्त सिद्धांत मान लिया।

ग्रन्थकर्त्ता ।

नम्बर ५—ब्राह्मण का सत्य बोलना परमावश्यक धर्म है। परन्तु हमें शोक के साथ कहना पड़ता है कि ब्राह्मणत्व के खुदाई ठेकेदार आज ऐसा असत्य बोल रहे हैं। हमारे प्रतिनिधियों के कई बार पूछने पर भी ब्राह्मण मण्डल के अधिकारियों ने यह न बतलाया कि नाई किस वर्ण में हैं परन्तु नोटिस में उन्होंने इसके सर्वथा विरुद्ध प्रकाशित किया है। ऐसा असत्य देखकर हमें सन्देह होता है कि ब्राह्मण मंडल के अधिकारी जगन्नियन्ता जगदीश्वर की सत्ता को भी स्वीकार करते हैं या नहीं! प्यारे ब्राह्मण भाइयों, जरा ईश्वर से डरो और बे सिर पैर की बातों से जनता को भ्रम में मत डालो। ख़ैर! अब इस नोटिस में ब्राह्मण मंडल ने **नायीयों को शूद्र वर्ण में बतलाया है** जिसकी परीक्षा हम फिर करेंगे।

हमारा निश्चय है कि नायी ब्राह्मण वर्ण में हैं और ब्राह्मण मंडल हमसे उसका समाधान कराना चाहता है। हम ब्राह्मण मंडल की बहियों (उनके मान्य ग्रन्थों) और उन्हीं के सिद्धांतों से नायियों का ब्राह्मणत्व सिद्ध करने को तत्पर हैं। इसलिये हमारे ही यह प्रश्न थे कि ब्राह्मण मण्डल किन किन ग्रन्थों को प्रमाण मानता है? और जाति जन्म से मानता है या गुण कर्म से? परन्तु हमारे प्रतिनिधियों को इन प्रश्नों का कुछ भी उत्तर न देकर उलटे हम पर ही ये प्रश्न करके "उलटा चोर कोतवाल को दंडे" वाली कहावत को चरितार्थ किया है अतएव यदि ब्राह्मण मण्डल शास्त्रार्थ करने के लिये तयार है तो स्पष्ट बतलावे कि वेद, वेदांत उपांग, स्मृति, उपनिषद्, गृह्य-धर्म-सूत्र, पुराण, इतिहास आदि इनको या इनमें से किन किन को प्रमाण मानता है? तथा जाति और वर्ण, जन्म से मानता है या गुण कर्म से?

नंबर ६, ७ और ८ का उत्तर नंबर ५ में मिल चुका है।

नंबर ९—ब्राह्मण मण्डल अपने सफेद झूठ को इस आधार पर सत्य सिद्ध करना चाहता है कि वह श्री गौतम नामक मासिक पत्र से उद्धृत किया गया है तथा उसमें मजिस्ट्रेट के नाम तथा तारीख दिये गये हैं। ऐसी बात लिखकर ब्राह्मण मंडल ने बुद्धिवान् संसार के बीच अपनी हंसी कराई है। समाचार पत्र पढ़ने वाले जानते हैं कि समाचार पत्रों में ऐसी अनेक घटनाएं छपा दी जाती

हैं जिनका पश्चात्ताप, सम्पादकों को पीछे से करना पड़ता है. यदि गौतम का वह लेख सत्य होता तो वह अपने चाल भरे शब्द प्रकाशित न करके अदालत का फैसला ही छाप देता मजिस्ट्रेट के नाम और तारीख देखकर यह विश्वास कर लेना कि मुद्दई या मुद्दालेह हार गया बिलकुल लड़कपन की बात है *

नंबर १०—यह सर्वथा सत्य है कि पं० अखिलानंद दोबार नायियों से शास्त्रार्थ करने से पीछे हट गये। पं० अखिलानंद की प्रगाढ़ विद्वत्ता का पता इसी बात से लग सकता है कि उन्होंने शिवदास भंगी की चिट्ठी का (जो आर्यमित्र में प्रकाशित हुई थी) क्या उत्तर दिया।‡

हम ऊपर कह चुके हैं कि वैदिक आधार पर नायी ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध हैं और यदि ब्राह्मण मंडल शास्त्रार्थ के लिये तैयार है तो हमारे उपर्युक्त दोनों प्रश्नों का उत्तर दे तथा अपनी ओर से हमारे पास भेजने के लिये प्रतिनिधि नियुक्त कर हमें उनकी लिखित सूचना दें जिस पर समय निश्चय करके शास्त्रार्थ के शेष नियम तै कर लिये जावें।

गणपतिलाल,

२६।५।२३ मंत्री श्री नायी ब्राह्मण सभा

(पूर्व श्रीसेन सभा,) इन्दौर.

श्री गजानन प्रिंटिंग वर्क्स इन्दौर।

---

* प्यारे नाई भाइयो! आप ब्राह्मण बनने के लालच में क्यों सूर्य पर धूल फेंकते हैं? और हिंदू जाति को क्यों धोके में डालते हैं? आपके विनोदार्थ व सत्य सिद्धांत की पुष्टि के लिये अदालत के फ़ैसले की पूरी पूरी नकल हम सप्तखण्डी जाति निर्णय प्रथम भाग के पृष्ठ १७३ में प्रकाशित कर चुके हैं, कृपया उसे देखिये कि नाइयों की अदालत से हार हुई है या नहीं? और यह भी उस फ़ैसले में पढ़िये कि रेवतीप्रसाद जी की विद्वत्ता सम्बन्ध में अदालत ने क्या Remark सम्मति दी है? क्या इन्हीं की विद्वत्ता के भरोसे आप लोग ब्राह्मण बनने का प्रयास कर रहे हैं? ग्रन्थकर्त्ता।

‡ हे भगवन्! नाइयों की झूठ को देखने वाले आप ही हैं क्योंकि कहां पं० अखिलानन्द जी की विद्वत्ता और कहां बाबू रेवतीप्रसाद जी नाई की? ग्रन्थकर्त्ता



ब्राह्मण बनने वाले नाइयों
का

दुखड़ा

पाठक वृन्द ! वसन्तलाल नाई सूरजगढ़ निवासी हाल मुकाम कानपुर की छपाई ग़ज़ल गुलज़ार नामक ट्रैक्ट हमारे देखने में आया जिसमें मनघड़न्त बहुत सी बातें लिखकर, नाई जाति को ब्राह्मण बनने का मार्ग दिखलाते हुए, अपने यजमानों की सेवा चाकरी छोड़ देने का उपदेश किया है तथा नाई जाति जो लाखों वर्षों से अपने शूद्रधर्म का पालन कर रही है, उस सुपथ से आप नाई जाति को गिराना चाहते हैं तथा अपने यजमानों पर जिनकी रोटियों से नाई जाति पलती है उन्हीं के कलंक लगाया है। अतएव पुस्तिका के मुख्य मुख्य वाक्य हम यहां उद्धृत करते हैं।

गज़ल ।

मना नीच जाति को, हजामत को करना।
मानै न जल्दी, आहिस्ते आहिस्ते ॥ १ ॥
कर्मों को नीचों को छोड़े चलोगे।
बनो द्विज जाति आहिस्ते आहिस्ते ॥ २ ॥
औरत की पैदा पै निर्भर न रहना।
बनो रोज़गारी आहिस्ते आहिस्ते ॥ ३ ॥
हिम्मत को दिल से न छोड़ो बसन्त।
मदद देंगे ईश्वर आहिस्ते आहिस्ते ॥ ४ ॥

ग़ज़ल गुलज़ार पृ० २

(पहला पद)

समीक्षाः—नाई लोग नीच जातियों की हजामत किया करते हैं और उसके बदले कहीं से पैसे तो कहीं से नाज, कहीं से रोटियां, कहीं से पुराने कपड़े, कहीं से रुपैया धेली और कहीं से कुछ तो कहीं से कुछ मिलता ही रहता है, जिससे उनका जीवन निर्वाह होता रहता है उन्हीं के इस हज़ारों वर्षों के कृत्य से आज कल के ब्राह्मण बनने वाले नाइयों को बुरा मालूम पड़ने लगा है अतः यह लोग चाहते हैं कि इनकी बिरादरी वाले नाई लोग नीच जातियों की हजामत करना छोड़दें, पर बसन्तलाल जी ने यह न सोचा, कि यदि नीच जातियों की हजामत छोड़ भी देंगे तौ खायंगे क्या ? ॥ १ ॥

(दूसरा पद)

नीच कर्म जो करते चले आरहे हो उन्हें छोड़ते चलो और आहिस्ते आहिस्ते ब्राह्मण बन जावो ॥ २ ॥

समीक्षाः—अब हम बसन्तलाल जी से पूछते हैं कि आपकी जाति के रेवतीप्रसाद जी नेवगी व आपकी जाति की सभा जो यह ढिंडोरा पीट रही है कि "नाई जाति ब्राह्मण वर्ण में है" सच है या झूठ ? क्योंकि बनता वह है जो असल में वैसा न हो, इस लिये आप नाई जाति को नीच कर्म छुड़ाकर आहिस्ते आहिस्ते द्विज बनाते हैं और रेवतीप्रसाद जी एक दम, तो कहो पबलिक नाई जाति को क्या माने ? और आप दोनों भाइयों की बातों में फ़र्क़ क्यों ॥ २ ॥

(तीसरा पद)

इसका अर्थ तो सीधा ही है, कि नाइयों की औरतें पैदा करती हैं और नाई लोग औरतों की कमाई खाते हैं और खुद के रोज़गार पर नहीं रहते। इसीलिये बसन्तलाल जी अपने जाति भाइयों को उपदेश करते हैं कि तुम औरतों की कमाई न खाकर अपने आप मेहनत करो और रोज़गारी बनो ।

समीक्षाः—यह नाई जाति के अपमान की वार्ता है। बसन्तलाल जी को अपनी जाति भर के लिए ऐसा नहीं कहना चाहिये

था, क्योंकि नाइयों की वहू बेटियां अपने यजमानों के यहां जो सेवा चाकरी करती हैं यह कोई बुरा काम नहीं है, क्योंकि महनत मज़दूरी करके कमाने में कोई लाज नहीं है, पर दुख है कि वसन्तलाल जी के भाव नाइयों के प्रति अच्छे नहीं हैं फिर प्रश्न यह ही होता है कि नाइनें महनत न करें तो खायं क्या ? क्या वसन्तलाल जी जाति भर का पालन करदेंगे ? फिर आपने लिखा है:—

ग़ज़ल सोहनी

(औरत अपने पति से कहती है)

काम जिजमानी का हमसे अब न पिया होयगा ।
उठ कर फ़जर को सिर नवहाना ये न पिया होयगा ॥१॥
रजस्वला के चौथे दिन आता बुलावा जो पिया ।
सीस और सब तन का धोना ये न पिया होयगा ॥२॥
तेल का करके वहाना रातको बुलवायंगे ।
सेठ जी करने दिल्लगी ये न पिया होयगा ॥३॥
दस बीस रुपये लोभ दें और आवरू को लेयंगे ।
इस क़दर का दुष्ट पेशा ये न पिया होयगा ॥४॥
व्याह गौनों में न हरगिज़ भूर लेने ज़ाऊंगी ।
इस सतीत्व को नष्ट करना यह न पिया होयगा ॥५॥
पहले जो जजमान थे वह धर्म पर क़ायम रहे ।
अब तो जवरन होरहा मुझसे न हरगिज़ होयगा ॥६॥

गज़ल गुलजार पृष्ठ ४

समीक्षा:—हमें शोक है कि वसन्तलाल जी ने अपनी जाति भर को ऐसा अधमतम कर्म करने वाली कैसे समझली ? और समग्र सेठ व यजमानों को अधर्मी व व्यभिचारी कैसे समझ लिया ? क्योंकि इस ग़ज़ल में जो नाइयों के काम लिखे हैं, जैसे रजस्वला को निहलाना, धुलाना तेल व, उटयन लगाना सिर चोटी करना, पैर दाबना और सब तन का धोना आदि आदि ये सब कर्म तो नाइयों की वंशपरम्परा से चले आरहे हैं अब इन्हें छुड़ा कर ही क्या ब्राह्मण बन जावोगे ? और छोड़ने की दशा में आपकी जाति निर्वाह कैसे करेगी ? आपने अपने

यजमानों को भी क्यों कलंक लगाया ? क्या सब ही सेठ व्यभिचारी व नाइनों को दस बीस रुपया देकर उनकी आबरू लेने वाले हैं ? और क्या सब ही नाइनें दस बीस रुपये के लोभ में आकर अपनी आबरू देने वाली हैं कदापि नहीं ! आजकल ! ब्रिटिश गवर्नमैंट के राज में क्या कोई किसी के साथ जबरन कर सक्ता है ? यदि हां तो अदालत से से उसे सजा क्यों नहीं दिलवाई जाती है ? और यदि नाइनों की राजी से कोई उनके साथ कुछ करता है तो "मियां बीवी राज़ी, तो क्या करेगा क़ाज़ी" तब तो यहां ही विवाद की समाप्ति जानिये ।

॥ गज़ल ॥

जाति अपनी की प्रियवर उन्नति बढ़ाये चलो ।
गिरी हालतको अजी अबतो तुम उठाये चलो ॥
सखुन दुनियां के तुम्हें नीच नीच कहते हैं ।
नीच कामों को अजी तुम मन से हटाये चलो ॥
न जाने दो उन्हें नीच कर्म करने को ।
बहू मां बेटी की पैदा से मन हटाये चलो ॥
क्या हम मरद हैं पैदा नहीं कर सकते हैं ।
अपने मन से तुम वो बुज़दिली हटाये चलो ॥
सबसे पहले तो हमें एक काम करना है ।
नीच जाति की हजामत से मन हटाये चलो ॥

समीक्षाः—इससे भी सिद्ध होता है कि नाई जाति को लोग नीच मानते हैं पुनः और देखिये ।

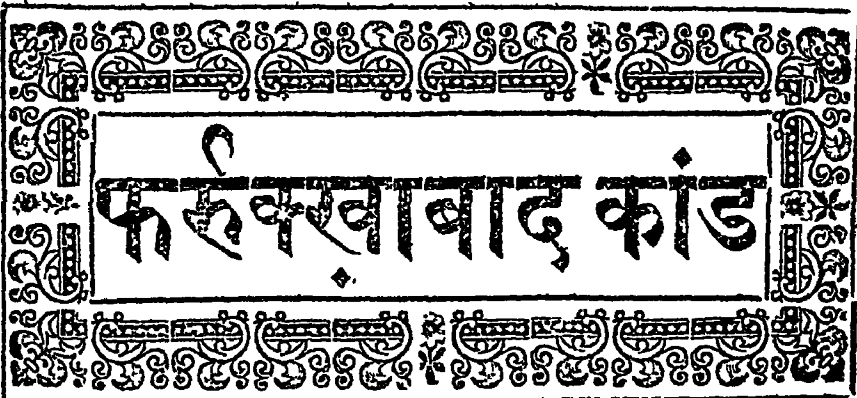
भाइयो ! सब दिल से तुम झूठन उठाना छोड़ दो ।
अपने कुल और धर्म की इज़्ज़त घटाना छोड़ दो ॥
सब तरफ़ दुनियां में यारो चरचा ये ही हो रही ।
ये नीच हैं, ये नीच हैं, इसको कहाना छोड़ दो ॥
औरतें जाने न पावें बेइज़्ज़ती की जगह ।
ये भड़वे हैं ये भड़वे हैं इसको कहाना छोड़ दो ॥

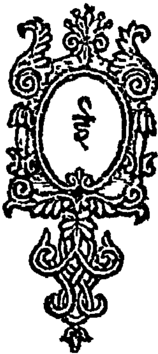
समीक्षाः—पाठक गण! ऐसे ऐसे कर्म करते हुये भी नाई जाति के कुछ लोग ब्राह्मण बनना चाहते हैं केवल इतना ही नहीं और भी देखियेः—

पीने वाले भाइयो मदिरा का पीना छोड़ दो,
आदि...
वेहोश होके नालियों में गिरना बिलकुल छोड़दो।

समीक्षाः—नाई जाति के लोग शराब भी पीते हैं नीच जाति की हजामत भी करते हैं, औरतों व मा, बहू, बेटियों की कमाई भी खाते हैं, पब्लिक इन्हें नीच नीच भी कहती है, इस पर भी बाबू रेवतीप्रसाद जी अपनी नाई जाति को ब्राह्मण बनाना ही चाहते हैं। सो कैसे?







सवी सन् १९१४ में जब श्री सनातन धर्म मंडल का उत्सव फर्रुखाबाद में हुआ था तब, काशी से स्वर्गवासी महामहोपाध्याय श्री शिवकुमार जी शास्त्री व पं० बलभद्र कोटवाल फर्रुखाबाद पधारे थे। उसी उत्सव पर हमभी वहां बुलाये गये थे। तब वहां की सभा के मंत्री पंडित लालमणि जी भट्टाचार्य्य बी० ए० एल० एल० बी वकीलहाईकोर्ट के हस्ताक्षर द्वारा हमने एक विज्ञापनप्रकाशित कराया था कि जाति निर्णय सम्बन्ध में जिन्हें जो कुछ कहना सुनना व पूछना होवे पूछ सके हैं तथा बहुत सी जातियें जो

आजकल ब्राह्मण क्षत्रिय बन रही हैं, वे भी अपने सिद्धांत की पुष्टि में प्रमाण पेश कर सक्ती हैं; तदनुसार उस समय एक नाई हमारे पास आकर नाई जाति के ब्राह्मण वर्णत्व विषय कुछ चरचा करना चाहता था परन्तु शिवकुमार जी इस पर हंसे और कहने लगे कि "अब कलियुग है नीच से नीच जातियें भी ब्राह्मण बनने लगेंगी। भला कहीं नाई भी ब्राह्मण हो सकते हैं कदापि नहीं"।

वर्तमान काल में याने ईसवी सन् १९२१ में, ब्राह्मण बनने वाले नाइयों ने शास्त्रार्थ का चैलेन्ज रूपी एक विज्ञापन छपवाकर प्रत्येक नगर के नाइयों के पास व धार्मिक संस्थाओं के पास भेजा तथा उसी की नकलें भारतवर्ष के मुख्य मुख्य समाचार पत्रों में छपवाने का भी उद्योग किया, तदनुसार भारतमित्र कलकत्ता के अंक नम्बर १७२ तारीख पहिली दिसम्बर १९२१ के पृष्ट चौथे में 'नाइयों का दावा' शीर्षक विज्ञप्ति छपी, उस पर फ़र्रुख़ाबाद के दो चार नाई भी यत्र तत्र डींगे मारने लगे कि 'नाई लोग ब्राह्मण वर्ण में हैं' इस पर सनातन धर्म विद्यालय के श्रद्धेय प० लक्ष्मीनारायण जी से न रहा गया और उन्होंने "नाइयों के दावे की दवा" शीर्षक विज्ञापन भारतमित्र, ब्राह्मण सर्वस्व आदि समाचार पत्रों में छपवा दिया तथा उसकी कई प्रतियें फ़र्रुख़ाबाद शहर में भी मुख्य मुख्य स्थानों पर चिपकवा दीं। यह विज्ञापन क्या था मानो शस्त्रार्थ के चैलेन्ज के उत्तर म चैलेन्ज था, इस पर फ़र्रुख़ाबाद की नाई सभा के मंत्री बाबूराम जी नाई व पं० लक्ष्मीनारायण जी का पत्र व्यवहार चला जो सारांश रूप में आगे प्रकाशित किया जायगा।

नाइयों का दावा।

(भारत मित्र से उद्धृत)

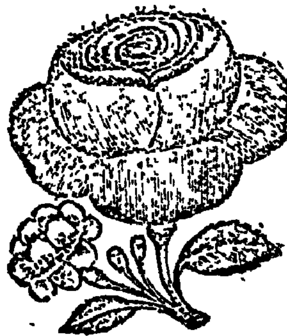
वेद वचनानुसार क्षौर कर्म ब्राह्मण कर्म है। वेद और शास्त्रों से नाई जाति ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध हो चुकी है। अतएव सर्व साधारण को चाहिये कि वे नाइयों को ब्राह्मण मानें और समझें।

यदि किसी को कुछ शंका हो तो "न्यायी वर्ण निर्णय"* नामक पुस्तक मंगाकर अवलोकन करें। फिर भी यदि सन्देह हो तो लिखकर शंका निवारण की जा सकती है। विशेष कर सम्पूर्ण धार्मिक सभाओं, श्री भारत सनातन धर्म महामण्डल आदि को सूचना दी जाती है कि यदि उनको नाई जाति के 'ब्राह्मण' मानने में ननुनच हो तो वे शास्त्र द्वारा निर्णय करलें, जिसके लिये "अखिल भारतवर्षीय नाई जातीय महासम्मेलन" जो आगरे में पौष कृ० १२, १३, १४ संवत् १९७८ वि० तदनुसार २६, २७, २८ दिसम्बर १९२१ ई० सोमवार मंगल, बुधवार को होगा, सर्वोत्तम अवसर है। शास्त्रार्थ के इच्छुकों की सूचना श्री० पं० तुलसीराम शर्म्मा उपप्रधान श्री कुलीन ब्राह्मण महासभा भारत मु० थाराही टोला इटावा यू० पी० के पास १५ दिसम्बर १९२१ तक आ जानी आवश्यक है।‡

---

* न्यायी वर्ण निर्णय का खण्डन व नाइयों का शूद्रत्व मंडन 'सप्तखण्डी जाति निर्णय प्रथम भाग' में छप चुका है तहां देख लेना। ग्रन्थकर्त्ता।

‡ इस विज्ञापन का सारांश सप्तखंडी जाति निर्णय प्रथम भाग में नाई वर्ण मीमांसा प्रकरण के पृष्ठ ४६ की पंक्ती १७ से आगे तथा पृष्ठ ४३ से ४४ में और इस ही ग्रन्थ की भूमिका पृष्ठ ३ के अन्तिम वाक्यों में दिया गया है। तहां का विवरण भी अवश्य पढ़िये। ग्रन्थकर्त्ता



बाबूराम जी नाई और पं० लक्ष्मीनारायण जी का शास्त्रार्थ सम्बन्धी

पत्र व्यवहार



ब सनातन धर्म विद्यालय फ़र्रुखाबाद के पंडित् लक्ष्मीनारायण जी ने नाइयों के शास्त्रार्थ के चैलेञ्ज के उत्तर में "नाइयों के दावे की दवा" शीर्षक विज्ञापन समाचार पत्रों में छपवा कर फ़र्रुखाबाद में बांटा तथा नगर में भी उस की प्रतिलिपियें चिपकवादीं, तब, वहां की नाई सभा के मंत्री बाबूरामजी ने पंडित् जी को लिखाः—

(सब पत्र सारांश स्वरूप ही दिये गये हैं)

नं० १

आपने जो ७ प्रश्न किये हैं उन में ६ प्रश्न तो आप इटावा से निर्णय कर सक्ते हैं, सातवें प्रश्न के उत्तर में निवेदन है कि यदि आप आगरा चलने को इच्छुक हैं तो हमारे साथ कृपा कीजिये खर्च्चे का भार पराजय पक्ष पर होगा।

ह० बाबूराम आर्य्य ता० १८-१२-२१ ।

नं० २

पं० लक्ष्मीनारायण जी का उत्तर

जिन के नाम के अन्त में ही ना लगा है वे उत्तर क्या देंगे ? सिवाय नकार के। अजी आगरा इटावा कहीं की ही सभा से उत्तर दिलाइये, जो प्रश्न किये हैं उन के उत्तर आनुपूर्वी क्रम से दीजिये।

ह० लक्ष्मीनारायण शर्मा मिती पौष कृ० ५ सं० १९७८ ।

नं ३

पं० लक्ष्मीनारायण जी !

श्रीमान् पंडित जी ! यह न्याय विरुद्ध है कि आप तो फर्रुखाबाद में जवाब मांगें और कोई सज्जन लखनऊ, दिल्ली और कानपुर आदि शहरों में जवाब मांगते हैं सभा कहां कहां उत्तर-दाता भेजकर जवाब देगी, इस सुगमता के लिये ता० २६-२७-२८ को आगरे में सभा निश्चित की है, अगर चलें तो चलिए अन्यथा प्रश्न किसी अखबार में छपवा दीजिये उत्तर अवश्य मिलेगा।

ह० बाबूराम आर्य्य फर्रुखाबाद (तारीख कुछ नहीं)

समीक्षकः—जब आप की सभा अनेक नगरों (शास्त्रार्थ करना तो दूर) के पत्रों का पृथक् २ उत्तर देने में ही असमर्थ थी, तो फिर किस बल पर समग्र भारतवर्ष के विद्वानों को तथा सभाओं को शास्त्रार्थ के लिये ललकारा था। द्वितिय, प्रश्नों का उत्तर पत्रों में न दे कर आप पंडित जी को टाल मटूल कर भुलाना चाहते हैं। परन्तु पंडित जी भी सहज ही छोड़ने वाले नहीं !

ग्रन्थकर्त्ता।

नं० ४

बाबूराम जी

मालुम हो कि एक रजिस्टर्ड पत्र * तुलसीराम इटावा के नाम प्रश्न रूप में प्रेषित किया जा चुका है। तथा भारतमित्र, बङ्गवासी, ब्राह्मण सर्वस्व, धर्मोदय आदि पत्रों में प्रकाशित करने को एक एक पत्र रजिस्टर्ड भेजा जा चुका है जिसका कि हमें आज तक उत्तर नहीं मिला। यदि बाबूराम हमारा ख़र्च देने को तय्यार हों तो हमारे सातवें प्रश्न के अनुकूल पूरा पूरा उत्तर देकर रजिस्टर्ड प्रतिज्ञा पत्र लिखें हम आगरा चलने के लिये तय्यार हैं।

ह: लक्ष्मीनारायण शर्म्मा } पौष कृ० ६ सोमवार सं० १६७८
सनातन धर्म विद्यालय फ़र्रुख़ाबाद }

---

* रजिस्टर्ड पत्र नम्बर १३१ ता०, १६-१२-२१ का भेजा हुआ तुलसीराम जी को ता० २१-१२-२१ को पहुँच गया (मार्ग० शु० ६ सं० १६७८ का लिखा हुआ) जिसका उत्तर १५ दिन तक देते ही न बना ! क्योंकि कुछ नाइयों ने अलीगढ़ में देवीप्रसाद नाई से पं० गोपीराम ब्राह्मण पर ताजीरात हिन्द की दफ़ा २६०, तथा ३२४ के अनुसार झूठा दावा करा दिया। इस मुकदमे में

न० ५

श्रीमान् पं० लक्ष्मीनारायण जी प्रणाम *

निवेदन यह है कि मैं कल शाम को ८ बजे आगरा जाने को तय्यार हूं आपने लिखा था पूरा खरचा दोगे सो खुलासा लिख दीजिये कि पूरा खरचा क्या होगा ?

आपका बाबूराम आर्य्य

ता० २३-१२-१९२१

नाइयों की ओर से रेवतीप्रसाद जी भी गवाही देने गये थे। अन्त में सत्य की जय हुई और ब्राह्मण देवता अदालत से बरी हो गये। ऐसी स्थिति में पं० लक्ष्मीनारायण जी को आगरा ले जाने में, सन्देह हो जाना बाबूराम जी के लिए, स्वाभाविक ही था। पं० लक्ष्मीनारायण जी बार बार अपनी रक्षा के सम्बन्ध में रजिस्टर्ड प्रतिज्ञा पत्र चाहते थे, पर नाई लोग ऐसा न करके, आँय शाँय बाँय कह कर टरका देते थे। अन्यथा जिस प्रकार ये लोग खरचा देने को तय्यार हो गये थे उसी प्रकार रक्षा का भार ले लेने में भी क्या आपत्ति थी? यदि यथार्थ में नाइयों को शास्त्रार्थ करना होता, तो वे रक्षा का भार भी अवश्य ले लेते नहीं तो क्या कारण था जो इतनी बड़ी बात को उन्होंने टल्लेबाजी में ही उड़ा दिया। इससे पंडित जी का सन्देह और भी बढ़ गया, जो बढ़ना ही चाहिये था। तब पंडित लक्ष्मीनारायण जी ने आगरे न जाकर फर्रुखाबाद से ही लेख बद्ध शास्त्रार्थ करना आरंभ कर दिया। जो बहुत ही अच्छा रहा! अन्यथा सर्व साधारण पर नाइयों के शास्त्रार्थ से, यों पीछा छुड़ाने तथा अपने आपको ब्राह्मण सिद्ध न कर सकने का रहस्य न प्रगट हो सका होता!

ग्रन्थकर्त्ता

* पाठक! नाई लोग ब्राह्मण तो बनने लगे पर उन्हें पूर्ण रूपेण नहीं आया। आप पंडित जी को बारम्बार अपने पत्रों में प्रणाम् ही प्रणाम् करते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि "असली सो असली और नकली सो नकली"—

ग्रन्थकर्त्ता।

नं० ६

बाबूराम जी !

जब कि आप हमारे ६ प्रश्नों का उत्तर न देकर ७ वें प्रश्न का उत्तर देने चले हैं तो कुल प्रश्नों का उत्तर दें तब इस अन्तिम प्रश्न पर विचार करने का समय आवेगा ।

ह: लक्ष्मीनारायण शर्म्मा
सनातन धर्म विद्यालय फर्रुक्खाबाद
पौष कृ० ६ सं० १९७८

नं० ७

श्रीमान् पं० लक्ष्मीनारायण जी प्रणाम

इसमें फिर आपने उन्हीं सात प्रश्नों का दावा किया तो पहिले क्या आपने धमकी दी थी कि हमारा पूरा खर्चा व हमारी रक्षा का भार तथा हमारे मान करने को सभा तय्यार है ।

पंडित जी हमारा आपका सत्य व्यवहार है यदि आप चलें तो आपका रेल का खर्चा और आपके भोजन का भार मेरे ऊपर है रक्षा का भार गवर्नमेण्ट के ऊपर है ।

ह: बाबूराम आर्य्य ता० २३-१२-१९२१

नं० ८

बाबूराम जी

जब कि आपने हमारे सातवें प्रश्न का उत्तर देना प्रारम्भ कर दिया है तो आपको सातवें प्रश्न के अन्तर्गत जितने प्रश्नाँश हैं उन सब का उत्तर रजिस्टर्ड पत्र द्वारा देना चाहिये । तब आगे विचार चलाया जाय ।

ह: लक्ष्मीनारायण शर्म्मा
पौष कृ० ६ सं० १९७८

(उपरोक्त पत्रों का भावार्थ)

फर्रुखाबाद नाई सभा के मंत्री बाबूराम जी तो 'येनकेन प्रकारेण' (बिना रक्षा का भार लिए ही) पं० लक्ष्मीनारायण जी को आगरे ले जाना चाहते थे पर पंडित जी न गए कारण भारतवर्षीय

कतिपय नाइयों की ओर से पंडित जी को सन्देह बढ़ा हुआ था क्योंकि नाईयों ने पंडित जी की रक्षा का भार लेते हुये रजिस्टर्ड प्रतिज्ञा पत्र नहीं लिखा था । इसीलिये, पंडित जी भी आगरे न जाकर फर्रुखाबाद स्थित हो शास्त्रार्थ करने को सन्नद्ध होगये ।

ग्रन्थकर्ता.

नं० १४

❀ श्री रामचन्द्राय नमः ❀

श्री रेवतीप्रसाद जी !

पौष शु० ५ वि० १९७८ को लिखा हुआ आपका सुमधुराक्षर चुम्बित कृपा पत्र मिला उत्तर में विनम्र निवेदन है—

(सारांश मात्र)

१—जाति में जात्यङ्गीकार वचन को, गुण में गुणाङ्गीकार वचन को आप अवाच्य वचन मानते हैं या वाच्य वचन ?

२—हमारा वक्तव्य है कि प्रकृत विषय में वादी आपकी ओर से 'नापिता ब्राह्मणः' ऐसी प्रतिज्ञा निर्देश का स्वरूप शब्दान्तरेण निर्दिष्ट हो चुका है जैसा कि भारत मित्र में आपकी ओर से छपाया जा चुका है "नाई जाति ब्राह्मण वर्ण में सिद्ध हो चुकी है इत्यादि" इस परः—

३—'नापितानां न ब्राह्मणत्वं' पक्ष को लेकर हम प्रवृत्त हो चुके हैं।

४—आपसे ७ प्रश्न किये थे । जिनका उत्तर अभी तक आपकी ओर से ही नहीं पाया जैसा कि आगे आगे स्पष्ट होगा, प्रत्युत, उत्तर देने के स्थान में पांच प्रश्न आपकी ओर से किये गये थे जिनमें तीन का उत्तर देकर आगे हमने नाइयों के लक्षण व वर्ण विषय पर आपकी ओर से किये गये दो प्रश्नों पर इस तात्पर्य से कि जब आप नाइयों का ब्राह्मणत्व-सिद्ध करने के लिये उद्यत हुये हैं तब हम से उन का वर्ण क्यों पूछा जाता है ? हम इस समय उन के ब्राह्मणत्व निराकरण में प्रवृत्त हुये हैं न कि वर्णत्वादि साधन में ।

यह ही कारण है कि अब भी हम आपके तृतीय चतुर्थ प्रश्न को उठाकर नाइयों के वर्णत्वादि साधन में प्रवृत्त होना नहीं चाहते। जब कि आप ही उनके ब्राह्मण वर्णत्व साधन में प्रवृत्त हो चुके हैं तो यह कार्य्य इस समय आप ही का रहा * हमारा कार्य्य होगा कि आपके दिये हुये साधक प्रमाणों को प्रमाणाभास सिद्ध करें यदि आपने हमसे चलते हुये इस लिखित शास्त्रार्थ में नाइयों को ब्राह्मण सिद्ध कर दिया और हम उसका निराकरण न कर सके तो आपकी विजय निश्चित ही है, अन्यथा आपके पराजय होने पर हम नाईयों के वर्णत्वादि साधन में प्रवृत्त होंगे। आपका उस समय कार्य्य होगा कि हमारे प्रश्न को निराकृत करें। इस लिये हम से पूर्व में किये प्रश्नों का उत्तर आप कर सकते हों तो कीजिये। इन टाल टूल के उत्तरों से कार्य्य नहीं चलेगा जैसा कि

---

* बाबू रेवतीप्रसाद जी को तो ये प्रश्न करने ही नहीं चाहिये थे। क्योंकि रेवतीप्रसाद जी की बनाई—"न्यायी वर्ण निर्णय" नामक पुस्तक ही इन प्रश्नों के उत्तरों के लिये पर्याप्त थी। अर्थात् रेवतीप्रसाद जी स्वरचित उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ १६ में लिख आये हैं किः—

वैश्यायां विप्रतश्चौर्यात् कुम्भकारः स उच्यते।
कुलाल वृत्या जीवेतु नापिता वा भवन्त्यतः॥

देखिये बाबू रेवतीप्रसाद जी की ही बनायी हुई "न्यायी वर्ण निर्णय" पृष्ठ १६, औशन स्मृति श्लोक ३१, तथा "सप्तखंडी जाति निर्णय प्रथम भाग" पृष्ठ ६१ पुनः "न्या० व० नि०" पृष्ठ २० पंक्ति १ से ५ तक, पाराशर स्मृति० अ० ११ श्लोक २१ जा० भा० पृ० १७७, और ध० सं० पृ० २२४ के अनुसारः—

शूद्रकन्या समुत्पन्नो ब्राह्मणेनतुसंस्कृतः।
संस्कृतस्तु भवेद्दासो ह्यसंस्कारैस्तु नापितः।

पुनः रेवतीप्रसाद जी के स्वजाति भाई की बनाई तथा ब्राह्मण बनने वाले नाई समुदाय की मानी हुयी "नायकुल की उत्पत्ति" के पृष्ट ४ में नाई जाति को पुराणाधारानुसार सत्शूद्र लिखी है।

. विस्तृत विवरण जानना हो तो सप्तखंडी जाति निर्णय प्रथम भाग को मंगवा देखिये। मू० १॥) डा० ।-)

आगे प्रकट होगा, हमने तो आपसे यह शास्त्रार्थ इस लिये चलाया है कि जो कुछ भी वर्णावर्णत्व नाइयों को हमारे आपके इस शास्त्रार्थ में सिद्ध हो जावे उसको नेत्र खोल कर आप और आपके भाई मानें और अन्तर नेत्रों से अन्तर में भी देखने लगें * रही आप के शास्त्रीय ज्ञान की बात-उस पर वक्तव्य यह है कि ऐसा लिखने के लिये आप व्यर्थ ही कष्ट क्यों उठाते हैं ? वह तो जैसा भी कुछ आपका शास्त्रीय ज्ञान होगा सो तो नाई के बालों के समान अपने आप ही इस शास्त्रार्थ में सामने आजायगा।

मि० पौष शु० १४ सं० १९७८ विक्रमी

नोट—इस पत्र का शेषांश पंडित लक्ष्मीनारायण जी द्वारा ७ प्रश्न किये गये थे, उनके उत्तर रेवतीप्रसाद जी ने जो कुछ दिये उन पर तर्क वितर्क युक्त अंश था अतः उस तर्क वितर्क को Ready refence के लिये हमने प्रश्नोत्तर प्रकरण में उचित स्थान पर लिखा है तहां देख लेना।

---

* पाठक रेवतीप्रसाद जी के तृतीय व चतुर्थ प्रश्न के उत्तर न देने के उपरोक्त दृढ़ कारण बतलाने पर भी रेवतीप्रसाद जी पं० लक्ष्मीनरायण जी को अपने पत्र माघ कृ० ८ वि० १९७८ द्वारा उलहना लिखते हैं यथाः—

(१) आपसे पूछा गया था कि आप नाई के क्या लक्षण करते हैं ? परन्तु आपने इस प्रश्न का अपने दोनों पत्रों में कोई उत्तर न दिया। जब आप यही नहीं जानते कि नाई किसको कहते हैं तो आप उसके वर्ण का निश्चय क्योंकर कर सकेंगे।

प्रियवर ! आप नाई के वर्ण व लक्षण जानने के लिये क्यों आतुरता दिखलाते हैं ? आप तो स्वयं अपनी पुस्तक न्या० वा० नि० में औशन स्मृति तथा पराशर स्मृति के श्लोक लिखकर, नाई के लक्षण व वर्ण का निश्चय कर चुके हैं। जैसा कि ऊपर दिखलाया जा चुका है, परन्तु आपके बार २ हठ करने पर आगे पंडित लक्ष्मीनारायण जी ने पुनः आपके सत्कार स्वरूप प्रमाणित किया है कि "नाई जाति वर्णशंकर" है अर्थात् दो भिन्न जातियों के पुरुष स्त्री के संयोग से पैदा हुई है। जिसका अंग्रेज़ी अर्थ Bastard Carte होता है इस ही सिद्धान्त की पुष्टि कानपुर, अलीगढ़ इन्दौर, काशी और लखनऊ आदि आदि स्थानों के अनेकों विद्वानों ने भी की है। (देखो सम्प्रदंडी जाति नि० प्रथम भाग)

ग्रंथकर्ता

यद्यपि रेवतीप्रसाद् जी के उपरोक्त पत्र में गाली गलोच कटु-वाक्यों तथा व्यङ्ग वचनों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था और ऐसा होना एक सभ्य पुरुष के लिये उचित भी नहीं था तथा इस पत्र में यदि कोई शास्त्रीय विषय होता तो पूरे पत्र को छापने में हमें प्रसन्नता होती तथापि विद्वानों की विज्ञप्ति के लिये रेवतीप्रसाद जी का पत्र हम ज्यों का त्यों छापे देते हैं। जिस से ज्ञात हो जायगा कि यह शास्त्रार्थ था या बालकों का खेल।

(इस पत्र का एक पैरेग्राफ तो ऊपर दिया जा चुका है दूसरा पैरेग्राफ प्रश्नोत्तर प्रकरण में दिया है और शेष पत्रांश यहां दिया जाता है।) ग्रन्थकर्ताः—

श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी—नमस्ते।

मैं कुछ आवश्यक कार्यार्थ बाहर गया था लौटने पर आप का पौष शु० १४-१६७८ वि० का पत्र मिला अतएव उत्तर में कुछ विलम्ब हुआ—अस्तु। उत्तर में विदित हो कि जब आप 'नाई' के वर्ण विषय में वर्ण की स्थापना ही नहीं करते हैं, तो आपका 'वितण्डा' के पक्ष में फंस जाना प्रत्यक्ष है। "अनित्यः शब्दः" ऐसे स्थल में तो प्रतिपक्ष की प्रतिज्ञा पालन की आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रति पक्ष-प्रतिज्ञा "नित्यः शब्दः" इसके अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकती। परन्तु "नाई ब्राह्मण हैं" इस के प्रतिपक्ष में तो तीन रूप हो सकते हैं-"१-नाई क्षत्रिय हैं।" "२-नाई वैश्य हैं" "३-नाई शूद्र हैं।" क्योंकि वर्ण चार हैं। अतएव लिखिये कि आपकी स्थापना क्या है?

(३) हमारे उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर न देते हुए हमारे ऊपर हेत्वाभासों का आरोप करके "परोपदेशेपाण्डित्यम्" वाली उक्ति को चरितार्थ किया है। हमारे प्रति व्यङ्ग्य प्रयोग कर के अपनी शास्त्रार्थ की असमर्थता को सिद्ध कर दिया है। परन्तु हम इस पर दृष्टिपात नहीं करते; क्योंकि "बुभुक्षितः किन्नकरोतिपापम्?" रजत मुद्रा की बुभुक्षा ने आपको अस्वस्थ कर दिया, और इसकी औषध हमारे पास नहीं है, अतः विवशता है। अस्तु जब आप स्वस्थ होकर हमारे उपरोक्त दोनों प्रश्नों का उत्तर दे देंगे, तब हम अपने उत्तरों पर किये गये आक्षेपों का निराकरण कर देंगे।

(४) आपने अपने पौष कृष्णा ५, सं०१६७८ वि० के पत्र के ७वें प्रश्न में आगरा आकर मौखिक शास्त्रार्थ करने की उत्सुकता का संकेत किया जिसके उत्तर में २१ । १२ । २१ को श्री० पं० तुलसीराम जी शर्मा ने आपको मौखिक शास्त्रार्थ के लिए आगरा, पधारने के लिए लिखा परन्तु आप न पधारे। पौष शु० ५ के पत्र में हमने आपको लिखा है कि "यदि अब भी आप शास्त्रार्थ के लिये उद्यत हैं तो लिखिये। यहां आना चाहें तो यहां आजाइये,अथवा श्री०पं० बाबूराम जी शर्मा मन्त्री नाई ब्राह्मण सभा फर्रुखाबाद को लिखा जावे, कि शास्त्रार्थ का प्रबन्ध करें" हमने उपरोक्त शब्दों में आपको मौखिक शास्त्रार्थ के लिये उत्साहित किया। परन्तु आप "सवाल गन्दुम जवाब चीना" वाली उक्ति को चरितार्थ करते हुए अपनी उल्टी ही हाँकते हैं! आप लिखते हैं:—"यदि इस चलते हुए लिखित शास्त्रार्थ के चलाने की सामर्थ आप नहीं रखते हैं तो लिखिये हम मौखिक शास्त्रार्थ का भी प्रबन्ध कर सकते हैं।" हज़रत हमने किसी प्रकार के शास्त्रार्थ से भी मुख नहीं मोड़ा है। हमने आप को बार २ मौखिक शास्त्रार्थ के लिए आह्वान् किया, परन्तु आप उपस्थित न हुए। अब आप लिखित शास्त्रार्थ पर उतरे हैं हम इस के लिये भी सर्वथा उद्यत हैं। परन्तु यह तो लिखिये कि आप उस मौखिक शास्त्रार्थ को करने में समर्थ हैं वा नहीं, जिसकी भूमिका बांधने में इतना पत्र व्यवहार हुआ है यदि नहीं तो अपने पराजय का पत्र हमें लिख दीजिये और लिखित शास्त्रार्थ चलने दीजिये। अब भी हम आपको अवसर देते हैं कि यदि आप मौखिक शास्त्रार्थ करना चाहते हैं, तो यहां आजाइये, शास्त्रार्थ हो जायगा यहां सब कुछ तैयार है कुछ विलम्ब न होगा आपने अपने इस अन्तिम पत्र में लिखा है कि "तत्काल सातवें प्रश्न को उत्तरित करते हुये आपने हमारे लिए तार क्यों नहीं दिया, ऐसा न करने से विदित होता है कि आप शास्त्रार्थ के लिए सज्जित नहीं थे"—महाशय हमारा कौनसा काम अटका हुआ था जिस के लिये हम आपको तार दे कर बुलाते? यदि आप आजाते तो हम मनुष्य धर्म का पालन करते हुए आपका आतिथ्य अवश्य करते! आपको यह लिखते किंचित् भी लज्जा नहीं आती कि "आप शास्त्रार्थ के लिए सज्जित नहीं थे। अब श्री० बाबू-

राम जी ने फ़र्रुखाबाद से आगरा को प्रस्थान करते समय तक भी आपको पधारने की सूचना दी, और आपका मार्गव्यय देना भी स्वीकार किया, तब भी आप नहीं आये फिर भी आप असत्य कहने में नहीं लजाते शोक !

रेवतीप्रसाद शर्मा, महामन्त्री, अखिल भारतवर्षीय नाई
जातीय महासम्मेलन, आगरा
माघ कृ० ८-१९७८ वि०

पाठक ! इस पत्र में रेवतीप्रसाद जी ने पं० लक्ष्मीनारायण जी के पत्र पौष शु० ५ वि० सं० १९७८ द्वारा दिये गये युक्ति सङ्गत उत्तर की अवहेलना करके पुनः अपने उपरोक्त पत्र में वही पिष्टपेषण किया है कि "आपने हमारे नाई के लक्षण तथा वर्ण स्थापना विषयक प्रश्न का उत्तर कुछ भी नहीं दिया" तब पं० लक्ष्मीनारायण जी ने पुनः अपने निम्नलिखित पत्र द्वारा इन दोनों वाक्यों का विशेष रूप से उत्तर दिया है। ग्रन्थकर्ता:—

पं० लक्ष्मीनारायण जी का पत्र

(सारांश मात्र)

ओ० रेवतीप्रसाद जी !

माघ कृ० ८ वि० सं० १९७८ को लिखा गया अमृतवर्षीय भवदीय पत्र के उत्तर में हमारा अति तुच्छ निवेदन इस प्रकार है:—

जब कि नापित में "ब्राह्मणत्वाभाव" रूप अपना प्रतिपक्ष हम प्रारम्भ ही से स्थापित करते चले आते हैं तब प्रतिपक्ष स्थापना से से हीन असमदुत्थापित कथा को त्रिकाल में भी आप प्रमाणित नहीं कर सकते, यदि नापित को ब्राह्मणत्व सिद्ध करने का कुछ भी बल आप रखते हैं तो सिद्ध कीजिये हम सभी प्रमाण तर्कादि को लेकर आर्षसिद्धान्तानुकूल उसका निराकार करने को सज्जित हैं, इस कारण महर्षि गौतम के प्रमाण—

तर्क साधनोपालम्भस्सिद्धान्ता विरुद्धः
पञ्चावयवोपपन्नः पक्षप्रतिपक्षपरिग्रहोवादः

१-२-४२ सूत्र के अनुकूल अस्मदुत्थापित कथावाद के ही

अन्तर्गत आती है नकि अल्पादि के। नित्यः शब्दः इस पक्ष का जिस प्रकार अनित्यः शब्दः—यह प्रति पक्ष कहलाता है उसी प्रकार नापिता ब्राह्मणाः—इस पक्ष का प्रति पक्ष नापिता न ब्राह्मणाः प्रकृत में कहलावेगा। इस पर कदाचित् कहा जावे कि जब नापित ब्राह्मण नहीं हैं तो कौन हैं? इत्यादि तब हम कहेंगे आप लिखिये कि हम नापितों को ब्राह्मत्व सिद्ध नहीं कर सकते—ऐसा आप के लिखने पर हम नापितों के वर्णावर्णत्व को तर्क प्रमाण पूर्वक स्थापित करेंगे परन्तु हम को निश्चय है कि आप अहञ्च ढपोलशङ्खोऽहं वदामि च मिते—इस उक्ति को फिर भी चरितार्थ करेंगे।

आप से पूछा गया था कि—आप नाई के क्या लक्षण करते हैं इत्यादि, क्योंकर कर सकेंगे, इत्यन्त का उत्तर भी देखिये—यदि हमने नाई का लक्षण कर दिया और आप उस में अतिव्याप्ति अव्याप्ति, असम्भव दोष न दिखला सके तब क्या आगे आप नाइयों को ब्राह्मणत्व सिद्ध करने का उद्योग करेंगे परन्तु जिस को किसी प्रकरणादि का भी ज्ञान नहीं वह किसी वचन के वारे में क्या निश्चय कर सकता है तभी तो इतने पत्रों के रंगने पर भी आप से प्रकारणादि का उत्तर न वना और न आगे वन सके— अस्तु नापिता का लक्षण ध्यान से पढ़ियेः—

समवायसम्बन्धावच्छिन्नप्रकारतात्वावच्छिन्ननापितत्वावच्छेदका वच्छिन्ननापितनिष्ठाविशेष्यताानिरूपिताप्रकारता शालित्वंनापितत्वम्॥

क्या आप इस लक्षण को कुछ भी समझ सकेंगे? अस्तु! और भी आप के समझने लायक नापित के लक्षण हम लिखते हैं। "नाप्नोति सरलतामिति नापितः" इति शब्द कल्पद्रुमे—"नाप्नोति सत्कर्मणीति नापितः" इत्युणादौ स्वामी दयानन्दाः।

कहिये! नापित का लक्षण हुआ या नहीं? यदि इतने पर भी पूर्व में हम से किये गये षट् प्रश्नों का उत्तर करते हुए नापितों को ब्राह्मणत्व सिद्ध आप न कर सकें तो स्वयं हम ही नापितों के वर्णावर्णत्व साधन में प्रवृत्त होंगे उस पर आपका कर्त्तव्य होगा कि अपने पूर्ण वल को लगाकर हमारे कथन का खंडन करें।

(ग) महर्षि गौतम, इत्यादि, आपकी स्थापना क्या है, इत्यंन्त का भी उत्तर लीजिये—(१) हमारा प्रतिपक्ष क्या है यह हम (क-३) में स्पष्ट कर चुके हैं इस कारण अस्मदुत्थापित कथा को आप वितण्डा स्थापित नहीं कर सकते, नाई के वर्ण की स्थापना करने का भार आप उठा ही चुके हैं परन्तु हम प्रतिज्ञा पूर्वक लिखते हैं कि उसकी स्थापना आप त्रिकाल में भी कर नहीं सकेंगे हम नाई के वर्णत्व निराकरण में प्रवृत्त हुए हैं न कि स्थापना में। स्थापना पक्ष इस समय आपका है न कि हमारा।

२ अनित्यः शब्द इत्यादि, हो नहीं सकती इत्यन्त, आक्षेप खण्ड का भी उत्तर (क-३) में आ गया है।

(३) परन्तु नाई ब्राह्मण हैं इत्यादि आक्षेपांश का उत्तर इस प्रकार है—ऊषर भूमि गोधूमवती-इसके प्रति पक्ष में जिस प्रकार ऊषर भूमिपर्ववती ऊषर भूमिर्हरि मन्थकवती-ऊषरभूमि कलायवती ये तीन रूप नहीं हो सकते उसी प्रकार नाई ब्राह्मण हैं इसके प्रतिपक्ष में भी नाई क्षत्रिय हैं नाई वैश्य हैं-नाई शूद्र हैं यह तीन रूप प्रतिपक्ष के नहीं हो सकते, वर्ण चार हैं, यह तो सभी मानते हैं। इस पर हमारा आपका विवाद ही नहीं। पाचवां मानता कौन है, पूर्व में हमसे किये गये षट् प्रश्नों का उत्तर करते हुए कोई भी नाई वर्ण का आप स्थापित कीजिये इसीलिए तो हमने आपसे यह कथा चलाई है।

(घ) आगे आपने अपने इस पत्र के पृष्ठ २ अंक ३से लेकर पृष्ठ ६के शोक पर्य्यन्त अतिरिक्त गाली गलोच के कोई शास्त्रीय चरचा नहीं की कि जिसका हम उत्तर लिखें, हां इतना अवश्य लिखना पड़ता है कि "ददत ददतु गालीर्गालीमन्तो भवन्तः" तथा

कटुकणन्तो मलदायकाः खला।
स्तुदन्त्यलं बन्धन शृङ्खलाइव।

इति बाण भट्टः

घबराइये नहीं! इस चलते हुये लिखित शास्त्रार्थ के समाप्त होते ही हम मौखिक शास्त्रार्थ करने के लिये भी आपको छोड़ने

वाले नहीं। आप जहां कहीं हमें मिलेंगे वहीं हम पहुंचेंगे चिन्ता न कीजिये।

बाबूराम की कुल चिट्ठियों का उत्तर हम दे चुके हैं उसकी चिन्ता की भी आवश्यक्ता नहीं। आपका आशय यही है कि किसी तरह ब्राह्मण बनें अन्यथा ननुनच वाला चैलेञ्ज क्यों ? अस्तु !

आप पूर्व में हमसे किये गये षट् प्रश्नों का उत्तर करते हुये बतलाइये कि **नाई को** संस्कृत में न्यायी कहते हैं इसमें आप्त प्रमाण आपके निकट क्या है ? तथा नाई को ब्राह्मण वर्णत्व सिद्ध कीजिये। इति शिवम्।

(हः पं० लक्ष्मीनारायण सनातनधर्म विद्यालय फर्रुखाबाद माघ कृ० ३० वि० सं० १९७८)





नाई वर्ण निर्णय विषयक

फ़र्रुखाबाद शास्त्रार्थ



ब नाइयों की ओर से भारतमित्र में "नाइयों का दावा" शीर्षक शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज छप गया तब सनातन धर्म-रक्षक पं० लक्ष्मीनारायण जी सनातन धर्म विद्यालय-फ़र्रुख़ाबाद ने "नाइयों के दावे की दवा" शीर्षक पत्र, तुलसीराम जी नाई उपप्रधान नाई सभा इटावा के नाम-रजिस्टर्ड पत्र नं० १३१ ता० १६-१२-२१ तदनुसार मा० शु० ६ संवत् १६७८ को नाइयों से सात प्रश्न पूंछे। पं० लक्ष्मीनारायण जी ने इसी पत्र को भारतमित्र ब्राह्मण सर्वस्व, आदि आदि में भी छपवा दिया और इसकी प्रतियें शहर में भी चिपकवा दियीं।

नोटः—पं० लक्ष्मीनारायण जी ने उपरोक्त पत्र द्वारा नाई सभा से जो ७ प्रश्न किये थे वे आगे प्रश्नोत्तर स्थम्भ में लिखे हैं तहां देख लीजियेगा।

जब उपरोक्त रजिस्ट्री नं० १३१ तुलसीराम जी उपप्रधान नाई सभा इटावा के पास पहुंची तब उन्होंने पण्डित लक्ष्मीनारायण जी को लिखाः—

श्रीमान् पं० लक्ष्मीनारायण जी नमस्ते !

आपका पत्र मिला पढ़ कर हर्ष उत्पन्न हुआ आपने भारत-मित्र को पूरा नहीं पढ़ा जिसमें लिखा था कि पं० तुलसीराम शर्म्मा ‡ उपप्रधान के पास १५ दिसम्बर तक शास्त्रार्थ के इच्छुक सूचना भेजदें परन्तु आपने ऐसा नहीं किया, आज २१ को आपकी सूचना मिली, इस लेख से जाना जाता है कि आप शास्त्रार्थ की इच्छा नहीं रक्खतें हैं † जो प्रश्न आपने भेजे हैं वह सभा में प्रवेश कर दूंगा। यदि आप शास्त्रार्थ करना चाहते हैं, तो आगरा में होने वाली सभा में पधारये यथायोग्य सतकार किया जायेगा, आप लिखें कि जो पता मेरा भारतमित्र में दिया था, वह किस कारण से नहीं लिखा। आप निम्न लिखित प्रश्नों का उत्तर आगरा लोहामंडी श्री सुजानसिंह रईस के पते से भेजें कियोंकि में आगरा जाता हूं

आपका तुलसीराम शर्मा उपप्रधान कुलीन
ब्राह्मण * महासभा भारत इटावा
ता० २१-१२-२१

नोटः—उपरोक्त तुलसीराम जी नाई जो अपने की को शर्मा लिखते हैं और जो नाई सभा के उपप्रधान हैं उनके उपरोक्त पत्र में छोटी छोटी तो कई अशुद्धियों थीं उन पर ध्यान न देकर केवल मोटी मोटी अशुद्धियों के नीचे Underline लकीर लगा कर ज्यों की त्यों छपवा दी हैं यथाः—

अशुद्धः—	शुद्धः—
१ रक्खते हैं	रखते हैं
२ पधारये	पधारिये
३ सतकार	सत्कार
४ कियोंकि	क्योंकि

‡ आप जाति के नाई हैं

† क्या खूब ! यदि शास्त्रार्थ न करना होता तो रजिस्ट्री ही क्यों देते ?

* यह नाई जाति की सभा है ।

पाठक! शास्त्रार्थ करने व ब्राह्मण बनने वालों की योग्यता को तो परख लीजिये।

ग्रन्थकर्त्ता

तुलसीराम जी ने पं० लक्ष्मीनारायण जी के प्रश्नों के उत्तर न दे कर उलटे पंडित जी से निम्नलिखित प्रश्न किये।

(१) नाइयों के प्रश्नः--आप किस मत को मानते हैं?

(१) पंडित जी का उत्तरः—हम सनातन धर्म को मानते हैं।

नाइयों का प्रश्न (२)

आप किन किन ग्रन्थ व शास्त्रों को प्रमाण मानते हैं?

पंडित जी का उत्तर (२)

पुराण न्याय मीमांसा धर्म शास्त्राङ्ग मिश्रिताः।
वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दशः॥

याज्ञ० १। ३

इन परिगणित ग्रन्थों को प्रमाण भूत धर्म निर्णय के विषय में हम मानते हैं।

[नाइयों के प्रश्न]

३—नाई के लक्षण (तारीफ़) क्या हैं?
४—आपकी राय में नाई किस वर्ण में हैं?

(पण्डितजी के उत्तर)

३—४ क्या नाइयों के बारे में हमसे दी गई व्यवस्था को आप मानने के लिये तय्यार हैं, यदि तय्यार हैं तो हाँ, लिखिये यदि नहीं तो आपके प्रश्न हमारे उत्तर दोनों व्यर्थ होने से अलेख्य हैं-प्रयोजनमनुदिश्यमन्दोऽपिनप्रवर्त्तते। इस कारण हमारे आपके चलते हुये इस लिखित शास्त्रार्थ में नाइयों का जो वर्ण सिद्ध हो

जावे उसी को आप मानियेगा। आपने नाइयों का ब्राह्मणत्व, सिद्ध करने की प्रतिज्ञा भारतमित्र पत्र में की है इस कारण नाइयों के ब्राह्मण विचार के अवसान में अन्यत्व विचार का अवसर आने पर आप हमसे यह प्रश्न कीजियेगा तब हमारे उत्तर का भी कुछ फल निकलेगा अन्यथा आपके ब्राह्मणत्व साधक समग्र हेतु सत्प्रतिपक्ष हो जावेंगे ।

नाइयों का प्रश्न

५—आप वर्ण व्यवस्था जन्म से मानते हैं ? अथवा अन्य प्रकार ? और किस प्रकार ?

ह० तुलसीराम उपप्रधान कु० ब्रा० महा स० इटावा

ता० २१—१२—२१

पण्डितजी का उत्तर

५—हम वर्ण व्यवस्था जन्म से मानते हैं क्या हम आपसे इस पत्र के प्रत्युत्तर पत्र में अपने प्रश्नों * के उत्तर पाने की आशा कर सकते हैं ? इति शिवम् । ह० लक्ष्मीनारायण स० ध० वि०

फर्रुखाबाद पौष कृ० १३ सं० १६७८ विक्रमी

प्रश्नोत्तर	नाइयों की ओर से उत्तर
पं० लक्ष्मीनारायण जी के प्रश्न १ किसी पद की शक्ति के निर्णय में कितने और कौन अनुगत नियमों को मानते हो ?	१ पद की शक्ति का निर्णय व्याकरण और कोष से होता है अथवा व्याख्यान का भाष्यग्रन्थों से भी यह कार्य्य सम्पादन हो सकता है ।

* उचित तो यह था कि पण्डितजी के प्रश्नों के उत्तर देकर अपने प्रश्न कर लेते अतः यह कर्त्तव्य नाइयों की अल्पज्ञता प्रगट करता है । ग्रन्थकर्ता ।

नोटः—नाइयों के उपरोक्त उत्तर पर पं० लक्ष्मीनारायण जी ने पुनः प्रश्न उठाये यथाः—

(क) कृपा कर बतलाइये कि आप के इस मंतव्य में आप्त प्रमाण क्या है? किसी आप्त प्रमाण का उपन्यास आपने अपने इस मन्तव्य की पुष्टि में नहीं किया, इस कारण आपका यह उत्तर निर्मूल होने से अनादरणीय हुआ। तिस पर भी दो विकल्पों का आपने इस में प्रवेश कर दिया है इस कारण इनको शक्तिबोधन में नियमेन कारणत्व भी नहीं आता, तथा वैयाकरण आख्यान की शक्ति कर्ता में नैयायिक कृति में मीमांसक व्यापार में मानते हैं इत्यादि।

(ख) विरोधस्थल में आपके निकट क्या उपाय है? इसका भी स्पष्टीकरण आपने अपने उक्त मन्तव्य में नहीं किया, और आजकल आप्त अनाप्त सभी तरह के भाष्यों व्याख्यानों की भरमार है।

(ग) उन में आप किस भाष्य व्याख्यान का प्रमाण मानते हैं? इसका भी स्पष्टीकरण आपके उक्त मन्तव्य में नहीं हुआ है तथा "यवमयश्चरु भवति" इत्यादि स्थल में यवपद की दीर्घ शूकविशेष में और प्रियङ्गु में उभयत्र शक्ति के प्राप्त होने पर आपके निकट क्या उपाय है? इत्यादि अनेक दोषों ने आपके इस उत्तर की 'अवतप्ते न कुलस्थितप्त पतत' की जाति कर दी है आशा है कि अब के पत्र में आप यथार्थ उत्तर देने की कृपा करेंगे?

नोटः—उपरोक्त तीनों प्रश्न क, ख, ग के उत्तर में नाइयों की ओर से बा० रेवतीप्रसाद जी ने पं० लक्ष्मीनारायण जी को अपने पत्र मि० मा० कृ ८ सं० १९७८ द्वारा ऐसा लिखाः—

"आपका यह पत्र अनेक छल, जाति और निग्रह स्थानों से परिपूर्ण है और इसकी समालोचना भी एक पुस्तक रूप में हो सकेगी परन्तु अभी हम ऐसा करना व्यर्थ समझते हैं क्योंकि आप स्वस्थ नहीं हैं जब तक आप स्वस्थ न हो जावें आपके दोष आपकी दृष्टि में नहीं आ सकते आप वाद तो क्या करते जल्प के युद्ध क्षेत्र को भी त्याग कर वितण्डा के महापङ्क में निमग्न हो चले हैं जिससे आपका निकलना कठिन हो गया है।"

पाठक ! देखा !! कैसा विचित्र और सभ्यता पूर्ण उत्तर है । ग्रन्थकर्त्ता:—

(पंडितजी का दूसरा प्रश्न)

२ प्रकरण का निश्चय किन और कितने नियमों के आधार पर मानते हो, उनको स्पष्ट लिखो ?

(उत्तर)

२ लक्षण प्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धि, शास्त्रोक्त पञ्चावयव वाद ही निर्णायक होगा ।

नोटः—इस दूसरे प्रश्न के उत्तर पर माननीय पं० लक्ष्मीनारायण जी ने रेवतीप्रसाद जी को लिखाः—

"द्वितीय प्रश्न का उत्तर तो आपका अधिक गोलमाल है, क्योंकि प्रथम तो आप लिखते हैं "लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धिः" पुनः लिखते हैं पञ्चावयव वाद ही निर्णायक होगा ।

अजी ! उल्टे छुरे से न मूँड़िये लब्धाई जानने का प्रयत्न कीजिये ।" इस पर पं० लक्ष्मीनारायण जी ने पुनः प्रश्न किये यथाः—

(क) यदि लक्षण प्रमाणों से प्रकरण का निर्णय मानते हो तो प्रकरण का लक्षण और उसके निर्णयक का प्रमाण लिखिये ? पञ्चावयव वाद तो और विवाद की वृद्धि करेगा न कि निर्णय, इस पञ्चावयव वाद को त्याग कर पञ्चावयव वाक्य लिखा कीजिये, उस पञ्चावयव वाक्य का प्रयोग अनुमान स्थल अनित्यः शब्दः इत्यादि में होता है न कि शब्द प्रमाण स्थल में कृपा कर किसी न्यायदर्शन के ज्ञाता से पूछ कर ऐसी बात लिखा कीजिये ।

(ख) अच्छा तो अब संभल कर पुनः बतलाइये कि किसी प्रकरण का निश्चय किस आप्त प्रमाण के सहारे पर मानियेगा ?

नोटः—उपरोक्त दोनों प्रश्नों का उत्तर बा० रेवतीप्रसाद जी ने कुछ भी नहीं दिया।

ग्रन्थकर्त्ता

(३) पण्डित लक्ष्मीनरायण के प्रश्नः-'न्यायी वर्ण' ऐसा आनुपूर्वी शब्द क्या किसी आर्ष ग्रन्थ में आया है।?

(क) यदि आया है तो उस का पूरा पता दो।

(ख) 'नाई' को संस्कृत में 'न्याई' इसमें आर्ष प्रमाण क्या है?

नाइयों की ओर से रेवतीप्रसाद का उत्तरः—

'न्यायी वर्ण' ऐसा लेख आप की शास्त्रीय अल्पज्ञता को प्रकट करता है।

न्यायी वर्ण नहीं है वर्ण है ब्राह्मण! क्या आप बतला सकते हैं कि गौड़ ब्राह्मण, सनाढ्य ब्राह्मण, कान्यकुब्ज ब्राह्मण इत्यादि भेद किस वेद ग्रंथ के आधार पर हुए हैं ?

नोटः—इस तीसरे प्रश्न के उत्तर में त्रुटियें देखकर पं० लक्ष्मीनारायण जी ने पुनः प्रश्न उठाये यथाः—

(क) तीसरे प्रश्नांश का उत्तर आपने अत्यन्त स्पष्ट और यथार्थ दिया है हम भी आपके स्वर से स्वर मिला कर लिखते हैं कि न्यायी वर्ण नहीं है वर्ण है ब्राह्मण। अच्छा तो न्यायी जी "न्यायी वर्ण निर्णय" यह जो अपनी पुस्तक का नाम आपने रक्खा है इस पर तो अब हड़ताल लगाने की कृपा ही आप कीजिये, नहीं तो सब न्यायी आपको अल्पज्ञ समझेंगे क्योंकि जिसका वर्ण नहीं उसका निर्णय कैसा? हमने तो आपकी पुस्तक का 'न्यायी वर्ण निर्णय' ऐसा नाम देख कर ही आप से पूछा था सो आपने अच्छा किया कि अपनी पुस्तक का नाम अपनी ही निहन्नी से काट दिया परन्तु नाई को संस्कृत में 'न्यायी' कहते हैं इसमें प्रमाण क्या है? **इस प्रश्नांश का उत्तर आपसे कुछ भी नहीं बना।**

(ख) अजी! कुछ तो लिखते ?"

पाठक! देख लिया!! नाइयों के मुख से ही उनके कल्पित 'न्यायी' शब्द की मीमांसा कैसी हुई? ग्रं० क०

पंडित जी का प्रश्नः—

नाइयों की उत्पत्ति का वर्णन किस आर्ष ग्रंथ में लिखा है? कि जिसमें उन्हें ब्राह्मण बतलाया हो।

नाइयों का उत्तर*:—

(४) नाइयों की उत्पत्ति ठीक वैसे ही क्रम से हुई है जैसे हमारे प्रसवा ब्रह्मर्षि समुदाय की हुई है।

नोटः—इस विचित्र उत्तर पर पंडित लक्ष्मीनारायण जी ने पुनः तर्क उठाया।

क्या हमने "नाइयों की उत्पत्ति कैसे हुई?" ऐसा आप से पूछा था जब ऐसा आप से पूछा नहीं तब आपका यह उत्तर किस प्रकार सङ्गत हो सकता है। कोई आपसे पूछे कि आपका घर किस मुहल्ले में है? तब क्या आप यही उत्तर देंगे कि जैसा घर नाइयों का होता है वैसा ही हमारा घर है, ठीक है 'मुखमस्ति वक्तव्यं दश-हस्तांहरीतकी' इसका उदाहरण भी तो होना चाहिये, क्या इससे इस पूर्व में किये गये चतुर्थ प्रश्न का उत्तर आप इस अपने जन्म में दे सकेंगे? क्या आपको ज्ञात नहीं कि तुलसीराम जी के दूसरे प्रश्न के उत्तर में हमने जो चतुर्दशमूल प्रस्थान अपने मान्य लिखे हैं उनमें कोई भी अनार्ष नहीं पुनः अस्थान में आपका यह प्रश्न क्यों? नाइयों को ब्राह्मणत्व जब आप वेद से प्रमाणित करने लगेंगे तब हम आपके वैदिकत्व की परीक्षा करेंगे घबड़ाइये नहीं।

पंडितजी का प्रश्नः—

(५) श्रौत प्रमाण के उपस्थित होने पर श्रौत सूत्रों के निर्णय को मानते हैं या नहीं?

नाइयों का उत्तरः—

(५) वेद और वेदानुकूल अन्य प्रमाण मान्य हैं

* इस विषय में विस्तृत रूप से सप्तखण्डी जाति निर्णय प्रथम भाग में लिखा जा चुका है।

नोट—इस अस्पष्ट उत्तर पर पं० लक्ष्मीनारायण जी ने निम्न लिखित तर्कनायें उठायी।

पांचवां प्रश्न हमारा श्रौत सूत्रों के बारे में है इस कारण

(क) स्पष्ट बतलाइये कि श्रौत सूत्रों के निर्णय को आप मानेंगे या नहीं ? (ख) यदि नहीं तो क्यों ? (ग) अनुकूलत्व की सिद्धि किन परिगणित हेतुओं पर अवलम्बित है ? क्या आपको यह मालुम है ?	उत्तर कुछ नहीं दिया

पंडितजी का प्रश्नः—	नाइयों का उत्तरः—
६–वेद के अनुबन्ध चतुष्टय का निश्चय किस आर्ष प्रमाण के आधार पर मानोगे ?	६–वेद के अनुबन्ध चतुष्टय का निश्चय वेद भाष्य और वेदाङ्गों से होता है।

नोट—इस उत्तर पर पं० लक्ष्मीनारायण जी ने निम्न लिखित तर्क वितर्क उठायेः—

षष्ट प्रश्न के उत्तर को देखकर तो हमें यही लिखना पड़ता है, यस्मिन्कुलेत्वमुत्पन्नो गजस्तत्र न हन्यते, अजी न्यायी जी ! कृपा कर बतलाने की कृपा तो कीजिये किः—

(क) किस वेदाङ्ग के किस स्थल में वेद के अनुबन्ध चतुष्टय का वर्णन आया है ? ध्यान रहे कि त्रिकाल में भी आप वेदाङ्गों के अन्तर में वेद के अनुबन्ध चतुष्टय का वर्णन नहीं दिखला सक्के वेद भाष्य तो सब ही स्ववाक्य की पुष्टि में प्रमाणान्तर की अपेक्षा रखते हैं, तिस पर भी किसी भाष्य के अन्तर में अनुबन्ध चतुष्टय का वर्णन आप दिखला नहीं सकेंगे, स्वामी दयानन्दजी ने जो ऋगादि भूमिका में कुछ अनुबन्ध चतुष्टय की चर्चा की है उसमें उनकी कपोल कल्पना के सिवाय कुछ भी शास्त्रीय प्रमाण नहीं–शायणाचार्य्य ने ऋग्वेद की भूमिका में स्वयं प्रमाणान्तर का अवलंम्बन किया है।

(ख) अच्छा तो पुनः प्रकृतिस्थ होकर बतलाइये कि वेद का अनुवन्ध क्या और किस आर्ष प्रमाण के आधार पर मानते हो ?

नोटः—इन प्रश्नों का उत्तर बा० रेवती-प्रसाद जी ने कुछ नहीं दिया।

पंडितजी का प्रश्नः—

७-आगरे होने वाली नाइयों की सभा में शास्त्रार्थ के निमित्त विरुद्ध पक्ष में उपस्थित होने वाले पंडितों को क्या पूरा ख़र्च रजत मुद्रारूप में देने के लिये तथा पण्डितों के रक्षण का भार उठाने के लिये सभा तैयार है ? इति शिवम् ।

मार्ग० शु० ६ संवत् १९७८
ह० पं० लक्ष्मीनारायण ।
सनातनधर्म विद्यालय फ़र्रुख़ावाद डाक रजिस्ट्री नं० १३१
ता० १६,२०।१२।२१

नाइयों का उत्तरः—

७-सातवें प्रश्न का उत्तर अब आवश्यक नहीं रहा क्योंकि सम्मेलन हो चुका हमने आपके दोनों पत्रों का उत्तर दे दिया है, सो अब भी आप शास्त्रार्थ के लिये उद्यत हों तो लिखिये, चाहे आगरे आ जावें चाहे फ़र्रुख़ाबाद ही में सही परन्तु ध्यान रहे कि शास्त्रार्थ प्रारम्भ करने से पहले हमारे उल्लिखित प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक होगा ।

नोटः—पत्र का केवल सारांश-मात्र दिया है। अ० क०

ह० रेवतीप्रसाद ‡ शर्म्मा
महामन्त्री
मि० पौष शु० ५ सं० १९७८ वि०

नोटः—उपरोक्त पत्र में रेवतीप्रसाद जी ने लिखा था कि आपके रक्षण का भार भगवान् और गवर्नमेंट पर है। इस पर पं० लक्ष्मीनारायण जी ने प्रश्न किया:—

---

‡ आप दीपचन्द जी नाई के एक योग्य पुत्र हैं ।

[क] यदि भगवान् और गवर्नमेन्ट के ऊपर ही जब सर्वथा आपका भरोसा है, तो नाई से ब्राह्मण बनने की क्यों कोशिश करते हैं ? पौष शु० १४ वि० सं० १९७८, डाक रजिस्टर्ड नं० १४२

ता० १३--१--२२

ह० पं० लक्ष्मीनारायण ।

उत्तर कुछ नहीं।

नाई जाति के प्रश्न व सनातन धर्म की ओर से

❀ उत्तर ❀

नोटः--रेवतीप्रसाद जी की चिट्ठी में परेग्राफ नम्बर १ तथा ४ में शास्त्रीय विषय न होने से छोड़ दिया गया है ।

❀ नाइयों का कथन ❀

(२) जब आपके मतानुसार नाई ब्राह्मण नहीं हैं तो क्षत्रिय, वैश्य, या शूद्र इन में से कोई आपको मानना ही पड़ेगा क्योंकि पांचवां तो वर्ण आप भी नहीं मानते हैं। न जाने आप नाई का वर्ण अपने मतानुसार स्पष्ट लिखने में क्यों घबराते हैं ? वर्ण जब चार ही हैं पांचवां नहीं । और जब

ग्रन्थकर्ता की ओर से उत्तर—

(२) इसको वितण्डा समझ कर सम्भव है कि पं०लक्ष्मीनारायणजी ने इस पर कुछ प्रकाश न डाला हो अस्तु ?

प्रिय रेवतीप्रसाद जी ! स्वार्थ वश आपको अर्थापत्ति अर्थ खूब निकालना आता है क्योंकि चारों ओर से घूम फिर कर आपको

आप नाई को क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन तीनों में से कोई भी नहीं कह सकते तो अर्थापत्ति से "नाई का ब्राह्मणत्व" स्वतः सिद्ध है।

ब्राह्मण बनने की ही सूझ रही है जब श्रद्धेय पं० लक्ष्मीनारायण जी ने नाइयों को क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र नहीं बतलाया तब आपने अर्थापत्ति से ही नाइयों को ब्राह्मण कैसे मान लिया? जिस प्रकार से आप अर्थापत्ति से ब्राह्मण अर्थ निकालते हैं उसी प्रकार वर्णसंकर अर्थ भी निकल सकता है। जैसा कि पं० लक्ष्मीनारायण जी ने नाई जाति को अपने इससे आगे के पत्रों में सप्रमाण वर्णसंकर सिद्ध कर दिखाया है।

नाइयों का कथन।

(३) नाई के लक्षण करने का क्या ठिकाना है? आपतो वही करते हैं "पूछी खेत की कही खलियान की"-हम पूछते हैं, नाई के लक्षण आप बतलाते हैं नापित के लक्षण? धन्य हो महाराज! नापित के लक्षण किस ने पूछे हैं? नापित के लक्षण करने बैठे तो वहां भी झींकना पड़ा। अवच्छेदकावच्छिन्न की चक्की ही पीसने लगे! यदि आप अपने चेलों को कह दें कि "गीदड़ के लक्षण जिस में हों, वही गीदड़ होता है" तो मैं समझता हूं कि वे इतने से अवश्य ही गीदड़ को

पं० लक्ष्मीनारायण जी का उत्तर—

आप से हमारे लक्षण में कोई दोष देते न बना किन्तु शब्द कल्पद्रुम के व्युत्पत्तिरूप लक्षणों में जो दोष दिया है वह भी सरलता के प्रकृतार्थ को न समझ कर दिया है प्रकृत में सरलता का अर्थ उदारता है दक्षिणे सरलौदारौ—नापित शब्द शब्द कल्पद्रुमादि कोषकारों के मत में योगरूढ़ि है, रही अवच्छेदकावच्छिन्न की बात उस का उत्तर यह है:-

न वेत्ति यो यस्य गुण प्रकर्षं
सतस्य निन्दां नितरां करोति

पहचान लेंगे!!! बेचारे शास्त्रकारों को इतनी बुद्धि कहां थी जो, आपके समान लक्षण कर सकते!

आप के नाई के लक्षण पूछे जाने पर हमने नापित का लक्षण इस कारण किया है कि आपने स्वयं ही न्यायी वर्ण निर्णय पुस्तक के पृष्ठ १५ में नाई का पर्य्याय 'नापित' लिखा है।

इस ही सम्बन्ध में ग्रन्थकर्त्ता की तर्क वितर्क

भाई रेवती प्रसाद जी! कहो आप शास्त्रार्थ करते हैं या तमाशा? हमें विशेष दुःख इस बात का होता है कि आपने व आपके पिताजी ने स्वर्गवासी श्रीमान् ठाकुर साहब कर्णसिंह जी आर्य्य का धान्य बहुत कुछ खाया है तिन के सुपुत्र जोबनेराधीश ठाकुर नरेन्द्रसिंह जी महाराज भी एक सच्चे आर्य्य हैं जिन के कृपा कटाक्ष द्वारा ही आपने गुरुकुल ज्वालापुर में Private विद्यार्थी रहकर कुछ संस्कृत की शिक्षा पं० भीमसेन जी द्वारा ग्रहण की। अब कहिये आपने दक्षिणा स्वरूप में आर्य्य होते हुए समाज के सिद्धान्त पर क्यों हड़ताल फेर दी? क्या आप का यह कर्तव्य कृतज्ञता प्रकट करता है? आप अपनी आत्मा के विरुद्ध जान बूझ कर क्यों पाप कमाते हैं, परमेश्वर सर्वान्तिर्यामी है आप को इसका फल अवश्य मिलेगा। क्योंकि आप जानबूझ कर 'नाई' और 'नापित' में भिन्नता बतला रहे हैं सो कैसे? आपने अपनी 'न्यायी वर्ण निर्णय' के पृष्ठ १४-१५ में लिखा है:—

(क) **नाय-नापित-न्यायी** ये तीनों एक ही शब्द माने हैं।

(ख) फिर आपने 'नापित' शब्द की सिद्धि भी की है।

(ग) पुनः—आपने नापित शब्द का अर्थ 'केशच्छेदक' लिखा है।

(घ) पुनः—

सूतके प्रेतके वापि, दीक्षाकालेऽथ वापनम्।
नाभेरूर्ध्वंतु वपनं, तस्मान्नापित उच्यते॥

(ङ) जैसे आपने उपरोक्त लेखानुसार न्यायी और नापित एक ही लिखे व माने हैं तैसे ही आपने अपनी पुस्तक में न्यायी और न्याई ये दोनों एक ही पर्य्यावाची शब्द माने हैं

देखो न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ १७

(च) नापित शब्द की उत्पत्ति 'न्यायी वर्ण निर्णय' के पृष्ठ १६ में भी आपने लिखी है।

(छ) पुनः पृष्ठ २०, २१, में भी नापित शब्द के लक्षण लिखे हैं।

(ज) न्यायी वर्ण निर्णय पृष्ठ १५ में भी आपने ही न्यायी शब्द को सिद्ध करते हुए लिखा है "न्यायी–नाई" शब्द इस समुदाय के लिये सब से अधिक प्रचलित है। हमारी समझ में पहले ये न्यायी कहलाते होंगे जिसका प्रसिद्धार्थ 'न्याय करने वाला' है। साधारण बोल चाल में न्यायी कहते कहते 'नाई' कहने लगे। संस्कृत शब्द यह ही है, इसलिये हम लोग नायी के स्थान में "न्यायी" शब्द का ही प्रयोग करेंगे। यहीं शब्द नायी, नाई, और नापित का बोधक होगा"। अब आपही के उपरोक्त ८ प्रमाणों से आपका चित्त एकाग्र हुआ या नहीं? अब कहिये पं० लक्ष्मीनारायण जी ने नाई के स्थान में नापित के लक्षण बतला दिये तो क्या बुरा किया?

जिस प्रकार आपने अपनी पुस्तक में कहीं नायी कहीं नाई तो कहीं न्यायी लिखा है तथा कहीं नापित लिखा है तैसे ही भाषा भाषी लोग 'नाई' बोलते हैं और आपने भी अपनी पुस्तक में ऐसा ही माना है, इसलिये भाषा के नाई शब्द के आपने लक्षण पूछे और पं० लक्ष्मीनारायण जी ने यदि नाई पर्य्यायवाची संस्कृत शब्द 'नापित' के लक्षण बतला दिये तो क्या पाप किया? बात तो एक ही हुई चाहे नाक कहो चाहे नासिका कहो अस्तु!

अब रेवतीप्रसाद जी के स्वजाति भाई तुलसीप्रसाद जी नाई ने 'नायकुल की उत्पत्ति' नामक पुस्तक के [२] टाइटिल पेज़ पर ही लिखा है:—

"तुलसीप्रसाद ठाकुर ने अपने नायी भाइयों के हितार्थ बनाया।"

इस ही 'नाई' शब्द को कोई नाई, कोई नायी, कोई न्यायी कोई नाऊ और कोई नापित तथा कोई नेवगी कहते रहते हैं अतः भाषा में ये सब शब्द एक ही हैं।

(क) पुनः तुलसीप्रसाद जी ने 'नायकुल की उत्पत्ति' नामक' पुस्तक के पृष्ठ ५वें में लिखा हैः—

'नायी व नापित शब्द पर विचार' इससे भी नायी, नाई व नापित ये तीनों शब्द एक ही तो सिद्ध होते हैं।

(ख) पुनः—

नायी व नाऊ ये दोनों शब्द भी एक ही माने हैं।

(३) कः—नाई जाति के एक मथुरादत्त जी ने 'कुलीन ब्राह्मण भास्कर' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की है उसके टाइटिल पेज पर लिखा है कि "नाई कहलाने वाले ब्राह्मणों के वास्ते"

(ख) पुनः इस ही पुस्तक के पृष्ठ ३ में लिखा है किः—

"नाई कहलाने वाले ब्राह्मण भूल गये"

(ग) पुनः—पृष्ठ ४ में देखियेः—

नाई कहलाने वाले ब्राह्मणों के ज्ञानार्थ परमाण।

(घ) पुनः पृष्ठ ५ में लिखा हैः—

नायी वा नाई

(ङ) आगरा नाई सभा के महामन्त्री रेवतीप्रसाद जी नाई जो इस शास्त्रार्थ में नाइयों की ओर से मुख्य हैं उन्होंने नाई सभा के छपे हुये Letter-form पर पं० लक्ष्मीनारायण जी को कई पत्र लिखे हैं उन लेटरफार्मों पर छपा है "कार्यालय अखिल-भारत-वर्षीय नाई जातीय महा सम्मेलन" इससे भी प्रमाणित होता है कि नायी, नाई, नाऊ, न्यायी और नापित ये सब एक ही शब्द हैं यदि

रेवतीप्रसाद जी अब भी कहें कि नहीं, तो उन्हें अपनी क़लम से ऐसे Letter form पर लिखना ही नहीं चाहिये था—और इन्हीं के महामंत्रित्व में ऐसे फार्म ही क्यों छुपाये गये ? अन्यथा लैटर फार्म में भी नाई शब्द के स्थान में रेवतीप्रसाद जी का आविष्कृत न्यायी शब्द होना चाहिये था परन्तु सत्य सत्य ही रहता है अतएव ब्राह्मण बनने वाले नाइयों द्वारा भी सत्य ही प्रकाश हो गया, देखें अब रेवतीप्रसाद जी क्या कहते हैं ?

प्रियवर रेवतीप्रसाद जी ! जरा उपरोक्त प्रमाणों पर दृष्टि डालें कि आप ने जानबूझ कर अपनी आत्मा के विरुद्ध अपने प्रश्न में नाई और नापित शब्द के सम्बन्ध में उल्टी डाट क्यों बतलायी ? जब उपरोक्त इतने प्रमाणों से सिद्ध है कि नाई, नायी, नाऊ और नापित ये सब एक ही शब्द हैं तो फिर वितण्डावाद करके लोगों को क्यों भ्रम में डालते हैं ? क्योंकि हम आपको आपके लेख का प्रमाण, तथा आपके दो अन्य नाई भाइयों की पुस्तकों के प्रमाणों का उपरोक्त संग्रह दिखला चुके हैं फिर भी आप सच्चे सो कैसे ?

यदि आप अपने लेख को भी न मानें और अपने अन्य दो भाइयों के लेखों को भी न मानें तो अपने गुरु पं० भीमसेन जी से पूछिये तथा पूज्यपाद श्री स्वामी दयानन्द जी की संस्कारविधि को देखिये सर्वत्र नाई व नापित शब्द ही आया है।

नाइयों का प्रश्न	पंडित जी का उत्तर
(५) आपसे हमारी खरी बातों का कुछ भी उत्तर न बन पड़ा और उनको गाली गलौज कह कर टाल देना आपकी शास्त्रार्थ की अयोग्यता का सूचक है।	(५) आप की किसी खरी बात का उत्तर देने के लिये हमने यह कथा नहीं चलाई है किन्तु नाइयों के ब्राह्मणत्वाभाव सिद्ध करने के लिये चलाई है, इस कारण भगवान ऐसी खरी बातों के प्रश्नोत्तरों का भार भवत् सदृश खरों के ही ऊपर रक्खें।

नाइयों का प्रश्न	पंडित जी का उत्तर
(६) हम अपने गत पत्र में स्पष्ट बतला चुके हैं कि हमारा आह्वान और आपकी इच्छा	६ मौखिक शास्त्रार्थ की बात का उत्तर हम पूर्व पत्र में दे चुके हैं।

मौखिक शास्त्रार्थ के लिये थी. परन्तु अब आप उससे पीठ दिखाते हैं तो आपकी इच्छा! मैदान छोड़ भागना ही पराजय का पर्य्याप्त चिह्न है। अस्तु जब **मौखिक शास्त्रार्थ से पराङ्मुख होकर** लिखित शास्त्रार्थ के मैदान में आया चाहते हैं, तो ऐसे ही सही! परन्तु फिर हम आपको चिताये देते हैं कि हमारे उपरोक्त दोनों प्रश्नों का ठीक २ उत्तर देते हुए अपना पक्ष स्थापित करके खड़े हो जाइये। पड़े पर प्रहार करना हम उचित नहीं समझते।

नोटः—प्रिय रेवतीप्रसाद जी! आप लिखित शास्त्रार्थ से घबराकर मौखिक शास्त्रार्थ की प्रेरणा क्यों करते हैं? क्या आप यह नहीं जानते कि लिखित शास्त्रार्थ में मनुष्य दोनों ओर से बंध जाते हैं, कोई भी अपने वाक्यों को अदल बदल नहीं कर सक्ता और अपने कथन से कोई भी बाहर नहीं जा सक्ता और जो शास्त्रार्थ के मुख्य विषय को छोड़कर इधर उधर फिसलता है तो विद्वानों में उस का उपहास होता है क्योंकि लिखित शास्त्रार्थ में जो Round to the Point विषय से बाहिर हुआ कि, उस ही की पराजय के चिह्न प्रकट होने लगते हैं। परन्तु मौखिक शास्त्रार्थ में उपरोक्त बातों के विपरीत सब सुभीते मिल जाते हैं इसलिये निर्बल पक्षवाले लोग मौखिक शास्त्रार्थ ही ढूंढा करते हैं अतः प्रकट हुआ कि आप भी इसी विचार से मौखिक शास्त्रार्थ चाहते थे।

ग्रन्थकर्त्ता

नाइयों का प्रश्न।

(७) हमने अपने पौष शु० ५ के पत्र में आपसे पूछा था कि आर्ष ग्रन्थों में आप किन २

पंडितजी का उत्तर।

आर्ष ग्रन्थों में इत्यादि आशङ्का का उत्तर भी हम दे चुके हैं, तथापि पुनः देखिये कि चतुर्दश-

ग्रन्थों को परिगणित करते हैं ? आपने कुछ उत्तर नहीं दिया।

बतलाइये और आप्त ग्रन्थ आप किन २ को मानते हैं ?

विद्या व धर्म प्रस्थानों को हम आप्त वाक्य व आर्ष मानते हैं। 'मन्त्र द्रष्टारो ऋषयः' इस निरुक्त-प्रमाणानुसार मन्त्र द्रष्टा ऋषियों से प्रोक्त व कृत ग्रन्थ आर्ष कहलाते हैं।

नाइयों का प्रश्न।

(८) कृपया यह भी लिखिये कि आप 'नाई' को जाति मानते हैं वा और कुछ ?

ह० रेवतीप्रसाद शर्म्मा *
महामंत्री।
माघ शु० ६ वि० सं० १९७८

पं० लक्ष्मीनारायण जी का उत्तर।

यह हम पूर्व में लिख चुके हैं कि जिस प्रकार जन्य जनक भावेन ऊषर भूमि गोधूमवती इत्यादि नहीं हो सकती उस ही प्रकार नापित भी समवायेन ब्राह्मणत्ववान कभी नहीं हो सकता यही कारण है कि शास्त्रकारों ने नापित का कोई भी वर्ण न मानकर वर्णशंकर माना है देखिये प्रमाण:—

> तासां सङ्कर जातेन
> बभूवुर्वर्णसङ्कराः।
> गोप नापित भिल्लाश्च
> तथा मोदक कूबरौ ॥
>
> (ब्रह्मवैवर्त्त पुराणे)

वर्णसंकर जाति का बाधक होता है अर्थात् उस में ब्राह्मण-

---

* जाति से आप नाई हैं।

त्वादि शुद्ध जाति नहीं रहती†
इस में भी निम्नलिखित प्रमाण
लीजियेः—

अतएव न सङ्करः भूतत्व मूर्तत्ववत्, परस्परोत्पन्ना- भाव सामानाधिकरण्ये सति, जात्यन्तरेण सामा- नधिकरण्या भावात् ॥

वैशेषिक दर्शन भाष्ये १।१।३

यही कारण है कि धर्म-शास्त्रकारों ने नापितों का वर्णन वर्णसंकर प्रकरण में ही सर्वत्र किया है, इस लेख से हमने सिद्ध कर दिया कि नापित में ब्राह्मणत्वादि कोई जाति नहीं रहती किन्तु वह अश्वतर के समान संकर जाति वाला है। इस समय इतना ही लिखते हैं, आवश्यकता हुई तो पुनः भी लिखेंगे।

इति शिवम्

—माघ शु १४ वि० सं० १९७८

ह० पं० लक्ष्मीनारायण
सनातन धर्म विद्यालय,
फ़र्रुख़ाबाद ।

---

† नाई व नापित वर्णसङ्कर हैं इस विषय को भले प्रकार प्रमाणों सहित सप्तखंडी जाति निर्णय प्रथम भाग में लिखा जा चुका है तहां भी देखियेगा ।
ग्रन्थकर्ता ।

(१) रेवतीप्रसाद जी का पत्र

श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी! आपका माघ शुक्ला १४, १९७८ वि० का पत्र मिला। उत्तर में विदित हो कि-आपने जो छल करके, हमारे शब्दों की आकांक्षा के विरुद्ध प्रलाप करते हुए, हमें गालियां बकी हैं, वे आपको ही फबती हैं; क्योंकि आपतो गालियों के आगार ही हैं! आप गाली न देंगे तो कौन देगा? यही आप का पाण्डित्य है! प्रतीत होता है कि होली का पागलपन आप पर भी सवार हो गया है! अस्तु!

पं० लक्ष्मीनारायण जी का उत्तर।

श्री० रेवतीप्रसाद जी!

फाल्गुन कृष्णा ८ सं० १९७८ को लिखे हुए आपके पत्रोत्तर में निवेदन है कि-अब का पत्र भी जैसे आप खरे हैं वैसा ही मधुर खरा है हमारे निकट ऐसे खरे शब्द उत्तर के लिये पर्य्याप्त नहीं हैं, इसलिये आपने जो...इत्यादि सवार होगया है इत्यन्त आपकी मधुरता हम आपको ही परिवर्त्तित करते हुए शास्त्रीय चर्चा ही पर पुनः लिखते हैं।

नोटः—पं० लक्ष्मीनारायण जी के प्रति "पागलपन" आदि शब्दों का प्रयोग सभ्यता से बाहर कर्त्तव्य है।

ग्रन्थकर्त्ता।

(२) हमारे दूसरे प्रश्न के उत्तर में जो आपने नाइयों को वर्णसंकर लिखा है वह आपके इस लेख के विरुद्ध होने के कारण कि "वर्ण चार हैं यह तो सभी मानते हैं इस पर हमारा आपका विवाद नहीं, है पांचवां मानता ही कौन है" अमान्य हो गया-यह पांचवां वर्णसंकर कहां से निकल पड़ा! और इसकी भी परीक्षा शास्त्रार्थ के समय करेंगे।

(२) जिस प्रकार शास्त्रकारों ने वर्णों का वर्णन किया है उसी प्रकार वर्णसङ्करों का भी वर्णन किया है मन्वादि सभी धर्मशास्त्रकारों की यह शैली है जिस धर्मशास्त्र से आप चाहें उसी से हम यह प्रमाणित करने को तय्यार हैं 'नास्तितुपञ्चमः' कह कर धर्मशास्त्रकार ने-पांचवें वर्ण का निषेध किया है न कि वर्णसंकर का अतएव आग्रिम वर्णसंकर

का प्रकरण भी ठीक बैठता है * इस कारण त्रिकाल में भी हमारे सिद्धान्त को आप अमान्य नहीं ठहरा सकते। क्या आपको शास्त्रार्थ शब्द के अर्थ मालूम हैं? यदि मालूम हैं तो बतलाइये कि हम जो यह पत्र व्यवहार चला रहे हैं सो शास्त्रार्थ नहीं तो क्या है? शास्त्रार्थ में क्या विशेषता होती है जो हमारे इस पत्र व्यवहार में नहीं है।

(३) अवच्छेदकावच्छिन्न के विषय में जो आपने "नवेनियोः यन्त्र०" इत्यादि लिखा है, सो जब व्युत्पादि गौणादि की ही समझ में आपका "अवच्छेदकावच्छिन्न" नहीं आया, तो हम तो क्योंकर जान सकते थे? परन्तु यह तो आप भी जान गये कि इस "अवच्छेदकावच्छिन्न" को नहीं सीखने से ही छुटकारा न होगा नापित शब्द योगरूढ़ि मान कर भी यदि आप विचार करें तो भी आपके लक्षण की नापी

[३] पुनः भी हमने किये गये नापित लक्षण में आपने कोई दोष नहीं देते बना, क्या आपको यह मालूम है कि अवच्छेदक किसे कहते हैं और इसका बोधक न्याय दर्शनकार के शब्दों में कौन शब्द आता है? यदि मालूम है तो सप्रमाण प्रकट कीजिये, शब्द कल्पद्रुम के व्युत्पत्ति रूप लक्षण में भी कोई दोष नहीं क्योंकि वे उस शब्द को वर्णसंकर विशेष में योगरूढ़ि मानते हैं यह हम प्रथम ही लिख चुके हैं जिसका

---

* प्रिय रेवतीप्रसाद जी! यहां आप चाल क्यों चलते हैं देखिये आपने ही अपनी पुस्तक 'न्यायी वर्ण निर्णय' के पृष्ठ १७ में न्यायी जन्म स्तम्भ में लिखा है:—"किन्हीं लोगों का मत है कि ऐसी सन्तान वर्णसंकर होने के कारण पतित हो जाती है"

पुनः आपके स्वजाति भाई तुलसीप्रसादजी नाई ने अपनी पुस्तक ना० कु० उत्पत्ति के पृष्ठ ३ में लिखा है कि "अनुलोम व प्रतिलोम से उत्पन्न हुये वर्णसंकर व चाण्डाल के नाम से प्रसिद्ध किये गये" कहिये अब तो सन्तुष्टि हुई या नहीं?

ग्रन्थकर्त्ता

में व्याप्ति नहीं होती ! सरलता का अर्थ उदारता भी करलें और यह भी (दुर्जन तोष) से मान लें कि नायी उदारता को प्राप्त नहीं होता, तब भी तो आपका लक्षण अति व्याप्ति दोष से युक्त है। किसी भी कृपण या निर्दयी मनुष्य में उदारता नहीं हो सकती ! इसलिये नायी का ठीक ठीक लक्षण कर दीजिये और शास्त्राथ के लिये तय्यार हो जाइये !

(४) हमने आपको आर्ष ग्रन्थों के नाम परिगणन करने के लिये लिखा था परन्तु आपने ऐसा नहीं किया—कृपया लिखिये कि अमुक अमुक ग्रन्थ चतुर्दश विद्या व धर्म प्रस्थानों में सम्मिलित हैं ?

फाल्गुन कृष्णा ८ सं० १९७८
ह: रेवतीप्रसाद

खण्डन आप से कुछ नहीं बना इस कारण हम से किया गया नापित ब्राह्मण सर्वथा निर्दोष सिद्ध होगया यदि केवल यौगिक इस शब्द को माना जावे तब निर्दयी मनुष्य में भी इसका अर्थ बैठ सकता है जैसा कि पङ्कज को केवल यौगिक माना जावे तो पङ्कज का अर्थ "शैवाल" भी हो सकता है परन्तु ऐसा किसी कोषकार ने नहीं माना इससे सिद्ध हुआ कि कमल विशेष में पङ्कज के समान वर्णसंकर विशेष में नापित शब्द योगरूढ़ि है इस कारण कोई दोष नहीं।

(४) हम आप्त व आर्ष ग्रन्थों का परिगणन 'पुराण न्याय-मीमांसा० इत्यादि याज्ञवल्क्य श्लोक द्वारा प्रथम ही कर चुके हैं उसे समझने का स्वयं प्रयत्न कीजिये अथवा किसी धर्मशास्त्री की सेवा कर उस श्लोक को सार्थ पढ़ लीजिये मालूम हो जायगा हम तो शास्त्रार्थ करही रहे हैं—तय्यार क्या हो जावें जो आप लिखते हैं कि तय्यार हो जाइये, हां आप तय्यार अवश्य नहीं हैं तभी तो अब तक आपसे हमारे छः प्रश्नों में से एक का भी उत्तर नहीं बना। इतिशिवम्

ह: लक्ष्मीनारायण
सनातनधर्म विद्यालय फर्रुखाबाद
फा० कृ० ११ सं० १९७८

(१) रेवतीप्रसाद जी का पत्रः--
श्री लक्ष्मीनारायण जी !

हमारे भ्रमण से लौटने पर आपका पत्र मिला। उत्तर में विदित हो कि-जिसको आप वर्णसंकर कहते हैं, वह चार वर्णों में नहीं है तो पांचवां क्या है ? क्या आप इस स्मृति वाक्य का निरादर कर सकते हैं ?
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः। चतुर्थ एव जातिस्तु शूद्रोनास्तितु पञ्चमः॥ मनु०
यदि नहीं तो अब भी बतलाइये मायी किस वर्ण में हैं ?

पं० लक्ष्मीनारायण जी का उत्तर
श्रीयुत रेवतीप्रसाद जी !

फा० शु० ५ वि० सं० १९७८ को लिखे गये भवदीय पत्र के उत्तर में निवेदन है कि (१) प्रथम कोटि आपकी यह है कि "जिसको आप वर्णसङ्कर कहते हैं वह चार वर्णों, में नहीं है तो पांचवां क्या है सुनिये यह चार वर्णों में नहीं है इसी कारण तो पांचवां वर्णसङ्कर कहलाया, यदि चार वर्णों में उसका समावेश हो जावे-तो वर्णसंकर ही न रहे वर्णसंकर तो तभी कहा गया जब कि किसी वर्ण के अन्तर्गत वह नहीं हो सकता अतएव मनुस्मृति दशवें अध्याय के पांचवें श्लोक से लेकर साठवें श्लोक तक के वर्णसंकर प्रकरण में मनुजी का कथन ठीक बैठ सकता है।

व्याभिचारेणवर्णाना
मवेद्यावेदनेनच।
स्वकर्मणाञ्चत्यागेन
जायन्तेवर्णसङ्कराः॥
मनु० अ० १० श्लो० २४

तथा--
सङ्करेजातयस्त्वेताः
पितृमातृ प्रदर्शिताः।
प्रच्छन्नावाप्रकाशावा
वेदितव्याःस्वकर्मभिः ॥४०॥

अतएव च—

सान्तरालक संयुक्तं
सर्वं संक्षिप्य चोच्यते।

इत्यादि औशनस्मृति, आदि का कथन भी ठीक बैठ सकता है। इस कारण यदि ब्राह्मणः क्षत्रियो-वैश्य—इत्यादि श्लोक को यदि प्रमाण कोटि, में आप मानते हैं तो तदग्रिमश्लोकवर्णित वर्णसङ्कर प्रकरण का अपलाप किस प्रकार कर सकेंगे अर्थात् कदापि नहीं। जिस भी स्मृति आदि के आधार पर चार वर्ण सिद्ध किये जायेंगे उसी के आधार पर पांचवां वर्ण सङ्कर भी सर्वथा सिद्ध है यह आपकी प्रथम कोटि पर उत्तर हुआ द्वितीय कोटि आपकी यह है-क्या आप इस स्मृति वाक्य का निरादर कर सकते हैं-ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्य स्त्रयोवर्णा द्विजातयः। चतुर्थ एक जातिस्तुशूद्रोनास्तु पञ्चमः॥ यदि नहीं तो अब भी बतलाइये नाऊ (नाई) किस वर्ण में हैं-इसका भी उत्तर लीजिये। हम इस स्मृति वाक्य का निरादर नहीं करते इस स्मृति वाक्य का निरादर तभी हो सकता है जब कि हम चार वर्णों को न मानकर एकवां, तीनवां, पाचवां वर्ण मानने लगें ऐसा न कर हम चार ही

वर्ण मानते हैं क्योंकि चार के अतिरिक्त वर्ण हो नहीं सकता अतएव तो पांचवां वर्णसङ्कर माना गया, नास्ति का प्रतियोगी उक्त श्लोक में वर्ण पड़ा हुआ है इससे पांचवें वर्ण का ही निषेध 'नास्तितुपञ्चमः' कहने से सिद्ध हुआ न कि वर्णसङ्कर का, तभी तो वर्णसङ्करों का निरूपण अग्रिम प्रकरण में ठीक बैठेगा जैसा कि हम अभी पूर्व में सिद्ध कर आये हैं। और तभी अर्जुन का यह गीतावाक्य ठीक बैठ सकता है 'स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायतेवर्ण सङ्करः। संकरो नरकायैवकुलघ्ना-नांकुलस्य च॥' कहिये और भी प्रमाणों की आवश्यकता है वर्ण-सङ्कर की सिद्धि में अथवा अलम् यदि और भी आवश्यकता हो तो लिखियेगा अब के पत्र में हम आपको एक पूरा पत्र ही इस विषय के प्रमाणों से भरकर लिखेंगे इस इतने लेख को लिख-कर हमने वर्णसङ्कर की सिद्धि करते हुए नाऊओं को वर्णसङ्कर सिद्ध कर दिया अब देखना है कि आगे आप इस पर क्या लिखते हैं। *

---

* समीक्षा

वाह! खूब सफाई के हाथ दिखाये अब तो आप 'वर्णसंकर' ही शास्त्रों में नहीं मानते तब आप व आपके भाई तुलसी प्रसाद जी स्वरचित पुस्तकों में

(२) नायी के लक्षण के विषय में हमारा वक्तव्य है कि हमने आपको अपने मतानुसार अव्याप्ति और आपके मतानुसार अतिव्याप्ति दोष आपके किये लक्षण में दिखलाये हैं, उनका परिहार कीजिये। अन्यथा पाण्डित्य की डींग न मारिये। आप २ मास के अन्तर में नायी में 'नायी' के लक्षण ही न कर पाये। लक्षण हुये विना शास्त्रार्थ कैसे हो? विशेष आवश्यक होने पर फिर लिखेंगे—

ह० रेवतीप्रसाद
फाल्गुण शुक्ला ५ वि० १९७८

तृतीय कोटि आपकी नाउओं के लक्षण वाली रही इसका उत्तर भी लीजिये समवायसम्बन्धावच्छिन्न इत्यादि लेख से जो हमने नाऊ का लक्षण किया था उस में जो आपने श्वपुच्छ में अतिव्याप्तिदी थी उसका निराकरण हम सरल शब्द के प्रकृतार्थ को लिखकर कर ही चुके हैं तब अतिव्यापात्यादि दोष किस प्रकार किस स्थल में रह गया सङ्कटना पूर्वक प्रमाणित कीजिये जिस में कि हम भी उद्धार के लिये लेखनी को उठावें अच्छा तो अब आप हमसे किये गये प्रकरणादि पर षट् प्रश्नों का उत्तर लिखिये इतिशिवम्।

ह० लक्ष्मीनारायण शर्मा
सनातनधर्म विद्यालय फ़र्रुखाबाद
फा० शु० ८ वि० सं० १९७८

कैसे लिख आये हो? कृपया आपकी चिट्ठी फाल्गुण कृ० ८ वि० सं० ११७८ के नीचे हमारा फुट नोट अवश्य देखलीजियेगा।

विशेष देखना हो तो सप्तखंडी जाति निर्णय प्रथम भाग में 'नापितोत्पत्ति' प्रकरण देखियेगा। पं० लक्ष्मीनारायण जी द्वारा लिखित श्लोकों के अतिरिक्त उपसंहार में हम निम्नि लिखित श्लोक और भेंट करते हैं:—

शूद्रादायोगवः क्षत्ता चण्डालश्चाधमो नृणाम्।
वैश्य राजन्य विप्रासु जायन्ते वर्ण संकराः॥१२॥

मनु० अ० १० श्लोक० १२

पुनः लाहौर की छपी मनुस्मृति अ० १० के आरम्भ में ही संस्कृत प्रोफेसर जी ने फुट नोट लिखा है—"चारों वर्णों के कर्तव्य कहकर अब वर्णों की और वर्णसंकरों की उत्पत्ति और उनकी वृत्तियें बतलाते हैं। पृष्ठ ५५३

(१) रेवतीप्रसाद का पत्र।—

श्री० लक्ष्मीनारायण जी ।

आपके चैत्र शु० १४ के उत्तर में निवेदन है कि हम आपके दिये हुये उत्तरों में दोष दिखाते हुये, अपने सिद्धान्त का पोषण क्रमशः "नायी ब्राह्मण" नामक पाक्षिक पत्र में कर रहे हैं, आप उसे देखते जावें, सब बातों का पता लग जावेगा, आपने अपने प्रथक् प्रथक् पत्रों में प्रथक् २ लक्षण किये हैं, जिन्होंने आपके पक्ष को सर्वथा निर्मूल कर दिया है इतिशिवम् ।

ह० रेवतीप्रसाद
चै० शु० ८ सं० १९७९ वि०

पं० लक्ष्मीनारायणजी का उत्तरः—

श्री रेवतीप्रसाद जी ।

चै० शु० ८ विं० सं० १९७९ को लिखे गये भवदीय पत्र का उत्तर इस प्रकार है कि लिखित पत्रों द्वारा अब तक आप अपने को ब्राह्मण प्रमाणित नहीं कर सके और न हमसे किये गये पट् प्रश्नों का उत्तर ही दे सके तब पक्षाघात ग्रसित पाक्षिक का सहारा लेकर आप कया अपने को सनाथ करेंगे यह भी हमें देखना है अस्तु जिन अङ्कों में आप अपना यह वृत्त दिखलावें उसकी एक एक प्रति हमारे निकट भी प्रेषित करने का कष्ट उठाइयेगा । हमारे प्रथक् प्रथक् लक्षण ने किस प्रकार हमारे पक्ष को सर्वथा निर्मूल कर दिया सो तो कृपा कर सङ्घटना पूर्वक प्रमाणित् कीजिये कया श्रीकृष्ण और विदुर जी के पण्डित लक्षण को कई एक प्रथक् प्रथक् करने से श्रीकृष्ण, और विदुर जी का पक्ष निर्बल पड़ गया था, अब ऐसा नहीं हुआ था, इस समय तब ऐसा हमारे पक्ष में ही क्यों होने लगा यह तो लक्षण करने की परिपाटी है कि जैसे वादी लक्षण में दोषोद्घाटन करता जावे, वैसे वैसे प्रतिवादी लक्षण

को निवेश प्रवेश द्वारा परिष्कृत करता जावे कृपा पूर्वक आंख खोलकर देखिये कि महाभाष्य-कार ने नित्यत्व और जाति के ही लक्षण में कितना निवेश प्रवेश किया है इससे सिद्ध हुआ कि हमसे किये गये नापित् लक्षण में कोई दोष नहीं यदि आपको कुछ दोष परितीक्षत होता है तो स्पष्ट लिखिये हम उसका मार्जन करने के लिये परिकर-बद्धेन ,उपस्थित हैं । अच्छा तो हमारे षट् प्रश्नों का उत्तर करते हुए अपने को ब्राह्मण प्रमाणित कीजिये इति शिवम् ॥

लक्ष्मीनारायण

सनातनधर्म विद्यालय फ़रुखाबाद,
चैत्र शु० १४ वि० सं० १९७६

(१) नाइयों की ओर से रेवतीप्रसाद का पत्रः—

श्री० लक्ष्मीनारायण जी !

पत्र आपका फाल्गुन शु० ८ का मिला आपने हमारे दोनों प्रश्नों का अभी तक ठीक उत्तर नहीं दिया। जब आपके और मनु के सिद्धान्तानुसार मनुष्य जाति के चार ही वर्ण हो सकते हैं पांचवां नहीं, तो वर्णसंकर पांचवां मानना आपके लेख में व्याघात सिद्ध है। और परस्पर

पं० लक्ष्मीनारायण जी का उत्तरः—

श्री० रेवतीप्रसाद जी !

फाल्गुण शु० १४ वि० सं० १९७८ को लिखे गये आपके पत्रोत्तर में निवेदन है कि आपके दोनों प्रश्नों का उत्तर हम दे चुके हैं यदि हमारे उत्तर आपको समाचीन नहीं जान पड़ते हैं तो अनेक प्रश्न और हमारे उत्तरों को अनुपूर्वी लिखते हुए हमारे उत्तरों का खण्डन कीजिये हम उनका

विरुद्ध लेख मनुस्मृति में होने के कारण वह स्वतः अप्रमाण हो गई। हमारे समक्ष आपको वैदिक प्रमाण देने चाहिये, यदि नापितों के वर्णसंकर होने के विषय में आपके पास कोई वैदिक प्रमाण हो तो दीजिये।

(२) आपके किये नायी के लक्षण में हम सर्वथा दोष दिखा चुके हैं। सरल शब्द का प्रकृतार्थ उदार लिख कर जो आपने अपने दोष का परिहार करना चाहा था, वह आपसे न हुआ। क्योंकि "नाप्नोति सरलतामिति नापितः" ऐसा कहने से किसी कृपण-मनुष्य, यहूदी आदि को आप 'नापित' मानने के लिये बाधित होंगे और यदि आपने उसको वर्णसंकर कह दिया तो लेने के देने पड़ जायँगे।

इसलिए हम आपको फिर एक और अवसर देते हैं कि 'नायी' के ठीक ठीक लक्षण कर दीजिये और हम अति शीघ्र "नाइयों का ब्राह्मणत्व" सिद्ध कर देंगे।

ह० रेवतीप्रसाद
फाल्गु शु० १४ सं० १९७८ वि०

मण्डन करेंगे तथा प्रमाणित कीजिये कि मनुस्मृति के इस प्रकरण में परस्पर विरुद्धता क्या है विरुद्धत्व और अनुकूलत्व किन हेतुओं पर अवलम्बित हैं उनका परिगणन करते हुए प्रकरण में सामञ्जस्य कीजिये समवाय इत्यादि लेख से किये गये नापित लक्षण में आप से कोई दोष देते नहीं बना, शब्द कल्पद्रुम के व्युत्पत्तिरूप लक्षण में भी पङ्कज उदाहरण पुरस्सर लेख से हम आपके कुल दोषों का निराकरण कर चुके हैं यदि यहूदी में आपको दोष जान पड़ता है, तो समन्वयपूर्वक दिखलाइये।

आपके तोषार्थ हम और भी नापित का लक्षण लिखते हैं—

वर्णसङ्करान्यतमत्वेसतिकेशच्छेदनकर्तृत्वादिविशिष्टत्वंनापितत्वम् वैशिष्ट्यविप्रतश्चौर्याद् वैश्याशूद्रान्यतरजायमानपुरुषकुलपरम्पराजन्यत्वसम्बन्धेन।

कहिये यह कैसा नापित का लक्षण हुआ। अच्छा अब बतलाइये कि वेद के अनुबन्ध चतुष्टय से भी अपरिचित-भवन्मा-

ननीय किस वेद-मन्त्र में नापित की उत्पत्ति का वर्णन है जिसमें उसे ब्राह्मण भी 'बतलाया हो तथा, हमारे उन छः प्रश्नों का भी उत्तर दीजिये इतिशिवम्॥

ह: लक्ष्मीनारायण
सनातनधर्म विद्यालय फरुखाबाद
चै० कृ० १४ वि० सं० १९७८

रेवतीप्रसाद जी का पत्र

श्री० लक्ष्मीनारायण जी!

भ्रमण से लौटने पर आपका कार्ड मिला। हम नायियों का ब्राह्मणत्व सिद्ध करने को सर्वथा उद्यत हैं, परन्तु अभी तक आपने 'नायी' के लक्षण ठीक २ नहीं किये, अतः सिद्ध हुआ कि आप शास्त्रार्थ के लिये उद्यत नहीं हैं। और व्यर्थ विवाद से कुछ लाभ नहीं यह विचार कर हमने पाठकों के हितार्थ 'नायी ब्राह्मण' में प्रकाशित कर प्रारम्भ किया है उससे आपको भी ज्ञात होता जायगा। इस समय तक प्रकाशित हुए २ अङ्क भेजते हैं यदि अधिक आवश्यकता है तो २) वार्षिक भेज कर ग्राहक बन सकते हैं। इतिशिवम्

ह: रेवतीप्रसाद शर्म्मा महामंत्री
वै० कृ० ८ सं० १९७९ वि०

पं० लक्ष्मीनारायण जी का उत्तर

श्री रेवतीप्रसाद जी!

वैशाख कृ० ८ वि० सं० १९७९ को लिखे गये भवदीय पत्र का उत्तर इस प्रकार है 'न्यायी ब्राह्मण' ऐसा शब्द क्या आप अनुपूर्वी किसी भी वेदादि आर्ष ग्रन्थ में दिखला सकते हैं यदि नहीं दिखला सकते तो भवत्कपोल कल्पित होने से हरताल क्यों न लगाई जावे जब कि वेदादि-ग्रन्थों के अनुबन्ध चतुष्टय से ही जो अपरिचित है वह क्या जान सकता है कि कौन वचन किस प्रकरण का है इस कारण इस जन्म में यह आपके लिये जानना कठिन है। ब० सू० क्या कहती है जिसे शास्त्रार्थ शब्द के अर्थ आते हैं वह तो कभी ऐसा कहने का साहस कर

नहीं सकता कि आप (ल० ना०) शास्त्रार्थ के लिये उद्यत नहीं। हमसे किये गये लक्षण में आपसे किये गये दोषोद्घाटन का यदि हम समाधान कर सकें तो तभी हमारा लक्षण पुष्ट हो सकता था न कि आपके ढपोलशंखीपन से, कुल बल को लगाकर देखिये कि क्या हमसे किये गये लक्षण का खण्डन आप कर सकते हैं कदापि नहीं! कादपि नहीं!! क्या इस जन्म में आप हमारे पट् प्रश्नों का उत्तर कर अपनी शठता कालिमा को मिटा सकेंगे? इतिशिवम्॥ वै० कृ० १० वि० सं० १६७६

ह: लक्ष्मीनारायण
सनातनधर्म विद्यालय फर्रुखाबाद



शास्त्रार्थ का सारांश

प्रश्न—शास्त्रार्थ क्यों छिड़ा?

उत्तरः—कुछ नाई लोग, नाई जाति को वेद शास्त्रों से ब्राह्मण सिद्ध करने की डींग मारते थे और अपने स्वजाति भाई रेवती प्रसाद जी द्वारा प्रत्येक शहर व गांव में शास्त्रार्थ के लिये चैलेंज (विज्ञापन) दे दिया करते थे, यही नहीं इन्होंने अखबारों में भी चैलेंच छपवा दिये कि "जो कोई नाइयों को ब्राह्मण न माने शास्त्रार्थ करले।"

प्र०—क्या श्रीभारत धर्म महामण्डल तथा विद्वित्परिषत् काशी व काशी की अन्य अन्य विद्वज्जन मण्डलियों के सभ्यों ने, मौज मंदिर

(धर्म व्यवस्था सभा) जयपुर तथा भारत की अन्य २ धार्मिक संस्थाओं के विद्वानों में से किसी ने भी नाइयों के साथ शास्त्रार्थ किया ?

उ०—नहीं किया।

प्र०—क्यों नहीं किया ?

उ०—प्रायः विद्वानों ने गांधीजी के सिद्धान्त के अनुसार परस्पर वैमनष्य बढ़ाना नहीं चाहा, तथा अनेकों विद्वानों ने हम से यह भी कहा है कि कोई शास्त्रीय गूढ़ विषय होता तो शास्त्रार्थ करते क्योंकि "नाई जाति ब्राह्मण वर्ण में है। यह ऐसा ही है, कि बन्ध्या पुत्रवती है।"

प्र०—यह लिखित शास्त्रार्थ कितने दिन तक चलता रहा ?

उ०—मार्ग शु० ६ सं० १६७८ से वैशाख कृ० ८ वि० सं० १६७६ तक अर्थात् ४½ साढ़े चार महीने तक शास्त्रार्थ चलता रहा।

प्र०—साढ़े चार महीने के शास्त्रार्थ में नाइयों ने अपने को क्या सिद्ध किया ?

उ०—कुछ नहीं ! कुछ नहीं ! ! कुछ नहीं ! ! !

प्र०—क्या उन्होंने अपने को ब्राह्मण सिद्ध नहीं किया ?

उ०—नहीं किया ! नहीं किया ! ! नहीं किया ! ! !

प्र०—अजी उन्होंने अपने ब्राह्मत्व पक्ष में कुछ तो वैदिक प्रमाण दिये होंगे ?

उ०—कोई भी नहीं ! कोई भी नहीं ! ! कोई भी नहीं !!!

प्र०—क्या नाइयों ने इस लम्बे चौड़े शास्त्रार्थ में अपने को वेद द्वारा ब्राह्मण सिद्ध नहीं किया ?

उ०—नहीं किया ! नहीं किया ! ! नहीं किया ! ! !

प्र०—नाइयों के प्रश्न के उत्तर में पण्डित जी ने नाइयों को क्या सिद्ध किया ?

उ०—वर्णसङ्कर ! वर्णसङ्कर ! ! वर्णसङ्कर ! ! !

प्र०—शास्त्रार्थ का अन्त कैसे हुआ ?

उ०—जब नाइयों ने देखा कि हम अपने को ब्राह्मण सिद्ध नहीं करसक्के और पं० लक्ष्मीनारायण जी की पाण्डित्यता के सन्मुख शास्त्रार्थ को विशेष नहीं चला सकेंगे तब उन्होंने उत्तर दिया "अपने

सिद्धान्त का पोषण क्रमशः "नायी ब्राह्मण" नामक पाक्षिक पत्र में कर रहे हैं, आप उसे देखते जावें इस समय तक प्रकाशित दो अङ्क भेजते हैं यदि अधिक आवश्यक्ता है तो दो रुपये वार्षिक भेज कर ग्राहक बन सकते हैं।

ह० रेवतीप्रसाद।"

समीक्षकः—पाठक! देख लिया नाइयों ने अपने ब्राह्मणत्व प्रतिपादन को किस तरह टरका दिया? और अपने को ब्राह्मण सिद्ध न कर सके? कहिये नाइयों का ही तो चैलेंज था अब उस चैलेञ्ज की क्या रही? क्या इस ही भरोसे पर चैलेञ्ज दिया गया था? किस के क्या अटकी पड़ी थी कि जो चला कर नाइयों से कहे कि "तुम वर्ण सङ्कर" हो पर जब कोई पूछता है तो विवश जो जैसा होता है उसे वैसा ही कहना पड़ता है, किसी से चलाकर लड़ना उचित नहीं पर जब कोई खम्भ ठोक कर कहे कि आओ कुश्ती लड़लो तो लाचारन उसे पछाड़ना ही पड़ता है। इस ही तरह नाइयों ने भारतवर्ष भर को शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज दे डाला और हमें भी अपनी वही पुस्तक व छपा हुआ चैलेञ्ज रजिष्ट्री द्वारा भेज दिया, तब भी हम चुप ही रहे। पर, कुछ दिन बाद, उन्होंने हमारे नाम पर, चैलेंज छपवा कर रजिष्ट्री द्वारा शास्त्रार्थ कर लेने का नोटिस भी दे ही डाला तब विवश हमें भी नाइयों की पुस्तक का प्रबल खण्डन स्वरूप 'सप्तखण्डी जाति निर्णय" प्रथम भाग द्वारा नाई जाति की इच्छा की पूर्ति करनी ही पड़ी। शेष नाई जाति का सत्कार इस ग्रन्थ द्वारा किया जाता है।

भला पं० लक्ष्मीनारायण जी को क्या पड़ी थी जो २) ख़र्च करके नाई जाति का "नाई ब्राह्मण" पाक्षिक पत्र मंगवा कर पढ़ें, उस में भी वही ढाक के तीनपात के सदृश होगा, अर्थात् जब ४½ महीने के शास्त्रार्थ में नाइयों के ब्राह्मणत्व प्रतिपादन विषय का स्पर्श तक न हुआ तब अब "नायी ब्राह्मण" पत्र में क्या होगा? जब पण्डित लक्ष्मीनारायण जी ने सब से प्रथम यह ही प्रश्न किया कि "नाइयों की उत्पत्ति का वर्ण किस आर्ष ग्रन्थ में लिखा है कि जिस में उन्हें ब्राह्मण बतलाया हो?" यह प्रश्न मार्ग शु० ९ सम्वत् १९७८ को रजिष्ट्री द्वारा नाइयों से किया गया था पर इस प्रश्न का उत्तर

शास्त्रार्थ से भागने तक भी नाइयों ने नहीं दिया। यद्यपि इतने समय में परस्पर अनेकों प्रश्नोत्तर होते रहे। पर इस प्रश्न का उत्तर तो नाइयों की ओर से बन ही न पड़ा।

प्र—"नायी ब्राह्मण" पाक्षिक पत्र से कुछ समझ में नहीं आता इसका क्या भाव है?

उ०—ब्राह्मण बनने वाले नाई समुदाय ने अपना पाक्षिक पत्र निकाला है, उस पत्र का नाम उन्होंने "नायी ब्राह्मण" पत्र रक्खा है। और अपनी नाई जाति सभा का नाम भी उन्होंने "कुलीनब्राह्मण महासभा भारत इटावा वाराही टोला" रक्खा है।

प्र०—ये लोग शास्त्रार्थ से क्यों भागते हैं?

उ०—इन में विद्या नहीं है किन्तु किसी चुश्त चालाक चलते पुरजे स्वार्थी मनुष्य के बहकाये में हैं। देखिये नाइयों की महासभा इटावा के उपप्रधान तथा फ़र्रुखाबाद नाई सभा के मंत्री बाबूराम के पत्र व्यवहार में अनेकों अशुद्धियां हैं। जब भाषा के छोटे छोटे पत्रों में ही ये लोग एक एक दो दो लाइन में एक एक दो दो अशुद्धियां करते हैं तो विचारे क्या शास्त्रार्थ करेंगे? और शास्त्रीय विषय को क्या समझेंगे?

प्र०—क्या सचमुच ऐसा ही है?

उ०—भाषा के छोटे छोटे पांच पत्रों मोटी मोटी इक्तीस अशुद्धियें हैं।

प्र०—तुलसीरामजी उपप्रधान व बाबूरामजी मन्त्री ब्राह्मण बनने वाली नाई सभा के सज्जनों के हिन्दी भाषा के पत्रों में कितनी २ लकीरें थीं?

उ०—भिन्न २ पांच पत्रों में ६५ लकीरें थीं।

प्र०—इन ६५ लकीरों में कितनी अशुद्धियें थीं?

उ०—बहुत छोटी २ अशुद्धियों पर तो हमने कुछ ध्यान ही नहीं दिया है पर बहुत मोटी मोटी व भद्दी भद्दी बालकों की सी ३१ अशुद्धियां हैं तब ऐसी स्थिति में नाई जाति क्या शास्त्रार्थ करे और नाई जाति कौन वर्ण में है इस सिद्धान्त की कसौटी को क्या समझे? अतएव कुछ नाई लोग किसी के बहकाने में अवश्य आ गये हैं इसी कारण से वे लोग अपने को ब्राह्मण कहने लग गये हैं।

ग्रन्थकर्त्ता।

॥ श्रीः ॥

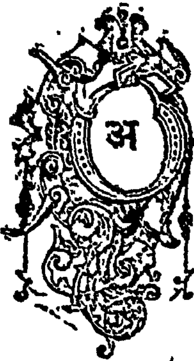
नम्बर १७ अजमेर तारीख ४-१०-१९२४

भारतीय विद्वत्परिषत्

वा

संस्कृत विश्वविद्यालय अजमेर

—※※※—



वलोकितोहि मया फर्रुखाबादीय संस्कृत सनातन धर्म विद्यालयाध्यापकेन पण्डित प्रवरेण श्रीमता लक्ष्मीनारायण शास्त्रिणा सह संजातो नापितानां शास्त्रार्थः।

नापितैर्नापितैरनल्पनिन्द्य चातुरी चञ्चुभिर्द्विजत्वमपि किमुत ब्राह्मणत्वम्, प्रमाणाभावात्, केवलं ब्राह्मणं मन्या नापिता असम्बद्ध प्रलापेय सभ्यवादेषु चैव शूराः "नराणां नापितोधूर्तः" इति न्यायात्।

उपरोक्त पण्डितशोण्डोऽतीव धन्यवादार्होऽग्रजन्मनां येन किल स्वकार्य्याणि तृणेभ्यो मत्वाऽत्र परोपकार कर्माणि श्रमो व्यधायि। तस्य च शास्त्रार्थस्य सम्यक

संपादनं कृत्वा प्रकाशन पटो श्रोत्रिय पण्डित छोटेलाल शर्मणश्चाप्युपकारो नैव जातु विस्मरणीय ॥

प्रधान मंत्री—धरणीधर शर्म्मा
शास्त्री, काव्यतीर्थ, कविभूषण, काव्यालंकार, विद्यारत्न भिषग्विशारद ।

भाषार्थ

॥ श्री ॥

नम्बर १७ अजमेर तारीख ४-१०-१९२४

भारतीय विद्वत्परिषत्
वा
संस्कृत विश्वविद्यालयअजमेर
का

❀ प्रशंसा पत्र ❀



ने फर्रुखाबाद सनातनधर्म संस्कृत विद्यालाय के प्रधानाध्यापक श्रीमान् पण्डितवर लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री जी का नाइयों के साथ किये गये शास्त्रार्थ को देखा। नाइयों ने इस शास्त्रार्थ में बड़ी निन्दनीय चातुरी (उस्तादी) से काम लिया है अर्थात् अपने ब्राह्मणत्व प्रतिपादन में शास्त्रीय प्रमाण न होने से नाई लोग इधर उधर की बातों में ही सम्पूर्ण शास्त्रार्थ को टरकाते

रहे जैसा कि "नर में नाई धूर्त होते हैं" इस शास्त्रीय प्रमाण से सिद्ध है।

अतएव उपरोक्त पण्डित जी महाराज अति ही धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने अपने निज कार्य्यों की हानि करके इस परोपकारी कार्य्य में इतना कष्ट उठाया है।

इस शास्त्रार्थ को सम्यक प्रकार से तय्यार करके योग्यता पूर्वक प्रकाशित कराने के लिये श्रोत्रिय पण्डित छोटेलाल शर्म्मा का उपकार भी कदापि भूलने योग्य नहीं है।

प्रधान मंत्री

पं० धरणीधर शर्म्मा

शास्त्री, काव्यतीर्थ, कविभूषण, काव्यालंकार

विद्यारत्न, भिषग्विशारद

जोधपुर कांड



जिस प्रकार युक्त प्रदेश के किसी किसी ज़िले में कुछ नाई लोगों को ब्राह्मण बनने की लटक सवार है तैसे ही जोधपुर राज्य के कुछ आर्य्यसमाजी नाइयों को क्षत्रिय बनने की धुन सवार है। जिस प्रकार ब्राह्मण बनने वाले और नाई अपने नामों के अन्त में आजकल शर्म्मा, पाठक, मिश्र, शाक्षिक, आचार्य्य आदि आदि ब्राह्मणत्व बोधक पदवियें लगाने लगे हैं तैसे ही जोधपुर राज्य के

कुछ नाई भी अपने नामों के अन्त में क्षत्रियत्व सूचक, जैसे वर्म्मा, यदुवंशी, चौहाण, भाटी, राठोर, प्रमार आदि आदि उपाधियें लगाते हुये देखे सुने गये हैं, इन लोगों का बहुत कुछ गुप्तरहस्य युक्त विवरण, हमें अपने जोधपुरस्थ कई मित्रगणों द्वारा लिखित प्राप्त हुआ है। उसको अविकल न छापकर केवल सारांश मात्र यहां देते हैं।

हम नाई जाति के क्षत्रियत्व व ब्राह्मणत्वता के विरुद्ध नहीं हैं यदि यथार्थ में वे लोग उत्पत्यादि क्रम से शास्त्रधारानुसार वैसे ही हों तदनुसार हमने चाहा कि यदि यथार्थ में कोई ऐसा समुदाय हो जो जन्म से क्षत्रिय व कर्म से नाई हो तो उनकी उत्पत्ति भी 'क्षत्रिय निर्णय' में प्रकाशित कर दी जाय तदनुसार जोधपुर के एक दो नाइयों से पत्र व्यवहार भी हुआ कि यदि वे अपनी उत्पत्ति सप्रमाण लिख भेजें तो उस पर भी विचार किया जाकर उचित विवरण प्रकाशित किया जाय।

इस सम्बन्ध में एक आर्यसामाजी नाई ने लिख कर कुछ विवरण भेजा पर प्रमाण व Reference उसमें कुछ नहीं था केवल भाषा में कुछ विवरण था अतः ऐसे प्रमाण शून्य लेख को हम अपने ग्रन्थ में देने से असमर्थ हुये।

हमने जोधपुर के एक माननीय क्षत्रिय वीर से इन लोगों के विषय में पूछा कि "क्या आप लोग अमुक अमुक आर्य्यसमाजी भाटी, चौहाण, प्रमार और राठौर आदि २ उपाधिधारियों को क्षत्रिय वर्ण में मानते हैं?" इस पर वे वीर भौंहें चढ़ा कर क्रोध से बोले कि "वे लोग तो जाति से नाई हैं हमारी सेवा चाकरी करने वाले कमीण हैं।" फिर उन्होंने हमसे पूछा क्या आप उन्हें क्षत्रिय बनाना चाहते हैं? हमने कहा नहीं, हमने तो सत्यबोधक भाव से आप से केवल अन्वेषण किया है अस्तु!

विक्रम संवत् १६७६ में जोधपुर नगर में आर्य्यसामाजिक नाइयों में से एक ने अपनी कन्या के विवाहार्थ ऐसा विज्ञापन निकाला:—

* ओ३म् *

"वैदिक धर्मावलम्बियों के लिये" स्वयंवरीय

विज्ञापनम्।

स्वर्गीय सती शिरोमणि सीता के पश्चात्
यही एक स्वयंवर का समय प्राप्त हुआ है
अतः इस प्राचीन प्रथा का पुनरुद्धार करने
कराने में अवश्य ही सहायता प्रदान कर
वैदिक धर्म को अपनावेंगे।

विद्यावती का फोटो

वैदिक धर्मी होंगे और सुशिक्षित एवं
श्री पुरी में किसी माननीय आर्य पुरुष
का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है।

सम्पूर्ण सभ्यों को विदित हो कि षोड़श वर्षीय सर्वांग सुन्दर और सुशीला मेरी कन्या विद्यावती जोकि कन्या महाविद्यालय जालंधर [पंजाब] की अष्टम् श्रेणी तक शिक्षित है स्वयंवर पूर्वक अपना विवाह चाहती है। अतः आप सज्जनों से नम्र निवेदन है कि वि० संवत् माघ शुक्ल १० ता० २७ जनवरी १९२३ ई० के सायंकाल को ठीक ५ बजे रतिनाडे रोड पर पुराने आर्य समाज के बङ्गले जोधपुर में पधारें मेरी कन्या उपस्थित इच्छुकों में से जिस को वर चाहेगी वर माला पहिनायेगी जैसा कि उपरि चित्र से प्रकट है।

इस स्वयंवर में जाति वैदिक मतानुसार मनुष्य ही मानी जायगी मुझे दृढ़ विश्वास है कि मेरे इष्ट मित्र और सगे सम्बन्धी भी इस शुभ कार्य्य में शोभनार्थ सम्मिलित हो मुझे कृतार्थता प्रदान करेंगे। इच्छुक महाशयों को अपना सर्ववृत्त सविस्तर नियत

समय से पूर्व ही लिख भेजना चाहिये ताकि हम उसी के अनुसार बैठकों का प्रबन्ध कर आपको अपनी बैठक संख्या से सूचित करके निमंत्रित करें ।

आप श्रीमानों का दर्शनाभिलाषी
यदुवंशीय च्यवन आर्य्य
जोधपुर मारवाड़ ।

समीक्षकः—इस विज्ञापन में कतिपय दोष व अत्युक्ति हैं यथाः—

१—सर्वाङ्ग सुन्दर और सुशीला मेरी कन्या ।

पिता की ओर से अपनी कन्या के लिये 'सर्वाङ्ग सुन्दर' लिखने की अपेक्षा केवल 'सुन्दर' लिखना ही पर्य्याप्त था क्योंकि यह लोकाचार से विरुद्ध प्रतीत होता है ।

२—इस विज्ञापन में जाति पांति व वर्णाश्रम धर्म तक को तोड़ कर लिखा है कि "मेरी कन्या उपस्थित इच्छुकों में से जिसको वह चाहेगी वरमाला पहिनायेगी"

समी०—इस स्वयंवर को आर्य्यसमाज के सिद्धान्त के अनुकूल मानें या सनातन धर्म के अथवा दोनों ही से अलग

खिचड़ी सिद्धान्त

३—स्वर्गीय सती शिरोमणि सीता के पश्चात् यही एक स्वयंवर का समय प्राप्त हुआ है ।

यह अत्युक्ति और स्वात्म प्रशंसा है यदि च्यवन जी प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास व पुराणादिकों का अवोलकन करते तो श्री सीता जी के पश्चात् स्वयंवर के कई उदाहरण मिल जाते । जैसे द्रोपदी, दमयन्ती, अम्बा, अम्बालिका, रुक्मिणी तथा पृथ्वीराज चौहान के समय में जयचन्द की लड़की संयोगिता आदि आदि के स्वयंवर हो चुके हैं ।

जब स्वयंवर का विज्ञापन निकला तत्पश्चात् अपने को सच्चा "वैदिक धर्मी" प्रमाणित करने के लिए 'चहुआन अचलू जी वर्म्मा' ने एक विज्ञापन निकाला इससे लोगों को अनुमान होता है कि स्वयंवर में उम्मेदवार होने को ही ऐसा किया गया हो अथवा ऐसा

करने में कोई अन्य कारण विशेष होगा पर जोधपुर की नाई समाज के मन्त्री प्रेमसुख जी से भी हमें ऐसा ही मालूम हुआ था इसमें सत्य क्या है भगवान् जाने पर प्रबल शङ्का ऐसी होती है कि ऐसे विज्ञापन निकालने की क्या आवश्यकता थी ? विज्ञापन की कापी इस प्रकार है:—

॥ ओ३म् ॥

विज्ञापन

विदित हो कि लगभग १५ वर्ष से जब कि मेरा यज्ञोपवीत संस्कार हुआ था, तब ही से मैंने वैदिक धर्म व्यवस्था को हृदय से स्वीकार कर अधावधी ठीक उसी के अनुसार अपना सर्व व्यवहार रक्खा है। आगामि भि रक्खूंगा। अतः आप सुहृदय गण से प्रार्थना है कि आप मुझे कृत्रिम जातियों के झंझट से मुक्त मान कर वर्णानुगामि मानने की कृपा करेंगे।

इतिशुभम्

आपका-चहुआन
आर्य्य अचलु वर्म्मा जोधपुर
ता० ६-१२-२१

श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस जोधपुर नं० २८२-१००,

इस स्वयंवर में बाबू दीपचंद जी नाई के सुपुत्र रेवती-प्रसाद् जी उम्मेद्वार बन कर आये थे परन्तु आपके व जोधपुर के कतिपय नाइयों के जाति विषयक विचारों में मतभेद होगया और बात कुछ अंश में बढ़ गयी इसके अतिरिक्त इस स्वयंम्वर में जातीय विवाद व घरेलू कलह से कुछ विघ्न बाधायें पैदा हो गयी जिससे कन्या के पिता श्री चिम्मनलाल जी ने पुनः नीचे लिखा विज्ञापन निकाला:—

ओ३म्

नोटिश ।

महोदयगणों कई एक उपद्रव और एक दो असह्य विघ्नों के आ पड़ने की सम्भावना पर मैं दुःखित होकर अपनी कन्या का स्वयंवरीय विवाह (जोकि सम्वत् हाल के माघ शुक्ल १० ता०२७—१—२३ ई० को होना निश्चय हुआ था) स्थगित करता हूं और एतद्विषयक वितीर्ण भव विज्ञापनों को वापिस लेकर विवश हो वैदिक धर्म से गिरता हूं अतः नम्र निवेदन है कि आप सज्जन पधारने का श्रम न करें ।

इति ता० ६—१—२३ ई०

आपका—च्यवन

जोधपुर ।

समीक्षकः—'वैदिक धर्म से गिरता हूं' यह एक बड़ी भयानक व दुखद् वार्ता है इसका भाव क्या है ईश्वर ही जाने ।

इस ही सम्बन्ध में उपरोक्त विज्ञापन के भाव से निराला ही भाव रखते हुए यह विज्ञापन भी निकाला गया:—

ओ३म्

नोटिश ।

महानुभाव मेरी पुत्री विद्यावती के स्वयंवरीय विवाह का जो विज्ञापन प्रकाशित हुआ उसमें

ता० २७—१—२३ ई० निश्चित थी परन्तु ठीक उसी तारीख को यहां पर श्रीमान् महोदय वाइसराय साहब बहादुर का शुभागमन होगा। अतः ऐसे समय कई एक विचार लक्ष्य में रख २७-१-२३ को क्षमा के साथ स्थगित करता हूं॥ इति॥ ता० १६-१-२३

आपका यदुवंशी
च्यवन आर्य्य
जोधपुर मारवाड़

नोटः—उपरोक्त दोनों नोटिसों में से सच्चा कौन?
ग्रन्थकर्ता।

* ओ३म् *

वैदिक धर्मावलम्बियों के लिये स्वयंवरीय विज्ञापन

सज्जन गणों मैंने मेरी कन्या का स्वयंवरीय विवाह जो ता० २७-१-२३ को यहां पर श्रीमान् महोदय वाइसराय साहब के शुभागमन पर कई एक बातें लक्ष्य में रख स्थगित कर दिया था वह पुनः पूर्व विज्ञापनानुसार सम्वत् हाल के चैत्र कृष्णा ८ ता० १० मार्च सन् १९२३ ई० शनि को होना निश्चय हुआ है।

अतः निवेदन है कि विवाह के इच्छुक महाशयों को पूर्व विज्ञापन के नियमानुकूल वैदिक धर्मी होने और स्वलिखित वृत्त की सत्यता के पुष्टि में किसी माननीय आर्य्य सज्जन का प्रमाण पत्र प्रार्थना पत्र के साथ ही शीघ्र भेजदेना चाहिये ताकि मैं इच्छुक महाशयों को अपनी बैठक संख्या से सूचित कर ठीक समय पर निमंत्रित कर सकूं क्योंकि समय निकट है।

प्रत्येक इच्छुक महाशय को विवाह मंडप में न्यूनातिन्यून १५ मिनट तक कन्या के इच्छित विषय पर भाषण करके अपनी योग्यता प्रकट करनी होगी।

प्रत्येक इच्छुक महाशय सर्वथा ही सात्विकभोजी, सदाचारी, उत्तम स्वास्थ्य युक्त अविवाहित लगभग २५ वर्षीय युवक होने चाहियें और सर्व प्रकार के दुर्व्यसन और मादकद्रव्यों के विरोधी भी ।

इस स्वयंवर में जाति पूर्व लेखानुसार मनुष्य ही मानी जायगी परन्तु सगोत्र विवाह का निषेध है यह ध्यान में रहे और कन्या का गोत्र गर्ग है ।

विवाह की कार्यवाही प्रातःकाल के ठीक ६ बजे प्रारम्भ हो जायगी अतः इच्छुक महाशय और सब सज्जन गण ठीक समय पर पधार कर इस स्वयंवरीय विवाह को शोभित करेंगे । इति ।

ता० २४—२—२३ आप श्रीमानों का दर्शनाभिलाषी

च्यवन आर्य

पुराना आर्यसमाज का बंगला

रातानाड़ा सड़क—जोधपुर

समीक्षकः—पाठक ! इस कन्या की स्वयंवर विवाहार्थ उपरोक्त कार्य्यवाही को ध्यान पूर्वक पढ़ें कन्या के पिता केवल आर्य्यसमाजी ही नहीं किन्तु आर्य्यसमाज जोधपुर के आप मंत्री भी हैं आर्य्यसमाज के झंडे के नीचे भारतवर्ष में कन्या के पिता का यह कर्तव्य नवीन है जिस प्रणाली व जिन नियमों पर अवलम्बित होकर यह स्वयंवर होता था यह कर्तव्य आर्य्यसमाजिकों के सिद्धान्तानुसार व आर्य्यसमाजिक सदाचार प्रणाली के अनुकूल था या नहीं यह तो भारतवर्ष की आर्य्यसमाजें ही जानें परन्तु सनातन धर्म के तो यह प्रतिकूल है । आज तारीख १६—१०—१६२४ तक भी कन्या विद्यावती का पाणिग्रहण संस्कार अभी तक किसी के साथ नहीं हुआ है ऐसा हमें विश्वास योग्य मित्रों द्वारा ज्ञात हुआ है, ऐसी स्थिति में हमें दुःख है कि विद्यावती को स्वयंवर के आडम्बर में वृथा फँसाया गया ?

क्या ही अच्छा होता कि सनातन धर्म की प्रचलित प्रणाली के अनुसार उसका विवाह किसी योग्य नाई के साथ कर दिया जाता ।

"नाऊ महात्म"

प्रथम सुमिर श्री शारदा, फिर सुमिरूं हनुमान।
नाउन की उत्पति लिखूं, सुनो सुजन धरि ध्यान॥

परदेश कमाने हेत चले, कुछ इष्ट मित्र संगत करके।
उनको बतला दूं मैं पहिले, वह हते कौन अरु किस घरके॥
बढ़ई, लोहार, मोची, चमार, रंगसाज ठठेर विचारा था।
था एक गड़रिया अरु जोलाह, एक पत्थर फोरनहारा था॥
थे सब रंडे संडे जवान, हमजोली के एक टोली में।
जब कामदेव ने ज़ोर किया, जी मचला कहीं ठठोली में॥
बोला एक बुड्ढा मत फंसना, चिकनी मट्टी की घातों में।
सर, घर, ज़र, सब लुट जावेगा, गर फंसे रसीली बातों में॥
गर ज्यादा तबियत ही चलती, एक मोल कहीं हंडी लेलो।
नौ पट्ठे करो इकट्ठे लो, ये चार चार रुपये ले लो॥

ईश्वर की दाया भई, मिली सुघड़ सुकुमार।
छत्तिस दै तेहि लैलियो, डेरा दियो उखारि॥

पहुंचे जाकर दूसरे नगर, कुछ योंही समय व्यतीत हुआ।
उस नारि छतीसी के जनाब, कोखी से पुत्र प्रसूत हुआ॥
आपुस में दंगा खूब मचा, कह मोची लड़का मेरा है।
कह रहा गड़रिया, है मेरा, मेरा है कहे ठठेरा है॥
कहता जोलाह हक़ मेरा है, बोला चमार क्यूं तेरा है।
बढ़ई लोहार से कहे न छू, रंग साज कहे रंग मेरा है॥

आखिर को झगड़ा खूब बढ़ा, अरु मार पीट नौबत आई।
फिर घूंसा लात चले डट डट, अरु बात न फिर भी तै पाई॥
फिर पहुँचे राजा निकट अरु, सुना दिया सब हाल ।
न्याय किया उस भूपने, सुन सब हुए बहाल ॥
तुम सब मिल इसके बाप बनो, ये नौजाया कहलाएगा ।
अपना अपना दो चिह्न इसे, यह सब के बाल बनाएगा ॥
तब लोहार ने पुत्र लखि, छुरा आदि गढ़ दीन ।
बढ़ई ने निज चिह्न हित, बेंटी गढ़ा नवीन ॥
रंगसाज ने रंगदी बेंटी को, क्या उत्तम चिह्न लखाया है ।
दी बना कटोरी ठठेर ने, चमरा ने तला गहाया है ॥
मोची ने बना छुरही दी, सिल्ली दी पत्थर वाले ने ।
छूरा रखने का ऊन दिया, गाड़रिया कमली वाले ने ॥
दे दिया जोलाहे ने कपड़ा, जो सबके पैर डरोञ्बा है ।
दे अपने अपने चिह्न सबों ने, नाम धर दिया नौञ्बा है ॥
अब इसे न कोई छूता था, यह नौजाया कहलाता था ।
इस जीवनसे मरना बेहतर, यह कह कर दिल बहलाता था ॥
चमगादर रूपी नौञ्बा है, नहिं सूर्य्य सजन समहे निकले ।
हे ईश्वर क्या करना चहिये, कैसे जीवन बीते इकले ॥
घर धन परिजन छोड़ के, जंगल की ली राह ।
मिला न खेवट नाव का, जिस में रहा प्रवाह ॥
एक ऋषि तहं लखि पड़े, ज्यों अन्धे को बांस ।
सोचा मेरे दुःख का, शायद कर दे नाश ॥
किस तरह कहूं दिलकी गाथा, यह सोच रहा था खड़ा खड़ा ।
था डूबा शर्म समुन्दर में, चट हाथ जोड़ कदमों में पड़ा ॥
ऋषि ने लखि दीन दशा उसकी, हृदय अपने लपटाया है ।
फर कृपादृष्टि कर शीश धरा, कहकर ये बचन सुनाया है ॥

कह बेटा क्या हाल है, क्यों हैं दुखी अपार ।
मुझ से होगा जहां तक, कर दूंगा निरधार ॥
फिर नौ जाये ने हाथ जोड़, निज जन्म कुण्डली गाया है ।
बस ऋषि ने शरणागत आये, निज दास जान अपनाया है ॥
कह दिया लंगोटी छांटा कर, अरु मेरी सेवा चित से कर ।
बस यहीं पड़ा रह कुटिया में, फलफूल जड़ी का भोजनकर ॥
फिर क्या कहना था नौवे को, जिसको सर्वोपरि विप्र चहे ।
क्या मजाल अन्य जातियों की, जो उसको आधी बात कहे ॥
अब सब स्पर्श लगे करने, नहिं दिलमें पूर्व विचार रहा ।
बढ़ते २ इस जां पहुंचा, घर घर में कुल अधिकार रहा ॥
हम कभी न अपकीरत करते, कुल सच्चा हाल बताते हैं ।
जो झूंठ समझियेगा जनाब, लखिये सब चिह्न दिखाते हैं ॥
ये हैं कुछ इनको लाग नहीं, यह कलि-राजा की माया है ।
क्षत्री बतलाते हैं कहार, क्या इनने बुरा बताया है ॥
अब गदहे खेती जोतेंगे, बन्दर मनुष्य कहलायेंगे ।
बकरे भैंसे बन जायेंगे, बावन का समय बतायेंगे ॥
कुछ ताज्जुब है कुछ समय बाद, ये हंस लगे बनने कौवा ।
कहे मिश्र अचम्भित मत समझो, जब विप्र लगा बनने नौवा ॥

गायत्रीप्रसाद मिश्र

लखीमपुर (अवध)

Hindi Prabha Press, Lakhimpore (Oudh).



नाइयों का अहङ्कार



ना ई जाति के "नायी ब्राह्मण पाक्षिकपत्र" कानपुर के वर्ष २ अङ्क ३-४ अर्थात् वैशाख संवत् १९८० का अङ्क अचानक हमारे पास हमारे किसी मित्र ने भेज दिया उसके पृष्ठ १६-१७ में लिखा है:—

"इस समाज की ओर से **'ब्राह्मणाद्भुन न्हावी श्रेष्ठ'** नामक ट्रेक्ट भी निकले हैं जिसमें नाभिक पुराण के आधार पर नाइयों को **ब्राह्मणों से उत्तम** बतलाया है"।

पाठक! कहिये अब कसर क्या रही? कुछ दिन में नाई लोग यह भी कहने लगेंगे कि नाई लोग **ईश्वर** से भी **उत्तम** हैं।

नाइयों की उत्तमता व अनुत्तमता विषयक भिन्न भिन्न ग्रन्थकारों के भिन्न भिन्न अनेकों प्रमाण 'सप्तखंडी जाति निर्णय' प्रथम भाग में दिये जा चुके हैं उनके अतिरिक्त ये प्रमाण और मिले हैं:—

ढाई तीन हजार वर्ष की स्थिति को बतलाते हुये लिखा है कि 'जातक कथाओं से इन चारों वर्णों को छोड़कर और बहुत सी ऐसी जातियों का पता लगता है जो शूद्रों से भी हीन समझी जाती थीं। इनको 'हीन जाति' कहते थे। ऐसे लोग बहेलिये, नाई, कुम्हार, जुलाहे, चमार इत्यादि।'

देखो माधु० व० १ खं० २ सं० ४ पूर्ण सं० १० पृ० ४६२

ब्राह्मणों ने पोथी पत्रे पटक दिये, क्षत्रियों ने हथियारों से यारी कुट्ट करदी, वनिये व्यापार से वैर करने लगे अब सुना है नाई और चमार भी कैंची उस्तरा तथा रांपी सुतारी फैंक कर स्वजाति सेवा में संलग्न होने वाले हैं। वोलो भाई भंगियो तुम क्या कहते हो? अगर तुम ने भी झाड़ू झाड़कर डलिया डाल दी तब तो शौच संस्कार करते करते धोती लटक्कू पोथी परशादों की नाक में दम और भुजाओं में खम भी आ जायगा।

विनो० आ० मि० व० २६ अं० १८ पृ० ६

The Nais or Barbers, amounted to 15,320 distributed as is natural pretty evenly over the district. They hold a prominent place among the village servants, exercising not only the functions of hair cutting shaving and message, but also, as in eighteenth century Europe, the craft of the Physician. In addition to all this the Nai is the general village matchmaker and go between in matters of marriage and betrothal.

N. P. U. G. P. 198.

भा०—मैनपुरी के जिले में नाइयों की संख्या १५३२० है. गांव की चाकरी करने वालों (कमीण। कारू) में इनका बड़ा दर्जा है ये बाल काटने, हजामत करने और इधर उधर के समाचार पहुँचाने तथा जर्राही का काम भी करते हैं इसके अतिरिक्त नाई लोग गांवों में सगाई व्याहों में बीचोले का काम करते हैं॥

(गवर्नमेन्ट गजे़टियर)

नाइयों के ब्राह्मणों से उत्तम होने की कसोटी:—

ब्राह्मण बनने वाले नाइयों की सभा कदाचित बिजनौर में हुई थी तहां डा० रामस्वरूप जी ने कतिपय प्रस्ताव किये जो सब सम्मति से पास हुये।

(१) प्रत्येक नाई भाई को मांस मदिरादि निकृष्ट व्यसनों का परित्याग करना चाहिये।

(३) चालीस वर्ष से कम आयु वाली स्त्रियों को यजमानों के यहां न जाना चाहिये ।

(४) शादियों में लड़की के साथ सुसराल गृह को नायिन माता न जाना चाहिये ।

(५) जीवका वशात् चौका देना झूंठी पत्तलें उठाना तथा झूंठे बर्तन न माजना चाहिये ।

देखो नायी ब्रा० कानपुर वैशाख १६८०

प्रश्नः—ऐसा क्यों ?

उत्तरः—इस ही ग्रन्थ के आदि में "ब्राह्मण बनने वाले नाइयों का दुखड़ा" शीर्षक में वसन्तलाल जी नाई की "गज़ल गुलज़ार" देखिये तहां आपको पूरा विवरण समझ में आ जायगा ।

काशी निर्णय



ठक ! आप लोगों में से जिन्होंने, हमारा जाति अन्वेषण प्रथम भाग देखा होगा वे जानते होंगे कि किस अतुल परिश्रम व दुसह दुखों को सहन कर तथा अमित व्यय करके * हमने बीसों वर्ष अन्वेषण कर चुकने के उपरान्त जाति विवरण संग्रह किया है तिसके फल स्वरूप कई ग्रन्थ भी मण्डल से प्रकाशित हो चुके हैं ।

भारत की प्रत्येक हिन्दु जाति उच्च होने की धुन में है तदर्थ हमारे पास नित्य कई पत्र आया जाया करते हैं । ऐसे पत्रों की

* देखो जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १ से ६० तक..

अधिकता के कारण हमने नियम रक्खा है कि "उत्तरार्थ जवाबी कार्ड व -) टिकिट आने पर ही उत्तर दिया जायगा। अन्यथा नहीं।"

हिन्दु जाति की ऐसी उत्कट आकांक्षा के साथ २ हमें सदैव सोते जागते उठते बैठते जहां हिन्दु जाति की उन्नति करने की चिन्ता रहती है तहां प्रत्येक अक्षर लिखते समय **सनातन** धर्म के सिद्धान्तों की अनुकूलता का ध्यान भी हमें बहुत कुछ रखना पड़ता है कि कोई कार्य्य हमारी कलम से शास्त्र विरुद्ध न बन जाय इस **महापाप** से बचने के निमित्त ही हमने सप्तखंडी जाति निर्णय प्रथम भाग द्वारा वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्न "जाति निर्णय विधान" स्थम्भ में प्रकाशित करके निश्चय किया है कि सप्त खंडी जाति निर्णय के भिन्न २ भागों में केवल उन्हीं जातियों का विवरण दिया जावे, जिनके यहां से उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर आ जावें, तदनुसार इस द्वितीय भाग में भी वे ही जातियें हैं और भविष्य में छपने वाले सप्तखंडी के भागों में भी उन्हीं जातियों का विवरण होगा, जिनके यहाँ से उपरोक्त २५१ प्रश्नों के उत्तर आ जावेंगे अतएव जो जो जातियें अपना निर्णीत विवरण जानना चाहें उन्हें अतिशीघ्र उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर मण्डल कार्य्यालय को भेज देनें चाहियें अन्यथा वे जातियें मंडल के निर्णय में प्रविष्ट न हो सकेंगीं। प्रश्नोत्तर देने वाली जातियों में से कई जातियें जो द्विज सिद्ध नहीं हुईं उन्हें छोड़कर द्विज सिद्ध हुईं जातियों का विवरण इस ग्रन्थ में दिया गया है।

द्वितीय उपरोक्त क्रमानुसार अपने निर्णय को दृढ़तम करने की इच्छा से हमने पुनः काशी यात्रा की और मार्ग के प्रसिद्ध प्रसिद्ध शहरों में तथा काशी में शास्त्रार्थ का पब्लिक चेलेंज देकर कई विवादास्पद जातियों की समस्याओं को हल किया तथा कई धार्मिक विवादों पर काशी के विद्वानों से परामर्श किया।

अपनी काशी यात्रा के मार्ग में हम कानपुर पहुंचे तहां हमारे निर्णय पर शङ्का समाधान व शास्त्रार्थ कर लेने को निम्नलिखित विज्ञापन निकाला गया:—

आइये ! आइये !! आइये !!!

मुराव सभा

जुहीकलां कानपुर की ओर से

आप लोगों की सेवा में सहर्ष सूचित किया जाता है कि प्रसिद्ध जाति निर्णयकर्त्ता विद्वान् श्रीमान् श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा M. R. A. S. लंदन तथा महामन्त्री हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल फुलेरा जयपुर काशी यात्रा करते हुए यहां पधारें हैं। जिन से प्रश्न करने से उत्तर में आपने काछी, कुइरी और मुराव जाति को क्षत्रिय वर्ण में बतलाया है अतएव आपका व्याख्यान ता: १५ जून सन् २४ रविवार को मुराव सभा जुहीकलां कानपुर में होगा सब सज्जनों तथा बिरादरी के भाइयों से निवेदन है कि अपने इष्ट मित्रों सहित पधार कर सभा को सुशोभित करें।

नोटः—जिस किसी सज्जन को मुराव, काछी और कुइरी जाति को क्षत्रिय मानने में सन्देह हो वह लेख द्वारा पण्डित जी से अपना संशय दूर कर सकते हैं।

निवेदक

मथुराप्रसाद मन्त्री,

मुराव सभा जुहीकलां कानपुर।

स्वदेशी प्रेस कानपुर।

पाठक ! इस प्रकार तीन दिन तक हमारे व्याख्यान कानपुर नगर में होते रहे पर किसी ने कोई शङ्का नहीं की हां तीसरे दिन एक सज्जन ने शंका की थी उसका उत्तर उसे तत्काल संतोषजनक दिये जाने पर वह भी मौन हो गया। तब कानपुर से चल कर हम काशी पहुंचे तहां काल भैरव जार्ज प्रिंटिंग प्रेस में, मणिकर्णिका घाट पर व दशाश्वमेध पर तथा पञ्चगङ्गा पर व एक दिवस श्री विश्वनाथ जी के मन्दिर में कतिपय पण्डितों से प्रेम पूर्वक हिन्दू धर्म के व जातियों के कई विवादास्पद विषयों पर वार्तालाप होती रही तब अन्त को हमने वहां यह विज्ञापन निकालाः—

॥ श्री गणपतयेनमः ॥

विज्ञापन

विदित हो कि हम बीस वर्ष से जाति अन्वेषण करते करते जाति निर्णय सम्बन्धी कई ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं, और इस ही अनुसन्धान में हमने पता लगाया है कि समय के हेर फेर के साथ साथ कई क्षत्रिय जातियाँ ऐसी हैं जो यथार्थ में क्षत्रिय वर्ण में हैं जैसे काछी, कोइरी मुराव और ओढ़ आदि आदि और कई जातियों का ऐसा भी पता लगाया है जिनके मा कोई और बाप कोई पर वे दोगली जातियाँ कोई ब्राह्मण बनती हैं तो कोई क्षत्रिय तो कोई वैश्य, उन्हें हमने वर्णसंकर मानी है—जैसे नाई जाति ने छपवाया है कि "नाई राम जी के भाई और ब्राह्मण राम जी के बेटे" इसके अनुसार नाई जाति ब्राह्मण जाति की चचा सिद्ध होती है—हिन्दू जाति के ऐसे अपमान और ब्राह्मण जाति की निन्दा से क्लेशित हो सनातन धर्म की रक्षार्थ हम काशी नगरी में आये हैं अतः सूचना

दी जाती है कि हम ने अनेकों शास्त्र प्रमाण, शिलालेख, ताम्रपत्र, प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास तथा अनेकों सरकारी रिपोर्टों के प्रमाणों को संग्रह करके निश्चय किया है कि काछी, कोइरी मुराव और ओड़ आदि आदि कई जातियाँ क्षत्रिय वर्ण में हैं और नाई जाति वर्ण संकर शूद्र प्रमाणित होती है अतएव हम काशी के समस्त विद्वान् व पंडित समाज के सज्जनों से प्रार्थना करते हैं कि यदि आप में से कोई हमारे निश्चय के विरुद्ध हों और आपके पास अपने विरुद्ध पक्ष समर्थन में कोई प्रमाण हों तो आप कृपा पूर्वक लिख भेजें अथवा इनके क्षत्रियत्व सम्बन्ध में आपको किसी प्रकार की शंका हो तो उसे भी लिखें हम उसका समाधान तत्काल ही छपवाकर प्रकाशित कर देने को तय्यार हैं और आपके विरुद्ध पक्ष के उचित प्रमाणों के अनुसार अपने लिखित ग्रन्थ में उचित संशोधन करने को भी हम सर्वथा सर्वदा प्रस्तुत हैं ।

यदि नोटिस बटने की तारीख से तीन दिन तक किसी विद्वान् ने कोई विरुद्ध प्रमाण न भेजे तो समझा जायगा कि आप सब हमारे निश्चय के साथ सहमत हैं।

निवेदक—

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा, M. R. A. S. लंदन
तथा महामंत्री हिन्दुधर्म वर्ण व्यवस्था मंडल फुलेरा (जयपुर)

काशी
ता० २२ जून १९२४

पता:—श्रीमान् बाबू माताप्रसादजी,
आनरेरी मजिस्ट्रेट व रईस ईश्वरगंगी
बनारस ।

जार्ज प्रिंटिंग वर्कस् कालभैरव काशी ।

पाठक वृन्द! इस चैलेञ्ज के छपकर काशी में वटते ही चहुं ओर खलबली मच गयी और ब्राह्मण मण्डली में बिजली का तार सा दौड़ गया कुछ विद्वान् मौखिक शास्त्रार्थ के लिये व कोई कोई विद्वान् केवल वार्तालाप करने की इच्छा से हमसे मिलने के लिये श्रीमान् बाबू माताप्रसाद जी आनरेरी मजिस्ट्रेट ईश्वर गंगी बनारस के स्थान पर आने लगे। परन्तु, आगन्तुक विद्वानों में से अधिकांश तो मिलने के अभिप्राय से आये जो हमारे साथ कतिपय दिनों की वार्ता से कई जातियों के निर्णय के साथ सहमत हो चुके थे। उनमें से कुछ विद्वान् शास्त्रार्थ की इच्छा से भी आये थे परस्पर कुशल प्रश्नोत्तर के अनन्तर उन विद्वानों ने मजिस्ट्रेट साहब से कहा कि कुइरी काछी, मुराव, ओढ़ और तम्बोली आदि आदि जातियों के निर्णय सम्बन्ध में हमें आपत्ति नहीं किन्तु दलितोद्धार व विधवा विवाह पर हमें कुछ बात चीत करनी हैं तब मजिस्ट्रेट साहब ने उनको लेखबद्ध शास्त्रार्थ करने का हमारा नियम बतलाया पर लेखबद्ध शास्त्रार्थ करना उन्हें स्वीकार न हुआ तब से लोग कहने लगे कि "लेखबद्ध शास्त्रार्थ में तो महीनों लग जावेंगे अतः जुबानी शास्त्रार्थ हो जाना चाहिये" पर यह हमने स्वीकार नहीं किया क्योंकि काशी में शास्त्रार्थों के समय विद्वान् थोड़े और गुंडे अधिक इकट्ठे हो जाते हैं तथा शास्त्रार्थ के समय हज़ारों विद्यार्थी इकट्ठे हो जाते हैं जिनका लक्ष्य अपने गुरुओं के पक्ष में हुल्लड़ मचाना होता है यही कारण है कि काशी के विद्वान् प्रायः जुबानी शास्त्रार्थ करना पसन्द करते हैं जुबानी शास्त्रार्थ में उन्हें बड़ा भारी लाभ यह होता है कि वे लोग Dialectic discussion अर्थात् विषय पर शास्त्रार्थ न करके Round to the point विषय के बाहर होकर शास्त्रार्थ करने लगते हैं और लेखबद्ध शास्त्रार्थ में उनको यह सुविधा नहीं रहने से लिखित शास्त्रार्थ किसी ने भी नहीं किया।

एक दिवस जब हम प्रातःकाल श्रीगंगा स्नान करके आये तो आर्ज प्रिंटिंग प्रेस में हमें दो शास्त्री हमसे शास्त्रार्थ करने के उद्देश्य से बैठे मिले। हमने उन्हें अपना नियम बतलाते हुये लेखबद्ध शास्त्रार्थ करने की प्रार्थना की तो इस पर वे सहमत न हुये, पर मौखिक बात चीत पर, उन्होंने बहुत बल दिया। अतएव वहां के

मैनेजर प्रोप्राईटर व उपाध्याय जी के समक्ष बड़ी देर तक कई शास्त्रीय विषयों पर बात चीत हुई उसके फलस्वरूप उन दोनों शास्त्रियों में एक तो देश काल के ज्ञाता व देश की परिस्थिति से भिज्ञ थे सो वह तो कई अंशों में हमारे अनुकूल व सहमत होगये। पर दूसरे शास्त्री जी पुराने ढचरे के old f. थे। अस्तु! हमने काशी में तीन वार यात्रा की और वहां के मुख्य मुख्य पण्डित व विद्वानों से मिले, परन्तु उनमें से अधिकांश विद्वान् देशहित से शून्य अति लोलुप दीख पड़े। यद्यपि भारतवर्ष के अन्य संस्कृतज्ञ विद्वानों से उन लोगों की मासिक आय बहुत अधिक है, तथापि दुख के साथ कहना पड़ता है कि वे महालोलुप और उनके हृदय कमल सङ्कीर्णकूप हैं। उदार विचारों ने उन्हें स्पर्श तक नहीं किया है। ऐसी दशा में भारत की दुर्दशा व हिन्दु जाति के साथ होने वाले अत्याचारों का वर्णन करते हुये हमारे नेत्रों में आंसू भी भर आये, पर वहांके विद्वानों के हृदय में किञ्चित् भी आर्द्रता न आई। कारण यह कि वन्ध्या स्त्री प्रसव की पीड़ा को क्या जाने? अतएव काशी के विद्वानों से कुछ आशा करना वृथा है।

जहां काशी की यह दशा है तहां कई विद्वान काशी में हमें ऐसे भी मिले जो काछी, कुइरी, मुराव, तम्बोली, ओड़ आदि जातियों को क्षत्रिय वर्ण में वतलाते थे और विधवा विवाह और दलितोद्धार के साथ पूर्ण सहानुभूति दिखलाते थे। नाई जाति के विषय में जो हमने अपने चेलेञ्ज में अपना मत प्रकाश किया था उस सम्बंध में तो विद्वत् परिषत् के महामहोपाध्यायगण तथा हिन्दू यूनिवर्सिटी और क्वीन्स संस्कृत कालेज के संस्कृतज्ञ विद्वज्जनों में से क़रीब क़रीब सब ही जिन जिनसे हम मिल सके यही कहते थे कि "ब्राह्मण बनने का नाइयों का आडम्बर मात्र है। वे लोग शास्त्रों में वर्णसङ्कर प्रतिपादित किये गये हैं। और किसी किसी आचार्य्य ने उनकी गणना शूद्रों में की है।

अछूत जातियें कोई कोई महामहोपाध्याय व आचार्य्यगण हमें ऐसे भी मिले जो कहते थे कि:—अछूत जातियें मुसलमान ईसाइयों से उत्तम हैं और जिन कूओं पर व हिन्दुओं के जलाशयों पर

मुसलमान ईसाई चढ़ सक्ते हैं उन उन पर अछूत जातियोंको अवश्य चढ़ने देना चाहिये और हिन्दुओं के मंदिर व अन्य पूज्य स्थानों में भी कुछ दूर तक इनको प्रवेश कर दर्शन करने की आज्ञा दे देनी चाहिये। पर साथ ही में उपनियम [शरतें] ऐसी होनी चाहिये कि ये लोग अपना पैतृक धन्दा करके जब दर्शनार्थ आवें तो स्नान करके साफ सुथरे कपड़े पहिन कर आया जाया करें। सभा सोसाइटी व जलसे तथा हिन्दुओं के उत्सवों में भी इस ही नियम के अनुसार इन लोगों को आने देना चाहिये। हिन्दुओं के जलाशयों व कुओं में इन लोगों को लोहे के डोल व बाल्टियों से पानी भर लेने की आज्ञा दे देनी चाहिये।

विधवा विवाह के सम्बन्ध में काशी के कुछ विद्वान् सहानुभूति प्रकट करते हुये हमारे दिखाये प्रमाणों को मान कर कहते थे कि ऐसा होना धर्म व न्याय संगत तो है, पर कुछ समय से यह प्रचार बन्द होगया है, अतः इसको करना व इसकी सम्मति में हस्ताक्षर कर देने से हम लोगों के लिये कुछ बाधायें उत्पन्न हो जावेंगी, अतः हम लोग खुल्लम खुल्ला हस्ताक्षर करने व कहने में असमर्थ हैं। हां! हमारी निजी सम्मति तो विधवा विवाह के पक्ष में अवश्य है।

शुद्धि के सम्बन्ध में बहुत से विद्वानों ने कहा कि ऐसे ऐसे विषयों पर हिन्दु धर्म परिषत् ने हिन्दु महासभा द्वारा बहुत कुछ निर्णय करके व्यवस्था देदी है। तथा जब धर्म शास्त्रों में प्रायश्चित्ताध्याय है और म्लेछों की शुद्धि का जब विधान है तब ईसाई मुसलमानों की शुद्धि अवश्य कर देनी चाहिये। वहां सतयुग के अनुसार कठिनतम प्रायश्चित्त लिखे हैं, तहां कलियुग में कलियुग धर्मानुसार सूक्ष्मतम प्रायश्चित्त करा कर शुद्धि अवश्य कर देनी चाहिये।

जब इस प्रकार काशी में हलचल मची और उपरोक्त चैलेञ्ज बंटा तब वहां के प्रसिद्ध प्रसिद्ध पत्रों में भी चरचा छिड़ी तदनुसार वहां के प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक पत्र आज में इस प्रकार प्रकाशित हुआः—

जाति निर्णय की सूचना

एक संवाददाता लिखते हैं फुलैरा [जयपुर] हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्थापक मंडल के महामंत्री श्रोत्रिय पंडित छोटेलाल शर्मा काशी में आकर ईश्वर गंगी में श्री० माताप्रसाद जी आनरेरी मजिस्ट्रेट के यहां ठहरे हैं। आपने कोइरी काछी मुराव आदि जातियों के क्षत्रियत्व पोषक एक विज्ञापन छपवाकर सर्व साधारण में बटवाया है। जाति निर्णय संबंध में जो लोग पंडित् जी से मिलना चाहें मिल सकते हैं।

देखोः—'आज' दैनिकपत्र काशी भाग १२ सं० ५६ पूर्ण संख्या ११२० आषाढ़ वदी ८ मङ्गलवार सौर आषाढ़ १० संवत् १९८१ ता० २४ जून सन् १९२४ ई० पृष्ठ ५

काशी के हिन्दी साप्ताहिक पत्र 'सूर्य' को हमने सर्व-साधारण की विज्ञप्ति के लिये निम्न लिखित सूचना मुद्रितार्थ भेजी कि जिस से कोई यह न कहे कि 'हमने तो चैलेंज देखा ही नहीं।'

काशी के समस्त विद्वान् व पंडित समाज से प्रर्थना।

स्थानीय ईश्वर गंगी पर रहने वाले आनरेरी मजिस्ट्रेट व रईस बाबू माताप्रसाद के यहां श्रोत्रिय पं०छोटेलाल शर्म्मा ठहरे हुए हैं उन्होंने निम्न लिखित सूचना प्रकाशनार्थ भेजी है जिसका सारांश यह हैः—

"विदित हो कि हम बीस वर्ष से जाति अन्वेषण करते करते जाति निर्णय सम्बन्धी कई ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं समय के हेर फेर के साथ साथ कई क्षत्रिय जातियां ऐसी हैं जो यथार्थ में क्षत्रिय वर्ण में हैं जैसे, काछी, कोइरी मुराव और ओढ़ आदि। सनातन

धर्म रक्षार्थ हम काशी नगरी में आये हैं अतः सूचना दी जाती है कि हमने अनेकों शास्त्रप्रमाण, शिला लेख, ताम्र पत्र प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास तथा अनेकों सर्कारी रिपोर्टों के प्रमाणों को संग्रह करके निश्चय किया है कि उपरोक्त कई जातियां क्षत्रिय वर्ण में हैं। अतएव हम काशी के समस्त विद्वान् व पण्डित् समाज के सज्जनों से प्रार्थना करते हैं कि यदि आप में से कोई हमारे निश्चय के विरुद्ध हो और आपके पास अपने विरुद्ध पक्ष समर्थन में कोई प्रमाण हो तो आप कृपा पूर्वक लिख भेजें अथवा इन के क्षत्रियत्व सम्बन्ध में आपको किसी प्रकार की शंका हो तो उसे भी लिखें हम उसका समाधान तत्काल ही छपवा कर प्रकाशित कर देने को तय्यार हैं और आपके विरुद्ध पक्ष के उचित प्रमाणों के अनुसार अपने लिखित ग्रन्थ में उचित संशोधन करने को भी सर्वथा सर्वदा प्रस्तुत हैं। देखो पृ० ६ "सूर्य्य" भाग ३ काशी मि० आषाढ़ कृ ८ मंगलवार सं० १६८१ ता० २४ जू० १६२४।

जब इस प्रकार काशी में हा हू मची तब, बड़े बड़े पण्डित तो मौन्य हो बैठे पर विद्वत्परिषत् के एक शास्त्री ने कुछ हमारे विरुद्ध लिख कर काशी के 'आज' अखबार में एक चिट्ठी मुद्रितार्थ भेजी जिस पर सम्पादक 'आज' ने निम्नलिखित नोट निकाला—

जाति निर्णय का प्रश्न

गत मंगवार के "आज" में जो 'जाति निर्णय' की सूचना छपी है उस पर काशिस्थ विद्वित्परिषत् के सभ्य श्री आनन्ददेव शास्त्री ने उनके नाम प्रश्न लिख कर हमारे पास छापने को भेजा है हमने जाति निर्णायक के आने की सूचना केवल समाचार के रूप में दी थी। इस विषय के वाद विवाद छापने के लिये हमारे पास स्थान नहीं है। शास्त्री जी अपना प्रश्न स्वयं उन के पास भेज सकते हैं "आज" में हम नहीं छाप सकते।

सम्पादक।

देखो पृष्ठ ६ "आज" भाग १२ सं० ६० आषाढ़ वदी १० गुरुवार, सौर आषाढ़ १२ सं० १९८१ वै० ता० २६ जून १९२४ ई०।

पाठक! देख लिया आज अखबार ने शास्त्री जी को कैसा अच्छा उत्तर दिया। इस पर शास्त्री जी मौन्य क्यों हो बैठे? यदि उन्हें यथार्थ में शास्त्रार्थ करना था तो हमारे पास प्रश्न लिख कर क्यों न भेजा? क्या अपनी प्रसिद्धि के हेतु अखबार को केवल नाममात्र की चिट्ठी भेजी थी और जब पूर्वोक्त विज्ञापन व सूर्य्य अखबार की सूचनानुसार नियम निश्चय कर के लेखबद्ध शास्त्रार्थ करने का हमारा नियम था उचित तो यह था कि रजिष्ट्री द्वारा वे अपने प्रश्न हमारे पास भेज देते पर आपने ऐसा नहीं किया वरन 'निन्द्य चातुरी' से काम लिया अर्थात् आप जानते थे कि दैनिक आज राष्ट्रीय पत्र है वह जाति पांति के विवाद को नहीं छापेगा तब उसे चिट्ठी भेजने से लाभ ही क्या? हां इस चातुर्य्यता से आपका नाम तो होगया कि आप आज अखबार द्वारा शास्त्रार्थ करना चाहते थे पर यथार्थ में पोलम पोल।

इन्हीं दिनों में जब हम काशी में थे तब बहराइच के ज़िले में कुछ मुरावों के जनेऊ वहां के ब्राह्मणों ने किन्हीं राजपूतों के इशारे से तोड़ दिये तथा जबर्दस्ती तुड़वा दिये तब वहां के मनुष्य हमारे पास भगे हुये आये कि "आप तो मुराव जाति को क्षत्रिय वर्ण यज्ञोपवीत अधिकारी बतलाते हैं उधर हमारे यहां के बामण राजपूत तो हमें जनेऊ पहिनने ही नहीं देते बल्कि जबर्दस्ती तुड़वा देते हैं और कहते हैं कि तुम शूद्र हो जनेउ पहिनने का तुम्हें अधिकार नहीं है।"

इस पर हम व पं० जे० पी० चौधरी जी तथा एक पण्डित लखनऊ से बहराइच के जिले में नानपारा तहसील के अन्तर्गत नरोत्तमपुर नामक ग्राम में शास्त्रार्थ के निमित्त गये। जहां, मुराव काछी महासभा का विशेष अधिवेशन था तहां महन्त जवाहिरदासजी प्रधान की ओर से दो विज्ञापन शास्त्रार्थ के चैलेंज रूप में छपा कर बंटे गये। उन विज्ञापनों की अविकल नकल नीचे दी जाती है:—

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

विज्ञापन

शास्त्रार्थ के लिये चैलेञ्ज।

विदित हो कि प्रसिद्ध जाति निर्णयकर्त्ता विद्वान् श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा M.R.A.S. लंदन तथा महामंत्री हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल फुलेरा जयपुर जिन्होंने हिन्दू जातियों के निर्णय के कई ग्रन्थ छपवाये हैं और जिन्होंने कोइरी, काछी और मुराव जाति को क्षत्रिय वर्ण में मानी है और जिन्होंने काशी नगरी के समस्त विद्वान् व पंडित समाज को शास्त्रार्थ का चैलेञ्ज छपाकर काशी की गली गली व बाज़ार में चिपकवा दिया था वे तथा पं० जे० पी० चौधरी काव्य-तीर्थ प्रसिद्ध धर्म्मोपदेशक अपनी भजन मंडली सहित काशी से यहां पधारे हैं अतएव सूचना दी जाती है कि उपरोक्त विद्वानों के सदुपदेश तारीख़ ३० जून व १ ली जुलाई सन् २४ सायंकाल ५ बजे से नरोत्तमपुर में हुआ करेंगे अतः सभा में पधार कर लाभ उठाइये और जिस किसी को कोइरी, काछी, मराव जातियों के क्षत्रियत्व विषय पर सन्देह हो वे नियम निश्चय करके लेखबद्ध शास्त्रार्थ कर लें।

निवेदक—महन्त जवाहिरदास प्रधान,
भजनदास मंत्री,
मुरावसभा नरोत्तमपुर (बहराइच)

आर्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव, काशी।

॥ ओ३म्तत्सत् ॥

लकारा धर्म का बजता है आये जिसका जी चाहे ।
सदाकत वेद अकदस आजमाये जिसका जी चाहे ॥

मुराव काछी महासभा

का

विशेष अधिवेशन

सर्व सज्जनोंको विदित हो कि अखिल भारतीय मुराव-काछी महासभा के उत्सव के बाद स्थान नरोत्तमपुर पोस्ट खैरीघाट जि० बहराइच में कुछ स्वजातीय भाइयों के यज्ञोपवीतों को वहां के अन्य जातीय पुरुषों ने अनुचित तथा धर्म विरुद्ध बतला कर तोड़ दिया है। तथा निर्धन भाइयों को तंग करने का इसे एक साधन बना लिया है इसलिये मुराव काछी महासभा का एक विशेष अधिवेशन उक्त स्थान पर आषाढ़ बदी १३, १४ तदनुसार सोमवार तथा मंगलवार ता० ३० जून व १ जुलाई सन् १६२४ को होना निश्चित हुआ है जिसमें कि बनारस के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० छोटेलाल जी शर्म्मा जाति निर्णायक एम० आर ए० एस० लन्दन तथा महामन्त्री हिन्दू वर्ण व्यवथा मंडल व श्री पं० जे० पी० चौधरी शास्त्री काव्यतीर्थ स्वयम् पधार कर अपने सदुपदेशों से जनता को कृतार्थ करेंगे यदि किसी महानुभाव को यज्ञोपवीत के विषय में कोई शंका हो तो

उपस्थित होकर समाधान करालें। जातीय भाइयों से भी प्रार्थना है कि विशेषतया पधारने की कृपा करें।

निवेदक—

महन्त जवाहिरदास प्रधान

भजनदास मंत्री

पं० गंगाधर अवस्थी के नारायण प्रेस बहराइच में छपा।

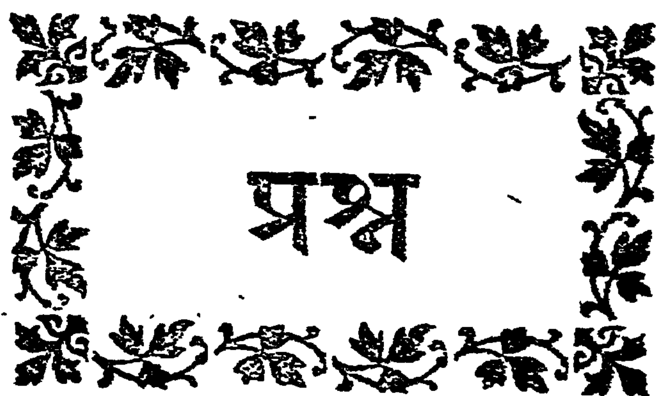
यहां शास्त्रार्थ कैसा हुआ? यहां के विरुद्ध पक्ष वालों की स्थिति कैसी थी? इस विषय का विवरण कु० क्ष० मि० जुलाई सन् १६२४ में इस प्रकार से छपा है:—

लट्ठा पांडे और शास्त्रार्थ

नरोत्तमपुर नाम का एक ग्राम जिला बहराइच में है। यह स्थान नानपारा स्टेशन से १४ मील की दूरी पर स्थित है यहां पर महन्त जवाहिरदास जी का स्थान है। गत गंगा दशहरा के समय पर आस पास के कई जिलों के लोग मुराव सभामें उपस्थित हुये थे। दुर्भाग्यवश उस मौक़े पर मैं न जा सका और न किसी योग्य पंडित की योजना ही हुई। लखनऊ से कई सज्जन वहां पधारे थे और कुछ वाद विवाद के अनन्तर वहां के कुछ भाइयों का उपनयन संस्कार भी हुआ था। सभा समाप्त हो जाने पर वहां के अनपढ़ बामनों ने बड़ा रोरौला मचाया। रायपुर तथा अन्य कई ग्रामों में बलात्कार कई सज्जनों के जनेऊ वहां के ब्राह्मणों तथा राजपूतों द्वारा उतार लिये गये रायपुर के लोगों ने कोर्ट में नालिश भी कर दी है। जब ब्राह्मणों का अत्याचार बहुत बढ़ गया तो मेरे पास दो सज्जन वहां से आये। तदनुसार शास्त्रार्थ के लिये नोटिस छपाई गई और ता० २८ जून को मैं भजन मण्डली तथा श्रोत्रिय पंडित छोटेलालजी शर्मा को साथ लेकर वहां गया। लखनऊ से भी शास्त्री जी का आगमन हुआ था। शास्त्रार्थ के लिये ३० जून तथा

१ली जुलाई रक्खी गई जब हम लोग वहां पहुंचे तो और ही गुल खिला। उधर आस पास में ब्राह्मणों की संख्या अधिक है परन्तु खोजने पर एक भी विद्वान् न मिला लट्ठा पाण्डे लोगों की भरमार है। अब शास्त्रार्थ कौन करे। ब्राह्मण कहने लगे—हम लोग शास्त्रार्थ नहीं जानते क्योंकि हम लोग पढ़े लिखे नहीं हैं हम लोगों का शास्त्रार्थ तो लाठी है। ये लोग जनेउ लेंगे तो हम लोग लाठी के बल से तोड़ डालेंगे। उनकी ओर से इतना आग्रह रहने पर भी अलग २ चिट्ठी लिख कर मुख्य २ ब्राह्मणों के पास भेजी गई। अन्य अन्य ग्रामों के लोग तो शायद नहीं आये परन्तु उसी ग्राम के १५—२० ब्राह्मण जमा हो गये। सब लोगों को देश की परिस्थित बतलाते मुराव लोगों का जनेऊ पर अधिकार सिद्ध करके समझाया गया। परन्तु बात वही रही 'भैंस के आगे बीन बजावे भैंस बैठ पगुराय' वे अपने हठ से बाज न आये इधर उधर से विरोध के शब्द निकल ही पड़ते थे वे मार पीट पर तुले हुये थे उनमें एक योग्य व्यक्ति भी थे उन्होंने परस्पर विचार करके उनको अपना अगुआ बनाया, उन्होंने निम्नलिखित प्रश्न उपस्थित किये।

ह० जे० पी० चौधरी काव्यतीर्थ



(अक्षरशः उद्धृत)

१—मुराव जाति कौन वर्ण है? इनकी पैदाइश किस ऋषि से है?

२—इसका १ गोत्र, २ पर्वर, ३ शिपा, ४ सूत्र, ५ शाखा, ६ पद और ७ वेद क्या है? ८ उपवेद, ९ देवता और १० गायत्री कौन है?

३—यज्ञोपवीत के चावा का चाहिये? फांस, पर्वर कै चाहिये?

४—प्रथम यज्ञोपवीत कब पहनाया गया? क्यों पहनाया गया? कब से और क्यों बन्द हुआ? अब क्यों पहनाया जाता है? धारण करने से क्या कार्य्य सिद्ध होगा?

५—जितने चावा आप नियत करते हो उसका प्रयोजन क्या है और पर्वर, ग्रन्थी, तीनलर, और नौ ताग का क्या प्रयोजन है तय्यारी पर कितना लम्बा चाहिये?

६—बनाने पहिनने की क्या क्रिया है? इस वर्ण के लिये भी किसी क्रिया की विधि है?

७—इस वर्ण की नित्य क्रिया, कर्म क्या २ करना चाहिये?

८—वर्ण विभाग कब और क्यों हुआ? जिस वर्ण में आप साबित करते हो आज तक की वंशावली, वर्णन करो?

आप कौन से ऋषि का प्रमाण देते हो? ग्रन्थ कौन है अगर बर्तमान हो तो दिखलाया जावे वर्ना शही पता दिया जावे। पहले आप जानते हो किः—

श्रुतयः प्रमाणं स्मृता प्रमाणं मुनिर्यस्यवचः प्रमाणं।

(१०) कौन से प्रमाणिक प्राचीन हैं जो श्रुतिः स्मृति से साबित हैं और कौन से कल्पित नये हैं।

(११) आपका नाम सुनकर बहुत से पुरुष आये हैं इससे यह भी वर्णन कीजिये कि प्रत्येक वर्ण कौन सी जातिय है?

(१२) मैंने तीन वर्णों में सुना है कि यज्ञोपवीत के तीन काल हैं उत्तम-काल-मध्यम-काल-गौड़काल जो अवस्था के नियम प्रसिद्ध हैं आप इत वर्णों के लिए कौन काल विधि करते हो। क्योंकि प्रत्येक अवस्था वाले को एक साथ पहिनाया जाता है। काल का नियम अवश्य होना चाहिये?

(१३) इस वर्ण के विवाह, सूदक और सूतक विधि क्या है?

नोटः—पाठक! देख लिया लट्ठा पांडों की योग्यता व प्रश्नावलि? इन प्रश्नों में बीसों अशुद्धियें हैं जिन पर इस ग्रन्थ में लिखना लिखाना ग्रन्थ के उद्देश्य से बाहर है क्योंकि यह ग्रन्थ

जातियों के इतिहास का है अतएव एक या दो प्रश्नों के अतिरिक्त सम्पूर्ण प्रश्न दूसरे ही धार्मिक प्रसंग के हैं अतएव उनका उत्तर अलग किसी समय देंगे और इन प्रश्नों के उत्तर 'कुशवाहा क्षत्रिय मित्र' में छप भी चुके हैं अतएव उनका पिष्टपेषण करना भी उचित नहीं प्रतीत होता है। हां जो ऐतिहासिक व उत्पत्ति सम्बन्धी प्रश्न हैं उन का उत्तर इस ग्रन्थ से स्वतः सिद्ध ही मिल जायगा क्योंकि मुराव काछी जाति की उत्पत्ति इस ही ग्रन्थ में दी है।

इन प्रश्नों के उत्तर वहां की सभा में ही व्याख्यान द्वारा उपस्थित समुदाय के समक्ष दे दिये गये थे।

नरोत्तमपुर के शास्त्रार्थ से निवटने के पश्चात् लखनऊ विरहाने के कुछ मुराव सज्जनों ने हमसे लखनऊ पधारने की प्रार्थना की तदनुसार हम लखनऊ पहुंचे और वहां हमने जाति अन्वेषणार्थ निम्नलिखित विज्ञापन निकाला:—

॥ हरिः ओं तत्सत् ॥

शास्त्रार्थ का चेलेञ्ज।

सर्व साधारण को विदित हो कि काशी नगर में इसी प्रकार का चेलेञ्ज देकर जाति अन्वेषण करते हुए हम इस लखनऊ नगर में आये हैं अतएव यहां के समस्त विद्वान् व पंडित समाज को सूचना दी जाती है कि हमने अन्वेषण द्वारा पता लगाया है कि अनेकों शूद्र व दोगली जातियें कलिकाल के प्रभाव से अपने को द्विज कहती व कहलवाने का उद्योग कर रही हैं यथा नाई जाति ही अपने आपको ब्राह्मण कहती हुई ब्राह्मण वर्ण व अन्य हिन्दू जाति का अपमान कर रही है जो यथार्थ में वर्णशंकर है। इसी

तरह हमने अनेकों शास्त्रीय प्रमाण शिलालेख ताम्रपत्र, प्राचीन अर्वाचीन इतिहास, सरकारी रिपोर्ट तथा कलेक्टर कमिश्नरों के लेखों को संग्रह करके निश्चय किया है कि काछी कोइरी और मुराव ये जातियां क्षत्रिय वर्ण में हैं। अतएव यदि किसी महानुभाव को हमारे निर्णय पर कोई शंका व आपत्ति हो तो वे महाशय नियम निश्चय करके लेखबद्ध शास्त्रार्थ करलें अथवा मित्र भाव से ही यदि किसी के पास हमारे निर्णय के विरुद्ध कोई प्रमाण हों तो वे हमें लिख कर सूचित करने की कृपा करें जिससे लिखित ग्रन्थ में उचित संशोधन हो सके। काशी नगर के विद्वानों ने हमारे निर्णय पर कोई शंका व आपत्ति प्रकट नहीं की अतः वे भी हमारे निर्णय के साथ सहमत हैं यदि आज से तीन दिन तक कोई विरुद्ध प्रमाण व शंका किसी ने न की तो समझा जायगा कि लखनऊ के विद्वान् भी हमारे साथ सहमत हैं।

निवेदक

लखनऊ
ताः ६–७–२४

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्मा M. R. A. S. लंदन
तथा महामंत्री हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल
फुलेरा जयपुर, मुहल्ला बिरहाना लखनऊ

भारत भूषण प्रेस लखनऊ में छपा।

पाठक! लखनऊ में इस विज्ञापन के बटते ही काछी कुइरी और मुरावों से द्वेष रखनेवाली जातियों को इस बात की डाह उत्पन्न हुई कि पण्डित जी ने काछी कुइरी और मुराव जाति को क्यों क्षत्रिय मान ली और हम लोग जो कुछ काल से क्षत्रिय बनने का प्रयत्न कर रहे हैं वे सब शूद्र के शूद्र ही रह गये अतएव वे लोग इकट्ठे हो हो कर हमें पर गाली गलोच देने लगे तथा अनेकों प्रकार

से हम से लड़ने लड़वाने व कष्ट में डालने का प्रयत्न करने लगे उनकी ऐसी कार्य्यवाही से एक दिवस तो हमने बड़ी ही कठिनता से अपनी प्राण रक्षा की। ये लोग लट्ठबाज गुंडों को अपने साथ लिये हुये थे और कहते थे कि हम "पण्डित जी के नोटिस के अनुसार शास्त्रार्थ करने आये हैं" जब इन से कहा गया कि नोटिस में लेखबद्ध शास्त्रार्थ का नियम है अतः नियम निश्चय करके लेखबद्ध शास्त्रार्थ कर लीजिये इस पर उन में से एक लठैत गुंडा गाली गलोच देने लगा अतः प्राण रक्षार्थ नोटिस की मयाद पूरी होते ही हम लखनऊ से चले आये।

इस के कुछ काल पश्चात् ही हमें अपने कई मित्रों से मालूम हुआ, कि जिस प्रकार काछी कुइरी मुराव आदि जातियों को क्षत्रिय बतलाना लखनऊ के कुछ शूद्रों को, नहीं नहीं वर्णसंकर दोगली जातियों को, सहन नहीं हुआ तैसे ही 'राजपूत' अखबार आगरे के सम्पादक कुंवर हनुमन्तसिंह जी रघुवंशी को भी सहन न हुआ, तदनुसार आपने राजपूत भाग २६ के २४ जून सन् १९२४ ई० के अङ्क में बहुत ही विष उगला है कुँवर साहब के मुख्य मुख्य वाक्य निम्नलिखित हैं:—

विचित्र विज्ञापन

(१) फुलेरा के पं० छोटेलाल शर्म्मा जाति अन्वेषण के कार्य में बड़े दक्ष हैं।

(२) कोई भी हीन जाति के लोग क्षत्रिय बनना चाहें तो उस से उचित दक्षिणा ले कर उन को अपने लेख द्वारा क्षत्रिय सिद्ध करने को उद्यत हो जाते हैं।

(३) काशी के "सूर्य्य" नामक पत्र से ज्ञात हुआ है कि इस समय आप काशी पहुंचे हैं और आपने वहां यह विज्ञापन किया है कि "समय के हेर फेर के साथ कई क्षत्रिय जातियां ऐसी हैं, जो यथार्थ में क्षत्रिय वर्ण में हैं, जैसे काछी, कुइरी, मुराव, और ओढ़ जाति आदि, सनातन धर्म रक्षार्थ हम काशी नगरी में आये हैं अतः सूचना दी जाती है कि हमने अनेकों शास्त्रप्रमाण, शिला लेख, ताम्रपत्र, प्राचीन व अर्वाचीन इतिहास तथा अनेकों सर्कारी रिपोर्टों के

प्रमाणों को संग्रह करके निश्चय किया है कि उपरोक्त कई जाति क्षत्रिय वर्ण में हैं।"

(४) हम नहीं समझ सके इस साधारण सी बात के लिये आपको काशी जाने के लिये क्या आवश्यकता हुई ?

(५) सब ही जानते हैं कि काछी, मुराव और कोइरी साग, तरकारी बेचने वाली और मेहनत मजदूरी करने वाली शूद्र जाति हैं।

(६) न जाने पण्डित जी ने इन जातियों के लोगों के कौन गुण कर्म क्षत्रियों के से देखे हैं, और कौन प्रमाण क्षत्रिय सिद्ध करने को उनको मिल गये। 'राजपूत'

सम्पादक ठाकुर हनुमंतसिंह

आषाढ़ कृष्ण ८ संवत् १९८१, २४ जून १९२५ ई०

नोटः—इस लेख के उत्तर में दो लेख कुशवाहा मित्र जुलाई सन् १९२४ में छप चुके हैं तथापिः—

उत्तर

(१) राजपूत सम्पादक जी की वार्ता नं० १ यथार्थ है क्योंकि, जाति निर्णय सम्बन्ध में विद्वानों ने, हमें, परम अनुभवी बतलाया है। अनेकों प्रशंसा पत्र व सार्टिफिकेट उपस्थित हैं। जाति निर्णय सम्बन्ध में हमने कई ग्रन्थ प्रकाशित किये हैं, अतः अपने सम्बन्ध में हम विशेष प्रशंसा न करके सम्पादक जी की बात ही बड़ी करते हैं।

(२) यह सम्पादक जी की योग्यता है कि आप हम पर ऐसा लाञ्छन लगाते हैं। यदि ऐसा ही होता तो बाल की खाल निकालने को हम काशी तक क्यों दौड़े जाते, और निज व्यय करके कानपुर, नानपारा, लखनऊ और काशी आदि आदि में भ्रमण करके शास्त्रार्थ के चैलेञ्ज क्यों बांटते ? यदि सम्पादक जी के लिखने के अनुसार हम ऐसे ही लोभी लालची होते तो घर बैठे ही दक्षिणा ले कर हर किसी को क्षत्रिय लिख देते, पर हमारे कथन का आधार शास्त्राधारानुसार ही होता है तदर्थ ही हम अतुल परिश्रम के साथ जाति निर्णय करते हैं, और जिन जिन जातियों के यहां से वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर आजाते हैं, उन्हें

ही तद्वत् उचित व्यवस्था दी जाती है, जिससे सम्पादक जी की तरह अन्य किसी को हम पर आक्षेप करने का साहस न हो।

हमारे इस कथन की पुष्टि में हम एक निष्पक्ष मनुष्य की सम्मति भी यहाँ उद्धृत करते हैं:—

"आपने पं० छोटेलाल जी पर लालच आदि का आक्षेप किया है। उक्त पंडित जी काशी से प्रस्थान करते समय मुझ से मिले थे, और इस आधार पर मैं कह सकता हूं कि उक्त पंडित जी ऐसे आक्षेपों से सन्मानित किये जाने के पात्र कदापि नहीं हैं। सम्भव है कि "राजपूत" सम्पादक महाशय को मेरे सम्बन्ध में भी ऐसा ही भ्रम हो अतः मैं उन्हें स्पष्ट बतला देना चाहता हूं, कि मैं कुइरी, काछी आदि जाति का नहीं हूं। और न इन जातियों का वकील ही हूं। जन्म से मैं वैसा ही राजपूत क्षत्रिय हूं जैसा कि सम्पादक जी अपने को समझते हैं। मेरे ग्राम में भी कुइरी जाति के बहुत से भाई हैं इन के आचरण का विचार कर मैं ऐसा कहने में अपना कर्त्तव्य और गौरव समझता हूं, कि ये हिन्दु जाति में किसी से द्वितीय श्रेणी के नहीं हैं।"

ह० भगवतीप्रसादसिंह (कुश. सि. जुलाई स. १६२४)

(३-४) विद्वानों का काम आंख मींचकर किसी के लिये कुछ अच्छा बुरा कह देना व लिख देना नहीं होता है, वरन् प्रत्येक विषय पर खूब पूर्वापर विचार करना व भिन्न २ विद्वानों से परामर्श करके गूढ़ अन्वेषण सहित तर्क वितर्क द्वारा निश्चय करना होता है। संसार में एक से एक अद्वितीय विद्वान् हैं और संस्कृत विद्या के लिये भारतवर्ष में काशी ही समुद्र है। अतएव उपरोक्त प्रमाणानुसार काछी, कुइरी, मुराव और ओढ़ आदि आदि जातियों का

क्षत्रियत्व निर्णय करके, उस निर्णय को काशी में पुनः सम्मत्यर्थ व तर्क वितर्क द्वारा सिद्ध करने को यदि हम काशी चले गये तो क्या बुरा किया? और सम्पादक जी को इससे चिढ़ना व द्वेष क्यों मानना चाहिये? इस तरह हमने अपने निर्णय को सोना और सुगन्ध के समान उत्तम बना दिया तो क्या बुरा किया? यदि किसी ने अपने स्वच्छ स्वर्ण को अग्नि में तपाकर दिखा दिया तो क्या बुरा किया? यह सम्पादक जी की बुद्धि की बलिहारी है कि ऐसे महान् विषयों को साधारण सी बात समझते हैं। बड़े २ अन्वेषणकर्त्ता ऐतिहासज्ञ विद्वान् सब ही को भ्रमण करके खूब छान बीन करनी पड़ती है। ज़रा इतिहासों को देखने का कष्ट उठाइये और अन्वेषणकर्त्ता ग्रन्थकारों की जीवनी को पढ़िये कि उन्होंने Research करने में कैसा कैसा कष्टसाध्य भ्रमण किया है अतः विवश कहना पड़ता है कि आप बड़े विशाल बुद्धि हैं। क्या आप नहीं जानते कि मिस्टर फाहियान चीनी यात्री भी चीन से भारत में अन्वेषणार्थ आया था तथा कोलम्बस ने अमेरिका जैसा देश भ्रमण द्वारा अन्वेषण कर खोज निकाला था?

(५) साग तरकारी बेचना इस जाति का मुख्य धन्धा नहीं है। फिर भी आपत्ति वश किसी ने ऐसा किया भी हो, तो क्या बुरा किया? क्योंकि साग तरकारी बेचना कोई शूद्रत्व का लक्षण नहीं है, यदि है तो सम्पादक जी धर्मशास्त्र का प्रमाण देकर अपना पक्ष सिद्ध करते! प्रत्युत् सांग तरकारी का सम्बन्ध कृषि तथा वाणिज्य से है। अतः यह लक्षण द्विजत्व बोधक है।

महनत मजदूरी सब ही द्विजातीगण आपत्तिवश करते हैं, तब काछी, कोइरी और मुरावादि पर ही आक्षेप क्यों? महनत मजदूरी से कौन बचा है? सम्पादक जी की जाति वाले अनेकों महनत मजदूरी करते हैं, स्वयं सम्पादक जी भी चक्रवर्ती राज्य न करके कुछ न कुछ महनत का काम ही करते होंगे। अतएव जिस प्रकार आक्षेप व सम्बोधन आपने इन जातियों को किया तैसा आप पर भी सङ्घटित हो सक्ता है या नहीं? यह सम्पादक जी ही विचारें। मुँह से किसी को शूद्र कह देना तो सहज है, परन्तु उसको प्रमाणों द्वारा

सिद्ध कर देना बड़ा कठिन है और यदि मेहनत मजदूरी करना ही शूद्रत्व का लक्षण है, तो, समादक जी की बिरादरी के ही कई क्षत्रिय म्लेच्छादिकों की महनत मजदूरी करते हुये दिखाये जा सकते हैं। तब क्या वे सब शूद्र हुये ? यदि सम्पादक महाशय अपनी इस युक्ति पर निष्पक्षभाव से विचार करेंगे तो उन्हें ज्ञात होगा कि उनको यह युक्ति उनकी जाति पर भी चरितार्थ होती है। आज कल भारत में, राज्य व्यवस्था क्षत्रियादि की नहीं इसलिये आपत्तिवश द्विजाति समुदाय कोई भी कार्य्य करें तो वे कर सकते हैं और वर्तमान में (चारो वर्ण) कर भी रहे हैं पर ऐसा करने से ही वे द्विजत्व से गिराये नहीं जा सकते।

खैर ! यह तो आप जानते और कहते ही हैं कि काछी, मुराव, कुइरी तरकारी बेचने वाले व महनत मजदूरी करने वाली जातियां हैं; पर, सम्पादक जी की बिरादरी के हजारों लोग नित्य सैकड़ों गरीब बकरों की जीव हिंसा करें व मुसलमान कसाइयों के हाथ को बकरे की तरकारियां हड़प कर जांय उनका वर्ण सम्पादक जी ने कुछ भी निश्चय नहीं किया। अस्तु !

राजपूत सम्पादक जी का पूरा नाम, जो वे प्रायः लिखा व बोला करते हैं, "कुँवर हनुमन्तसिंह रघुवंशी है" इस पर यदि कोई दुष्ट कुतर्क करे कि आप रघुवंशी नहीं हैं, तो क्या आप उसे ईश्वर के हाथ का तांबा-पत्र दिखला सकेंगे ? कदापि नहीं। प्रत्युत् आप इस का सन्तोषजनक उत्तर भी दे सकेंगे या नहीं ? इसमें भी सन्देह है। तथा आप यह भी प्रमाणित न कर सकेंगे कि, महाराज रघु जी के समय से अब तक का कुर्सीनामा क्या है और वह ठीक भी है या नहीं ?

अतएव हम अपने माननीय वृद्ध सम्पादकजी से प्रार्थना करते हैं कि जरा कुछ दिन के लिए आप फुलेरे आ जाइये और तहां देखिये रेलवे स्टेशन के होटलस् Hotels तथा Railway Refreshment rooms रेलवे के रहने के कमरों में, आप ही की बिरादरी के Universally admitted Kshattriyas यूनीवर्सिली ऐडमिटेड सर्वमान्य क्षत्रियगण कहां कहां के कौन कौन आकर क्या क्या **महाप्रसाद** करते हैं ? कहिये सम्पादक जी ! जिस प्रकार आपने

काछी, कुइरी, और मुराव राज्य विहीन ग़रीब क्षत्रिय जातियों को शूद्र कह डालने का साहस किया है तैसे ही आप अंग्रेज़ी जाति वालों को भी कुछ कहने का साहस रखते हैं या नहीं? क्या आपने काफिर परतावा का भी नाम नहीं सुना?

सम्पादक महाशय अपने सातवें नोट में गुण कर्म पर ज़ोर देते हैं, वाह साहब! आप आर्य्यसमाजी ही तो ठहरे। साँवण के भीगे हुए को सदा हरियाली ही सूझा करती है सो आपको भी गुण कर्म की याद आजाती है। अजी हम सनातन धर्म्मी हैं और हम जाति निर्णय भी सनातन धर्म के सिद्धान्तानुसार जन्म पर किया करते हैं तब गुण कर्म का प्रश्न हमसे क्यों? यदि गुण कर्म्म पर आपका बहुत ही आग्रह हो तो आप में भी रघुवंशियों के से गुणकर्म्म नहीं हैं। पुनः हम सविनय सम्पादक जी को सन् १९१२ की (आपके साथ) हमारी भेंट का स्मरण कराते हुये, हमारे उस पब्लिक नोटिस की ओर दृष्टि करने की प्रार्थना करते हैं, जो आगरा शहर में काछी कुइरी आदि जातियों की तहकीक़ात के सम्बन्ध में बांटा गया था, तब आपसे भी हमने इन जातियों के वर्णत्व विषय में पूछताछ की थी तब आपने यह कैसे कहा था कि 'काछी' कछवाहा शब्द का "लघुतम रूप है?" और आज आप इनको शूद्र बतलाने लगे सो कैसे? कहीं बाबू डूंगरसिंह जी मंत्री काछी सभा आगरा से आपकी कुछ अनबन तो नहीं हो गई है?

जब हमारा एक बड़ा विज्ञापन L. B. D. M. Press आगरे में छप कर शहर में बांटा गया और दूसरा आप ही के Rajput Anglo Oriental Press में आप ही के प्रबन्ध से छप कर शहर में बँटा, और कई दिवस तक आगरे ठहरे रहकर, "जाति अनुसन्धान" सम्बन्ध में हम शास्त्रार्थादि करते व व्याख्यानादि देते रहे, तब ही आपको इनके विरुद्ध बोलना चाहिये था, हम तो १२ वर्ष से इनका अन्वेषण करते, करते आज इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि "काछी, कुइरी, मुराव और ओढ़" आदि जातियें क्षत्रिय वर्ण में हैं। कहिये सम्पादक जी आपने जान बूझकर ऐसा अनर्थ क्यों किया?

हमारे माननीय रघुवंशी सम्पादक जी महाराज प्रायः गुण कर्म पर विशेष बल देते हैं अतएव प्रश्न होता है कि क्या आप नहीं जानते कि रघुवंशी श्रीरामचन्द्र जी महाराज ने धर्म और देवताओं की रक्षा के लिये कैसे कैसे राक्षसों का बध किया ? कहिये आपने अपने जीवन में कितनेक मच्छर मारे ?

तथा जिस २ समय आप ही के आगरे में, धर्मान्ध मुसलमानों का आक्रमण हो रहा था जिसमें स्त्री, पुरुष बच्चे तथा मन्दिरों पर, आघात पहुंचा उस समय आप किस कोठरी में समाधि लगाये बैठे थे ? क्योंकि रघुवंशी श्री रामचन्द्र जी ने १४००० चौदह सहस्र सेना सहित खरदूषण तथा उसके पश्चात् मेघनाद, रावण, कुम्भकर्ण, अहिरावणादि बड़े २ राक्षसों को मारकर, महर्षि विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षा की थी, उसी प्रकार आपने उन धर्मस्थानों, अबलाओं, अबोध बच्चों तथा पीड़ित पुरुषों को बचाने के लिये उनकी सेवा क्यों नहीं की और यदि की तो क्या ? इससे प्रमाणित होता है कि आप आर्यसमाजी होते हुए भी अपने में गुण कर्म नहीं मानते, परन्तु उसका प्रयोग औरों पर ही करना जानते हैं। अहा ! महात्मा तुलसीदास जी ने कहा है कि:—

चौपाई:—

पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे ॥

अतः क्या गुण कर्म की व्यवस्था विचारे काछी, कोइरी, मुराव, और ओढ़ आदि पर ही लागू होती है ?

सम्पादक जी का यह कहना कि "कौन प्रमाण क्षत्रिय सिद्ध करने को उनको मिल गये ?" इसका उत्तर तो यह ग्रन्थ स्वयं दे देगा क्योंकि उपरोक्त प्रत्येक जाति के विवरण के साथ एक ही नहीं अनेकों प्रमाण दिये गये हैं। अतः सम्पादक जी को चाहिये कि वे इस ग्रन्थ को सम्पूर्ण देखकर अपनी संतुष्टि कर लें।

प्रिय सम्पादक जी ! आपके कथनानुसार जब ये लोग क्षत्रिय नहीं हैं, और आपने इन पर प्रहार किया तो आपके पड़ोसी नाई

लोग तो हिन्दू मात्र के गुरु ब्राह्मण बनते हैं कहिये आपने उनका भी कुछ सत्कार किया या नहीं ?

अब उपसंहार में (रघुवंशी) सम्पादक जी की सेवा में श्री रामायण के कुछ वाक्य उद्धृत करते हैं आशा है कि इससे आप शिक्षा ग्रहण करेंगे।

रघुवंशिन कर सहज सुभाऊ।
मन कुपंथ पग धरै न काऊ॥
रघुवंशिन मँह जहँ कोई होई।
तेहि समाज अस कहहि न कोई॥
कहहुँ खभाव न कुलहिं प्रशंसी।
कालहुं डरै न रण रघुवंशी॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाही।
हमरे कुल इन पर न शुराई॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जांय पर वचन न जाई॥

रघुवंशी जी महाराज ! आशीर्वाद !!

जय श्री रामचंद्र जी की !!!

अब अन्त में आशा है कि सम्पादक जी महाराज भविष्यत् में अपने को सच्चे रघुवंशी प्रमाणित करेंगे और किसी को वृथा दोष लगा कर बुरा भला न कहेंगे। ग्रन्थकर्त्ता।



हिन्दू जाति सभाओं के पुजारियों की लीला



ठक वृन्द ! विक्रमीय १६ सौ की शताब्दी में देश के उत्थान के साथ २ आर्य समाज के प्रचार के कारण हिन्दू जाति सभाओं में भी कुछ न कुछ जागृति उत्पन्न हुई परन्तु उनमें काम करने धरने वाले मुखिया आर्य सामाजिक लोग हैं। जिन में विशेष लोग समाज के कामों को एक ओर रख कर जाति सभाओं में निःस्वार्थ भाव से काम करने वाले बहुत ही कम हैं, यही कारण है कि जातियें अपनी पूर्ववत् दशा के अन्ध कूप में पड़ी हुई हैं इस में कोई सन्देह नहीं कि जाति सभाओं में स्वार्थियों की भर मार होने के कारण जितनी उन्नति जातियों की होनी चाहिये थी उतनी कुछ भी नहीं हुई क्योंकि प्रत्येक जातियों के यहां से हमारे पास अनेकों पत्र आते रहते हैं जो प्रायः यही पूछा करती हैं कि "हमारे गोत्र प्रवर व वंशावली तथा वर्ण आदि बतलाइयेगा ?" अब ऐसे अनेकों आवेदन निवेदन पत्रों पर हमें अति शोक के साथ आश्चर्य होता है कि वर्षों से जाति सभाओं के लोग सभायें कर रहे हैं प्रधान व मंत्री बने हुये हैं हजारों ही रुपैया अपनी जाति सभाओं के कराने में फूक दिया, जाति का मासिक पत्र भी निकालने लगे, सम्पादक भी बन बैठे, पुरानी शैली की जाति पंचायत को हटा कर अपनी जाति पर हुकूमत करने के लिये मंत्री, उपमंत्री, प्रधान, उपप्रधान आदि २ अधिकारी बन बैठे और फिर भी आप यही पूछते रहे कि हमारी

वंशावली क्या है ? तब प्रश्न होता है कि आप कई वर्षों से सभा व महासभायें कर रहे हैं तो आप ने अपनी जाति हित के लिये किया ही क्या ? और जाति भाइयों का हज़ारों रुपैया फूककर उन्हें लाभही क्या पहुंचाया और जब आप को अपनी वंशावली मालूम ही नहीं तब आप अपने को वर्मा शर्मा और गुप्त कैसे लिखते हैं ? और ऐसी सभा करने से लाभ ही क्या हुआ ? हां किसी २ जाति सभाओं में हमने देखा है कि जो लोग साधारण से लिखे पढ़े हैं वे जाति सभाओं में घुस कर प्रधान, उपप्रधान, मंत्री, महामंत्री सम्पादक अवश्य बन बैठे अन्यथा सम्पादक व प्रधान आदि बनना उन के भाग्य में कहां था ! और यदि वे ऐसा न करते तो उन्हें अपनी जाति पर हुकूमत करने का मौका कैसे मिल सकता था ? कदापि नहीं। हम ने देखा कि जाति सभायें दस दस व पन्द्रह वर्ष से बराबर हो रही हैं फिर भी उन्हें अपनी जाति का इतिहास ही मालूम नहीं कि हम कौन हैं ? हमारी स्थिति क्या है ? हमारे पुर्खा लोग किन.किन ऋषियों की सन्तान थे ? हमारी जाति की प्राचीन स्थिति क्या थी? और वर्तमान में क्या हो गई आदि आदि बातों की ही जब खोज न हुई तब जाति के हज़ारों रुपये जल्सों में फूंकने से लाभ क्या निकला? हमने प्रत्येक जाति सभाओं की रिपोर्टों को मंगवा कर देखा किसी रिपोर्ट से हमें यह पता न लगा कि सभा न होने से पहले जाति की यह दुर्दशा थी तो दस या पन्द्रह वर्ष से सभा व महासभा कर के व जाति के सैकड़ों रुपये स्वाहा कर के हम ने जाति की अमुक निकृष्ट दशा को उत्कृष्ट बना दिया। जब सभाओं की ऐसी स्थिति है तब ऐसी सभाओं से लाभ क्या ?

प्रत्येक वर्ष दिसम्बर के महीने में जब जाति सभाओं के जल्सों की फ़सल आती है तब चहुँ ओर से हमारे पास जाति सभाओं में पधारने के निमित्त निमंत्रण पत्र, चिट्ठियें व तार आया करते हैं जिन का भावार्थ यह होता है कि "आप ग्रन्थ व शास्त्र ले कर हमें अमुक वर्ण में सिद्ध करने के लिये चले आइये आपका मार्ग व्यय व भेंट आदि आदि सब कुछ दिया जायगा" प्रमाण के लिये अनेकों उदाहरण न लिख करकेवल दो एक सभाओं की कार्यवाहियें सङ्केत रूप से पाठकों के अवलोकनार्थ प्रकाशित करते हैं।

युक्त प्रदेश के आगरा व अवध प्रान्त में कहीं कहीं तेली जाति की सभायें हैं † तथा उन सब सभाओं के ऊपर एक महासभा है जिस में इन्होंने अपना वर्ण वैश्य निश्चय कर लिया है और तदनुसार महासभा का नाम भी "साहू वैश्य महासभा" रख रक्खा है। तेली लोग वैश्य वर्ण में हैं या नहीं ? इस प्रश्न का उत्तर तो सभा ही देवे, कि किन प्रमाणों के आधार से ये लोग अपने को वैश्य मानते हैं तेली जाति के वर्ण निर्णय विषय पर हम अपने विचार भविष्यत में प्रकट करेंगे। आश्चर्य यह होता है कि तेली जाति का एक भेद "राठौड़" तेली भी है जो इन वैश्य कहने वाले तेलियों में अपने को क्यों सम्मिलित करते हैं ? क्योंकि राठौड़ क्षत्रिय वाचक है वैश्य वाचक नहीं और जब ये लोग वैश्य तेलियों की सभा में सम्मिलित हैं तो या तो सब ही क्षत्रिय होने चाहियें या सब ही वैश्य होने चाहियें, जो कहो सब ही वैश्य हैं तो "राठौड़" शब्द अपनी जाति के साथ में क्यों लगाते हैं ? और जो कहो यथार्थ में ये लोग 'क्षत्रिय' हैं तो वैश्य कहने वालों में अपने को क्यों मिलाते हैं ?

गत वर्ष जून सन् १९२३ ई० में तेलियों की सभा ललितपुर जिला झांसी में हुई थी उस समय हमारे पास सभा की ओर से यह तार आयाः—

From LALITPUR. To Chhoteylall Mahamantri, PHOLERA B. B.

Sabha in Lalitpur on 18th June come with Shastras to prove telis Vaishya immediately. Nand Kishore Dhanushdhari, temple Lalitpur.

भाषार्थः—ललितपुर से नन्दकिशोर जी ने तार दिया कि तेली सभा का जलसा ता० १८ जून सन् १९२३ को है, इसलिये

† तेली जाति के विषय में बहुत कुछ विवरण जाति अन्वेषण प्रथम भाग के पृष्ठ ३८ से ४१ तक में भी लिखा जा चुका है वह सब विवरण तार्किक दृष्टि से लिखा गया अन्वेषण मात्र है।

शास्त्रों को अपने साथ लेकर तेलियों को वैश्य प्रमाणित करने के लिये एक दम चले आइये धनुषधारी के मन्दिर में सभा है।

पाठक ! आप ही विचार सकते हैं कि हमने तेली जाति को वैश्य वर्ण की व्यवस्था कब दी ? हमने अभी तक यह निश्चय नहीं किया है और न इस जाति ने अभी तक हमारे सप्तखण्डी में छपे वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर ही दिये हैं। हां इनको वैश्य प्रमाणित कराने के लिये अपनी साहू वैश्य सभा से प्रमाण पूछने चाहिये थे कि वे किन किन कारणों से अपने को वैश्य मानते हैं ?

इस ही तरह जब यह लोग अपने को वैश्य मानते हैं और हमसे भी अपने को वैश्य ही सिद्ध कराना चाहते हैं तो ऐसी स्थिति में मंडल के नियमानुसार साहू वैश्य महासभा को हमारे उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर भेजने चाहिये थे तिन पर विचार करने पर जैसा प्रमाणित होता हम इनको व्यवस्था दे देते। यदि यथार्थ में यह लोग वैश्य प्रमाणित होते तो हम सहर्ष इनको वैश्य की उपाधि दे देते। क्योंकि प्रत्येक जाति का उपकार करना और उसे नीचता के खड्डे में से उठा कर उच्चता के शिखर पर पहुंचाना हम अपना परम धर्म समझते हैं। परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हिन्दू जाति का व्यवहार तेली जाति के साथ बड़ा दुःखजनक है। अर्थात् ये लोग अपने को वैश्य मानते हैं परन्तु ऐसा सुनने में आया है कि उच्च हिन्दू समुदाय तो विशेष रूप से इनके हाथ का जल भी ग्रहण नहीं करते यदि याथार्थ में यह सत्य है तो यह लोग कैसे वैश्य कहे और माने जा सकते हैं ? क्योंकि हमारी यात्रा में इनके विरुद्ध समुदाय में से एक मनुष्य ने तो हमारे सन्मुख "जे वर्णाधम तेलि कुम्हारा। श्वपच कोल किरात कलवारा॥" यह पेश करके कहा कि इसके आधारानुसार तो तेली लोग नीच वर्ण ठहरते हैं आप इनको वैश्य कैसे बताते हैं ? इसके उत्तर में हमने उसे कह दिया कि हम भविष्यत में निश्चय करके कहेंगे। हम इस जाति का कल्याण अवश्य चाहते हैं परन्तु हिन्दू धर्म की सीमा के अन्दर रहते हुये ही सब कुछ करना चाहते हैं। यह जो कुछ लिखा है वह प्रसंग वश व तर्क

वितर्क की दृष्टि से लिखा है क्योंकि हमारे पास तेली जाति के सज्जनों के कई पत्र आये हुये पड़े हैं अतएव उनके सन्तोषार्थ व उनकी विज्ञप्ति के लिये यह सब कुछ सूत्रनार्थ लिख दिया गया है।

आजकल जाति सभाओं के पुजारियों में एक बड़ी खूबी देखी गई है कि जहां इन्हें हमारे अन्वेषण युक्त विवरण में अनिश्चित सम्मति के अन्तर्गत एक दो वाक्य व शब्द भी अपने माने हुये मन्तव्य के अनुकूल दीख पड़े कि चट पट उसही को उठा कर इन्होंने अपने नाम से अपनी जाति की वंशावली रच डाली और जाति सभाओं में खड़े होकर लैक्चर फटकारने व अपने को सिद्ध महात्मा और आचार्य्य तक कहने व लिखने पढ़ने लग गये।

इस ही तरह हमारी अन्वेषण यात्रा के भ्रमण में जैसा जैसा नाई जाति के लोगों ने अपने दावे को जिस प्रकार प्रकट किया था उनको हमने उन्हीं के शब्दों में मंडलस्थ धर्मव्यवस्था सभा के सभ्यों के सन्मुख अन्वेषण रूप में प्रकाशित करते हुये तत्सम्बन्धी किञ्चित् सा विरुद्ध पक्ष भी दिखला कर चाहा था कि नाई जाति पर उचित व्यवस्था प्रकाशित कर दी जाय परन्तु खेद है कि नाई जाति ने इस का Misuse दुरुपयोग किया और झट पट ब्राह्मण बन बैठे। इस सब रहस्य का खंडन व नाई जाति के छल कपट का खाका हम "सप्तखण्डी जाति निर्णय" प्रथम भाग में बड़े बड़े अटल प्रमाणों द्वारा खेंच आये हैं तहां बड़े बड़े नामाङ्कित विद्वानों के हस्ताक्षर युक्त सम्मतियें व अदालत के फैसले द्वारा निर्णय किया गया है कि नाई लोग ब्राह्मण नहीं किन्तु वर्णसंकर हैं।

इसी प्रकार **कहार** जाति का एक पुजारी हमसे मिला जो अपनी जाति को क्षत्री बतलाते हुए अपने नाम के अन्त में **'आचार्य'** शब्द लगाता था यह ही नहीं वह अपने आप कहार होते हुए कहार जाति का उपदेशक भी था और अपने को **महात्मा** भी लिखता पढ़ता था जो यह भी कहता था कि मैं अपने सैकड़ों कहार भाइयों को जनेऊ पहिना कर उनका गुरु बन चुका हूँ सब लोग मेरे पैर पूजते हैं। मैंने पूछा आप तो अपने को कहार बतलाते हैं आप अपने जाति भाइयों के गुरु बनकर उनसे पैर कैसे पुजवाये?

तब वह कहने लगा कि "मेरे जाति भाई वहुत कम लिखे पढ़े हैं जैसा हम चक्कर घुमाते हैं वैसा ही घूम जाता है" और फिर कहने लगा कि अभी हाल में ही मैं रावलपिंडी में चौधरीजी के लड़कों को जनेऊ दिला कर चेले करके पैर पुजवा के आया हूं तब हमने कहा "यह तो सनातनधर्म के सिद्धान्त के विरुद्ध है" तब उसने कहा "ऐसा मैं ही नहीं करता हूं सब जातियों में ऐसा होता है कोयरी जाति में एक कोयरी पण्डित महाराज ने सैकड़ों जनेऊ करा डाले हैं। इस ही तरह काछी. मुराव. तेली, नाई आदि आदि सब ही जातियों में ऐसा हो रहा है" अस्तु। इस पर हमने कहा कि दूसरी जातियों में यदि किसी ने कोई भूल की तो आप उस भूल का अनुकरण क्यों करते हैं। तब तो वह कहार जाति का पुजारी मौन्य हो बैठा और चल दिया।

इस कहार महाशय ने महात्मा बोधक अपने नाम के कार्ड व Letter Paper लेटर पेपर भी छपवा रक्खे थे और इन्हीं द्वारा पत्र व्यवहार भी करता था इसके इस महात्मापने के कृत्य से हम बड़े आश्चर्यान्वित हुए कि कुछ वर्षों पहिले श्रीमद्दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज लाहौर के प्रिन्सपिल लाला हंसराज जी को लोग **महात्मा** कहते थे परन्तु आर्य्य समाज में मांस पार्टी व घास पार्टी का झगड़ा होने से उनके महात्मापन का Transfer लाला मुंशीराम जी पर हो गया जो आज कल "महात्मा श्रद्धानन्द जी" नाम से प्रसिद्ध हैं, हम सोचते रहे कि इन दो सच्चे महात्माओं के होते हुए कहार जाति में जाति सभा के पैसे से पेट भरता हुआ यह **तीसरा महात्मा** कौन पैदा हुआ? इनकी लीला की गाथा बड़ी भारी है अतएव भविष्यत् में सुनावेंगे क्योंकि येही जाति सभाओं के पक्के पुजारी हैं जाति सभाओं में ऐसे लोग सम्मिलित हो कर ही अपने जाति भाइयों से अपने को खूब पुजवाते हैं।

इसलिये हम जाति सभाओं को इन पुजारियों के फन्दे से बचे रहने का उपदेश देते हैं अन्यथा ऐसे लोग आप ही का जूता व आप ही का सिर करेंगे और **महन्त** बन कर आप लोगों से पैर पुजवायेंगे और आपके पैसे से अपने आप आनन्द उड़ावेंगे।

जाति सभाओं के पुजारियों की धूर्तता का कहां तक वर्णन किया जाय ? प्रथम तो यह लोग दूर बैठे हुए हमें 'पिता जी' ऐसा सम्बोधन करते हुए एक कार्ड मात्र द्वारा पूछते हैं कि हमारी जाति की उत्पत्ति, गोत्र, प्रवर, शाखा, शिखा, सूत्र देवता व वर्ण आदि क्या है ? कृपया लिख भेजिये हम आपका धन्यवाद करेंगे।

पाठक ! इस प्रकार के पत्र हमारे यहां हज़ारों आये हुये पड़े हैं यदि कोई सज्जन देखना चाहें तो आकर हमारे मण्डल कार्यालय में ऐसे पत्रों को देख सक्ते हैं। यद्यपि हमारा नियम था कि उत्तरार्थ कार्ड व लिफाफा अवश्य आना चाहिये परन्तु जाति सभाओं के विशाल बुद्धि पुजारी लोग उत्तर के लिये कार्ड तक नहीं भेजते। यह ही नहीं उन्होंने यह भी न सोचा कि उपरोक्त प्रश्न कितना सा छोटा है परन्तु इसका उत्तर कितना वड़ा महान् परिश्रम युक्त व उत्तरदायित्व पूर्ण है ? जाति सभाओं के ऐसे निर्बुद्धि पुजारियों के सैकड़ों पत्र प्रति मास चिरागअली के सुपुर्द न करके रद्दी में डाल दिये जाते हैं बहुत से पुजारीगण रोते विलकते हुये बड़े ही अनन्य भाव से अपना आर्तनाद हमें सुनाते हैं तब हम दयार्द्र होकर कुछ न कुछ उत्तर उन्हें दे देते हैं इस प्रकार के पत्रों की बहुतायत हमारे यहां बहुत रही अर्थात् ईस्वी सन् १९२३ के एक वर्ष में हमारे Letter despatch पत्र रवानगी रजिस्टर का नम्बर २२०७ तक पहुंच गया था और अब भी तारीख़ ६ फरवरी सन् १९२४ तक एक महीना छः दिन में पत्र रवानगी नम्बर ४८८ तक पहुंचा है ऐसी स्थिति में पाठक अनुमान कर सक्ते हैं कि विशाल बुद्धि जाति सभाओं के पुजारी क्या कर रहे हैं ?

जाति सभाओं के हित व उन्नति को चाहने की दृष्टि से जहां हमारी कलम से कुछ भी दयायुक्त वाक्य निकला कि चट पट जाति सभाओं के पुजारी लोग उन हमारे वाक्यों को छपवा छपवा कर यत्र तत्र उसे व्यवस्था स्वरूप में प्रकट करने लगते हैं और कहते रहते हैं कि महामंत्री जी ने हमें ऐसा लिख दिया है। हमें दुःख है कि ये लोग हमारी दयार्द्रता का Disadvantage कुलाभ उठाते हैं अतएव विवश होकर हम उन्हें प्रायः उत्तर ही नहीं देते और यदि देते भी हैं तो बहुत ही सूक्ष्म सा तुले हुये शब्दों में देते हैं।

ऐसी हमारी स्थिति देखकर कुछ जाति सभाओं के धूर्त पुजारी लोग हमारे पास आते हैं और दिखावट के लिये हमारे अनन्यभक्त से बनकर आश्वासन युक्त कुछ लिख देने की प्रार्थना हमसे करने लगते हैं तब हम बड़े संकल्प विकल्प में पड़ जाते हैं कि यह मनुष्य जो अपने पास आया है यथार्थ में हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों के अनुसार वर्णसंकर * नीच पतित व शूद्रवर्णी है यदि इसे ऐसा ही लिख के दिया जाय तो इसे दुःख होगा और यदि इसे कुछ प्रसन्न करने के हेतु इसकी इच्छा के अनुकूल लिख दिया तो वह एक बड़ा भारी अधर्म युक्त कर्म होगा इसलिये ऐसे लोगों को हम प्रिय वचनों में बतला कर टरका दिया करते हैं।

परन्तु धूर्तों की धूर्तता भी बड़ी प्रबल होती है अर्थात् चौका बर्तन करने व झूठे बर्तन माजने वाली वर्णसंकर शूद्र जाति के एक मनुष्य ने हमें आकर छल ही लिया अर्थात् उसने हमसे कहा कि मैं क्षत्री जाति का एक मनुष्य हूँ कृपया बतलाइये चौहाण जाति को आप क्षत्रिय वर्ण में मानते हैं या नहीं। हमने उत्तर दिया कि "चौहाण लोग Universally Admitted सर्व सम्मति से क्षत्रिय हैं।" तब उसने कहा कि रावलपिंडी में चौहाण जाति का एक चौधरी बड़ा आदमी है उसके लिये आप पत्र लिख दें कि "मैं आपको क्षत्रिय मानता हूँ आप सभा में पधारें मैं भी सभा में आने का उद्योग करूंगा"

इस पर हमने उनसे कहा कि आप मज़मून बोलिये हम उसे लिख कर सोच समझ लें तब कुछ कहा जा सकेगा इस पर वह dictate (बोलता गया) और हम मंडल के कार्ड पर लिखते गये, बस उस कच्चे मसौदे को हमने अपने दफ्तर में एक ओर रख दिया कि इस पर पूर्वापर विचार करके व संशोधन युक्त इसकी Fair Copy शुद्ध कापी करा कर तथा दफ्तर में इसकी नक़ल रख कर व Letter despatch पत्र रवानगी रजिस्टर में चढ़वा कर और उस पर हस्ताक्षर करने वाली स्याही से दस्तख़त करके

* दोगला हरामज़ादा नुत्फेहराम याने Bastard by caste

(Proper Channel) उचित क्रम से इस कार्ड को डाक में डलवा देंगे पर उस धूर्त ने बातों ही बातों में उस ही कच्चे मसौदे युक्त कार्ड को चुपके से अपने अधिकार में कर लिया । हम उस को स्टेशन तक पहुँचाने भी गये और जब हमने स्टेशन से घर को वापिस गमन किया तब उस धूर्त ने प्लेटफार्म पर (Plat-Form) हमारे चरणारविन्द में साष्टाङ्ग दण्डवत की, हम चले आये और वह गाड़ी में बैठ गया । सायंकाल को हमने उस कार्ड को उचित कार्यवाही के लिये अपने दफ़्तर में ढूँढ़ा परन्तु वह कार्ड न मिला तब दूसरे दिन लोगों से ज्ञात हुआ कि जो मनुष्य कल (Up-to-date Gentleman) आपके पास आया था वह अमुक दोगली जाति का मनुष्य था जो उस्तादी से अपना कार्य कर ले गया । अस्तु

इसलिये सर्व साधारण की विज्ञप्ति के लिये निम्नलिखित नियमोपनियम प्रकाशित करते हैं:—

(१) पहिले तो हमें बुलाने का उद्योग ही नहीं करना चाहिये क्योंकि हम घर बैठे ही जाति सभाओं का हित साधन करने के लिये सब कुछ करने को तैयार हैं । ऐसा करने से जाति सभाओं का बहुत कुछ हमारे सम्बन्ध का ख़र्च बच जायगा और बचा हुआ रुपया किसी शुभ काम में लग सकेगा ।

(२) यदि हमारा बुलाना आवश्यक ही हो तो दोनों ओर का दूसरे दर्जे का रेल किराया और नौकर का तीसरे दर्जे का और मार्ग व्यय मिश्रित ख़र्च तीन रुपये प्रति दिन व मंडल की फीस २५) ये सब रुपया पेशगी आ जाना चाहिये ।

नोट—जाति सभाओं में विशेष आर्य सामाजिक होते हैं ये लोग जाति सभाओं की ओर से मीठे २ अति नम्र आवेदन निवेदन पत्र भेज कर वहां बुलाकर हम से सनातन धर्म के सिद्धान्त के विरुद्ध अपना स्वार्थ सिद्ध कराना चाहा करते हैं परन्तु हमारे ऐसा न करने पर वे हमें किराया आदि देने दिलाने में ही बाधा डाल देते हैं ।

(३) जो लोग अपनी जाति की वंशावली व अन्य किसी विवादास्पद गूढ़ धार्मिक विषय पर परामर्श करने आना चाहें उन्हें आने से पहले ११) भेज कर स्वीकृती मंगवा लेनी चाहिये ।

नोट—जाति सभाओं के पुजारी लोग आ आकर दो दो दिन तक हमारा समय नष्ट किया करते हैं कि यह दिखलाओ वह बतलाओ यह बतलाओ वह बतलाओ आदि आदि ।

(४) जो लोग मिलने आना चाहें उन्हें आने से, पूर्व सनातन धर्म सभा के मन्त्री व प्रधान का सार्टिफिकेट इस आशय का भेजना होगा कि "अमुक पुरुष जो आप से मिलने आना चाहता है वह अमुक जाति का तथा अमुक कार्यों के लिये तथा आने वाला महाशय सनातन धर्मावलम्बी है ।"

नोट—ऐसा नियम रखने का कारण यह हुआ कि जाति सभाओं के अनेकों धूर्त पुजारी लोग कपट मुनि की तरह से हमारे पास आये और हमारे साथ अनेकों प्रकार की चालें चलते हुये अपने आर्य सामाजिकतत्व को छिपा कर दो दो दिन तक हमारा समय नष्ट करते रहे और भगवान की कृपा से भेद खुलने पर चल दिये ।

(५) जो जाति सभायें व सज्जनगण, किसी कार्य-विशेष से हमें अपने यहां बुलावें, उन्हें हमारे खान पानादि के विषय में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये । क्योंकि हम अपने निज के कार्य्यों में स्वतन्त्र हैं ।

नोट—क्योंकि हम सम्पूर्ण हिन्दू जाति का उद्धार करना चाहते हैं, और भारतवर्ष में आज जो हजारों भेद जातियों के हो गये हैं, वे सब चारों वर्णों के अन्तर्गत हैं क्योंकि बहुतों की तो उत्पत्ति ही नहीं मिलती है, और जो किसी २ के बारे में कुछ लिखा मिलता है वह थोड़े दिनों की आधुनिक पुस्तकों में ही मिलता है । अतएव हमें जाति-निर्णयकर्त्ता जान कर प्रायः दूर २ की जातियें हमें अपने यहां उपदेशार्थ बुलाती हैं, उनके यहां जाने पर उन में विशेषता आर्य्य सामाजिकों की होती है । अतएव वह लोग अपनी सर्वस्व कर्त्तव्यता इसी में समझते हैं, कि हम उनके यहां का भोजन करलें और उन के हाथ का जल पीलें । परन्तु जब हम उन के इस कर्त्तव्य को लोकाचार से विरुद्ध देखते हैं, तो उन की इच्छा की पूर्ति करने से हम अपनी अनिच्छा प्रकट कर देते हैं, इससे वे लोग हम से अप्रसन्न हो जाते हैं ।

अतएव ऐसे लोग या तो हमें बुलावें नहीं, और यदि बुलावें तो हमारे खान पानादि में हस्तक्षेप न करें। क्योंकि जो जातियां क्रियालोप से व ब्राह्मणों के अदर्शन से हजारों वर्षों से पतित हो चुकी हैं, वे विचारी ब्राह्मणों की सदाचार प्रणाली, तथा ब्राह्मणों का आदर, सत्कार, मान प्रतिष्ठा क्या जानें? क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में ऐसा होते कभी देखा ही नहीं। ऐसी स्थिति में हमें भी सदाचार प्रणाली के अनुसार चलना पड़ता है।

हिन्दू जातियों का शुभेच्छु—

श्रोत्रिय छोटेलाल शर्म्मा।



जाति सभाओं के सज्जनों से

निवेदन

जाति सभाओं के मुखिया, अधिकारी तथा पत्र सम्पादक महाशयों से निवेदन है कि आप लोग हमारे लेखों को व प्रमाणों को तथा परिश्रम किये अन्वेषण को अपने २ पेम्लैफट ट्रैक्ट हैण्डबिल व समाचार पत्रों द्वारा प्रकाशित करके अनुचित लाभ न उठावें। क्योंकि आपके ऐसा करने से हमें बड़ी हानि उठानी पड़ती है और जब हम आपकी जाति का उपकार करते हैं निज व्यय या परिश्रम से अन्वेषण करके विवरण संग्रह करते हैं तब आपका यह धर्म नहीं है कि अपनी चालाकी, चुस्ती, पौलिसी व होशियारी से आप हमारे साथ कृतज्ञता प्रकट करने की अपेक्षा हानि पहुँचावें। इस आपके कर्त्तव्य को परमात्मा के न्याय पर छोड़ते हुये आपसे प्रार्थना करते हैं कि भविष्य में आप लोग ऐसा न करें जिससे हमारा उत्साह बढ़े और हम हिन्दुजाति की विशेष सेवा कर सकें।

दग्धहृदय—

ग्रन्थकर्ता।





ब्राह्मण खण्ड

उप्रेति- यह कूर्मांचल प्रान्त की एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण जाति है इस देश का आज कल का प्रचलित नाम कुमाऊं है यह हिमालय पहाड़ की तलैटी में बसा हुआ है किसी समय यहां जंगली जातियों की ही विशेपता थी, यहां के प्राचीन निवासी किरात, भिल्ल राजी, हूण, शक और डोम जातियें हैं, उस समय यहां क्षत्रिय राजाओं का राज्य था पर ऐसी अशिक्षित जातियों में श्रेष्ठ ब्राह्मणों के दर्शन तक भी होना दुर्लभ था। उस समय के क्षत्रिय राजाओं में सर्वमान्य धर्मात्मा गुणग्राही, उदारचित्त राजा मनिकोटि था उस ने चहुंओर से योग्य योग्य ब्राह्मण विद्वानों को बुला कर अपने राज्य में बसाया और उन को योग्यतानुसार उन्हें जागीर व राज्यशासन में उच्च पद दिये थे तदनुसार इस प्रान्त में अनेकों ब्राह्मण विद्वान् महात्माओं के वंशों का पता चलता है। इस प्रदेश में सब ही ब्राह्मण भिन्न भिन्न प्रान्त व देशों से आये हुये हैं जिन में महाराष्ट्र, द्रविड़, कान्यकुब्ज, गौड़ और सनाढ्य आदि २ सम्मिलित हैं।

इन लोगों में विद्या आदि शुभ गुण होने से ये लोग चन्द्रवंशी राजाओं के गुरु, पुरोहित, उपाध्याय आचार्य्य, वैद्य, ज्योतिषी, मंत्री और दर्बारी आदि आदि हुये।

यहां ब्राह्मणों के दो मुख्य विभाग हैं एक राज-कर्मचारी और दूसरा पुरोहित कर्मचारी। इन में राज-कर्मचारी पुण्यदान दक्षिणा लेना व पुरोहित कर्म करना अच्छा नहीं समझते और पुरोहित गण तो ऐसा करते ही हैं पर राजकर्मचारी गण अपने को उच्च-कोटि के समझते हैं, यह उचित नहीं क्योंकि राजकर्मचारी गणों के पास धन, जन और राजसत्ता का बल होने से यदि वे दान पुण्यादि न लें तो क्या आश्चर्य्य है? क्योंकि वे लोग अपनी शक्ति के कारण मदान्ध होते हैं। यदि कोई नपुंसक कहे कि मैं आजन्म ब्रह्मचारी रह सक्ता हूं तो इस में वीरता ही क्या? शास्त्र-धारानुसार दान देना व लेना ब्राह्मणों के कर्म हैं अतः न राजकर्मचारी गण बड़े और न पुरोहित गण छोटे माने जा सक्ते हैं वरन दोनों ही समान हैं। उप्रेति शब्द 'उपराड्' शब्द का अपभ्रंश है जो दो शब्दों के योग से बना है, उप+राड्=उपराड् जिसका अर्थ 'राजा के समीप' ऐसा होता है राजा का मंत्री, अर्थात् मंत्री वंश के ब्राह्मण उप्रेति कहाये।

उपपुरोहित का अपभ्रंश भी 'उप्रेति' हो सकता है जैसे शुद्ध शब्द 'पुरोहित' है विशेषत्व अर्थ में 'उप' भी लगा देते हैं तब उप+पुरोहित=उप पुरोहित हुआ। यही उप पुरोहित शब्द विद्या के अभाव से बदल कर उपप्रोहित हुआ, उपप्रोहित से बदल कर उप्रोहित हुआ, उप्रोहित से उप्रोहिती हुआ और उप्रोहिती से बदल कर आजकलका शब्द उप्रेती हो गया। अतएव उप पुरोहित शब्द का बिगड़ते बिगड़ते लघुतम रूप उप्रेती लोक में प्रसिद्ध हो गया है।

एक ग्रन्थकार की ऐसी सम्मति भी है कि "महाराष्ट्र देश के ब्राह्मण शिवप्रसाद मण कोटी राजा के समय यात्रार्थ इस देश में आये थे काली देवीके दर्शन को गंगोली गये। राजा ने उन्हें 'उप्रेड़ा' ग्राम जागीर में देकर विनय पूर्वक रोकलिया, राजा के मंत्री हुये" इस आधार से ऐसा भी निश्चय होता है कि उप्रेड़ा ग्राम के सबब से यह उप्रेत कहाये हों और राज्य मंत्री होने से विशेष महत्वता मिली हो। ऐसा होना भी संभव है। JA BHA. P. 163

कन्नोज से शिवप्रसाद वाजपेयी मन कोटी के राज्य में आये थे उस समय वहां चन्द्रवंशियों का राज्य था, गंगोली के मनकोटी राजा ने उनको अपना उपराड् (मंत्री) बनाया उनके ग्राम का नाम भी उपराड् हुआ जिसे आज कल उपराड़ा कहते हैं लिखा है।

We have an inscription on an old well called the Johnbi Naula at Gangoli Hat bearing date 1624 A. D. which is attributed to the Gangoli Raja's in which the name Somati occurs, but the other names are not discypherable.

भा०—गंगोली हाट में जानवी नाला में एक शिला लेख ईस्वी सन् १२६४ का मिला है जो कि गंगोली राजाओं का लगवाया हुआ जान पड़ता है। उस में सोमती नाम तो पढ़ा जाता है वाकी नहीं, पर अनुभवी अन्य विद्वानों ने हमें वतलाया है कि यह शिला लेख उप्रेती मन्त्री के समय का है। इन की कुछ पीढ़ियों में चार भ्राता हुये जिन के नाम सिंह, श्रीधर, देव, और पृथिवीधर थे सिंह के वंशज नैपाल के सिलगुड़ी में दरवार पौराणिक पण्डित हैं जिस के उपलक्ष में उन्हें ७००) वार्षिक नैपाल सरकार से मिलता है कुछ लोग वर्जांग राज दरवार में गुरू हैं व कुछ सिंहाई (अवध) में हैं रियासत में मन्त्री व कामदार हैं श्रीधर के वंशज नैनोली ग्राममें हैं देव के वंशज जयकृष्ण उप्रेती पहिले चन्द राजा के वज़ीर पश्चात् कलह होने से गोरखी फौजों को लाकर चन्दों को हरा कर कुल कुमाऊं गढ़वाल के गवर्नर हुये पश्चात् गोर्खों को अंगरेज़ों से खट पट चली तव इन्होंने पर्वत की चढ़ाई में अंगरेजों की सहायता की इस के उपलक्ष में इन्हें अंग्रेजों से २००) मासिक प्रोलीटिकल पेन्शन मिली जो इनके पोते तक मिलती रही और पल्टन के कप्तान वनाये गये। जयकृष्ण का पोता राय वहादुर पं० गंगादत्त उप्रेती डिपुटी कलक्टर रहे। पं० जयकृष्णजी के पुत्र कमलापति और महेश्वर उप्रेती गोरखी राज्य में गढ़वाल के फौजदार थे। गंगोली हाट कूंग्राम का रामेश्वर उप्रेती गोरखी राज्य में फौज़दार थे मनोरथ उप्रेती अंग्रेजी सेना के मेजर सूवेदार थे।

मान्यवर पं० कल्हन उप्रेती जो संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् हुए हैं जिन के रचे काव्यादि ग्रन्थ विद्यमान हैं जिन को स्त्री सुभद्रा देवी ने कई मन्दिर वनवाये यथाः—

A second record in the same place inscribed on the image of Gauri Maheshwri in the Bhog Mandir relates that in 1365 A. D. One Subhadra wife of Kalhan Pandit in the kingdom of Hamirdeb, full filled on a vow.

भा०—एक दूसरा प्रमाण भोग मंदिर में गौरी महेश्वरी की मूर्ती पर खुदा हुआ मिला है कि १३६५ ईसवी में कल्हन पंडित की स्त्री सुभद्रा देवी ने हमीर देव के राज्य समय में यह मंदिर बनवाया। सुब्बाकोट के पं० मुकन्दराम उप्रेती सदरआला हुये जिन का न्याय प्रसिद्ध है, पं० हरिकृष्ण जी उप्रेती पटशास्त्री हुये। पं० रेवाधर जी उप्रेती के प्रपितामह के पिता नैपाल में सूबा हुये, कई वर्ष डोटी रियासत में शासन किया पं० मनोरथ उप्रेती ईस्वी सन् १८५७ में मेजर सूबेदार बनाये गये, पं० पीताम्बर जी उप्रेती फ़र्रुखाबाद के नव्वाब के प्रियपात्र थे, पं० दुर्गादत्त उप्रेती गंधर्व विद्या में प्रवीण हुये हैं। राजा बाज बहादुर चन्द के समय देवशाखा के श्यामदेव उप्रेति व्यापारिक अध्यक्ष थे, पं० देवकीनन्दन उप्रेति उच्च शिक्षा प्राप्त मास्टर थे, माननीय पं० नरोत्तम उप्रेती ने तीन यन्त्र ऐसे बनाये थे जिनके द्वारा तिब्बत की खबरें चन्द राजा को तत्काल अल्मोड़े में मिल जाया करती थीं इस से राजा ने प्रसन्न होकर उन को पर्गना सीरा में २५ गांव जागीर में दिये थे वे अब से ६० वर्ष पूर्व यानी सन् १८६० ईस्वी के आस पास सरकार ने वापिस ले लिये। इन उच्च पदस्थ विद्वानों के हाथ में किसी समय राज्य सत्ता थी अतः इन उपरोहितों की उप्रेति संज्ञा होना भी सम्भव है।

इस समय भी उप्रेतियों में अनेकों योग्य व्यक्ति हैं पं० रेवाधर उप्रेती रानी धारारोड अल्मोड़ा, पं० देवकीनन्दन उप्रेति बी० ए० कपीना, पं० दुर्गादत्त उप्रेति M. A. S. S. C. लेक्चरार टैकनिकल कालेज कानपुर, पं० गोविन्द वल्लभ उप्रेति B. A. सुपरिन्टेन्डेन्ट सैक्रेटरियट यू० पी० इलाहाबाद व नैनीताल, पं० त्रिलोचन दत्त बी० ए० हेडमास्टर मुक्तेश्वर, डा० रिठानी नैनीताल जाति विषय के एक धुरन्धर विद्वान हैं। पं० हीरावल्लभ जी उप्रेति सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेन्ट गार्डन टेहरी गढ़वाल, पं० नरायणदत्त उप्रेति आफ़िस

सुपरिन्टेन्डेन्ट पौढ़ी गढ़वाल, पं० देवीदत्त उप्रेतिं उप्रेतीखोला अल्मोड़ा आदि आदि अनेकों प्रसिद्ध २ विद्वानों के अतिरिक्त पूर्वकाल के उप्रेतियों में पं० जयकृष्ण जो उप्रेती भी एक उल्लेखनीय व्यक्ति हुये हैं जिनकी सेवा से बृटिश गवर्नमेन्ट ने प्रसन्न होकर उन्हें २००) माहवार की पेंशन दी थी। इस सम्बन्ध में आनरेवल मिस्टर (Edward Gardner) एडवार्ड गार्डनर एेजन्ट गवर्नर जेनरल ने सैक्रेटरी टु दी गवर्नमेन्ट को अपने पत्र तारीख ४ सितम्बर सन् १८१५ द्वारा इन्हें सनद व पेन्शन देने के विषय में लिखा इसके उत्तर में सैक्रेटरी टु दी गवर्नमेन्ट (Secretary to the Government) ने अपने आज्ञापत्र तारीख २५ सितम्बर सन् १८१५ द्वारा मंजूरी दी।

उप्रेतियों के चार भेद हैं:—

१ सिंहः—ये जाखनी, अठागुली, फल्दाकोट, कसेड़ी, डोटी और नैपाल में हैं।

२ श्रीधरः—ये नौढुंगा और नयनोली में हैं।

३ देवः—ये चोब्या, खेती, ढांगा, विनायक, भैसोड़ी, पाटिया, मफेड़ावांकू, अल्मोड़ा, दशोली और फलयाटी में हैं।

४ पृथिवीधरः—कूं, खेतड़ा, नडौर, सुव्याकोट, फिजाड़, संकुनकांडे बरेली और फरीदपुर में हैं।

इस प्रकार शिवप्रसाद जी वाजपेयी (उप्रेती) के वंशज कई पीढ़ियों तक मन्त्री रहते चले आये तब कारण ऐसे उत्पन्न हुए कि राजा व उप्रेतियों के बीच वैमनस्य उत्पन्न हुआ यथाः—

To the North-East of Almora, in the tract between the Sarju and eastern Ramganga an independant kingdom had existed for several generations, under Rajas of Chandrabansi line, who from the place of their residence were known as the Manikoti Rajas of Gangoli. Karam Chand the first of this line who attained to any eminence, made himself obnoxious to his Upreti Kamdar or Minister, and in consequence was slain by the Minister's followers when out hunting.

The Upreti sent word to the Rani of Karam Chand that the Raja had been killed by a tiger and that and his general obsequies had been duly performed. The Rani suspected that all was not right, and calling some of Pant tribe in whom she placed great confidence, intrusted to them her son to bring him up and protect him from his Upreti enemies.

Himalayan district G. by Edwin T. Alkinson Vol. II P. 550.

भा०—उपरोक्त लेख सरकारी गजट का है कि अल्मोड़ा के उत्तर पूर्व व सर्जु तथा पूर्वी रामगङ्गा के मध्यवर्ती देश में एक स्वतन्त्र राज्य चन्द्रवंशियों का कई पीढ़ियों से चला आ रहा है जो अपने निवास स्थान के कारण गंगोली के मणिकोटी राजा कहलाते हैं, इन का पहिला राजा कर्मचन्द् बड़ा प्रसिद्ध व प्रतापी राजा था पर इन्होंने अपने उप्रेती मन्त्री इन्द्रदेव उप्रेती से घातक वैमनस्य पैदा कर लिया जिसके प्रतिफल स्वरूप जब राजा शिकार को गया तो अपने मन्त्री की जाति वाले उप्रेतियों से क़तल करा दिया गया। कर्मचन्द् की रानी को इन्द्रदेव उप्रेती मन्त्री ने कहला भेजा कि राजा को बघेरे ने खा लिया है अतः उसका दाह कर्म वहां ही करा दिया गया। इस पर रानी को सन्देह हुआ और उसने पंत ब्राह्मणों को बुला कर परस्पर गूढ़ दृढ़ सम्मति करके अपने पुत्र को पन्तों की देख रेख में पालन पोषण व शिक्षणार्थ रख कर उप्रेती मन्त्री के स्थान में पंत मन्त्री नियत करके उप्रेतियों की क़तले आम की आज्ञा देदी, राजाज्ञानुसार पंतों ने उप्रेतियों को वध करना आरम्भ किया बहुत से मारे गये, शेष गंगोली त्याग कर चन्द्राजा और रैका राजा के शरण में चले गये यहां ही उप्रेति वंश की उच्चतम राज्य सत्ता की इति श्री हो गई, यह सब वृत्तान्त तेरहवीं शताब्दी का प्रतीत होता है।

उप्रेतियों का गोत्र भारद्वाज, त्रिप्रवर, माध्यन्दिनी शाखा, यजुर्वेद, पारस्कर श्रौतसूत्र, धनुर्वेद आदि आदि हैं।

भारत के युक्तप्रदेश व राजपूताना की तरह इन लोगों में शैव वैष्णव और शाक्त आदि सम्प्रदाय नहीं हैं किन्तु एक स्मार्त

सम्प्रदाय है उसी में यह लोग सम्बन्ध करते रहते हैं कच्ची व सकरी रसोई ब्राह्म विधि से परिणीत ब्राह्मण जाति की ही स्त्री के हाथ से खा सकते हैं।

इनमें स्पर्शाऽस्पर्श का विशेष विचार है पहिले ये लोग क्षत्रिय राज्यों के समय डोम, तेली, चमार, भंगी आदि अन्त्यजों से स्पर्श करना पाप समझते थे किन्तु अब अंगरेज़ी राज्य में ऐसे नियम का पालन करना कठिन समझ कर भंगी के अतिरिक्त अन्यों से छूने पर "ओ३म् अपवित्रः पवित्रो वा०" इस मन्त्र से आचमन लेकर अपने को पवित्र कर लेते हैं—ये लोग खान पान से पवित्र अहिंसा धर्मी हैं इनसे जब कोई अभिवादन करता है तो उस को यह लोग उत्तर में "चिरंजीव हो, आशीर्वाद हो, कल्याण हो" कहते हैं किन्तु श्रेष्ठ क्षत्रिय को स्वस्ति कहते हैं। इनमें प्रत्येक बालक का ८ वर्ष पूर्व यज्ञोपवीत अवश्य हो जाता है भूमि जोतने वालों तक के बालकों का यज्ञोपवीत नियत काल तक हो जाता है अन्यथा वह डूम समझा जाता है।

इनकी उपाधियें वाजपेयी, पांडे, पंत और त्रिवेदी आदि२ हैं।

इस उप्रेती जाति का निर्णय हमने वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर लेकर किया है, प्रश्नों के उत्तर देने वाले पं० रेवाधर जी वाजपेयी हैं। साथ ही कमीशन के नियमानुसार उत्तरों पर कई एक हस्ताक्षरों में से प्रसिद्ध पुरुष पं० देवकीनन्दन जी बी० ए० एल० टी०, ज्योतिर्विद् पं० लक्ष्मीदत्त जी शास्त्री आदि आदि हैं।

उप्रेति ब्राह्मणों में विवाहादि संस्कार प्रणाली शास्त्रोक्त है इनके विवाह विशेष रूप से पन्त समुदाय में तथा सामान्य रूप से पांडे, जोषी, तिवाड़ी और भट्ट आदिकों के यहां होता रहता है। हलधर और पिनालियों के साथ नहीं होता है। विवाह की इनमें एक ऐसी रीति है कि विवाह होने के पश्चात् ही कन्या तत्काल पति के घर स्वस्थान को व जहां बरात ठहरी हुई हो भेज दी जाती है अन्यथा यदि कन्यादान सप्तपदि हो चुकने पर कन्या किसी कारण विशेष से पिता के घर रहे तो ऐसी दशा में पिता को उपवास रखना पड़ता है जब बरात विदा कर दी जाती है तब गोदान और तिलपात्र का दान करके ही माता पिता भोजन करते हैं।

उपरोक्त ब्राह्मणों की उच्चता व प्रभावोत्पदर्शक प्राचीन पत्रादि की कुछ नकलें व बादशाही समय के फरमानों की प्रतिलिपियें आदि आदि हमारे पास आयी थीं परन्तु उनकी भाषा कुछ दक्षिणी कुछ पहाड़ी व कुछ उर्दू फारसी आदि आदि विचित्र रूप में होने से उनकी नकलें देना हमने उचित नहीं समझा क्योंकि उन्हें हम समझ नहीं सके।

गुरव:- यह दक्षिण देश व मध्यप्रदेश की एक ब्राह्मण जाति है, प्राचीन कालमें ब्राह्मण विद्या सम्पन्न विवेकी होते थे, वे ही भगवान् की सेवा पूजा व अर्चन वन्दना में विशेष रूप से नियत किये जाते थे, उस समय के भगवद्भक्त सेवक लोग भी अपने अपने इष्ट देवों के मंदिरों की सेवा पूजा और वन्दना के लिये योग्य योग्य व्यक्तियों को नियत करने में अपना गौरव समझते थे। इस ही कारण उस समय के लोग उन पुजारियों को "गौरवी" कहते थे। जिसका भावार्थ ऐसा होता है कि जनता से जो गौरव प्राप्त ब्राह्मण हैं वे गौरवी व गुरवी व गुरव कहाये। गौरवी शुद्ध शब्द से गौरव बना है और गौरव से गुरव आज कल का नाम प्रसिद्ध है।

जब विद्वानों का विशेष पूजन सत्कार इस देश में था उस समय पूज्य स्थानों में व देवालयों में भेंट पूजा व ठाकुर के भोग के लिये भी बड़ी बड़ी दान दक्षिणायें व पुजापा चढ़ता रहता था जिसके मालिक पुजारी महन्त व गुरव लोग ही हुआ करते थे इस ही कारण:गुरव लोगों को पूर्ण गौरव प्राप्त हुआ था अतः जो लोग पूर्ण गौरव युक्त थे वे ही गौरवी, गुरवी व गुरव से प्रसिद्ध हुए। अन्य विद्वानों का मत भी हमें अपने जाति अन्वेषण की यात्रा में ऐसा ही प्राप्त हुआ है। इन ही जातियों के अन्वेषण के सम्बन्ध में काशी तक की यात्रा करनी पड़ी। तहां के कतिपय नामाङ्कित नामाङ्कित विद्वानों से इस ही गुरव जाति के सम्बन्ध में हमने परामर्श किया था उस ही के फलस्वरूप में हमने उपरोक्त सम्मति लिखी है।

सरकारी अफ़सरों ने भी अपने अपने ग्रन्थों में किसी किसी जाति के सम्बन्ध में कुछ लिखा है वह उन का सिद्धान्त कहीं पर

अनुकूल तो कहीं पर प्रतिकूल भी पड़ता रहता है अतएव इस जाति के सम्बन्ध में हमारा विशेष आधार शास्त्र सम्मत विद्वानों की अनुमति व शास्त्र प्रमाण जानने चाहियें।

दक्षिण में परंपरागत पुरातन ग्राम संस्थाओं के ग्राम्य देवता पूजक गुरव लोग चले आ रहे हैं। १२ वतनदारों में इनका नाम नववें स्थान पर है मन्दिरों के भोग के लिये, कूये, कोठी, जमीन आदि आदि भी मन्दिर के साथ सदा से लगाये जाते हैं तदनुसार गुरव लोग जब तक विद्वान रहे स्वयं कृषी न करके दूसरों से करवाया करते थे किन्तु समय के हेर फेर के साथ साथ गुरवों में विद्या का अभाव होने लगा और गुरवों की मूर्ख सन्तान स्वयं खेती भी करने लगी इस ही कारण सरकारी बन्दोवस्त के अफ़सरों ने ऐसी खेती व वृत्ति का नाम गुरवी लिखा है।

गुरवों का सनातनी धन्दा पुजारीपने का है विशेष करके शिवमन्दिरों में इन की ही प्राधान्यता है इस ही कारण से ये लोग शैव ब्राह्मण भी पुकारे जाते हैं। दक्षिण में वीरशैव और लिंगायत जाति भी है इनके जातिपद व गुरवों के जातिपद में भिन्नता प्रदर्शित करने के अर्थ इन शैवों ने अपने नाम के आदि में 'शुद्ध' शब्द लगा कर अपने को शुद्ध शैव कहना भी आरम्भ किया है, चारों वर्णों में इनका वर्ण भी ब्राह्मण है।

पुजारी शब्द इस गुरव जाति का पर्य्यायवाची शब्द तो है परन्तु पुजारी शब्द भारतवर्ष के सब ही प्रान्त व देशों के ब्राह्मण पुजारियों के लिए काम में आता है यह ही शैवी पुजारी लोग दक्षिण व मध्यप्रदेश में गुरव कहाते हैं तैसे ही शिव के पुजारी लोग राजपूताना तथा युक्तप्रदेश में गुसाईं कहाते हैं और ये गुसाईं लोग यद्यपि शिवमन्दिर का चढ़ावा लेते हैं तथापि वे जाति पद से उच्च समझे जाते हैं तैसे ही न्याय संगत बर्ताव किये जाने के अधिकारी गुरव ब्राह्मण भी हैं क्योंकि आज कल देवार्चन का पुजापा सभी प्रकार के अन्य ब्राह्मण भी लेते हैं।

भारतवर्ष में कुछ अधिक काल से एक दूसरे की निन्दा व तेर मेर व छुटाई बड़ाई के कुभावों ने स्थान कर रक्खा है तदनुसार

गुरव ब्राह्मणों के ऐश्वर्य्य को न सहन सकने वाले समुदाय ने इन के विरुद्ध कुछ कल्पित गाथायें रच डालीं वे अमाननीय हैं लिखा है:—

तेतु वैश्याः समं दारैर्यथाभाग ययुर्द्विजान्।
येषां गृहे यः गुरवः तद्गुक्तं गोत्र माप्नुयुः ॥५५॥
सर्वे ते च सपत्नीका द्विजानां प्रीति कारिणः।
ते द्विजाः स्वगृहाञ्जग्मुः स्तुवंतः परमेश्वरीम् ॥५६॥

ब्रा० उ० पृ० २०१ श्लो० ५५-५६

भा०—जो जो वैश्य सपत्नीक ब्राह्मणों के विभाग में रहे और जिनके घर पर गुरव लोग रहे उन वैश्यों का गोत्र भी उन गुरव ब्राह्मणों के समान हुआ ॥५५॥ फिर वे सपत्नीक वैश्य लोग तथा गुरव लोग महालक्ष्मी की स्तुति करते हुए अपने अपने घर को गए ॥ ५६ ॥

इस पुराणोक्त कथा के अधारानुसार गुरव जाति ब्राह्मण सिद्ध होती है।

पण्डित घ० काव्यतीर्थ ने हमें ऐसी सम्मति दी कि जो ब्राह्मण समुदाय अपनी योग्यता के कारण गुरुदीक्षा दिया करते थे वे गुरु कहाते थे इस ही गुरु शब्द का समुदायवाचक 'गुरवः' होने से यह जाति प्रसिद्ध हुई ऐसा होना भी सम्भव है—जो चढ़ता है सो गिरता भी है जो उन्नति के शिखिर तक पहुंचता है वह अवनति के गड्ढे में पहुंच जाता है इस संसारचक्र की दशा के अनुसार किसी काल में गुरव ब्राह्मण जाति जितनी उच्च थी उतनी ही आज अधःपतन को प्राप्त हो कर नीच मानी जाने लगी है। परन्तु आजकल जाति निर्णय विधान गुण कर्म पर नहीं चलता है परन्तु सब कुछ उत्पत्यादि क्रम के आधारानुसार उच्चता व नीचता पर निर्भर है अतएव इस कलिकाल की १६०० की शताब्दि में दोषमुक्त कोई भी ब्राह्मण जाति व वर्ण नहीं है तब केवल गुरव जाति पर ही गुण कर्मों की कसौटी की व्यवस्था क्यों?

गुरव जाति को शैव, शुद्धशैव, शिव ब्राह्मण, पुजारी, देवल, देवलक आदि आदि नामों द्वारा भी लोग पुकारते हैं। प्राचीन

स्मृतियों में व आधुनिक धर्म ग्रन्थों में परस्पर ब्रह्मद्वेष के कितने ही श्लोक मिलते हैं और कितने ही ऐसे विषय मिलते हैं कि जो प्रक्षिप्त हैं और आजकल वे प्रमाण अमान्य दृष्टि से देखे जाते हैं क्योंकि वे शास्त्र विरुद्ध हैं।

शिव पुराण में ऐसी कथा है कि गुरव ब्राह्मण दाधीच ऋषि की सन्तान हैं इन्हीं को शिव पूजा का अधिकार है ये लोग शिव पूजन बड़े प्रेम व अनन्य भाव से करते थे. परन्तु किन्हीं आवश्यक कार्य्यवशात पूजा में विघ्न पड़ने से इन्हें श्राप हुआ. तिस से ये लोग दरिद्री हो गये।

द्वेषी लोग इनको ब्राह्मण ही मानने में सन्देह करते हैं परन्तु ऊपर की पुराणोक्त आख्यायिका से इन का ब्राह्मणत्व तो प्रकट है।

धर्म शास्त्रों में लिखा है:—

चिकित्सिकान् देवलकान् मांसविक्रयिणस्तथा।
विपणेनच जीवन्तो वर्ज्यास्युर्हव्य कव्ययोः॥

मनु० अ० ३ श्लो० १५२

अर्थः—वैद्य, पुजारी, मांस बिक्री करने वालों तथा व्यापार द्वारा जीविका करने वालों को हव्य कव्य में निषेध है। इस श्लोक से गुरव जाति का ब्राह्मणत्व सिद्ध होता है यदि ये उत्पत्यादि क्रम से ब्राह्मण न होते तो इन के लिये निषेध युक्त वाक्य भी न होता। परन्तु आजकल के समय में यह व्यवस्था शिखाधारी मात्र में प्रचलित नहीं है अर्थात् हव्य कव्यों में वैद्य, पुजारी और व्यापार द्वारा जीविका करने वाले ब्राह्मण गण विशेष मान्य पूर्वक बुलाये जाते हैं तब यह श्लोक केवल पुजारियों के लिये ही लागू क्यों मान लिया जाय? कदापि नहीं। इस श्लोक से पहिले के श्लोकों में इस ही तरह की कई एक आज्ञायें हैं पर वे कोई भी नहीं मानी जातीं तब केवल गुरव जाति को अब्राह्मण सिद्ध करने के उद्देश्य से ही यह श्लोक क्यों माना जाय? पुनः—

परिवित्तिस्तथास्तेवो दुष्कर्माः गुरुतल्पगाः।
कुशीलको देवलको नक्षत्रै यश्चजीवति॥

धारूरकर शास्त्री कृत धर्मशाः पृ० ३९६

भा०—उपरोक्त क्रमानुसार यहां भी पुजारी ब्राह्मण को हव्य कव्यादि में निमन्त्रण देने दिलाने का निषेध है। इससे भी गुरव जाति का पद ब्राह्मण वर्ण है।

पुनः और देखिये:—

असि जीवी मसीजीवी ग्रामलो देवयाजकः।
धावकः पाचकश्चैवः षडेते शूद्रवद्द्विजाः ॥१०२

ब्रा० मा० तथा पा० धर्मशास्त्रे।

भा०—अस्त्र शस्त्रों को रख कर उनके द्वारा जीविका करने वाला, श्याही बेचने वाला, अष्टादश वर्णावर्णका आचार्यत्व करने वाला, द्रव्य लेके देव पूजा करने वाला, चिट्ठीरसा, रसोइये ये ६ प्रकार के ब्राह्मण ब्राह्मण होते हुए शूद्र नहीं किन्तु शूद्र के समान हैं इससे भी गुरव जाति ब्राह्मण सिद्ध होती है।

इस श्लोक का पाठ भेद ऐसा भी मिलता है:—

असिजीवी मसीजीवी देवलो ग्रामयाजकः।
धावकः पाककर्त्ता च षडेते शूद्रवद्द्विजाः ॥

अर्थ तो उपरोक्त लेखानुसार ही है।

इस प्रकार के श्लोकाव प्रमाण हम अनेकों दे सकते हैं पर ग्रन्थ वृद्धिभयात् न देकर केवल इतना ही कहना पर्य्याप्त समझते हैं कि गुरव लोगों का वर्ण ब्राह्मण है और ये विद्या के अभाव व अपनी दीनावस्था के कारण छोटे समझे जाने लगे होंगे।

देवल शब्द और गुरव ये दोनों शब्द एक ही व एक ही अर्थ बोधक दो शब्द हैं उस ही की पुष्टि में ऐतिहासिक गोष्टी नामक पुस्तक के प्रथम भाग के पृष्ठ ३५ में "ब्राह्मणाचा धर्म" प्रकरण में लिखा है "देवाची वृत्ति वेतन घेऊन केली तरतो ब्राह्मण देवलक म्हणजे गुरव होतो" अर्थात् देवार्चन व पूजा वृत्ति दाम लेकर करे तो उसे देवलक यानी गुरव ब्राह्मण कहते हैं।

इससे गुरव ब्राह्मण तो ठहरते हैं पर विचारणीय यह है कि वेद पढ़ाने वाले, देवार्चन करने वाले व अन्य पूजा पाठ करने कराने

वाले सब ही ब्राह्मण वेतन लेकर सब ही काम करते हैं तब गुरव ब्राह्मणों पर ही आक्षेप क्यों ?

गवर्नमेन्ट हिन्द द्वारा मानी हुई हिन्दू ला नामक ग्रन्थ के पृष्ठ २०४ में लिखा है:—

Goorav:—Shiv Oopasak Brahman.

अर्थात् शिव उपासक ब्राह्मण को गुरव कहते हैं।

देवल शब्द जो गुरव शब्द का पर्य्यायवाची है उस का अर्थ करतें हुए संस्कृत डिक्सनरी के पृष्ठ ५११ में ऐसा लिखा है:—

An attentdant upon an Idol, a low Brahman, who subsists upon the offerings made to an idol. A virtuous man.

भा०-देव मूर्ति की सेवा अर्चना करने वाला, एक नीच श्रेणी का ब्राह्मण जो देवता के चढ़ावे पर निर्वाह करते हैं।

(दूसरा अर्थ) एक सन्त पुरुष।

Directed to perform the Pooja of Shiv, to apply Bhusm (ashes of cowdung) and Roodrakshurdhan to their bodies and to receive offerings of food grain etc. brought to the God Shiv by his worshippers.

At present this caste act as Poojaries receiving the offerings brought to temples of Shiv, Marootee or Hanuman, as food for the God. Such offerings are termed Nyvedy. The Poojaree or Urchak is not everywhere a Wuttundar or Goomashta. Hindu Law Page 204.

भावार्थ-इनको शिवकी पूजा करने का अधिकार है भस्म लगाने और रुद्राक्ष धारण कर सक्ते हैं और भक्तों द्वारा लाया हुआ चढ़ावा ले सक्ते हैं वर्तमान में यह गुरव जाति पूजा का कार्य्य करते हैं। और शिव तथा हनुमान का चढ़ावा लेते हैं इस चढ़ावे को प्रशाद व नैवेद्य कहते हैं पुजारी व अर्चक सर्वत्र तनख्वाहदार गुमाश्ते नहीं होते हैं। पुनः गुरुव जाति के ब्राह्मणत्व विषय में प्रमाण मिलते हैं:—

धर्म सिन्धु के पृष्ठ ७०४ में जहां वर्ज्य ब्राह्मण गिनाये हैं तहां लिखा है कि "वैद्यो, राजभृत्यो, गायको, लेखकः, कुसीद जीवी, देवार्चनजीवी, आदि आदि" तथा वाणिज्योपजीवी गङ्गुमान् ज्वरितो देवलको विधुरो आदि आदि ब्राह्मण हव्य कव्य में वर्ज्यनीय हैं। अर्थात् अन्य अन्य प्रकार के ब्राह्मणों में गुरुव ब्राह्मणों को भी वर्ज्यनीय लिखा है इस से गुरुव जाति का वर्ण ब्राह्मण ठहरता है। यदि धर्म सिन्धु के मतानुसार ब्राह्मण हव्य कव्य में लिये जांय तो १,४२,५४,६६१ भारतवर्षीय ब्राह्मणों में से कोई सौ पचास ही ब्राह्मण मिलेंगे।

जाति निर्णयकर्त्ता प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित हरिकृ० जी ने अपने जाति निबन्ध ग्रन्थ के पृष्ठ १०८ में गुरव जाति के विषय में ऐसा लिखा है किः—

सन्मार्गस्योपदेष्टारः स्वयं सन्मार्गशालिनः।
उन्मार्ग प्रति हर्त्तारो गुरवस्ते समीरिताः ॥७०॥

अर्थः—जो सन्मार्ग के उपदेश करने वाले तथा तदनुसार स्वयं चलने वाले व विरुद्ध मार्ग को त्याग करने वाले जो थे वे गुरव ब्राह्मण कहाये।

जा० भे० वि० नामक ग्रन्थ में पण्डित पांडोबा गोपाल ने लिखा है किः—

गुरवः—यांची उत्पत्ति उपासक ब्राह्मण पासून सांगितली आहे, हे लोक देश व कोंकण या दोही ठिकाणी आहेत, हे शिवमंदिरांत पूजा करून व वाजंत्रे आणि वाद्ये वाजवून उदर निर्वाह करितात् हे लोक मांस मासली खात नाहींत, व दारूही पीत नाहींत, कोकणांत एक गुरवांची जात आहेत, त्यां जातीचे लोक मांस मांसली खातात, व दारुही पितात। पृ० ३३७

भावार्थः—गुरुवः—इन की उत्पत्ति उपासक ब्राह्मण द्वारा हुई है। ये लोग देश व कोंकण इन दो ही ठिकाने हैं ये लोग शिव मन्दिरों में पूजा करते व बाजे बजा कर निर्वाह करते हैं ये लोग

खान पान से शुद्ध मांस मदिरा नहीं खाते पीते हैं-कोंकण देश में एक गुरवा जाति और होती है जो मांस मछली खाते व शराब पीते रहते हैं ।

शास्त्र विधिनुसार पुजारी दो तरह के होते हैं एक तो वेतन लेकर सेवा पूजा व अर्चना करने वाले दूसरे अपना कर्त्तव्य धर्म समझ कर देव पूजा करने वाले, अतः जो लोभ व स्वार्थ वश देव पूजा अर्चना व वन्दना करते हैं वे लघु श्रेणी के पुजारी कहाते हैं पर जो स्वार्थ रहित व कर्त्तव्य समझ कर देव पूजा करते हैं वे उत्तम श्रेणी के ब्राह्मण समझे जाते हैं अतः आजकल जितने ब्राह्मण पुजारी हैं उन में कोई २ को छोड़ कर विशेषता वेतन भोगियों की है पर वे नीच नहीं माने जाते तब गुरव जाति पर ही ऐसा करना अन्याय है ।

आजकल हजारों ब्राह्मण सेवा चाकरी व कृषि तथा वाणिज्यादि अनेकों विरुद्ध कर्म करते हैं पर वे ऐसा करते हुये नीच ब्राह्मण नहीं माने जाते तब गुरव ही नीच क्यों ?

आज लाखों ब्राह्मणों का निर्वाह अनेकों शास्त्र विरुद्ध कर्मों द्वारा हो रहा है पर वे नीच नहीं कहे व माने जाते हैं तब बेचारी गुरव जाति के साथ ही ऐसा अत्याचार क्यों ?

कुछ विदेशी विद्वानों ने भी जाति निर्णय सम्बन्ध में ग्रन्थ लिखे हैं उन्हों में से विशेषों ने भी वही पिष्ट पेषण किया है, कारण यह कि सहस्रों कोसों दूर के आये हुये लोग हमारे धर्म तत्व को क्या जानें ? जैसा एक ने लिखा वैसा ही दूसरे ने व तीसरे ने भी लिख मारा फिर भी वे हमारे धर्माचार्य्य नहीं कहे व माने जा सक्ते हैं । इसलिये वर्तमान लोकाचार व सदाचार प्रणाली व उत्पत्यादि क्रम से निश्चय होता है कि गुरव जाति ब्राह्मण वर्ण में है उसे १६ संस्कार व ६ कर्म्म करने का अधिकार है ।

---*---

नोट—पुष्कर क्षेत्र के ब्राह्मणों में परस्पर विवाद व कलह होने से उनका विषय पृष्ठ ३३१ से ३४० तक का छपा हुआ रद्द किया गया।

ग्रन्थ-कर्त्ता।

शाकद्वीपी ब्राह्मण—यह एक ब्राह्मण जाति है। पुराणादि व आधुनिक ग्रन्थों में इनके अनुकूल व प्रतिकूल दोनों ही प्रकार का पक्ष मिलता है, अनुकूल पक्ष में अतिशयोक्ति तथा प्रतिकूल पक्ष में ईर्षा द्वेष का समावेश है। आधुनिक ग्रन्थों के रचयिता व प्रकाशक विदेशी विद्वान् व देशी असंस्कृतज्ञ मनुष्य हैं, जो हमारे धर्माचार्य्य नहीं माने जा सकते हैं, क्योंकि उन्होंने द्वेषयुक्त वाक्यों का ही पिष्टपेषण किया है। उन्ही के आधारानुसार हम भी अपने ब्रा० नि० में कुछ त्रुटि कर गये। इस पर इस जाति के योग्य विद्वान् पं० रामकुमार जी मिश्र अध्यापक राम पाठशाला चटाई मुहाल कानपुर ने बड़े परिश्रमसे कुछ प्रमाणादि लिख कर भेजे और हमें सन्मार्ग दिखलाया, तैसे ही बाबू भगवतीलाल शर्म्मा जोधपुर ने भी हमें सुध दिलायी, अजमेर से पं० राधावल्लभ जी घीसूलाल शाकद्वीपि ने भी हमें उलहना लिखते हुए उनकी जाति के विवरण पर Review पुनः सम्यक् विचार करने का परामर्श दिया, हमारे समीपस्थ पं० वसन्तलालजी सांभर वालों ने भी हमें पुनर्विचार करने की अनुमति दी। इस ही सम्बन्ध में पं० दिनकरप्रसाद जी मिश्र उपमन्त्री शाकद्वीपीय ब्राह्मण महासभा दरभङ्गा ने भी हमें कुछ त्रुटियां दिखलायीं। राजवैद्य पं० नथमल जी शर्म्मा तथा पं० देवनारायण जी शर्म्मा वकील जोधपुर ने भी इस विषय में अपनी पूर्ण योग्यता का परिचय दिया इन सब महानुभावों के अतिरिक्त श्री स्वामी अखण्डानन्द जी पुरी ललिताघाट काशी भी अचानक परोपकार दृष्टि से हमारे पास आये और इस कार्य्य में हमारे पूर्ण सहायक हुए अतएव इन सब के हम कृतज्ञ हैं। इसलिए अब हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि शाकद्वीपी ब्राह्मण शुद्ध ब्राह्मण हैं और अन्य ब्राह्मणों की तरह देवयज्ञ पितृ यज्ञादिकों में आमन्त्रित करने व पूजने योग्य हैं।

शाक द्वीपी—यह समुदायवाची शब्द है इस नाम के अन्तर्गत ब्राह्मणों के कई भेद हैं जिन्हें पदवियें भी कहते हैं जैसे:—

१ मिश्र, २ व्यास, ३ जोपी, ४ पांडे, ५ पुजारी, ६ भोजक, ७ सेवक और ८ मग । इन पदवियों के आधारानुसार ये लोग पुकारे जाने लगे और इन अलग २ प्रकार की पदवियों के समुदाय को लोग अज्ञान वश अलग २ प्रकार के ब्राह्मण मानने लगे पर यह ठीक नहीं, क्योंकि ये पदवियें इन के गुणों के कारण से इन्हें मिली थीं यथाः—

मिश्र—मिश्राई करने से अर्थात् पाठ पूजन करने व कर्मकांड कराने से मिश्र पदवी मिली थी।

व्यास—कथा भागवतादि वांचने से व्यास संज्ञा हुई।

जोपी—यह ज्योतिषी का अपभ्रंश रूप है अर्थात् जो लोग ज्योतिष विद्या का कार्य्य करते थे वे ज्योतिषी कहाते कहाते जोपी प्रसिद्ध हुये।

पांडे—पण्डिताई करने से पांडे कहाये अर्थात् जो लोग युक्तप्रदेश में बालकों को पढ़ाते थे वे 'पांडे' कहाते हैं।

पुजारी—विशेष रूप से सूर्य्य की पूजा करने से ये लोग पुजारी करके प्रसिद्ध हुये अर्थात् सूर्य्य के मन्दिर की पूजा प्रायः शाकद्वीपी ही करते देखे गये हैं।

भोजक—अभक्ष्य पदार्थों के न खाने से शाकद्वीपियों की भोजक संज्ञा भी हुई यथाः—

ना भोज्यं भुञ्जते यस्मात्तेनैते भोजकामताः ।
मगंध्यायंतिते यस्मात्तेनते मगधाः स्मृताः ॥५३॥

भा०—जो अभक्ष्य वस्तुओं को नहीं खाते हैं इससे वे भोजक कहाते हैं। और जो मगों का ध्यान करते हैं वे मगधा कहाते हैं।

पुनः और देखियेः—

भोजयन्ति च मां नित्यं तेनते भोजकाः स्मृताः ।
अभ्यंगं च प्रयत्नेन धर्म्यं शुद्धि करं परम् ॥५४॥

भवि० पुरा० ब्रा० अ० ११७ श्लो० ५३-५४

भा०—सूर्य्य भगवान् कहते हैं कि ये लोग नित्य मेरे को खिलाते हैं (भोग लगाते हैं) अतः ये भोजक कहाते हैं ॥५४॥

पुनः—

धूप माल्यैश्च गन्धैश्च उपहारैस्तथैव च।
भोजयन्ति सहस्रांशु तेनते भोजका स्मृताः॥

भवि० पु० ब्रा० अ० १४४ श्लो० २६ तथा
साम्ब पु० अ० २६ श्लो० २३

उपरोक्त श्लोक का पाठभेद ऐसा भी मिलता है:—

धूपमाल्यैर्जपैश्चापि उपहारैस्तथैव च।
ये यजन्ति सहस्रांशु तेनैते याजका स्मृताः॥

भा०—धूप माला, गन्ध व जप तप तथा उपहार द्वारा जो सूर्य्य की पूजन करते हैं वे शाकद्वीपी ब्राह्मण भोजक या याजक कहाते हैं।

सेवग व सेवकः—यह भी शाकद्वीपी ब्राह्मणों की पदवी है, इन को मारवाड़ में पोहकरणे सेवक भी कहते हैं, राजपूताना के आधुनिक ग्रन्थकारों में से किसी किसी ने इन के विरुद्ध कुछ अनिचार युक्त लेख लिखे हैं वे अमाननीय हैं क्योंकि वे लोग संस्कृतज्ञ विद्वान् न थे किन्तु जो कुछ उन्होंने लिखा उस का आधार सुनी सुनाई बातें हैं अतएव इन के सम्बन्ध में वे निन्दनीय लेख शास्त्र विरुद्ध होने से अग्राह्य हैं।

"वाचस्पत्य बृहत् संस्कृताभिधान" ग्रन्थ के पृष्ठ ५३३२ में कोषकार ने लिखा है "सेवनं भजनं करोति इति सेवकः" भगवत् सेवा व भजन करने वाले को सेवक कहते हैं।

जिस प्रकार शाकद्वीपियों में सेवक नाम के ब्राह्मण होते हैं वैसे ही अन्य प्रकार के ब्राह्मणों में भी सेवक होते हैं राजपूताना के सेवक ब्राह्मणों के यहाँ ओसवालों की यजमान वृत्ति है।

पंवारों के राज्य समय ओशिया नगरी एक बड़ा विस्तृत शहर था तहाँ के ब्राह्मण पंवर राजपूतों के गुरू व पुरोहित थे, जब गुरां रतनप्रभू सुर्य्य के समय राजपूत लोग ओसवाल हुये तब उन के गुरु व पुरोहित भी उन के साथ रहे अतः उन राजपूत ओसवालों ने उन अपने गुरुओं को अपने मन्दिरों की सेवा दी तब से वे लोग सेवक व सेवग कहाये।

यद्यपि इन के ओसवालों की यजमान वृत्ति है तथापि इन का धर्म ओसवाल धर्म नहीं है ये ओसवालों के मन्दिरों की सेवा अर्चन तो करते हैं पर अपना धर्म सनातन हिन्दू धर्म है अर्थात् इन में विशेषता वैष्णव और शैव सम्प्रदाय वालों की है। अर्थात् ये लोग भी शास्त्रधारानुसार अन्य ब्राह्मणों की तरह आदरणीय हैं।

खांप

१ रखड़	६ जांगला	११ हीरगोता
२ हटीला	७ देवेरा	१२ आसीवाल
३ भरताणी	८ सांवलेरा	१३ वलद
४ कुवेरा	९ मूंदयाड़ा	१४ भीनमाल
५ कटारिया	१० मेड़तवाल	१५ छापरवाल
		और १६ मथुरिया

मगः—

मगाः ब्राह्मण भूयिष्ठाः स्वकर्म निरतास्तथा।

महाभा० भीष्म प० अ० ११ श्लो० ३६

मग ब्राह्मण स्वधर्म पालन करने में निरत हैं।

पुनः—

मगाः ब्राह्मण भूयिष्ठाः स्वकर्म निरता द्विजाः।

पद्म पुरा० सर्गखंड अ० ६ श्लो० ३५

नोटः—देखो भविष्य पुराण ब्रा० अ० १४६ श्लो० ७६, साम्ब-पुराण अ० २५ श्लो० ३०, विष्णु पुराण द्वि० अं० अ०४ श्लो० ६६

शाकद्वीपियों की उत्पत्ति के विषय में पुराणों में ऐसी कथा मिलती है:—

अरुणउवाचः—

किमर्थं भोजकस्तुभ्यं प्रियो देवेश कथ्यताम्।
नान्ये विप्रादयोवर्णा देवता यतनेषुवै ॥१॥
कश्चायं भोजकोदेव कस्य पुत्रः किमात्मकः।
वर्णतश्चास्य मे ब्रूहि कर्म्मतश्च समंततः ॥२॥

भा०—अरुण जी ने सूर्य्य भगवान् से पूछा कि हे देवेश भोजक आपके प्यारे क्यों हैं? तथा आपके देवालयों में दूसरे विप्र क्यों नहीं हैं? ये भोजक कौन हैं? किस के पुत्र हैं? किस की आत्मा हैं? और इन का वर्ण क्या है? तथा इन के कर्म्म क्या क्या हैं? ये सब उत्तर आप दीजियेगा तब सूर्य्य भगवान् बोलेः—

आदित्यउवाचः—

साधुपृष्ठोस्मि भद्रन्ते वैनतेय! महामते!
शृणुष्वैक मनाः सर्वं गदतो मम खेचर! ॥३॥
विप्रादयस्तु ये त्वन्ये वर्णाः कश्यप नन्दनः।
ते पूजयन्ति मांम नित्यं भक्तिश्रद्धा समन्विताः ॥४॥
देवालयेषु ये विप्राः प्रतिमां पूजयन्तिहि।

अन्येच देवता वृत्त्या तेस्युर्देवलकाः खग ॥५॥
एतस्मान्कारणान्मह्यं भोजको दयितः सदा।
वर्णतो ब्राह्मणश्चायं स्वानुष्ठान परोयदि ॥६॥

भविष्य पुराणे

भा०—सूर्य्य भगवान् ने कहा हे विनिता के बुद्धिमान पुत्र तुमने अच्छा प्रश्न किया, उत्तर एकाग्र होकर सुनोः—हे कश्यप नन्दन दूसरे विप्रादि वर्ण जो हैं वे सब भक्ति व श्रद्धा से मेरा नित्य पूजन करते हैं किन्तु देवालयों में जो ब्राह्मण प्रतिमा के पुजारी हैं देवता वृत्ति से पूजन करते हैं वे देवलक खग हैं इस ही कारण से भोजक सतत मेरा प्यारा है।

शाकद्वीप में प्रियव्रत का पुत्र महामति राजा था उसने सुन्दर विमान की तरह अपना घर बनवाया और एक देवालय बनवाया जिस में सुवर्ण प्रतिमा बनवाई फिर उस देवालय के लिये सुयोग्य ब्राह्मणों की चिन्ता राजा करने लगे तब उन्हें सूर्य्य भगवान् ने कहा किः—

क्षत्रियादि त्रयो वर्णा द्विपेस्मिन्नात्र संशयः।
ते च नार्हन्ति मे पूजां न प्रतिष्ठां कदाचन ॥२१॥
तस्मात्ते श्रेयसे राजन्! प्रतिष्ठा मात्मनस्तथा।
सृजामि प्रथमं वर्णं मगसंज्ञ मनौपमम् ॥२२॥

भा०—हे राजन्! निस्सन्देह इस द्वीप में क्षत्रियादि तीन वर्ण हैं वे मेरी पूजा और प्रतिष्ठा के योग्य नहीं हैं ॥२१॥ इसलिये हे राजन्! आप के कल्याण और मेरी प्रतिष्ठा के हेतु मैं अनुपम मग नामक ब्राह्मणों को पैदा करता हूं।

गोत्र प्रवरादिचक्रम् ।

देवसेन जिसे विश्वसेन भी कहते हैं उस का यज्ञ कराने के हेतु योग्य योग्य १६ कुल के शाकद्वीपी ब्राह्मण राजपूताना प्रान्तस्थ मारवाड़ में आये थे-शाकद्वीपियों के सब ७२ कुल भेद हैं जिन में से राजपूताना में १६ कुल के शाकद्वीपी ब्राह्मणों के गोत्र प्रवरादि इस प्रकार हैं जो कि इस पृष्ठ के पीछे दिये जाते हैं:—

संख्या	आने वाले ऋषियों के नाम	आम्नाय	पूर्व में गौत्र (पुर)	पश्चिम में गौत्र (खांप)	वेद गौत्र	वेद	प्रवर	शाखा
१	कौंडल्य ऋषिः	आराम्नाय	ऋरैआर	कुवारा	गौतम	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
२	मघवन् ऋषिः	आराम्नाय	भालनीआर (मूर्त्तिहा)	मुथरिया	कारयप	सामवेद	३	कौथमी
३	कंटाच ऋषिः	आराम्नाय	कौरिआर	कटारिया	कपिंजल	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
४	छामवेन ऋषिः	आराम्नाय	छत्रवाची	छामवाल	चांद्रास्य	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
५	जगवन् ऋषिः	आराम्नाय	यामुवार	जांगला	(भारद्वाज) मौग्दल *	यजुर्वेद (सामवेद)	३	माध्यंदिनी कौथमी
६	मगधन्य ऋषिः	आराम्नाय	मलौरिआर	मूंधाड़ा	वत्नस	सामवेद	५	कौथमी
७	सांडल्य ऋषिः	अर्कोम्नाय	चालार्क	चलद	शांडिल्य	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी

८	अशिविन् ऋषिः	आदित्याम्नाय	छारसिया	आशियाल	औपमन्यु	सामवेद	३	कौथमी
९	देवदत्त ऋषिः	आदित्याम्नाय	देवलसिया	दुवेरा	शांडिल्य	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
१०	कौशिकस् ऋषिः	आदित्याम्नाय	मह्लोड़	लहर	कौरमस (कौशिक)	सामवेद	३	कौथमी
११	हटवल्य ऋषिः	किरणाम्नाय	छुद्रडीआर	छठेना	लोमस (लोंडावाल)	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
१२	भरत ऋषिः	किरणाम्नाय	श्वेतभद्र	भरतानी	भारद्वाज	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
१३	सावंल्य ऋषिः	किरणाम्नाय	पुनररिया (सरेया)	सांवलेरा	मनकस	सामवेद	१	कौथमी
१४	हरिगौन ऋषिः	किरणाम्नाय	मिहर	हीरगोता	हारीतस	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
१५	मौद्गल्य ऋषिः	मंडलाम्नाय	भेड़ापाकर	भीनमाल	भारद्वाज	यजुर्वेद	३	माध्यंदिनी
१६	मूर्द्धनी ऋषिः	मंडलाम्नाय	पाराशीन्	मेड़तवाल (पारासर)	पाराशर	सामवेद	३	कौथमी

❀ अथशाकद्वीपीयब्राह्मणानां पुरादि भेद उच्यते ❀

आराऽर्कादित्य किरणाः मण्डलोपाधि भेदतः
द्विसप्तति पुराख्यातः शाकद्वीप निवासिनः ॥१॥
आराश्चतुर्विंशतिकाः अर्का सप्त प्रकीर्तिताः ।
आदित्या द्वादशः प्रोक्ताः कराः सप्तदशः स्मृताः ॥२॥
मण्डला द्वादशश्चैव मगाः पञ्चविधा मता ।

शाकद्वीपी ब्राह्मणों की ७२ आम्नाय हैं जिस में से आर २४ प्रकार के, अर्क ७ प्रकार के आदित्य १२ प्रकार के, कर १० प्रकार के किरण ७ प्रकार के और मंडल १२ प्रकार के ।

आर २४ हैं ।

१ उरवार	९ पंड़ीड़िआर	१७ वाड़वार (वांड़ आर)
२ खंटवार	१० अदईआर	१८ अवधिआर
३ दोरिआर	११ कोरिआर	१९ पवनिआर
४ मखपवार	१२ पवईआर	२० यामुआर
५ कुरैआर	१३ पैंआर	२१ शिकोड़ीआर
६ देकुलिआर	१४ मौरिआर	२२ रहदोली आर
७ भलुनिआर	१५ शरै आर	२३ मलौरीआर
८ डुमरिआर	१६ छत्रआर (छत्रवार)	२४ पोती आर

अर्क ७ हैं ।

१ उल्लार्क २ पुण्डार्क ३ मार्कंडेयार्क ४ बालार्क
५ चाणार्क ६ लोलार्क और ७ वां कोणार्क

आदित्य १२ हैं ।

१ विलसैया	५ गुणसैया	९ सपहा
२ मदुसरिया	६ कुण्डार्क	१० अरहंसिया
३ देवडीहा	७ मल्लौड़	११ देवलसिया
४ डुमरौरी	८ गल्लोआ	१२ बरुणार्क

किरण ७ हैं

१ पुरैयार २ पठफौलिया ३ मिहिर ४ यिडोरिआर ५ नृसंग-पुरवार ६ श्वेतभद्र ७ पंचकंठी

कर १० हैं

१ पुनरखिया	४ गठार्क	७ हुड़िआर
२ देघड़ीहा	५ छुद्रि	८ ठकुरमेरा
३ पंचहाय	६ सोरिआर	९ सेरिआर
		१० कुकरौधा

मंडल १२ हैं

१ पुट्टीश	५ कपित्थक	९ खजूरहा
२ चंडरीर	६ तेरहपराशीन	१० भेड़ापाकर
३ डोहिक	७ खंडसूपक	११ रोहा
४ भाक	८ पालीवाध	१२ घरसारी

नोटः—शेष का पता आगे देंगे।

दुर्जन मुख चपेटिका नामक एक छोटा सा ट्रैक्ट मन्त्र शास्त्री पं० देवदत्त शर्म्मा अग्निहोत्री दाऊदनगर ज़िला गया द्वारा प्रकाशित के पृष्ठ ९ में शाकद्वीपी ब्राह्मणों के विषयक एक व्यवस्था छपी हमने देखी जो वीर भारत सन् १९०९ ई० कलकत्ता में छपी है-

पितृ श्राद्धादौ समुपस्थिते शाकद्वीपीया ब्राह्मण निमन्त्रणीया न वा तथा दैवे कर्म्मणि पूजनीयास्ते न वेति च प्रश्ने शाकद्वीपीया ब्राह्मण निमन्त्रणीयाः पूजनीयाश्च भविष्यदादि पुराणादि तेषा मति प्राशस्त्य बोधनात्। तथा च भविष्यत् पुराणे याज्ञवल्क्यं प्रति ब्रह्मवाक्यम्। प्रथमं भोजका भोज्याः पुत्र स्वविदुषैः सह। तेषामृते मन्त्र विदस्तथा वेदविदो द्विजाः। भोजकाः शाकद्वीपीया ब्राह्मणाः। एतन्निरुक्तिरग्रे विस्तरतो

निरूपयिष्यते पुत्रेति याज्ञवल्क्य सम्बोधनम् वात्सल्या-तिशय द्योतनाय स्वविदुपैः स्वपुरोहितैः स्वविदुपैरिति छान्दसः प्रयोगः । भोजक शब्दस्य निरुक्तिरुक्ता भवि-ष्यत् पुराणे सप्तमी कल्पे शतानीक सुमन्तुसम्वादे शा-म्बम् प्रति व्यास वाक्यम् शाकद्वीपीय ब्राह्मण नुपक्रम्य। आदि आदि आदि आदि—

१ सम्मतोऽस्मिन्नर्थे सखाराम भट्ट
२ सम्मतोऽस्मिन्नर्थे राजाराम भट्ट
३ सम्मतोऽयमर्थो बल्देव शर्म्मणः
४ वापुदेव शर्मा सम्मतोऽयम्
५ सम्मतोऽयम् चन्द्रशेखर शर्म्मणः
६ देवकृष्णः शर्म्मणोऽयंमते
७ वस्तीराम सम्मतोऽयम्
८ दुर्गादत्त शर्म्मणोऽयम्मतः
९ देवदत्त सम्मतोऽयमर्थः
१० सम्मतोऽर्थे भट्टोपनामक भास्कर शर्म्मा
११ सम्मतिरत्रार्थे भट्टोपाख्य जगन्नाथ शर्म्मणः
१२ सम्मतोऽर्थो देवोपाह्व गणपति शर्म्मणः
१३ सम्मतोऽयं देवोपाह्व महादेव शर्म्मणः
१४ सम्मतोऽयमर्थो नारायण शास्त्रिणः
१५ सम्मतोऽयमर्थो वैद्यनाथ शर्म्मणः
१६ सम्मतोऽयमर्थो रामकृष्ण विदुषः
१७ सम्मतोऽयमर्थो ईश्वरदत्त शर्म्मणः
१८ सम्मतिरत्रार्थे चतुर्वेद हीरानन्द शर्म्मणः
१९ सम्मतोऽयमर्थो आर्य्यादत्त शर्म्मणः
२० सम्मतिरत्रार्थे ओपाख्य शेवाराम शर्म्मणः
२१ सम्मतोऽयमर्थो गुलझार शर्म्मणः

ऐसा प्रतीत होता है कि सन् १६०४ ई० में कलकत्ते में कोई बृहत् यज्ञ था उस में प्रश्न यह उठा कि पितृ यज्ञ, देव यज्ञ व श्राद्धादिकों में शाकद्वीपी नामक ब्राह्मण लोग निमन्त्रित किये जायँ या नहीं? तथा ये लोग दान दक्षिणा व पूजनादि सत्कार के योग्य हैं या नहीं? इस प्रश्न के निर्णय के लिये बड़े २ विद्वानों की एक सभा हुई जिस का विवरण कलकत्ते के वीर भारत में छपा था उस में यह निश्चय हुआ कि भविष्यादि पुराणों के आधारानुसार शाकद्वीपी ब्राह्मण भोजक लोग यथार्थ में शुद्ध ब्राह्मण व सर्वथा सर्वदा पूजनीय हैं इस पर उपरोक्त २१ विद्वानों की सम्मति युक्त हस्ताक्षर भी हैं।

विशेष अन्वेषण करने से हमें यह भी निश्चय हुआ है कि राज्यस्थान व अन्य प्राचीन स्थानों में इन लोगों के पास बड़े बड़े मन्दिर व दानपत्र तथा ब्राह्मणत्व के उपलक्ष्य में मिली हुई आजीविकाओं के पट्टे परवाने भी हैं तथा तद्विषयक विवर्ण कहीं कहीं शिला लेखों में भी मिलते हैं।

कृषक ब्राह्मण

कूर्माचल प्रदेश की एक ब्राह्मण जाति है इन में सब ही प्रकार के ब्राह्मण सम्मिलित हैं इन के पूर्वजों ने इस देश में किसी समय बड़ा सन्मान पाया था विद्वानों का ऐसा मत है कि नवागत ब्राह्मणों की राजभवन में प्रतिष्ठा होने पर पहिले के पूज्य ब्राह्मणों में जो विद्वान् हुये वे दूसरे राज्य में जाकर पूज्य हुये और मूर्ख ब्राह्मण कृषक बने।

कूर्माचल के ब्राह्मणों में जात्याऽभिमान का बड़ा रोग है एक ही पुरुष की सन्तान में यह रोग बाधा दे रहा है, क्षत्रिय राज्यकाल में गुण और कर्म की प्राधान्यता थी परन्तु इस समय कुल की प्राधान्यता है, कुलीन चाहे कितना भी मूर्ख, दुर्गुणी व ब्राह्मकर्म से गिरा हुआ क्यों न हो पर वह अपने को सर्वोच्च मानने में तनिक भी

न हिचकिचायेगा परन्तु इस के विपरीत बेचारा कृषक कितना भी सदाचारी व सद्गुण सम्पन्न विद्वान् ब्राह्मण हो तो वह छोटा ही मांना जावेगा।

अनुसन्धान से पता चलता है कि सोलिया, डालाकोटी, विल्वाल, बमेटा, गरजोला, नौलिया टौलिया, पलड़िया, मसाल, ननघाल, ढुमका, खोलिआ, दाणी, सत्ती, सुनाल, बिरवाल, दिमवाल, सनवाल, सुंपाल, गुनी, बड़सीमी, दुर्गपाल, कपिलाश्रमी, धौलाड़ी, मुनगली, डोब्याल, मेहलिया, भाट, धनखना आदि २ सैकड़ों प्रकार के ग्रामोपनामी ब्राह्मण कूर्मांचल में रहते हैं।

ये प्राचीन शुद्ध उच्च पदस्थ आगन्तुक ब्राह्मणों की सन्तान हैं क्योंकि कूर्मांचल देश के असली रहने वाले किरात, राजी, भिल्ल हूंण, शक और डोम आदि आदि थे।

भारतवर्ष कृषि प्रधान देश है और आजकल विद्या का अभाव होने के कारण ब्राह्मण वर्ण का एक अधिकांश भाग कृषि पर ही निर्वाह करता है पर वे सब समानभाव से अन्य ब्राह्मणों की तरह सर्वत्र माने जाते हैं पर इस प्रदेश में यह विशेषता है कि कृषक ब्राह्मण सुदृष्टि व समान भाव से नहीं देखे जाते इस प्रदेश में कृषि कार्य्य चारों ही वर्णों में प्रवृत्त है कितने ही कुलाभिमानी ब्राह्मण इस प्रदेश में यद्यपि वे कृषी द्वारा ही जीविका करते हैं तथापि वे अपने को कृषक कहे जाने पर अपना अपमान समझते हैं।

राजा रुद्रचंद, बाज बहादुरचन्द चन्द्रवंश में बड़े प्रतापी राजा हुये हैं ये पूर्ण वेदानुयायी राजा थे इन्होंने पञ्चगौड़ और पञ्चद्रविड़ महाविद्वान् विद्वान् ब्राह्मणों को ब्रह्मावर्त्त व दक्षिण से बुला कर अपने राज्य में बसाये, चन्द्रराज भवन में चारों वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण कर्मकाण्डी थे, युर्वेदी पांडे, सामवेदी त्रिपाठी और अथर्ववेदी पांडे खोजा में रहते थे, राजा रुद्रचन्द्र के समय कूर्माचल देश उत्तर की काशी कहा जाता था, इन्हीं वेदज्ञों की सन्तान आज कल के कृषक ब्राह्मण हैं जो सब स्मार्त धर्म्मी हैं।



आदि गौड़ ब्राह्मण

ब्राह्मण निर्णय पृष्ठ १५४ से आगेः—

शासन ।

(१) अहीचवाल	(९) कीरीट	(१७) गुगवा	(२५) चुटेड़
(२) अटान	(१०) कुन्डालक	(१८) गवींटी	(२६) चाकोलिया
(३) अदीतवाल	(११) काकर	(१९) गोस्वामी	(२७) चतुर्वेदी
(४) आस्तीयाणा	(१२) कतेवरिया	(२०) गांगावत	(२८) चौबे
(५) आचार्य्य	(१३) कलीनरा	(२१) गजयाणा	(२९) जाड़ीवाल
(६) इन्दोरिया	(१४) कन्डवाले	(२२) गिड़ा	(३०) टीलावत
(७) इच्छावत	(१५) खेड़वाल	(२३) चालीया	(३१) छोरवाल
(८) उपाध्याय	(१६) खरीट	(२४) चूलीवाल	(३२) ढड़
(३३) छाचोलीया	(४१) नागणवाल	(४९) पूतडया	(५७) बिवालिया
(३४) तासोरिया	(४२) नागवाणा	(५०) पुरोहित	(५८) बड़वाला
(३५) तिलोड़िया	(४३) नूरावतिया	(५१) फैवारिया	(५९) बोहरा
(३६) दोराड़	(४४) पादोपोता	(५२) बबेरवाल	(६०) बलाईचिया
(३७) दीक्षित	(४५) पंचरंग्या	(५३) बेरीवाल	(६१) बावोलिया
(३८) दोलिया	(४६) पंचोली	(५४) बघेरवाल	(६२) बेदीया
(३९) धरड़	(४७) पंचलाग्या	(५५) बैंवाल	(६३) बेडतिया
(४०) नानोतिया	(४८) पटवारिया	(५६) बीड़ा	(६४) बावलिया
(६५) भीरुका	(७३) माणाका	(८१) रामपुरिया	(८९) सीमणिया
(६६) भीसवरा	(७४) मारस्था	(८२) लाटा	(९०) सेवल
(६७) भादुपोता	(७५) माथरा	(८३) लावलया	(९१) सरसालिया
(६८) भामरया	(७६) मोरोलिया	(८४) लूड़ीवाल	(९२) सागवाल
(६९) भगतिया	(७७) मारश्या	(८५) वांकुरा	(९३) हरीतवाल
(७०) भीरुपोता	(७८) मांचोलिया	(८६) वास	
(७१) भिवाल	(७९) रीछोवत	(८७) सारोलिया	
(७२) महता	(८०) रुलवाल	(८८) सिंघीवाल	

पद्धवियें

मिश्र	दीक्षित	वेदिये	चौबे
जोपी	व्यास	पाठक	शुक्ल
स्वामी	भागवती	श्रोत्रिय	भट्ट
पांडे	तामदायत	तिवाड़ी	कथाव्यास

आदि गौड़ ब्राह्मणों के गोत्र प्रवर।

गोत्र प्रवर

१ भारद्वाज—अङ्गिरा, बृहस्पति, भारद्वाज ॥३॥
२ उपमन्यु—(१) वसिष्ट (२) इन्द्रप्रमद (३) भरद्वसु।
३ वशिष्ट—(१) वशिष्ट।
४ कश्यप—(१) काश्यप (२) आवत्सार (३) नैध्रव।
५ मौद्गल्य—(१) अङ्गिरा (२) भार्म्यश्व [३] मौद्गल्य।
६ जातु कर्ण्य—(१) वशिष्ट (२) अत्रि (२) जातु कर्ण्य।
७ शांडिल्य—(१) शांडिल्य (२) असित (३) देवल।
८ कौंडिन्य—(१) अङ्गिरस (२) वार्हस्पत्य (३) भारद्वाज।
९ गौतम—(१) अङ्गिरा (२) आयास्य (३) गौतम।
१० अघमर्षण—(१) विश्वामित्र (२) कौशिक (३) अघमर्षण।
११ वत्स—(१) भार्गव (२) च्यवन (३) अप्नुवान।
१२ वामदेव—(१) अङ्गिरस (२) वामदेव (३) वार्हदुक्थ्य।
१३ भ्रुत—(१) अङ्गिरस (२) बृहस्पति (३) भारद्वाज (४) वान्दन (५) मातवचस।
१४ लौगाक्षि—(१) कश्यप (२) आवत्सार (३) वसिष्ट।
१५ वच्छस—(१) भृगु (२) च्यवन (३) आप्नवान।
१६ गविष्ठर—(१) आर्चनानाश (२) अत्रि।
१७ षिद—(१) जामदग्न्य (२) आप्नवान [३] और्वत [४] भार्गव [५] च्यवन
१८ दीर्घतमस [१] अङ्गिरस (२) उतथ्य [३] दीर्घतमस।



कश्मीरी ब्राह्मण।

भारतवर्ष के प्राचीन आर्य्य ये ही हैं तिब्बत में जो ब्राह्मी सृष्टि उत्पन्न हुई थी उसमें के वंशज ये ही ब्राह्मण हैं डील डौल सूरत शकल आदि आदि के कारण आर्य्य कहलाने के योग्य ये ही हैं। भारत की अन्य ब्राह्मण जातियों में सब में कुछ न कुछ त्रुटियें अवश्य हैं अर्थात् करीब २ सम्पूर्ण प्रकार के अन्य ब्राह्मण समुदाय ने अपने मुख्य ६ कर्मों में से १ अध्यापन २ अध्ययन ३ यजन ४ याजन आदि को छोड़कर केवल "दान" ले लेना को मुख्य जान कर भीख के टुकड़ों पर निर्वाह कर लेने को ही ब्राह्मणत्व समझ लिया है तिसका फल यह हुआ कि धान्य कुधान्य खाने पीने से ब्राह्मण लोग आलसी, प्रमादी दरिद्री व निरक्षर भट्टाचार्य्य रह गये तिससे भारत की सम्पूर्ण जातियों में ब्राह्मण समुदाय की दशा शोचनीय व अचल विचल होगई यहां तक कि वे ब्राह्मण जिनके पूर्वज बड़े २ विद्यावाचस्पति व ऋषि मुनि होकर भूखंड में मान्य पाते थे उनकी सन्तान आज शूद्रों की तरह पानीपांडे, रसोइये, चौकीदार, चिलमची, चपड़ासी, टहलुवे और अन्य चाकरी करती फिरती हैं, यह ही नहीं भूख के कारण पेट की ज्वाला को बुझाने के अर्थ सदा के लिये गोभक्षक ईसाई व मुसलमान बन जाती हैं परन्तु इन सब ब्राह्मणों में यदि ब्राह्मण जाति का गौरव व मर्य्यादा किसी ब्राह्मण समुदाय ने रक्खी है तो सब से पहिले कहा जा सकता है कि वह समुदाय एकमात्र कश्मीरी ब्राह्मणों का है इनकी उत्पत्ति शुद्ध व निर्मल तथा प्राचीन आर्य्यों की सन्तान ये ही हैं।

इस जाति की प्रशंसा अनेकों देशी व विदेशी विद्वान् व इतिहासवेत्ताओं ने लिखी है उन सब की सम्मतियें यदि संग्रह की जायँ तो यह प्रकरण बहुत बढ़ जायगा अतएव सूक्ष्म रूप से यहां दिग्दर्शन मात्र दिखलाते हैं यथाः—

Sir George Campbell सर जार्ज केम्पबेल की पुस्तक के पृष्ठ ५७ से ५८ तक का सारांश यह है :—

The Kashmiri Brahmins are quite High Aryans in the type of their features, very fair and handsome, with high chiselled features. and no trace of inter mixtures of the blood of any lower race. The Kashmiri Pandits are known all over Northern India, as a very clever and energetic race of office workers, as a body they excel the same number of any other race with whom they come in contact.

E, of India page 57 to 59

भावार्थः—सर जार्ज केम्पबेल साहब लिखते हैं कि कश्मीरी ब्राह्मण अपनी शारीरिक दशा, रंग सुन्दरता व मनोहरता के कारण उच्चकोटि के आर्य्य हैं क्योंकि इन के रजवीर्य्य में किसी भी अन्यनीच जाति का संसर्ग नहीं है। ये लोग पश्चिमोत्तर प्रान्त में सर्वत्र विद्या बुद्धि कार्य्य कुशलता के लिये प्रसिद्ध और उच्चपदस्थ हैं और बड़े २ कार्य्यों को अपनी बुद्धि विचक्षणता के कारण बहुत ही सुप्रबन्ध के साथ कर डालते हैं।

भट्टाचार्य्य जी लिखते हैं कि:—

The usual Surnames of the Kashmiri Brahmans is Pandit. [H; C. S. page. 54)

कश्मीरी ब्राह्मणों का मुख्य कुल नाम "पंडित" है।

भारतवर्ष में इस जाति के लोगों ने विदेशी विद्वानों को भी यह दिखला दिया है कि "भारत वर्षियों में भी उच्चतम कोटि की विद्या प्राप्त करने व राज्य कार्य्यों में सुप्रबन्ध के साथ कार्य्य चलाने की शक्ति विद्यमान है।"

भारतवर्ष की पठित समाज में कोई ही ऐसा मनुष्य होगा जिस ने भारतमाता के सपूत National Congress भारत की जातीय महासभा के संचालक स्वर्गवासी आनरेबल पंडित अयोध्यानाथ वकील हाईकोर्ट अलाहाबाद का नाम न सुना हो, वे महाशय भी कश्मीरी ब्राह्मण कुलोत्पन्न भारत भूषण थे।

इसी तरह बंगाल हाईकोर्ट के जस्टिस स्वर्गवासी पण्डित शम्भूनाथ भी कश्मीरी ब्राह्मण थे आपकी न्याय व प्रजावत्सलता के कारण सारा बंगाल आज आपको याद कर रहा है जैसे कि आजकल भारत की पठित समाज मान्यवर बाबू शारदाचरण मित्र जस्टिस बंगाल हाईकोर्ट कलकत्ता की महिमा गारही है उस ही प्रकार आपकी प्रशंसा भी सर्वत्र फैली हुई है, इसी तरह बाबू गोविन्दप्रसाद पण्डित का नाम कौन नहीं जानता होगा जिन्होंने बंगाल की कोयले की खान से इतना द्रव्य कमाया कि वे अपने जीते जी बंगाल के धन कुबेर कहे जाने लगे और उनकी सन्तान को भारत गवर्नमेण्ट ने महाराजा की उपाधि से विभूषित किया था वे भी कश्मीरी ब्राह्मण थे।

इनका नाम कश्मीरी पड़नेका कारण यह है कि इनका निकास कश्मीर से है सौन्दर्य्य, विद्या, सद्गुण सम्पन्नता इनमें इस समय तक विद्यमान है इन्होंने आज तक भी हीनता तनिक भी नहीं दिखलायी ये लोग प्राचीन ब्राह्म मर्य्यादा पर स्थित हैं इनमें विवाह प्रणाली बड़े ही प्रशंसनीय क्रमयुक्त है।

कश्मीरी ब्राह्मणों के गोत्र भेद व उपाधियें ।

[१] राजदान [२] पण्डित [३] भट्ट।

१—राजदानों के गोत्र

गौतम, लौगाक्षि, उपाधि, लबुरकर, कौल, दत्त, स्वामी, और स्थान बलदीमर हबकदल है।

२—पंडित ।

गोत्र	उपाधि	स्थान
कपिष्ठल	आट्टू	पंपोल
कौशिक	कचरी	रणवाली
”	मज्जु	हबकदाल
”	”	अनकदाल
”	कोटदार	जोगीनलकर

गोत्र	उपाधि	स्थान
भारद्वाज	बटफुलो	छछवला
,,	,,	अथलमरी
वदभारद्वाज	दर	छछवला
,,	,,	अलिकदाल
उपमन्यु	सम	रनवाली
दत्तात्रेय	वान	जोगीलनकर
पालवासगार्ग्य	फोतदार	पंपोल
भार्गव	जाद्दू	राणावाली

३—भट्ट के गोत्र उपाधि आदि।

गोत्र	उपाधि	स्थान
विश्वामित्र	वङ्ग	हवाकदाल
काश्यप	कनौजी	अहलमर

कान्यकुब्ज——यह युक्त प्रदेश की ब्राह्मण जातियोंमें से उच्चतम कोटि की एक ब्राह्मण जाति है इन्हें कनोजिये ब्राह्मण भी कहते हैं दूसरे प्रान्तों में इनको पुरविये ब्राह्मण भी कहते हैं। शास्त्रोक्त दसों प्रकार के ब्राह्मणों में इन का नाम द्वितीय संख्या पर है अर्थात् ब्राह्मणों के पञ्चगौड़ समुदायान्तर्गत दूसरे नम्बर के गौड़ ब्राह्मण हैं अर्थात् शास्त्र में गौड़ ब्राह्मणों के पांच मुख्य भेदों में से ये दूसरे भेद के हैं, पूर्वकाल में आजकल का सा भाव नहीं था उस समय सब ब्राह्मण एक थे। परस्पर ईर्षा द्वेष व छुटाई बड़ाई के भावों ने सबको तित्तर वित्तर कर दिया और एक दूसरे भाई को छोटा व बुरा समझने लगा—इसके प्रतिफल स्वरूप इन ब्राह्मणों में अपने अन्य स्वजाति भाइयों के साथ Non-cooperation असहयोग करने की मात्रा यहां तक बढ़ी कि इन लोगों ने छुआ-छूत को हद के दरजे तक पहुंच दिया अर्थात् अन्य

ब्राह्मणों के साथ सहयोग तो क्या इन्होंने अपने कान्यकुब्ज भाइयों के साथ ही असहयोग कर दिया अर्थात् परस्पर एक साथ खान पान तो दूर ही रहा परस्पर एक दूसरे के हाथ का स्पर्श किया व बनाया भोजन ग्रहण करना ही पाप समझा इसी ही से कहावत प्रसिद्ध है कि 'नौ कन्नोजिये और दस चूल्हे' अर्थात् अपनी अपनी तूती और अपना अपना राग के समान सब कुछ उन्नति चौके चूल्हे में ही रह गई । इस तरह की दशा केवल इन्हीं के साथ नहीं है किन्तु हिन्दु जाति की ही उन्नति केवल चौका चूल्हा में ही खतम होगई है यहां तक कि छुआ छूत करते करते भारत की उन्नति पर भी चौका फिर गया है यही कारण है कि आज जिधर देखो उधर हिन्दू जाति की ही दुर्दशा दिखाई दे रही है; देव मन्दिरों की अप्रतिष्ठा, असहाय हिन्दु बालक बालिकाओं व स्त्रियों का धर्म भ्रष्ट किया जाना भी इस ही चौका चूल्हा के कारण कहा जाता है अस्तु !

कान्यकुब्जों की उच्चता

युक्त प्रदेश की मनुष्य गणना सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने लिखा है *The highest of these (Panch Gaurs) is the Kanya-Kubja or Kanaujia.* पञ्च गौड़ों में सर्वोच्च ब्राह्मण कान्यकुब्ज हैं । इन ब्राह्मणों का यह नाम कैसे पड़ा ? तो लेख मिलता है कि:—

कन्या कुब्जाऽभवन् यत्र कान्यकुब्जस्ततो भवत् ।
देशोऽयं कान्यकुब्जाऽख्यः सदा ब्रह्मर्षि सेवितः ॥१७॥

अर्थः—जिस देश में कन्यायें कुब्जा हुई उस ही दिन से शास्त्रोक्त ब्रह्मर्षि देश की ही कान्यकुब्ज संज्ञा हुई और उस ब्रह्मर्षि देश के वेदज्ञ ब्राह्मणों का नाम कान्यकुब्ज हुआ *

एक पंडित ने लिखा है

The Kanojia holds a very high position among the Brahmans of Northern India, and the Brahmans of Bengal take a great Pride in claiming to have been originally Kanojias.

(Hindu C. S. P. 150.)

---

* Ja. Bha. P. 124

भा०—कन्नोजिया ब्राह्मण यू० पी० के ब्राह्मणों में उच्चतमकोटि के प्रतिष्ठित होते हैं और बंगाल के ब्राह्मण अपने को कन्नोजिये कहने व कहलवाने में अपना गौरव समझते हैं।

शास्त्र में लिखा हैः—

सारस्वताः कान्यकुब्जाः गौड़ाः मैथिल उत्कला।
पञ्चगौड़ समाख्याता विंध्यस्योत्तर वासिनः॥

भा०—सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल ये पांचों पञ्चगौड़ कहाते हैं।

पुराणोक्त कथा

इस विषय की ऐसी कथा मिलती है कि महोदयपुर नामक ग्राम के रहने वाले महात्मा कुशनाभ राजा के एक घृताची रानी थी जिसके १०० सौ कन्या उत्पन्न हुयीं, ये जब युवा हुयीं तब एक दिवस बाग़ में पर्य्यटन करने गयीं वहां वायुदेवता उन्हें देखकर मोहित होगया और उनके साथ विवाह कर लेना चाहा तब वे कन्यायें वायु देवता से बोलीं कि विवाह आदि करने न करने का अधिकार पिता जी को है इससे वायुदेवता उन पर असन्तुष्ट हुये और उनके शरीरों में प्रवेश करके उन्हें कुब्जी बना दिया इस पर जब वे पिता जी के पास पहुंचीं तब पिता जी ने उनसे इसका कारण पूछा—कन्याओं ने सम्पूर्ण घटना कह सुनाई इस पर राजा ने मंत्रियों से सम्मति करके उन कन्याओं को वायुरूपी ब्रह्मदत्त महात्मा को दी और तब ही तत्काल वे अतिसुन्दरी होगयीं और वे ब्रह्मदत्त जी (वायु जी) के साथ चली गयीं बस तत्काल उनका कुब्जापन भी दूर होगया इस ही से ब्रह्मावर्त समीपस्थ देश का नाम कान्यकुब्ज व कन्नोज हुआ क्योंकि लिखा है कि "देशे प्रसिद्धोगताः" [JA. BHA. 125] और इस ही कान्यकुब्ज देश के ब्राह्मणों की कान्यकुब्ज व कन्नोजिया संज्ञा हुई इस ही सिद्धान्त से मिलती हुयी सम्मति पं० योगे० जी ने अपने ग्रन्थ H. C. S. के पृष्ठ १५६ में ऐसी लिखी है किः—

The name Kanojia is derived from the ancient Hindu city of Kanauj at the confluence of the Ganges and the Kali Nadi in the district of Farrukhabad.

भा०-फर्रुखाबाद समीपस्थ गंगा व काली नदी के संगम पर बसे हुये प्राचीन कन्नोज के कारण ब्राह्मणों की कन्नोजिया संज्ञा हुई।

ऐतिहासिक घटना

यह कन्नोज शहर हजारों वर्षों का प्राचीन नगर होने के कारण कभी उन्नति कभी अवनति की दशा में चलता रहने से आज कल एक छोटा सा नगर रह गया है अन्यथा किसी समय प्रफुल्लित दशा की एक अति-सुन्दर रमणीक, मनोहर विस्तृत राजधानी थी। ईसवी सन् ६०७ से ६४८ तक राजा हर्षवर्धन यहां राज्य करते रहे, मिस्टर फाहियान चीनी यात्री ने अपने अन्वेषण व भारतयात्रा की रिपोर्ट में कन्नोज के विषय में लिखा है कि कश्मीर से आसाम तक की तलैटी और नैपाल से नर्वदा नदी तक के शहरों के प्रदेश को कान्यकुब्ज देश कहते थे। राजा हर्षवर्धन पर पुलकेशी राजा ने कई बार चढ़ाई की पर अन्त को पुलकेशी को लौट जाना पड़ा। ईसवी सन् १०२१ में कन्नोज पर महमूद गजनवी ने चढ़ाई की इस समय यहां तोमर राजा जयपाल का राज्य था, ईसवी सन् १०५० में तोमर राजा कन्नोज से दिल्ली चले गये और यहां राठोड़ राजाओं का राज्य बढ़ा, राजा जयचन्द ने यहां ही अश्वमेध यज्ञ किया और अपनी कन्या संयोगिता का स्वयंवर भी किया। इस स्वयंवर में वानाफोर वंशज प्रसिद्ध वीर आल्हा ऊदल सरीखे अनेकों वीरों के होते हुये पृथिवीराज चौहाण संयोगिता को ले गये। ईसवी सन् ११९१ में मुहम्मद गोरी ने कन्नोज पर चढ़ाई की और जयचन्द्र मारा गया और कन्नोज से राठोड़ों का राज्य जाता रहा। *

* C & T. Vol. III P. 225.

पं० रघु० प्र० जी ने अपने जाति निबन्ध ग्रन्थ में ऐसा लिखा है कि "कुब्जाः कन्याः सन्ति यस्मिन्देशे स कान्यकुब्जो देशः" अर्थात् जिस देश में कुब्जा कन्यायें थीं वह कान्यकुब्ज देश कहाया और "कान्य कुब्जे भवा कान्य कुब्जाः" और कान्यकुब्ज देश के ब्राह्मण कान्यकुब्ज कहाये।

उपरोक्त ब्रह्मर्षि देश कौनसा है? इसका उत्तरः—

कुरुक्षेत्रं च मत्स्याश्च पञ्चालाः शूरसेनकाः।
एष ब्रह्मर्षि देशोवै ब्रह्मावर्तादनन्तर॥

मनु० अ० २ श्लो० १९

भा०—कुरुक्षेत्र दिल्ली प्रान्त, मत्स्यदेश, पञ्चाल और ब्रज ये ब्रह्मावर्त के समीपी प्रदेश ब्रह्मर्षि देश कहलाते हैं इस ही ब्रह्मर्षि देश के अन्तर्गत कान्यकुब्ज देश कौनसा है? तो उत्तरः—

शृङ्गिणस्थल मारभ्य दालभ्यौ कान्त मायतः।
कोशलाद्दक्षिणे देशः कान्यकुब्जः प्रचक्षते॥

महा भा० वनपर्व

अर्थः—शृङ्गी रामपुर जो फतेहगढ़ फर्रुखाबाद के जिले में सिंगी रामपुर कहाता है इस से दालभ्य ऋषि के आश्रम पर्य्यन्त कोशल देश यानी अयोध्यापुरी से दक्षिण में जो देश है वह कान्यकुब्ज देश कहाता है आजकल नये राज्य प्रबन्ध के अनुसार कानपुर, फतेहपुर, फर्रुखाबाद, इटावा, लखनऊ, बाराबंकी, उन्नाव, रायबरेली, हरदोई, शाहजहांपुर, भगवन्तनगर और कन्नौज आदि २ देश मिलकर कान्यकुब्ज देश माने जाते हैं।

शृङ्गीरामपुर आजकल के कन्नौज सिटी के समीप ही है यहां कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की प्राधान्यता थी अतः इन ही ब्राह्मणों के निवास के कारण शृङ्गीरामपुर के आस पास जो राठौड़ राजाओं ने शहर बसाया उस का भी उन्होंने कन्नौज नाम रक्खा।

प्रश्नः—उपरोक्त ब्रह्मावर्त देश कौनसा है?

उत्तरः—

सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्।
तं देव निर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते॥
मनु० अ० २ श्लो० १७

अर्थः—सरस्वती और दृषद्वती इन देव नदियों के मध्य में जो देश है वह देवताओं से बसाया गया है उस को ब्रह्मावर्त कहते हैं। इस ही ब्रह्मावर्त देश का विशेष भाग कान्यकुब्ज देश कहा जा सकता है।

कान्यकुब्ज देश की प्राचीनता

जैसा कि लोगों का अनुमान होगा कान्यकुब्ज देश कुछ थोड़े से समय का नहीं है किन्तु प्राचीन समय से ही यह नाम व इस नाम की ब्राह्मण जाति चली आ रही है जिस की कथायें व विवरण प्रायः शास्त्रों में मिलते हैं संस्कृत शास्त्र धारानुसार प्रत्येक वस्तु का नाम उस के गुण के अनुसार रक्खा जाता है।

यथाः—

येन लिंगेन यो देशो युक्तः समुप लक्ष्यते।
तेनैव नाम्ना तं देशं वाच्यमाहुर्मनीषिणः॥
महा० आ० अ० २-१२

अर्थात् जिस देश में जो चिह्न रहता है उस ही के अनुसार विद्वान् लोग उसका नामकरण करते हैं तदनुसार ही महाभारत वन० ८७-१७ में लिखा है:—

कान्यकुब्जेऽपिबत्सोममिन्द्रेणसह कौशिकः।
ततः क्षत्रादपाक्रामद्ब्राह्मणोस्मीति चाब्रवीत्॥

अर्थः—विश्वामित्र ऋषि कहते हैं कि इन्द्र के साथ मैंने इस ही कान्यकुब्ज देश में सोमपान किया था और मैं क्षत्रियत्व से छूट कर ब्राह्मणत्व को इस ही देश में प्राप्त हुआ था इस से प्रमाणित होता है कि इस देश की कान्यकुब्ज संज्ञा महाभारत के समय से भी पूर्व की है। यह ही कारण है कि कान्यकुब्जों की उपाधियें मान प्रतिष्ठा उल्लेखनीय है।

इस कान्यकुब्ज जाति का विवरण लिखते समय हमने कान्य॰ कुब्ज जाति सम्बन्धी अनेकों पुस्तकों* को अवलोकन किया तो सब में कुछ न कुछ अत्युक्ति व दोषयुक्त त्रुटियें पाईं और प्रायः सब ही विद्वानों ने क़रीब२ अपनी२ रचनायें सुनी सुनाई वार्तोंके ही आधार पर की हैं यथाः—

(१) अथातः संप्रवक्ष्यामि कान्यकुब्जविनिर्णयम् ।
श्रुत्वा द्विजमुखा देतद्वृत्तान्तं पूर्वकालिकम् ॥
ब्रा० मा० ४१२

(२) पुनः स्वामी विद्यातीर्थ जी अपने ग्रन्थ की भूमिका में लिखते हैं कि "मैंने तो जैसा लोगों से सुना अथवा लिखा व छपा देखा वैसा लिखा है।"

(३) पं० मु० राम जी अपने ग्रंथ में लिखते हैं "वृद्ध जनों के मुख से सुनकर अति परिश्रम से शुद्धता पूर्वक यह वंशावलि लिखकर प्रकाशित करी है।"

इस ही तरह सब ही आधुनिक ग्रन्थकारों ने सुनी सुनाई वार्तों के आधार पर रचनायें की हैं जिनमें सब से प्रथम तो सबही ने १६ गोत्रों की सूची में ही भूल की है यथाः—

दोहा—पंद्राह सदीके के परे, विक्रमराज व्यतीत ।
कान्यकुब्ज कुल गोत्र में, विविध भांति विपरीत ॥

अर्थात् विक्रम सम्वत् १५०० पन्द्रह सौ से लेकर अब तक कान्यकुब्जों के गोत्र व कुल विवरण में बहुत कुछ उलट पुलट हो जाने से जितने ग्रन्थ हमने देखे सब में द्वेष की मात्रा का समावेश होने से एक दूसरे को नीचा दिखाने के उद्योग के साथ२ कान्यकुब्जों के प्रसिद्ध १६ गोत्रों में भी भिन्नता हो गई है अतएव इस विवरण को हमने बड़ी दीर्घदर्शिता के साथ संग्रह किया है। एक दूसरे की देखा-देखी सब ही ने कान्यकुब्जों के केवल १६ गोत्र लिखे हैं पर हमने बड़े अन्वेषण से पता लगाया है कि इन के बहत्तर गोत्र निम्न लिखित हैं:—

---

* जैसे:—ब्रा० मार्तंड, कान्यकुब्ज कु० कौमुदी, कान्यकुब्ज प्रबोधनी, कान्यकुब्ज दर्पण, कान्यकुब्ज प्रकाश, जा० भास्कर, कान्यकुब्ज चन्द्रिका, कान्यकुब्ज वंशावलि, कान्यकुब्ज चिन्तामणि, कान्यकुब्ज मयूख व भिन्न भिन्न अग्रेज विद्वानों के ग्रन्थ।

कश्यपश्च भरद्वाजो शांडिल्यः सांकृतस्तथा ।
कात्यायनोपमन्युश्च काश्यपश्च धनञ्जयः ॥
कविस्तो गौतमो गर्गो भरद्वाजस्तथैवच ।
कौशिकश्च वशिष्ठश्च वत्सः पाराशरस्तथा ॥

कान्यकुब्जों के गोत्र ।

१ कश्यप	५ कौशिक	९ धनञ्जय	१३ गर्ग
२ भरद्वाज	६ उपमन्यु	१० वशिष्ट	१४ भारद्वाज
३ शांडिल्य	७ कात्यायन	११ कविस्त	१५ वत्स
४ सांकृत	८ काश्यप	१२ गौतम	१६ पाराशर

इन गोत्रों में कतिपय गोत्र वाले अपने को अन्यों की अपेक्षा मानमर्य्यादा में उच्च समझते हैं वे षटकुली कहाते हैं इन्हीं का दूसरा नाम कुलीन ब्राह्मण भी है ।

लिखा है:—

कात्यायनोपमन्युश्च भरद्वाजोथ कश्यपः ।
शांडिल्यः सांकृतश्चैव षडेते गोत्रजोत्तमाः ॥

अर्थः—१ कात्यायन, २ उपमन्यु, ३ भरद्वाज ४ कश्यप ५ शांडिल्य और ६ सांस्कृत ये छः कुल कुलीन व षटकुल नाम से प्रसिद्ध हैं । इन्हीं की उच्चता के विषय में मिस्टर W. C. डवल्यु. सी. कलेक्टर अपनी रिपोर्ट C & T सी अण्ड टी के पृष्ठ २२५ में ऐसा लिखते हैं:—

They are also known as Khatkul or Shatkul or those of the six clans. These members of the six clans are regarded as the true Kanaujias.

भा०—कन्नोजिये ब्राह्मणों में खटकुल याने षटकुल भी होता है ये ही षटकुल यथार्थ रूप में कन्नोजिये ब्राह्मण कहाते हैं । कान्यकुब्जों के गोत्र प्रवरादि इस प्रकार हैं:—

कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के गोत्र प्रवर व आस्पद।

(७२ बहत्तर गोत्रादि विवरण)

संख्या,	गोत्र,	प्रवर	आस्पद
१	कश्यप	कश्यप १ असित २ देवल ३	दुबे, अवस्थी, दीक्षित, मिश्र और अग्निहोत्री
२	काश्यप	काश्यप १ वत्स २ नैध्रुव ३	अवस्थी, दुबे, अग्निहोत्री, दीक्षित, मिश्र, शुक्ल
३	शांडिल्य	शांडिल्य १ असित २ देवल ३	मिश्र, उपाध्याय, अग्निहोत्री दीक्षित, तिवारी
४	धनंजय	माधुछन्दस् १ विश्वामित्र २ धनंजय ३	तिवाड़ी, दुबे
५	वत्स	च्यवन१ वत्स२ और्व ३ आप्नवान४ जमदग्नि ५	तिवाड़ी, दुबे, पांडे, पाठक, दीक्षित
६	कौशिक	कौशिक १ देवलज २ अघमर्षण ३	अवस्थी, त्रिवेदी, मिश्र, पाठक, दुबे, दीक्षित
७	कात्यायन	कात्यायन १ वशिष्ठ २ विश्वामित्र ३	मिश्र, अग्निहोत्री, शुक्ल
८	भरद्वाज	भरद्वाज १ अंगिरा २ बृहस्पति ३	शुक्ल, त्रिवेदी, मिश्र, अवस्थी, तिवाड़ी, दुबे, पाठक, दीक्षित
९	उपमन्यु	वशिष्ठ १ याज्ञवल्क्य २ उपमन्यु ३	वाजपेई,
१०	गर्ग	अंगिरस१ बार्हस्पत्य२ गर्ग३ भरद्वाज४ शौनक५	चौबे, पांडे, पाठक, मिश्र, अग्निहोत्री, अवस्थी दुबे, उपाध्याय

११	गौतम	अंगिरा १ वृहस्पति २ गौतम ३	शुक्र, तिवारी, दुवे अग्निहोत्री, पांडे, अवस्थी, मिश्र
१२	सांकृत	सांकृत १ किल २ सांख्यायन ३	शुक्र, मिश्र, दुवे, अवस्थी,
१३	भारद्वाज	अंगिस १ वृहस्पति २ भारद्वाज ३	अग्निहोत्री, शुक्र, पांडे, दीक्षित, दुवे
१४	वाशिष्ट	एकावशिष्ठ १	चौवे, तिवाड़ी, दीक्षित, आचार्य्य, पाठक
१५	कविस्त	कविस्त १ देवराज २ विश्वामिश्र ३	पाठक, दुवे, चौवे, पांडे, अवस्थी, मिश्र
१६	पराशर	वशिष्ठ १ सांकृत २ पाराशर ३	तिवाड़ी, दुवे, मिश्र, अवस्थी, दीक्षित शुक्र
१७	अत्रि	अर्चिमान श्यावश्व आत्रि	मिश्र पाठक बिलावले के
१८	असित	वाशल कौशल्य असित	तिवारी चौवे कंसुरिया के
१९	अगस्त	पुलस्त वाशिष्ट ऐंद्र और्वं अगस्त	पांडे शुक्र नसाने के
२०	अयास्य	आगिरस गौतम अयास्य	पाठक अवस्थी जैपुरा के
२१	अत्यवान	यमदग्नि च्यवन अत्यवान	त्रिगुनायत बिदुर के
२२	अम्बसार	विश्वामिश्र भार्गव अम्बसार	चौवे दुवे अर्गल के
२३	आंगिरस	अत्रि अगस्त गौर्वं ऐंद्र आगिरस	मिश्र शुक्र अम्बर के
२४	आभद्रस्रुक	लोमस सावर्ण्य प्रभद्र स्रुक	मिरहा के दुवे हैं
२५	इंद्रोदर	कौडिन्य भार्गव इंद्रोदर	अग्निहोत्री किंकर के

संख्या	गोत्र	प्रवर	आस्पद
२६	इंदुप्रभव	अत्यवान वैतहव्य इंदुप्रमद	चौवे वड़ पेटा के
२७	और्व	मौनस बृहस्पत्य और्व	दुवे औनिक के
२८	कपिल	देवराज धुव नैन कपिल	मिश्रा गुसांई के
२९	कृष्णात्रि	अर्चिनानश्यावश्व कृष्णात्रि	तिवारी मेरहा के पांडे सियारू के
३०	कौलव	मधु छंदस विश्वामित्र कौलव	पांडे मुछंदर के तिवारी तिवारा के
३१	कौशल्य	मधु छंदस अघमर्ष कौशल्य	पांड़े इटपथा के
३२	गांगेय	संख्यालित गर्ग गांगेय	शुक्ल कुम्हरा के
३३	गौरव	आभद्रसुक कौलक गौरव	पाठक दुवे सितारे के
३४	च्यवन	अत्रिवत्स कपिल अगस्त च्यवन	त्रिगुनायत चम्मी के
३५	चंद्रायण	वत्स वाम देव चंद्रायण	मिश्र दुवे कैरव के
३६	जातूकर्ण	अत्रिवशिष्ट आतूकर्ण	चौवे जनक के शुक्ल कमोई के
३७	देवल	वाशल शौनकेत देवल	तिवारी घोसी के
३८	देवराज	विष्णुवर्धनरैस्त देवराज	इनके घर नहीं मालूम

३६	दालभ्य	आंगिरस वृहस्पत्य दालभ्य	इनके भी नहीं मालूम
४०	ध्रुव नैन	कौलक वामदेव ध्रुव नैन	अवस्थी अंतरसरके
४१	नितुंद	कौल्क शक्ति दालभ्य प्रौहत नितुंद	दुवे चौवे औरंगावादी
४२	प्रलस्त	मौनस मरीच पुलस्ति	चौवे पंच वटिया
४३	प्रौहित	लोमसयग्य वाल्क प्रौहित	चौवे त्रिकूटा के
४४	वाशल	अर्चिनान अत्रि वाशल	दुवे शुक्ल कपिलहा के
४५	वाल्मीक	यस्क यग्य वाल्क वाल्मीक	दुवे मिश्र ब्रह्मपुरा के
४६	वामदेव	गौतम मध्यायन वामदेव	पांड़े चित्रवाल के
४७	वाभ्रव्य	विश्वामित्र अत्यवान वाभ्रव्य	इनके घर नहीं मालूम
४८	विश्वामित्र	आंगिरस शौनकेत विश्वामित्र	त्रिगुनायत रूपान के चौवे मसी के
४६	विष्णुवर्धन	कुत्स त्रादस्य प्रौहित आंगिरस विष्णुवर्धन	शुक्ल गुदरिया के
५०	वृहस्पत्य	पुलस्त, अगस्त, वृहस्पत्य	इनके घर नहीं मालूम
५१	वैतहव्य	भार्गव-पार्थस्य वैतहव्य,	तथा
५२	वैह्वल	असित-वासल-वैह्वल	पाठक त्रिखंड के
५३	भद्रशील	वाशल भारद्वाज-भद्रशील	दुवे नंसुरा के

संख्या,	गोत्र,	प्रवर,	आस्पद
५४	भागीर	भुवनैन-इंद्रोदर भागीर	तिवारी कांची के
५५	भार्गव	च्यवन-अत्यवान, और्वें यमदग्नि भार्गव	पाठक छीतूपुर शुक्ल अभई पांड़े नरैना दुवे [भार्गवी के
५६	मरीच	कात्यायन-वशिष्ट-मरीच	इनका घर नहीं मालूम
५७	मिहरस	काश्यप, कौशिक, मिहरस	तथा
५८	मित्रयुव	भार्गव, देवल, मित्रयुव	तथा
५९	मुद्गल	गौतम अविवृहस्पत्यु भारद्वाज मुद्गल	दुवे चंदेली के
६०	मैत्रेतृण	मित्रावरुण पराशर मैत्रेतृण	मिश्र वल्लारी के
६१	मौनस	भार्गव-वैतहव्य मौनस	पांडे शुक्ल पनिघटा दुवे मनिकर के
६२	मौकल्य	आंगिरस वृहस्पत्य मौकल्य	चौवे नृसिंह के
६३	यस्क	भार्गव शारद्वत यस्क	इनके घर न मालूम
६४	यमदाग्नि	भार्गव च्यवन अत्यवान और्वें यमदग्नि	चौवे डौंडरा के
६५	यज्ञवाल्क	लोमस अगस्त यग्यवाल्क	शुक्ल प्रयाग के
६६	लोमस	मरीच पुलस्ति लोमस	पाठक तरी के

६७	लौहित	अम्बसार कौडिन्य लौहित	इनके वर नहीं मिले
६८	शारद्वत	आंगिरस गौतम शारद्वत	मिश्र अर्बुद के
६९	शक्तिसार	अघमर्पण नितुंडु शक्तिसार	अग्निहोत्री सीतला के
७०	शौनकेत	सावर्ण्य भार्गीर शौनकेत	दुबे मिश्र शौनकी
७१	सावर्ण्य	पुलस्ति प्रोहित शावर्ण्य	इटाया वाले तिवारी पाठक शुक्ल हारौली के
७२	सिंहल	मधु छंदस लौहित सिंहल	मिश्र कठियावादी

सम्पूर्ण ही ब्राह्मण वर्ण का विवरण हमने अपने ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ में लिखा है तहां ३२४ प्रकार की ब्राह्मण जातियों का विवरण हमने विस्तृत रूप से लिखा है परन्तु कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के से आस्पद व कुल उपाधियें हमें एक कूर्माचलीय उप्रेति ब्राह्मणों के अतिरिक्त किसी ब्राह्मण समुदाय में नहीं मिलीं अतएव हमें भी विश्वास होता है कि आजकल की स्थिति इन कान्यकुब्जों की कैसी भी हो पर यथार्थ में प्राचीन ब्राह्मण कहाने के अधिकारी ये ही हैं।

उपाधियें

१ पांडे	६ त्रिपाठी	११ मिश्र
२ पाठक	७ अवस्थी	१२ उपाध्याय
३ द्विवेदी	८ दीक्षित	१३ भट्टाचार्य्य
४ त्रिवेदी	९ शुक्ल	१४ वाजपेयी
५ चतुर्वेदी	१० अग्निहोत्री	

ये पदवियें कान्यकुब्ज ब्राह्मणों को इन के गुणकर्मों के कारण मिली थीं जैसे बालकों को आरम्भिक शिक्षा देने के कारण पांडे कहाये, संहिता के पढ़ाने के कारण पाठक कहलाये, जिन कुलों में दो वेद अवश्य पढ़लेने का नियम था वे द्विवेदी, जो तीन वेद अवश्य पढ़ते थे वे त्रिवेदी और जिन कुलों में चारों वेदों का अध्ययन होता था वे चतुर्वेदी कहाये जो तीन वेद के पढ़े हुये थे वे त्रिपाठी पुकारे जाते थे, जो धार्मिक विषयों में व्यवस्था देने वाले थे वे व्यवस्थी व्यवस्थी कहाते कहाते अवस्थी अवस्थी कहाने लगे। जो लोग गुरुदीक्षा दिया करते थे वे दीक्षित कहाये, श्रौत स्मार्त कर्मकांड करने कराने से मिश्र कहाये, जिन कुलों में नित्य अग्निहोत्र हुआ करते थे वे अग्निहोत्री हुये, यजुर्वेद संहिता दो हैं शुक्ल और कृष्ण अतः जो ब्राह्मण शुक्ल यजुर्वेद को पढ़ते थे वे शुक्ल कहाये, मिश्राई करने से याने यजमानोंके यहां पाठ पूजन करते कराते थे वे मिश्र कहाये। व्याकरण शास्त्र के पढ़ाने वाले उपाध्याय कहाये, जो वेदज्ञ ब्राह्मण मृतक संस्कार व मृतक क्रिया कराने वालों में मुख्य होते थे वे भट्टाचार्य्य कहाये, जिन्होंने द्रव्य खर्च करके यज्ञ करवाया और विद्वानों का बड़ा सन्मान किया वे वाजपेई कहाये।

इन ब्राह्मणों की प्रसिद्धि इन के ग्रामों के नामों के साथ साथ होती है अर्थात् जिस जिस ग्राम से इन का वंशविस्तार हुआ है उस ही ग्राम के नाम के साथ साथ उन की भी प्रसिद्धि है जैसे शाहबाद से निकास होने से शाहबाद के मिश्र, रामपुर से निकास होने के कारण रामपुर के मिश्र, भोजपुर से भोजपुर के मिश्र आदि आदि।

जिस प्रकार कान्यकुब्जों का एक भेद पटकुल है तैसे ही दूसरा भेद धाकर है ये लोग भी यथार्थ में शुद्ध व पटकुली कान्यकुब्ज ही हैं पर भारतवर्ष में 'हम उच्च व सम्पूर्ण संसार नीच' के भाव उत्पन्न हो गये हैं यह ही कारण है कि पटकुली कान्यकुब्ज लोग इन्हें अपने से छोटा समझने लगे, भेद दोनों में केवल इतनासा था कि पटकुली पूर्व काल में धनाढ्य थे तो धाकर कहा जाने वाला समुदाय दीन व साधारण स्थिति के थे इस ही से पटकुली समुदाय इन्हें अपने से छोटा समझने लगे।

कान्यकुब्जों के मुख्य २ गोत्रों में से ही दश गोत्र इन धाकर कान्यकुब्जों के भी हैं यथाः—

पाराशराः काश्यप भारद्वाजाः
　　धनञ्जया गौतमं वत्स गर्गाः।
वशिष्ठ कात्रिस्तसु कौशिकाश्च
　　उदाहृता धाकरका दशैते॥

JA. BHA. P. 125

भा०—१ पाराशर २ काश्यप ३ भारद्वाज ४ धनञ्जय ५ गौतम ६ वत्स ७ गर्ग ८ वशिष्ठ ६ कात्रिस्त और १०वां कौशिक ये गोत्र धाकर कान्यकुब्जों के हैं। अतः सिद्ध होता है कि धाकर भी मुख्य उच्च कान्यकुब्जों के गोत्रज ही हैं।

हमने बड़ी छानबीन के साथ देखा कि यह उंचता नीचता विषयक उपरोक्त श्लोक आधुनिक कल्पित है। कान्यकुब्ज जाति का विवरण लिखने वाले सब ही लेखकोंने एक दूसरे की पुस्तक से इस कल्पित श्लोक को उद्धृत कर दिया है पर किसी ने भी विचार

बुद्धि को काम में लेकर यह नहीं सोचा कि उपरोक्त कथन व श्लोक कोई वेदवाक्य नहीं है जो मानना ही पड़े वरन किसी ने भी यह प्रमाण नहीं दिया कि पटकुलिये तो क्यों व किस शास्त्रीय प्रमाण के किस आधार से उत्तम हैं तो अन्य दश गोत्र वाले किस शास्त्रीय प्रमाण से मध्यम हैं? 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' अर्थात् सब ही ने बिना सोचे विचारे मक्खी की टांग की जगह मक्खी की टांग करदी। क्या पटकुलियों के पास कोई ईश्वर के हाथ का ताम्रपत्र है जो वे ही उच्च और कुलीन तथा अन्य सब नीच, मध्य और अकुलीन? कान्यकुब्जों में बड़प्पन और छुटप्पन के भावों की विशेष प्रवृत्ति हो जाने से एक समुदाय ने दूसरे समुदाय को बुरा कहने के लिये कोई कसर न रक्खी और एक दूसरे के विरुद्ध अनेकों घड़न्त घड़ी गयीं। यह तो अवश्य मानना पड़ेगा कि पटकुलवालों के पूर्वज विद्वान् व सद्गुणी व धनाढ्य थे अतएव वे शक्ति सम्पन्न माने गये और शेष दश कुलवाले जिन्हें मध्यम कहते हैं वे अपनी किसी न किसी दशा में कुछ न्यून अवश्य होंगे परन्तु अधुनिक ग्रन्थकारों ने कान्यकुब्जों के निम्नलिखित भेद लिखे हैं:—

१ षटकुली	५ बाला के शुक्ल	९ महातुरमध्यम	१३ गोहियानिकृष्ठ
२ धाकरा	६ महातुर	१० महातुर निकृष्ट	१४ ढाकरा उत्तम
३ पंचाद्री	७ गोहिया	११ गोहिया उत्तम	१५ ढाकरा मध्यम
४ भूलनीहाई	८ महातुर उत्तम	१२ गोहिया मध्यम	१६ भूलनी हाई की पंचादरी

परन्तु हमने काशी तक के विद्वानों से इस उच्चता, निकृष्टता व मध्यमता विषयक अन्वेषण किया तो शास्त्रधारानुसार कई महामहोपाध्ययों ने हमें यही कहा कि यह कलियुग का दम्भमात्र है तब उन्होंने हमें परामर्श दिया कि कुलीनता अकुलीता व उच्चता व लघुता, मध्यमता व निकृष्टता विषयक परीक्षा के लिये यथार्थ में निम्नलिखित कसौटी जाननी चाहिये:—

जातिरेकाहि विप्राणां क्रियातत्र गरीयसी।
यत्र यत्र क्रिया श्रेष्ठा तत्रतत्र कुलीनता ॥८९॥

ब्रा० मा० ११५, उदीच्य प्रकाश ग्रन्थे।

भा०—निश्चय पूर्वक ब्राह्मणों की एक ही जाति है उस में क्रिया कर्म बड़ा है अतएव जहां जहां श्रेष्ठ क्रिया कर्मों की प्रवृत्ति है वह वह समुदाय ही कुलीन है इसलिये यह कोई बात नहीं कि विना गुण व श्रेष्ठ क्रिया कर्म विना भी कोई सदा के लिये ही उच्च व कुलीन माना जावे ।

मुनय ऊचुः—मुनियों ने पूछाः—

दृश्यन्ते तु द्विजाः स्वामिन् सदसत्कुलजाश्चये ।
एकस्मिन्नेव गोत्रेच तत्र न संशयो महान् ॥२०॥

भा०—भगवन् ! एक ही जाति व कुल में एक ही कुलवान व एक ही अकुलीन कैसे होते हैं ? सो कहिये तब सुमेधा बोलेः—

सुमेधा उवाचः—

अकुलीना कुलीनाश्च पूर्वमेहि सन्तिते ।
सुव्रत्ताध्ययना सक्ताः तस्माद्भूपेन चर्चिताः ॥२१॥

भा०—सुमेधा ऋषि कहते हैं कि अपनी अपनी जाति में सब ही ब्राह्मण समान हैं परन्तु जिस कुल में सदा से अब तक विद्या और यज्ञ याग सत्कर्म नीति चली आ रही है उन्हीं को कुल-वाल जानना बाकी सब बराबर हैं पुनः—

साग्निहोत्राश्च सर्वज्ञा यज्ञकर्मरतास्तथा ।
ते भवन्ति सदा विप्राः कुलीना मुनयः शुभा ॥२४॥

अर्थः—जो नित्य अग्निहोत्र करने वाले चारों वेद व छहों शास्त्रों के ज्ञाता सर्वज्ञ विद्वान् व जिन्होंने बड़े बड़े यज्ञ किये हैं वे ही ब्राह्मण कुलीन कहाते हैं अन्यथा एक क्षेत्र का धान्य एकसा होता है तैसे ही कान्यकुब्ज कान्यकुब्ज सब बराबर हैं क्योंकि तुलसी की माला में सब ही मणियें बराबर जानना ॥ २४ ॥

ग्रन्थान्तरेः—

न जार जातस्य ललाट शृंगं कुलप्रसूते न च भालचन्द्रः ।
यदायदा मुञ्चति वाक्य बाणं तदातदा जाति कुलप्रमाणम् ॥

भा०—जन्म के साथ साथ कुलीनता के किसी के ललाट पर सींग नहीं होते हैं और न किसी के मस्तक में कुलीनता का तिलक होता है वरन जहां जहां जब जब मुख से शब्द निकले कि उस के कुल व जाति की पहिचान हो जाती है। अन्त में एक श्लोक एक कान्यकुब्ज वंशावलि में ही लिखा हमें मिला उसे जैसे का तैसा हम उद्धृत करते हैं:—

कुलानाम कुरोनास्ति ह्यकुलानाम कुरस्तथा ।
विद्यया तपसावापि धनैर्वा लभ्यते कुलं ॥

भावार्थः—कुलीनता व अकुलीनता, उच्चता व नीचता, बड़प्पन व छुटप्पन, छुटाई व बड़ाई, उत्तमता व मध्यमता व निकृष्टता आदि आदि गुण किसी के साथ सदा नहीं रहते हैं वरन विद्या, तप और धन ये तीनों पदार्थ जिस के पास जब तक हों तब तक ही वह कुलीन व उत्तम कहा व माना जा सकता है अन्यथा नहीं। लोक में भी हम ऐसा देखते हैं कि जिस के पास ये तीनों हैं उसके चरणारविन्द में बड़े बड़े कुलीन अभिमानी लोग जाकर मस्तक नवा देते हैं अतएव शास्त्रधारानुसार हमें ऐसा निश्चय होता है कि आजकल की धारानुसार ७२ कुल के सब ही कान्यकुब्ज बराबर हैं और छुटाई बड़ाई के भाव मानना व समझना अज्ञान मूलक है। हम ने सुना है कि पटकुलीन मनुष्य भी विद्या हीन, कृषि कर्म्मी, रसोइये, चपड़ासी, अर्दली, चौकीदार, व्यापारी, सिपाही, देवलक आदि आदि अनेकों हैं तब शास्त्र विरुद्ध वे उत्तम कुलीन श्रेणी में माने जायं और दूसरे कान्यकुब्ज जो शम, दम तितिक्षादि गुण युक्त विद्वान् तपस्वी भी हों पर पटकुली न हों तो भी मध्यम व निकृष्ट समझे जायं तो यह अन्याय व पक्षपात है। क्योंकि यथार्थ में ब्राह्मणों के लक्षणों पर दृष्टि डालें तो शास्त्र मत प्रचलित प्रणाली से विरुद्ध ही जान पड़ता है:—

शमो दमस्तपः शौचं संतोषः शांतिरार्जवम् ।
ज्ञानदया च्युतात्मत्वं सत्पश्च ब्रह्मलक्षणम् ॥

इस ही का पाठभेद ऐसा भी मिलता है कि:—

शमो दमस्तपः शौचं क्षांतिरार्जव मेवच।
ज्ञान विज्ञान मास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥

इन्हीं की पुष्टि श्रीमद्भागवत से भी होती है यथाः—

शमोदमस्तपः शौचं सन्तोषः क्षान्तिरार्जवम्।
मद्भक्तिश्चदया सत्यं ब्रह्मप्रकृतयस्त्विमा ॥१६॥
श्रीमद्भा० स्क० ११ अ० १७ श्लो० १६

भा०—ब्राह्मणों का ऊंचत्व शम, दम, तप, शौच, सन्तोष, क्षान्ति, भगवद्भक्ति, दया, सत्य आदि आदि गुणों के विद्यमान होने से समझा जा सका है।

और भी देखियेः—

धर्मश्च सत्यं च दमस्तपश्च
अमात्सर्य्यं ह्रिस्तितिक्षानसूया।
यज्ञश्च दानं च धृतिः श्रुतंच
महा गुणा द्वादश ब्राह्मणस्य ॥
महाभारत मोक्षधर्मं०

भा०—१ नित्य नैमित्तिक स्वधर्मों के आचरण, २ मन, वचन, कर्म से यथार्थ बोलना, ३ इन्द्रिय निग्रह, ४ ज्ञान प्राप्तर्थ तपश्चर्या, ५ ईर्ष्या द्वेष रहित रहना, ६ विषयों में न फँसना, ७ दुःख सुख के समय सहनशीलता अर्थात् धैर्य्य रखना, ८ वेद वेदाङ्ग व शास्त्राध्ययन करना, ९ यज्ञ करना, १० यथाशक्ति दान करना, ११ शास्त्रों का मनन करते रहना और १२वां अनसूया ये ब्राह्मणों के १२ महा गुण हैं इन्हीं के होने न होने से कुलीनता व अकुलीनता, उच्चता व नीचता, उत्तमता व मध्यमता प्राप्त होती है न कि सैकड़ों हजारों वर्ष पूर्व किसी का पिता आदर्श पुरुष था तो उस की महा मूर्ख दुर्गुण युक्त सन्तानें भी आदर्श मानी जायं और इस के विपरीत गुण युक्त मनुष्य निकृष्ट व मध्यम माना जाय यह अनुचित व शास्त्र विरुद्ध वार्ता है क्योंकि शास्त्रों में विशेष रूप से कुलीनता व उच्चता गुणों पर निर्भर रक्खी गई है।

आधुनिक कितनी ही कान्यकुब्ज वंशावलियें हमारे देखने में आईं परन्तु सब की सब में १६ गोत्रों के वंशजों का ही आल्हा ऊदल युक्त विवरण मिला किन्तु अन्य ५६ गोत्रों के कान्यकुब्ज ब्राह्मणों का कुछ भी विवरण नहीं मिला उचित तो यह था कि जिस प्रकार १६ गोत्रजों का विवरण दिया है तैसे ही ५६ गोत्रजों के कान्यकुब्जों का भी विवरण होना चाहिये था पर ऐसा नहीं किया गया यह अनुचित हुआ ।

हमें विशेष अन्वेषण करने से कान्यकुब्जों के १६ गोत्रजों के अतिरिक्त अन्य अन्य भेद उपभेदों का पता लगा है उन का विवरण निर्णय भूत क्रम से न लिखकर केवल संग्रह रूप से लिखा जाता है जिससे भविष्यत में पूर्ण विचार पूर्वक निर्णय किया जा सकेगा ।

षटकुल से पंचादरी छोटे होते हैं और पंचादरी से ढाकरा व धाकरा नीचे होते हैं The Panchadari are said to have sprung originally from the Khatkul पंचादरी कान्यकुब्ज षटकुल वंशज ही हैं पर प्राचीन काल में बहुत दूर रहने से इनकी यह महत्वता जाति रही लिखा है:—

Below the Khatkul come the Panchadari and below them the Dhakra. The former are said to have sprung originally from the Khatkul. But they emigrated to a distance at an early time, and have hence lost the Status which their ancestors once enjoyed.

C. and T. Page 226.

भा:—खटकुल से उतर कर पंचादरी, और पंचादरी से नीचे (ढाकरा) धाकरा होते हैं। पंचादरी खटकुल में से ही निकले हुए हैं। परन्तु यह किसी प्राचीन काल में कहीं दूर चले गये थे, अतः यह लोग खटकुल श्रेणी से अलग मान लिये गये।

पंचादरी कान्यकुब्जों का खटकुल से अलग किये जाने का जो हेतु लिखा है उचित नहीं जान पड़ता क्योंकि विपत्ति वश कोई कहीं चला जाय अथवा निकाल दिया जाय तो उसका जाति पद

व मान मर्य्यादा कम नहीं हो सकती है। यदि खटकुल से पंचाद्-रियों के अलग किये जाने का यथार्थ में यही कारण है तो यह न्याय संगत वार्ता नहीं है क्योंकि ऐसी २ त्रुटियें तो हज़ारों खटकुलों में भी मिल सकती हैं।

पंचादरियों के भी दो भेद हैं, शुद्ध पंचादरी और अशुद्ध पचादरी। अशुद्ध पंचादरी वह माने जाते हैं जिन का कि रहन सहन धाकरा कान्यकुब्जों के साथ था। यह हेतु भी ऐसा प्रबल नहीं है कि जिस के कारण से पंचादरियों का एक समुदाय अशुद्ध ठहराया जाय क्योंकि धाकरा कान्यकुब्ज हमारी सम्मति में बुरे नहीं हैं और न उन में ऐसी कोई विशेष अपवित्रता है कि जिस के कारण से उनका सहवास ही किसी को अपवित्र कर देता हो।

धाकराओं का पद नीच श्रेणी का मानने के लिये यह हेतु दिया जाता है कि:—

The Dhakra form the lowest gade of kanaujiya and have fallen in Status, bcause they plough whith their own hands and smoke.

भाः—ढाकरों का कान्यकुब्जों में नीच श्रेणी का पद होने का कारण यह है कि वे अपने आप हल चलाते हैं और तंबाकू पीते हैं।

यह हेतु भी आज कल की व्यवस्था के अनुसार बहुत ही पोच है क्योंकि आज कल विपत्तिवश भारतवर्ष के सभी ब्राह्मण सब ही प्रान्तों व प्रदेशों में हल चलाकर व खेती कर के निर्वाह करते हैं पर वे नीच नहीं मानेजाते तब ढाकरा ही नीच माने जायें सो क्यों? पंचादरीयों के ढाकरा होजाने का एक यह भी हेतु दिया जाता है कि:—

The Punchadri who intermarry with the Dhakra do so only because they receive large sums for brides and are degraded by this connection and fall into the Dhakra grade.

भावार्थः—पंचादरी लोग ढाकरों के यहां अपनी लड़की का विवाह केवल इस निमित्त से करते हैं कि उनको लड़की के लिये ढाकरों के यहां से बहुत सा रुपया मिलता है। जिससे वे भी ढाकरे हो जाते हैं।

यह हम मानते हैं कि यदि ऐसी प्रणाली है तो यह बुरी है। परन्तु लोभवश ऐसी ऐसी अनेकों कुप्रथायें सब ही तरह के ब्राह्मणों में हैं और खटकुली लोग अपने लड़कों का मनमाना रुपया लड़की वाले से लेते हैं ऐसी कुप्रथा के कारण अनेकों गरीब कान्यकुब्जों की लड़कियें बीस, बीस, पच्चीस, पच्चीस व तीस, तीस वर्ष तक कुंवारी ही रहती हैं और कहीं कहीं तो आजन्म कुंवारी मर जाती होंगी। न्याय तो यह था कि जिस प्रकार लड़की का रुपया लेने वाले जाति के उच्च पद से गिरा दिये जाते हैं तैसे ही लड़कों का रुपया लेने वालों को भी उच्चता के जाति पद से गिरा दिये जाने चाहियें परन्तु सबल को कोई कुछ नहीं कहता जो कोई कहता है सो निर्बल ही को कहता है। हमारे प्रश्न करने पर इस तरह के एक लड़की वाले ने हमसे कहा कि "हम क्या करें क्योंकि हम विवश लड़की का रुपैया लेते हैं और लड़के का रुपैया देते हैं ऐसी ही कुप्रथा हमारी जाति भर में पड़ी हुई है"। जिन लोगों के पास रुपैया देने लेने को नहीं होता है वे लोग परस्पर अदला बदला करते हैं और जिनके पास रुपैया देने लेने को भी नहीं है और जिनके पास अदला बदला करने को लड़कियें भी नहीं है उनके लड़के लड़की तो प्रायः कुंवारे ही रह जाते हैं। ऐसी ऐसी कुप्रथाओं का संशोधन होना चाहिये ये ही हमारे लिखने का भाव है।

पंचादरियों का तीसरा भेद "भूलनीहाई की पंचादरी" है यह भी यथार्थ में खटकुल में से ही निकले हैं यह लोग अपने ही समुदाय में विवाह करते हैं अगर कोई उत्तम श्रेणी के कान्यकुब्ज रुपैयों के लोभ से अपनी लड़की इनको दे देते हैं तो वे भी नीच श्रेणी में आ जाते हैं।

भूलनीहार्द कनोजिये पं० शीतलप्रसाद त्रिवेदी के वंश में से हैं जो इतना शक्तिशाली था कि बेड़ा लेकर लखनऊ के नवाब पर चढ़ाई की थी जिसको नवाब ने चकलादार नियत कर दिया था। लिखा है :—

He was the son of Thakur Pershad who was infatuated with the daughter of a butcher of Lucknow. She is said to have been one of the great beauties of the time. He purchased her for a large sum and took her to wife. By her he had three daughters. One day Sital Pershad tauntingly said to his half sisters, "Let me see what Mughal or Pathan I am to have as my brother-in-law.

C. & T. by C. S. W. C.

भावार्थः—पं० शीतलप्रसाद ठाकुरप्रसाद के लड़के थे ठाकुर प्रसाद लखनऊ के एक कसाई की लड़की पर आसक्त हो गया था। उस कसाई की लड़की की उस समय परियों में गणना थी। ठाकुरप्रसाद ने उसको बहुतसा रुपया देकर मोल लेली और अपनी स्त्री बना ली जिससे शीतलप्रसाद के तीन बहिनें और हुईं, एक दिन शीतलप्रसाद ने बातों ही बातों में अपनी उन बनावटी बहनों को ताना मारते हुए कहा कि "देखें कौन पठान व मुग़ल मेरे बहनोई होते हैं"। इस ही से आगे कलेक्टर साहब ने लिखा है कि जब उन लड़कियों की मां ने यह सुना तो उसने अन्न खाना छोड़ कर वह रूस गई। जब ठाकुरप्रसाद को यह सब हाल मालूम हुआ तो उसने अपनी उस स्त्री को समझा कर कहा "कि मैं शीतलप्रसाद की सगी बहनों का ब्याह जिन उच्च कुलों में करूंगा उनसे भी ऊंचे दरजे के कुलों में मैं तुम्हारी तीनों लड़कियों का विवाह करूंगा"। तदनुसार ठाकुरप्रसाद ने फूलझड़ी नाई को घर वर ढूंढने के लिये भेजा। फूलझड़ी गया और उन तीनों लड़कियों के सम्बन्ध मुरादाबाद, कन्नौज और आसनी के उच्चतम कान्यकुब्ज कुलों में कर आया। एक लड़की का संबन्ध मुरादाबाद के मिश्रों के,

दूसरी लड़की का सम्बन्ध आसनी में हीरा के वाजपेयियों के यहां और तीसरी लड़की का सम्बन्ध कन्नौज में दीप के मिश्रों के यहां कर आया। जब कि लड़कियों का विवाह हो गया तब उन लड़कों के नातेदारों को यह सब ज्ञात होने पर उन्होंने निश्चय किया कि कसाई की लड़की की लड़की दुलहिनें हैं अतः इनके यहां भोजन नहीं करना चाहिये तदनुसार जब उन्होंने भोजन करने से इनकार कर दिया तो शीतलप्रसाद ने उनको डराया कि तुम्हें मैं तोप से उड़वा दूंगा तब विवश उन्होंने उनके हाथ का भोजन स्वीकार कर लिया। तब से जो लोग इनमें सम्मिलित थे अपने उच्च पद से गिर गये। हमने यह केवल संग्रह रूप से लिखा है सच झूंठ की भगवान जानें।

५ बाला के शुक्ल—यह कन्नोजियों का पांचवां भेद है यह उच्च कुलीन सर्वमान्य षट कुल का एक भेद है यह समुदाय कानपुर लखनऊ आदि जिलों में विशेष है। जाति और कौम नामक अंग्रेजी भाषा के ग्रन्थ के पृष्ठ २२७ में इनके विषय में ऐसा लिखा मिलता है किः—

Among the Khatkul there is a section known as Balake Sukla. They drink spirits and worship the goddess Chhinnamasta or Chhinnamastaka the decapitated and headless form of Durga.

(C. & T. Page 127.)

भा०—षट कुलों का एक भेद बाला के शुक्ल हैं जो शराब पीते हैं और छिन्नमस्त व छिन्नमस्तक नामक सिरकटी दुर्गादेवी का पूजन करते हैं। चाहे यह सत्य हो या असत्य हो परन्तु कान्यकुब्जों में बाला के शुक्ल सर्वत्र प्रतिष्ठित व आदरणीय समुदाय माना जाता है। कदाचित मांस का खाना व शराब का पीना कान्यकुब्जों में बहुत बुरा नहीं माना जाता होगा चाहे कुछ भी हो या न हो परन्तु बाला के शुक्ल सिर झुका कर किसी को सलाम नहीं करते हैं अतएव एक समय का वृत्तान्त है कि बाला के शुक्ल समुदाय का एक मनुष्य गंगा जी नहाने गया तब अन्य कान्यकुब्ज लोगों ने उसके इतने महत्व से चिढ़कर उस की मान प्रतिष्ठा भंग करने के अभिप्राय से उस पर

थूकने का इरादा किया और ज्यों ही वह अपनी पालकी में से गंगा स्नानार्थ बाहर निकला त्यों ही सबों ने उस पर थूक दिया परन्तु वह एक महात्मा था बोला "आज मेरे अहोभाग्य हैं कि इतने बड़े बड़े ब्राह्मणों ने मुझ पर थूक कर मुझे पवित्र कर दिया है अतएव आज जाति गंगा के स्नान से मैं पवित्र हो गया हूं" ऐसा उस के कहने से सब लोग बड़े लज्जित हुये और उससे सबों ने क्षमा मांगी तब उस महान पुरुष ने कहाः—

"The reason I bow to none is that my power is without limit, of which I give you proof." So he bowed to a stone close by and it was broken into fragments. They were astonished and bowing at his feet went their way.*

भा०—कि प्यारे भ्रातृगणो! जो मैं किसी के चरणार्विन्दों में नहीं झुकता हूं तो इस का कारण यह है कि मेरा तप बल अमित बढ़ा हुआ है जिस की प्रत्यक्षता आप को मैं अभी दिखलाता हूं, अतएव उस (बाला के शुक्ल समुदाई) महात्मा ने अपना मस्तक वहां ही पड़े हुये एक पत्थर के सामने झुकाया और वह पत्थर टुकड़े २ हो गया, इस से वे सम्पूर्ण कान्यकुब्ज लोग अचम्भित हो कर उस (बाला के शुक्ल) महात्मा के चरणार्विन्द में झुककर अपने अपने घर चले गये तब से इस समुदाय का महत्व बढ़ गया है कि ये किसी के सामने झुकते तक नहीं हैं।

६ महातु—यह कान्यकुब्जों का छटवां भेद है जिन का पद भी Highest grade उच्च तम माना जाता है इन के तीन भेद हैं इन में उत्तम, मध्यम, और निकृष्ट।

७ उत्तम महातुर—लखनऊ के वाजपेयी, परसू के मिश्र, चटू के तिवाड़ी, खोरी के पनड़े (पांडे) फतिहाबाद के शुक्ल,

---

* Based chiefly whole account of Kanyakubja on the inquiries of different eminent authors as well as on caste and Tribes too.

गीगासों के पांडे, वाला के शुक्ल, मधु के अवस्थी, श्रोकत के दीक्षित और वीर के मिश्र ये सब उत्तम महातुर कहाते हैं।

८ महातुर मध्यम—हौड़ा, वीसा और लखनऊ के ऊंचे वाजपेयी, मझगांव, अंकनी, कन्नौज के मिश्र वाला के शुक्ल, खोरी के पांडे ओकन्त, कंगू और वीरेश्वर के दीक्षित, नाभेल के शुकल, मधु व प्रभाकर के अवस्थी, सोथियाया के मिश्र, छंगे के शुक्ल, गीगासों के पांडे और छत्तू के तिवाड़ी ये सब मध्यम महातुर हैं।

९ महातुर निकृष्ट—ऊंचे, लखनऊ, वटेश्वर और देवशर्मा के वाजपेयी अकीनी, सोथियाया, हेमकर और कन्नोज के मिश्र, हरी के त्रिवेदी, पेकू केशु और नभेल के शुक्ल, घरवस के दुवे और खोरी के पांडे ये सब निकृष्ट महातुर कहाते हैं।

१० गोहिया—यह कन्नोजिया जाति का भेद है इन का जातिपद उपरोक्त तीनों प्रकार के महातुरों से नीचा है यह भी तीन प्रकार के हैं उत्तम, मध्यम और निकृष्ट।

११ गोहिया उत्तम—धन्नातारा, सिसरमा और पीठा के वाजपेयी, नयाया, वाघसा, संदत और नभेल के शुक्ल, गोपीनाथ धोवीहा, और कन्नौज के मिश्र, लखनऊ, खोरी और डोडारे के पांडे, पीठा और सिसरमा के वाजपेयी और वावू के दीक्षित ये सब उत्तम गोहिया कहाते हैं।

१२ मध्यम गोहिया—वीजगांव, वरदारका, कन्नोज, गोपीनाथ और वनवारी के मिश्र, नभेल, भंदत के शुक्ल, गोपाल के अवस्थी, कपितानड़े के दुवे, गोपाल के तिवाड़ी, काशीराम, मनीराम तथा मथुरा व गोपी के वाजपेयी ये सब मध्यम गुहिया कहाते हैं।

१३ गोहिया निकृष्ट—पासीखेड़ा, गोपी और लालकर के मिश्र, दुर्गादास, नभेल और हरी के शुक्ल, तिरमल और गोपी के वाजपेयी, प्रयाग के त्रिवेदी, घाघ के तिवाड़ी और अंतर के दीक्षित ये सब निकृष्ट गोहिया कहाते हैं।

१४ ढाकरा उत्तम—अग्निहोत्री, पाठक, चौबे, उपाध्याय और अधूरज ये उत्तम ढाकरा कहाते हैं।

१५ **मध्यम ढाकरा**—सावरनी, ठकुरीहा, मैरहा, और रांवत ये मध्यम ढाकरा कहाते हैं।

धन्दा व जीविका—अन्य ब्राह्मणों की तरह कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की जीविका पंडिताई के अतिरिक्त कृषी तथा सिपाहीगीरी की भी है यह लोग फ़ौजों में भी भरती होतेहैं कुछ काल पहिले सरकार के यहां पानरे, पानड़े अथवा Panre Regiment थी विद्या की स्थिति इस जाति में बहुत कम है।

लोकसंख्याः—अनुमान २४ वर्ष पहिले याने सन् १८८१ में युक्तप्रदेश में कुल कन्नौजिये १२०३३४८ मनुष्य थे कन्नौजियों की लोक संख्या को देखते हुये कानपुर उन्नाव और हरदोई ये तीन ज़िले कान्यकुब्जों के आदि स्थान व केन्द्र स्थान कहे जांय तो कोई हानि नहीं क्योंकि कानपुर में १६८३६० उन्नाव में १२०३०१ और हर्दोई में ११०३५८ कान्यकुब्ज हैं इन से उतर कर फ़रुख़ाबाद, फतेहपुर, बाराबंकी, खेड़ी, सीतापुर, बलिया के ज़िले हैं जिन में एक लाख से कम और ५०००० से अधिक कान्यकुब्जों की आबादी है।



खंडेलवाल ब्राह्मणः-

यह जाति विशेष रूप से राजपूताना में है। जयपुर राज्य में इनकी स्थिति अच्छी है, जयपुर राज्य के अन्तर्गत खंडेले के पास लोहार्गल (लोहागर जी) एक तीर्थ स्थान है तहां एक खंडू ऋषि हुये हैं जो पहिले ब्राह्मण राजा थे पश्चात् राजपाट त्याग कर तपस्यार्थ लोहागरजी चले गये इनके ही स्मृत्यर्थ उनके शहर का नाम खंडेला हुआ जो शेखावाटी के किनारे पर बसा हुआ है। इन्हीं तपस्वी ब्राह्मण खंडूजी की सन्तान खंडेलवाल कहाते हैं। पहिले इन ब्राह्मणों के पास राज्य था पश्चात् खंडेले का राज्य क्षत्रियों के आधीन चला गया।

यह ब्राह्मण समुदाय आदि गौड़ ब्राह्मणों का ही एक भेद है इनको विद्यास्थिति साधारण है विशेषरूप से ये लोग कृषि व अन्य धन्दों द्वारा जीविका करते हैं। फ़ैज़ाबाद के कलक्टर एक अंग्रेज अफसर ने अपनी रिपोर्ट के पृष्ठ ३२७ में इनके विषय ऐसा लिखा है:—"The claim to be a branch of the Adi Gour or

gh class Gour Brahmans. ये अपने को आदि गौड़ ब्राह्मण याने उच्च गौड़ समुदाय में ही मानते हैं।

यथार्थ में ये लोग आदि गौड़ ब्राह्मणों में से ही हैं।

शासन व खांप।

१ टांक	७ कछुवाल	१३ सोती	१९ रणधा
२ नेवाल	८ पीपलिया	१४ बीलवार	२० जुजरोदा
३ जोशी	९ चाटीया	१५ भरभूटा	२१ सोनतिया
४ दूथली	१० सूदरिया	१६ मंगलियार	२२ मडकरा
५ बूडाडरा	११ तोवला	१७ सीवोटी	२३ पूजावड़ी
६ दुगोलिया	१२ बूचीवाल	१८ भाटीवड़ी	२४ पोरवाल
२५ जटाणिया	३१ गोरसा	३७ अजमेरा	४३ मोमवाल
२६ बाटोलिया	३२ डीडवाणिया	३८ भरडिया	४४ नोना
२७ वसीवाल	३३ सामरा	३९ वूतवाल	४५ कूचरिया
२८ वमीया	३४ डावसीया	४० बोल	४६ भटोत
२९ जकनसिया	३५ मवदा	४१ सोडवाड	४७ सोरा
३० गोदेसा	३६ बुरबुरा	४२ याद	४८ चाटसा
४९ काछुवाल	५० गुणावटा	५१ बोल और	५२ सुंदरिया

इनका खान मान शुद्ध है वैश्णव धर्मी हैं और विशेष क्या कहें राजपूताना के अन्य उच्च ब्राह्मणों के समतुल्य हैं।

गोत्र।

१ अंगिरस	७ कौशिक	१३ कश्यप
२ जैमिनी	८ गौतम	१४ मुद्गल
३ पाराशर	९ वशिष्ठ	१५ अत्रि
४ कृष्णात्रेय	१० जमदग्नि	१६ कात्यायन
५ घृतकौशिक	११ शांडिल्य	१७ गर्ग
६ विश्वामित्र	१२ भरद्वाज	१८ अगस्त्य

नोटः—इन सब गोत्रों के त्रिप्रवर हैं।

गूजर गौड़ ब्राह्मण:–ब्राह्मण निर्णय पृष्ठ २०४ से आगे:–

यह जाति राजपूताना में विशेष रूप से व सामान्यतया युक्त प्रदेश में हैं इनके विषय में लोगों ने कई तरह के मिथ्या अपवाद व मनगढ़न्त कपोल कल्पित गाथायें रच रखी हैं। उन पर विचार करते हुये हम बहुत कुछ तर्क वितर्क करके उन अपवादों का खंडन ब्राह्मण निर्णय में कर आये हैं तथापि विशेष अन्वेषण करने से हमें निश्चय हुआ है कि यह जाति यथार्थ में शुद्ध ब्राह्मण जाति हैं विद्यास्थिति इस जाति की सामान्य व आजीविका वश कृषि की प्राधान्यता है। यह लोग यथार्थ में गौतम ऋषि की संतान हैं खान पान से पवित्र और पूजनीय हैं।

उपाधियें:—

श्रोत्रिय, चौबे; पचौली, उपाध्याय, आचारज, तिवारी, दुबे, जोषी, व्यास।



डाकोत

यह ब्राह्मण जाति है, इस के विषय में बहुत कुछ ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थमें लिख आये हैं तथापि इस जाति ने मण्डलस्थ धर्मव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर दे कर अपने को प्रमाणित किया है कि यह जाति ब्राह्मण वर्ण में है, भारतवर्ष में कुछ काल से परस्पर द्वेष व घृणा के भाव बढ़े हुये हैं तदनुसार प्रत्येक अपने को उच्च व अन्य को नीच बतलाते रहते हैं। हम काशी गये थे तहां के कई विद्वानों से हमने इस जाति के वर्ण निर्णय विषय में पूछ ताछ की इसके उत्तर में क्वीन्स कालेज बनारस के एक योग्य विद्वान्

ने कहा कि "यदि डाकोत (भडली) जाति ब्राह्मण वर्ण में न होती तो कठिन से कठिन दान व दक्षिणा इन्हें कैसे दिलाये जाते ? और शनिदेव के पुजारी सर्वत्र यह ही जाति होती है अतएव शनि जैसे देव की पूजा क्या कभी कोई शूद्र जाति के लोग कर सकते हैं कदापि नहीं ।"

इस ही विषय में हमने काशी के अन्य कई विद्वानों से भी जांच की तो सब ही ने इस जाति को ब्राह्मण बतलाया । उन्होंने कहा कि पूर्व काल में ये लोग विद्वान होते थे और तपस्या क्रिया करते थे अतएव कठिन से कठिन दान पुण्य लेने की शक्ति इन में थी तब ही ये लोग क्रूरग्रहों का दान ले लेते थे और उसे पचाने की शक्ति रखते थे ये लोग बड़े ज्योतिषी होते थे तथा नामाङ्कित गणितज्ञों में इन की गणना होती थी ये लोग बात की बात में वाणीमात्र से कई ग्रहों की चाल के हिसाब को बतला देते थे हजारों वर्ष पूर्व की जातक अथाओं से इस जाति की गणना ब्रह्मवर्ग में प्रमाणित होती है ।

वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तरों में कई लक्षण व रीत भांति भी इन में ब्राह्मणत्व की ही हैं पर पहिले की अपेक्षा अब इन की विद्यास्थिति बहुत ही गिरी हुई दशा में है इस से जिस प्रकार अन्य ब्राह्मणों में कोई कोई त्रुटियें व शास्त्र विरुद्ध रीति भांति हैं तैसे ही इन की भी दशा है हां इनमें अब केवल भिक्षावृत्ति विशेष रह गई अतएव उच्च ब्राह्मणों के पश्चात् व समीपी सम्बन्ध इन्हीं का है । जो यह काम करते हैं सो दूसरे दूसरे ब्राह्मण भी छिप छिपा कर व प्रत्यक्ष रूप से करते हैं इसलिये दोनों का भिक्षादान पुण्य लेने का एकसा धन्दा होने के कारण कोई कोई कुतर्की लोग ईर्ष्या के वशीभूत होकर कुछ की कुछ कहने लगते हैं जब हमने उन में से कइयों से पूछा कि "अमुक वार्ता के लिये आपके पास प्रमाण क्या हैं" तो वे लोग आंय शांय कहने लगते हैं अतएव यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हुआ कि यह जाति ब्राह्मण वर्ण में है ।

इस जाति को पं० परशुराम जी शास्त्री ने अपने ग्रन्थ में ब्राह्मण श्रेणी में लिखी है। इस जाति में विधवा विवाह नहीं होता है और अभक्ष्य वस्तुओं को व वर्जित पदार्थों को ये लोग नहीं ग्रहण करते हैं।

——::*::——

शासन।

गौड़	वोखीं	मेढ़
अग्रवाला	धकारी	पवोसिया
पिड़या	गोरिया	कापस्थ
लावल	मलिया	सैनी
छिलोदिया	जोल	

ये नाम पड़ने के कारण ये हैं कि जिन जिन उच्च जातियों के यहां की जिन जिन डाकोतों की यजमानी थी उन उन के नाम से इन के ये शासन बंध गये जैसे गौड़ राजपूत व गौड़ ब्राह्मणों के यहां मांगने से इन का एक भेद भी गौड़ कहाया, इस ही तरह अग्रवाल वैश्यों की यजमानी होने से 'अग्रवाल डाकोत' परिहार राजपूतों के कारण 'परिया व पड़िया' लव वंशज राजपूतों की यजमानी से 'लावल' आदि आदि जानना। उपरोक्त भेद उच्च जातियों के ही हैं। एक मुंशीजी ने जो शास्त्रों से अनभिज्ञ थे कुछ ऊट पटांग लिख मारा है वह प्रमाण शून्य होने से अमाननीय है।



नयपाली ब्राह्मण

ब्राह्मण निर्णय पृष्ठ ३२१ से आगेः—

गोत्रः—१ गौतम २ वशिष्ठ ३ धनञ्जय ४ अत्रि ५ आत्रेय ६ घृतकौशिक ७ कौन्डिन्य ८ मुद्गल ९ काश्यप १० उपमन्यु ११ भारद्वाज १२ कौशिक १३ गर्ग और १४ वात्स्य।

उपाधि—१ पन्त २ खड़याल ३ रिजाल ४ मिश्र ५ पोखाल ६ रेगमी ७ नयपाल ८ नेवापाल ९ अजयपाल १० तिमिल ११ घिमरे १२ रिजल १३ भरे १४ धकाल १५ अजलि १६ शिलवाल १७ गौतमी १८ धुस्मान १९ चालीसे २० तिवाड़ी २१ रिपाल २२ आचार्य्य २३ पंडयाल २४ धाकल २५ रूपाखेती २६ शिवघल २७ धकाल २८ भट्टरे २९ रेगामी ३० खदाली और ३१ रेगमी।

स्थान—१ पालु २ पालन चौक ३ निघालपाणी ४ कविलास ५ तुकुचा ६ घाल चौक ७ पशुतितर ८ चांग ९ इन्द्र चौक १० गोरखा ११ शिपा १२ भांखु १३ नागानीत १४ धूतंग १५ पोखलिंग १६ मैघी १७ धनगस्यलंग १८ वरलांग १९ सिंधु २० गोकरु २१ डोलखा २२ अगरखु २३ पीरा २४ दहचौक २५ वीरलोग २६ जैनपुर २७ बुधसिंह २८ झिलतुंब।

—::※::—

निष्कलंक ब्राह्मण

यह एक ब्राह्मण जाति है प्राचीन काल में जिन ब्राह्मणों के कर्म श्रेष्ट थे और जो आचार विचार युक्त पूर्ण सदाचारी थे उन की यह निष्कलंक संज्ञा हुई क्योंकि लिखा है कि "निर्दोषो ब्राह्मणः श्रेष्ठः" अर्थात् ब्राह्मणों में जो दोषरहित समुदाय था वे निष्कलंक नाम से सम्बोधन किये गये हैं इन की विशेष लोक संख्या संभल प्रदेश में है यह संभल आजकल तो मुरादाबाद के ज़िले की एक तहसील है पर प्राचीन काल में यह एक बड़ा प्रदेश था जिस प्रकार सारस्वत, कान्यकुब्ज ब्रह्मावर्त आदि आदि प्राचीन प्रदेश थे तैसे ही सम्भल भी एक प्राचीन प्रदेश था। सृष्टि की आदि से सप्तपुरी* और तीन ग्राम † अब तक चले आ रहे हैं और चले जावेंगे उस ही सम्भल प्रदेश में इन ब्राह्मणों की विशेषता है। ये लोग आचार विचार का विशेष ध्यान रखते हैं ये लोग केवल ब्राह्मण के घर से ही दान दक्षिणा लेते हैं, ब्राह्मणों के अतिरिक्त क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रादि का धान नहीं लेते हैं।

इस ही से इन को सम्भल में शुक्ल कहते हैं क्योंकि धर्म शास्त्रों में ब्राह्मण का धान्य शुक्ल कहा गया है और उस शुक्ल धान्य को ही ये लोग लेते हैं इस से इन की शुक्ल पदवी हुई इस ही तरह इन की प्रतिष्ठित पदिवियां ये हैं:—

---

* १ अयोध्या २ मथुरा ३ माया (हरद्वार) ४ काशी, ५ काञ्चि, ६ अवन्तिका (उज्जैन) ७ द्वारावती (द्वारका)

† १ सालिग्राम, २ संभल और नन्दग्राम यथाः—

सालिग्रामो सम्भलश्च नन्दग्रामः प्रकीर्तिता।

गर्गसंहिते।

पदवियें:—शुक्ल, मिश्र, दीक्षित और अग्निहोत्री ।

गोत्र:—कश्यप, भारद्वाज, वशिष्ठ आंगिरस ।

ये ब्राह्मण लोग बड़े २ ब्राह्मण विद्वानों के यहां ही मिश्राई अर्थात् तामड़ायत पना करते हैं ये लोग खान पान से पवित्र हैं वैष्णव हैं। ये लोग यज्ञोपवीत भी अपने ही हाथका बनाया हुआ पहिनते हैं इन के विषय में लिखा है:—

शम्भलग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।
भवने विष्णु यशसः कल्किः प्रादुर्भविष्यति ॥

भाग० स्क० १२ अ० २ श्लो० १८ ।

अर्थः—यह भविष्यत वाणी है कि "धर्मत्राणय साधूनां जन्मकर्मानुपत्तये" धर्म की व साधुओं की रक्षा के लिये उत्तम कर्म करेंगे, शम्भल ग्राम के विष्णु यश नामी निष्कलंकी ब्राह्मण के घर कलियुग में कल्कि अवतार होगा।

——::※::——

पल्लीवाल ब्राह्मण

ब्राह्मण निर्णय पृष्ठ ३५२ से आगे ।

गोत्र:—उपमन्यु, वसिष्ट, अत्रि, मुद्गल, पाराशर, गर्ग ।

अत्रि और वसिष्ट गोत्रों के शासनः—

(१) ठूमा	(५) आजिया	(९) चरक
(२) भायल	(६) पेथड़	(१०) हरदोलया
(३) धामट	(७) हरजील	(११) कोरा
(४) पूनिद	(८) सांढू	(१२) जगया
		(१३) वनया

——::※::——

सयुंपारी ब्राह्मण

ब्राह्मण निर्णय पृष्ठ ५३३ से आगे ।

सयु पारियों के गोत्र प्रवरादि का चक्र

संख्या	गोत्र	प्रवर	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र
१	गर्ग	१ अंगिरस २ सैन्य ३ गर्ग ४ भरद्वाज ५ शौनक	यजु०	धनु०	माध्य०	कात्या०
२	गौतम	१ गौतम २ अंगिरा ३ वृहस्पति	"	"	"	"
३	भारद्वाज	१ अंगिरस २ वृहस्पत्य ३ भारद्वाज	"	"	"	"
४	भरद्वाज	१ अंगिरस २ बार्हस्पत्य ३ भारद्वाज	"	"	"	"
५	कृष्णात्रेय	१ अत्रैय २ और्वंवान ३ शावाश्रा	"	"	"	"
६	उपमन्यु	१ वशिष्ठ २ भरद्वाज ३ प्रमद	"	"	"	"
७	कुशिक	१ विश्वामित्र २ देवराज ३ उद्दालक	"	"	"	"
८	कौशिक	१ विश्वामित्र २ देवराज ३ उद्दालक	साम	सांगीत	कौ०	गौ०

संख्या	गोत्र	प्रवर	वेद	उपवेद	शाखा	सूत्र
९	सांकृत्य	१ आंगरिस २ गोखे ३ सांकृत्य	यजु०	धनु०	माध्य	का०
१०	वशिष्ठ	वशिष्ठ १ शक्ति २ पराशर ३	,,	,,	,,	,,
११	पराशर	वशिष्ठ १ शक्ति २ पराशर ३	,,	,,	,,	,,
१२	कात्यायन	अंगिरस १ सैन्य २ गार्गेय ३	,,	,,	,,	,,
१३	कश्यप	कश्यप १ वत्स २ नैध्रुव ३	साम	गं०	कौ०	गो०
१४	काश्यप	काश्यप १ वत्स २ नैध्रुव ३	,,	,,	,,	,,
१५	वत्स	भार्गव १ च्यवन २ आप्नवांन ३	,,	,,	,,	,,
१६	शांडिल्य	असित १ देवल २ शांडिल्य ३	,,	,,	,,	,,
१७	धनंजय	अत्रेय १ अर्चवानस २ धनंजय ३	,,	,,	,,	,,



सनाढ्य ब्राह्मण

ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ पृष्ठ ५१६ से आगे—



नके ७०० गांव हैं इनके पूर्वज बड़े तपस्वी थे इस ही से ये लोग सनाढ्य कहे जाकर संबोधन किये गये थे-इनके शासन प्रायः इनके ग्रामों के नामों पर हैं गोत्र इनके व आदि गौड़ ब्राह्मणों के प्रायः मिलते जुलते से हैं यथाः—

गोत्र

१ पाराशर	६ कृष्णात्रि	१० उपमन्यु	१४ विश्वामित्र
२ अगस्त्य	७ भारद्वाज	११ गौतम	१५ जमदग्नि
३ वात्स्य	८ काश्यप	१२ शांडिल्य	१६ जनञ्जय
४ च्यवन	९ सावर्णि	१३ कौशिक	१७ कौशल्य
५ शृङ्गी			

त्रिवेदी	शांडिल्य	कंजोलिया	दुगौलिया
जोषी	असपा	ढमोले	दुगरौलिया
पुरोहित	कटारे	गिदरौलिया	नारौलिया
फोरावाल	गगरौलिया	कुमार	भुसौरिया
मिश्र	कांकरौलिया	भिरथरी,	दीक्षित
त्रिपाठी	मुतोतिया	करसौलिया	परपारिया
भटेले	बछगैजा	पचौरिया	चौबे
गेलचिया	बैदेले	वघेलिया	पटसारिया
हरेले	दोरिया	लहरिया	अग्निहोत्री
गोबरेले	कांकरा	शरहैया	बालकी व्यास
चुरारी	व्यास	कटैया	अंबोले
दुगरौरिया	पांडे	हेरेनिया	वरनारिया

वैदेले	उपाध्याय	उपाध्याय	वरू
त्रिगुणायी		भारद्वाजी	टांकु
दांडोतिया	औरैइया	पटोलिहा	ठमेले
राजोरिया	घृतकौशिक	श्रोत्रिय	रावत
अक्खे	बखानिया	समाधिया	सेमरिया
कीर्तिया	उमरिया	सहोनिया	करसोलिया
समरिया	हुचोरिया	कहोनिया	कानोरिया
आंडोलिया	हुचवारिया	साजोलिया	आगरोवा
उदेनिया	उचैनिया	साजोलिया	रीलोवा
आस्थेनिया	उटगरिया	साकोलिया	जोगसी
जनु	उच्छिता	सावर्णिया	धुरेला
		सोती	आधुनिया
ओदगा	सुकुल	अनुष्टाता	अंगनय्या
होविया	करोलिया	कांकरा	भगोसा
अरेलिया	कतरेनिया	कटोर	भगोलिया
कामकरैया	करहेरिया	कुरसोलिया	नाहिला
कांकोलिया	करोलिया	कमैय्या	विनहेरिया
कुंभकारिया	काशिप	विधरैया	त्रिवहैरिया
कैलीरया	करनिया	विधरोलिया	नवासिया
कुकरेलिया	कपरैला	विघरीलिया	नवग्रहैया
कोवारिया	कुलवानी	वेदसार	नैजसिया
विपर्या	वेरिया	मुदगलिया	सूरोतिया
नखोचा	झुमोलिया	मुडनिया	भूरोतिया
नगाइया	तुटोतिया	मुखैरया	सूरजनीया
नैनीरया	मुखरैया	मुदगरिया	नामनीया
नौनेहीरिया	महलानिया	सिसैधिया	ग्रटोलिया
त्रिदरिया	मरैया	सिरोहिया	वरवारिया
दीक्षित	मुखरैया	विरोलिया	कीर्तिया
उबरिया	अवरैया	शांडिया	चौथालिया
चरीलिया	चुगला	चलैरिया	ढठोलिया
चौबे	त्रिचनगा	इखरिया	डुंगरो
चौरासिया	चौधिया	झगरिया	डुंगवारिया
चन्द्रोठिया	चाहिवा	झरठनिया	डीगरा

घलैया	निरनिया	टेकरिया	उभैरया
चांदसोरिया	चाटसालिया	अप्टुक	ढढिया
हरिया	गारिया	धारिया	ढांढू
पेघा	इन्द्रा		ढमोले
नोह्रिया	रौरद्दिया	तेहरिया	लवानिया
तहरैया	शैक्षिलिया	निहरिया	सुफलफलियां
नरनैया	विधिभेदिया	सैनवैया	लवानिया
आइया	साजोलिया	विम्रैया	अवस्था
ढुढिया	तिगुनायी	नृदनंगिया	यक्षिया
ढाल्हानिया	त्रिशूलिया	सतरंगिया	तिह्रोनगुरिया
रैशाग	नोंग्रे	भिरहेरिया	तिह्रोनपालिया
राजगिरया	तपरैया	उचेलिया	निरयंतिया
सतरंगिया	भिरहेलिया	श्रोरोलिया	परखैया
भिरहेरिया	दुरगोलिया	भेलनिया	घसैया
उच्चेलिया	दुरवाल	भचोड्या	गुलपारिया
दुर्गोलिया	दुसेटिया	भामेलिया	गुणेच्चिया
दुर्वारा	धामोटिया	हुरदेनिया	दांता
दुसेटिया	धनहेरिया	हुरसानिया	गुणनींया
धामोटिया	धर्मध्वजिया	हुरजस्या	चिरंजीया
धनहेरिया	भारग्रामिया	वसैया	होत्रृपिया
धीयाथाना	पेखड़े	गांगालिया	वदैया
पाथानिया	खिड़पासिया	वुटोलिया	पिचुनिका
सुयाशिया	स्थाहैरिया	चसेठिया	पचगैया
अवस्थी	लोहया	ढोलचारिया	पिपरोलिया
दुवे	चनगीरिया	धिरहरिया	परसैया
वुधोलिया	प्रगाशिया	त्रिरहरूपिया	देखैया
डोलवाड़िया	सैटाटिया	घदेदिया	थपैया
सेमरैया	गिलोटिया	सपारिया	थापक्रिया
पटकर्मीया	थूनिया	स्नेहिया	आदिया
रगुनाथिया	मानिया	सतसेनिया	दोजिया
सुजालिया	सानसेना	चिरंजीया	सुजसीया

आदिया	भीरिहेरिया	दौनोनिया	दोषता
दुरहारिया	गोलोठिया	घसेड़ा	लावार
मुधोलिया	बुधकैया	खेमकरैया	पड़ासिया
सौहरिया	नवनीयका	खोट्टया	सीहंटिया
गिलोठिया	बुठोलिया	गांगोलिया	गिरसैया
नवनीयका	नवेदिया	पूर्वनीया	दोषयीया
विरहैरिया	सवारिया	पचगव्या	सजौलिया
विरहैरूका	वदैया	पिपरोलिया	निहोनगिरिया
विहौलिया	पालिया	निखरैया	रदतंगिया
तामोठिया	सत्रंगिया	डुवोलिया	दुरवारक
विप्रिया	धानेरिया	धामोटिया	घसेटिया
ब्रह्ममैत्रिया	दाऊरा	दारखारिया	गगुधिया
डंडोचिया	साखीसिपुरिया	गठोलिया	खरेरिया
ठाकोलिया	भमालिया	नन्दवैया	चांदसूरिया
खरीटिया	हुंचुगिरिया	भटवालिया	सहिरा
कीटमाया	डुरगिरिया	कवैया	गोले
करहरिया	पीपरोलिया	चांदोरिया	चौधे
डेहरवारे	हरदेनिया	ववेसीया	दुहार
वाइसा	गठवारा	चभरेले	गुलपारिया
वरेखरहरिया	तेहलेनिया	गेहनरया	अलवीया
मग्रेखिया	वरोरिया	चरनावलिया	वामरिया
मातरोलिया	हथनिया	असतानिया	सिरमोरिया

ते सनाढ्या द्विजा जाता इन्यादिगौड़ा न संशयः ।
तेषां भोजन सम्बन्धः कन्या सम्बन्ध एव च ॥

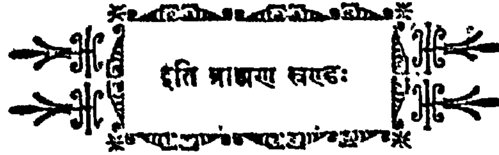
भा०—अर्थात् सनाढ्य ब्राह्मण समुदाय आदि गौड़ ब्राह्मण समुदाय में से ही है इसलिये इन के भोजन व बेटी व्यवहार हो सक्ते हैं ऐसी स्कन्द पुराण की आज्ञा है ।

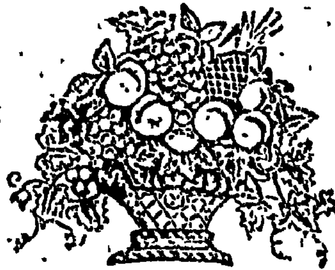
पुनः—

सनाढ्या ब्राह्मणा श्रेष्ठाः तपसा दग्ध किल्विषाः।
सन्शब्देन तपोग्राह्यं तेनाढ्या ये द्विजोत्तमाः॥

ब्रा० मा० पृ० ५५२।

अर्थः—सनाढ्य ब्राह्मण श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं जो तप द्वारा पवित्र हो गये हैं क्योंकि यह इन की संज्ञा सन् तथा आढ्य दो शब्दों के योग से हुई है जिस का अर्थ 'तपयुक्त' ऐसा होता है।







क्षत्रिय जातियों को चितौनी

भारतवर्ष की सम्पूर्ण हिन्दू जातियों को सूचना दी जाती है कि हमने बड़े अतुल परिश्रम व ३० वर्ष के लगातार अन्वेषण से भारत की क्षत्रिय जाति के ११०० भेद उपभेदों का पता लगा कर उन का बृहत् विवरण संग्रह किया है। इन में कोई २ जाति ऐसी भी हैं जो यथार्थ में क्षत्रिय नहीं हैं। वरन् खच्चरवत् Bastard Castes वर्णसंकर हैं। और विशेष जातियें तो यथार्थ में क्षत्रिय वर्ण में हैं, परन्तु संकीर्ण हृदयी हिन्दू समुदाय उन्हें क्षत्रिय नहीं मानता। उन्हें हमें डंके की चोट क्षत्रिय सिद्ध करना है। क्योंकि हमने अपने सिद्धान्त की पुष्टि में प्रत्येक निम्नलिखित जातियों के लिये बड़े बड़े प्रयत्न प्रमाण इकट्ठे किये हैं। हां! नीचे लिखी क्षत्रिय सूची में कुछ थोड़ी सी जातियें ऐसी भी है, जो यथार्थ में नीच, पतित व महा भ्रष्ट हैं। पर, हिन्दू पब्लिक को धोका देने के लिये बड़ी बड़ी सभायें करके अपने को क्षत्रिय बनाने का ढिंढोरा पीटती हैं। इस ही लिये, नीचे प्रकाशित सूची विचार कोटि में रखी गई है। इन सब का विवरण यदि हम इस ही भाग में लिखते तोः—

(१) यह पोथी (पुस्तक) एक बड़ा भारी पोथा बन जाता अतएव! भविष्यत में छपने वाले भागों में प्रत्येक निम्नस्थ जातियों का विवरण दिया जायगा।

(२) अतएव ऐसा निश्चय किया है कि मण्डल 'जाति-निर्णय' ग्रन्थों में केवल उन्हीं जातियों का विवरण दिया जावे

जिन के यहां से २५१ प्रश्नों के उत्तर आ जावें। अतएव जिन जिन जातियों ने वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ * प्रश्नों के उत्तर मण्डल कार्य्यालय को भेज दिये थे उन उन जातियों का वर्ण निर्णय करके इस ही ग्रन्थ में अटल प्रमाणों सहित विवरण प्रकाशित कर दिया है कुछ एक जातियों का विवरण समयाऽभाव से व पुस्तक वृद्धि भयात् इस ग्रन्थ में भी नहीं प्रकाशित किया जा सका है उन का विवरण इस से आगे के भाग में प्रकाशित करेंगे।

अतएव जिन जिन जातियों ने इन प्रश्नों के उत्तर मण्डल को नहीं भेजे हों वे कृपा पूर्वक शीघ्र भेज दें जिससे उनका निर्णय प्रकाशित कर दिया जाय।

(३) यदि किसी क्षत्रिय जाति का नाम इस सूची से छूट गया हो तो वह जाति कृपा पूर्वक अपना नाम ग्राम व पता ठिकाना आदि २ शीघ्र मण्डल को लिख भेजें जिस से उन का नाम भी इस सूची में जोड़ दिया जाय और भविष्य में उन के उद्धार का भी प्रयत्न किया जाय।

उत्तरों की आवश्यकता क्यों हुई ?

वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर लेने की आवश्यकता इस कारण हुई है कि हम सनातन धर्म्मी होने के कारण अनाप सनाप आर्य्य सामाजिकों का सा निर्णय नहीं करना चाहते वरन प्रत्येक बात को खूब ता छानकर उस का ऐसा निर्णय प्रकाशित करना चाहते हैं कि जिसे हिन्दू मात्र व संरकार तक भी मान लेवे और हमारा कर्त्तव्य भी लोक प्रिय माना जाय।

ऐसे विचारों को लेकर हमने क्षत्रियों के ग्यारा सौ भेदों को संग्रह कर के उस की नामावलि नीचे प्रकाशित की है जिसे देख कर जनता लाभ उठावे।

हमारी यह भी भावना है कि किसी जाति विशेष के विरुद्ध कोई ऐसा विवरण प्रकाशित न हो जाय जो यथार्थ में मिथ्या व

* ये प्रश्न अनेकों अन्य उपयोगी विषयों सहित सप्त खण्डी जाति निर्णय प्रथम भाग में छपे हैं मू० १॥) डा० ≋)

द्वेष पूर्ण हो । ऐसी दशा में क्षत्रिय जातियों का यह भी कर्त्तव्य है कि यदि वे अपनी अपनी जाति विषय में कोई प्रमाणादि व जानकारी रखती हैं तो हमें तत्काल लिख भेजें जिस से हम से कोई भूल न बन सके । यदि वे हम से अपनी जाति विषय कुछ पूछ ताछ करना चाहें तो उन्हें हमारे नियमानुसार -) का टिकट व जवाबी कार्ड भेजना चाहिये अन्यथा उन का पत्र रद्दी की टोकरी में डाल कर चिरागअली के सुपुर्द कर दिया जायगा ।

——::※::——

ग्यारासौ भेदों की सूची ।

अ

१ अहाड़िया, २ अररवंशी, ३ अहरिया, ४ अंवे, ५ असवरिया, ६ अग्निपाली, ७ ओहेल, ८ अनंगा, ६ अखावत १० अखेराजी, ११ अखैसिंघी, १२ अग्निवंशी, १३ अजमीड़, १४ अजयपाली, १५ अतैवरिया, १६ अतैराव, १७ अनरवद, १८ अनौतर, १६ अयरवाल, २० अभोरिया, २१ अवरा, २२ अमरसिंघी, २३ अमेढिया, २४ अरजनौता, २५ अलनौती, २६ अरोड़ा, २७ अस्तिपालया, २८ अंगराजी, २६ अंदोतरया, ३० अंगवंशी, ३१ अनजूहा, ३२ असुरिया, ३३ अलवेचा, ३४ असवाल ।

आ

३५ आमेरिया, ३६ आसोपा, ३७ आसमेरिया, ३८ आवेल, ३६ आवासर, ४० आसोजिया, ४१ आंवगणी, ४२ आदरेच्या, ४३ आला, ४४ आन्ध्र ४५ आहिर, ।

इ

४६ इन्दुवंशी, ४७ इक्ष्वाकुवंशी, ४८ इन्दोलिया, ४६ ईसरिया, ५० इणधा, ५१ इन्द्रशालोतिया, ५२ इद्वालविष्ट ।

उ

५३ उजैनी, ५४ उड़िया, ५५ ऊमरा, ५६ उकेलड़ा, ५७ उदाहिरा, ५८ उतेरवा, ५९ उद्दैसिंघीया, ६० उनडिया, ६१ उबड़िया, ६२ उड्डू, ६३ ऊहड़, ६४ ऊसेवा, ६५ ऊमट, ओः ६६ ओझियारा।

क

६७ कदम्ब, ६८ काकतीय, ६९, ७० कनि, ७१ कवनि, ७२ कटिहार, ७३ काठी, ७४ कुशवाहा, ७५ [कछवाहा,] ७६ काती, ७७ कचेला, ७८ करता, ७९ कावा, ८० काला, ८१ काछी, ८२ कछेरा, ८३ कचेरा, ८४ करचूलिया, ८५ कमोदरी, ८६ किनवार, ८७ कर्णवंशी, ८८ कोला, ८९ क्यारा, ९० किनबार, ९१ कलाल, ९३ कारनोत, ९४ कथ, ९५ काकन, ९६ कलहन, ९७ करड़वंश, ९८ कलवाँर, ९९ कानी, १०० कारङ्कपाल, १०१ कलचुरी, १०२ कर्म्मवार, १०३ कलर १०४ कछीरिया, १०५ कलहंस, १०६ कलानियाँ, १०७ कुमार, १०८ कीता, १०९ कुर्जिया, ११० कलिंगवंश- १११ कुमावत, ११२ कलिंजरिया, ११३ कस्तुरिया, ११४ कुरुवंशी, ११५ काकुत्स्थ, ११६ कोटपाल, ११७ कोइरी, ११८ कानड़, ११९ कायमखानी, १२० किरार [किराड़], १२१ काटि, १२२ कूरपाल, १२३ कसमोड, १२४ कुरपाला, १२५ केसेरे १२६ किरजाल, १२७ कारारीवाल, १२८ कासरीवाल, १२९ कोरियाला, १३० कूर्पट, १३१ कूरपाला केसेरे, १३२ कालाचोरस, १३३ कगैर, १३४, कालक, १३५ करजेवअचदक, १३६ कलूरो, १३७ कालणजीया, १३८ कोटपाल, १३९ कानवंशी, १४० कान्हवंशी १४१ कुरचारा, १४२ करक, १४३ क्रिधवाल, १४४ किसर्नावत, १४५ किसतघाड़िया, १४६ किलोरजिया, १४७ कुमरानी, १४८ १४९ किसैर १५० कसलयाल, १५१ कथेतराजपूत, १५२ कुरचरा, १५३ कुरखानी, १५४ कुलचारक, १५५ कुलरिया, १५६ कैकयवंशी, १५७ कौशिक, १५८ केहरोतिया, १५९ केहरिया, १६० केशवदासी, १६१ केसरोतिया, १६२ केवला, १६३ कैलाया, १६४ केलोड़ा, १६५ कोतीवाला, १६६ कोपला, १६७ कोपलया, १६८ कोसरीवाल, १६९ कंकोटक, १७० कोटेचा, १७१ कालपुसर, १७२ कालमोह १७३ कोहला, १७४ कहोरिया, १७५ कालेचा, १७६ कलामोर, १७७ केडच, १७८ कोटक, १७९ कुलीसुवें, १८० कोरई, १८१ कुवार, १८२ कंदारी गुसाई, १८३

काफलविष्ट, १८४ काला भण्डारी, १८५ कुन्तीनेगी, १८६ कोलियाल-नेगी, १८७ कलूरो, १८८ कान्यरी, १८९ कूमाल, १९० कोनैट्टी, १९१ कांतीला, १९२ कोरला, १९३ कारेगो, १९४ कनासी, १९५ कनयोर्गा, १९६ किरमिलिया, १९७ कुरगा, १९८ कारकी, १९९ कुकलियाल, २०० कुरलियाल, २०१ कोटियाल, २०२ कोरसाला, २०३ कोलसियाल, २०४ कोराला, २०५ कोरियाला।

ख

२०६ खागी, २०७ खगराडिया, २०८ खत्री, २०९ खडेटिया, २१० खंगर, २११ खांगर. २१२ खोदासिया, २१३ खोखर. २१४ खेरोबी. २१५ खेरा, २१६ खांट, २१७ खिलहरी, २१८ खींची, २१९ खिजुरिया, २२० खातीनेगी, २२१ खानवंश, २२२ खापरिया, २२३ खानदान, २२४ खलोडिया, २२५ खरीलिया, २२६ खड़ेटीया. २२७ खेटा, २२८ खगड़िया, २२९ खीरी, २३० खेतसिंघी २३१ २३२ खेचड़, २३३ खेचर, २३४ खरकोलानेगी. २३५ खन्दवरीनेगी, २३६ खाली, २३७ खवस्या, २३८ खेतवाल, २३९ खूनतारी, २४० खोरान, २४१ सेसली।

ग

२४२ गहोर, २४३ गर्ग २४४ गहरवाल, २४५ गौड़, २४६ गघु, २४७ गजका, २४८ गढीवाला, २४९ गढ़वलिया, २५० गहोर, २५१ गदयोग, २५२ गोहिल, २५३ (गोइल व गोयल) २५४ गरूडिया. २५५ गहोल, २५६ गहोतर, २५७ गढखियां, २५८ गिरधरदासोत, २५९ गिरमंडला, २६० गहरवार, २६१ गीला, २६२ गुजराती, २६३ गतवंशी, २६४ गुरावा, २६५ गुजरगेहचा, २६६ गौतम, २६७ गोगली, २६८ गाहन, २६९ गोगसेन, २७० गोधा, २७१ गोढ़वाल, २७२ गोडाहर, २७३ गोला २७४ गहलोत, (गृहलोत, गिहलोत, गुहलोत, व गुहलोट) २७५ गूजर, २७६ गोगली, २७७ गोगसेनी, २७८ गाचरगोहिल, २७९ गोठवाली, २८० गारये, २८१ गोरहा, २८२ गोरियला, २८३ गोलावाल, २८४ गोहजे, २८५ गंगागंशी २८६ गान्धार, २८७ गजका, २८८ गजैला, २८९ गचारी, २९० गदयोग, २९१ गढ़वाल, २९२ गंगागंशी, २९३ गोचर, २९४ गवसे, २९५ गोरला, २९६ रावत २९७ गगवारी, २९८ गुलेरी।

घ

२९९ घटोतिया, ३०० घेरवाल, ३०१ घसकू, ३०१ घनियारू, ३०२ घुघलोत, ३०३ घहुला, ३०४ घोड़, ३०५ घोतड़, ३०६ घाड़ ३०७ घोसला ।

च

३०८ चालुक, ३०९ चक्रभुज, ३१० चकैवाला, ३११ चचाघत, ३१२ चौलक्य, [सोलंकी] ३१३ चंवर, ३१४ चनहड़, ३१५ चंवरगोड़, ३१६ चरड़ा, ३१७ चंद्रवंशी, ३१८ चलेया, ३१९ चहुवाण [चौहाण, चौहान, चहुमान.] ३२० चंदण, ३२१ चंदना, ३२२ चंडालिका, २२३ चीबा, ३२४ चितरावा, ३२५ चुहल, ३२६ चील, ३२७ चौरा, ३२८ चाहिल, ३२९ चाहड़, ३३० चारंगे, ३३१ चांचक देवोत, ३३२ चांचिकंदे, ३३३ चौरासिया, ३३४ चाहिल, ३३५ चादलया, ३३६ चंदु, ३३७ चंद्रवंशी, ३३८ चंद्रसेनिया, ३३९ चंदिया, ३४० चंदेल, ३४१ चंडक, ३४२ चैंदी, ३४३ चांदलिया, ३४४ चन्द्रदत्ती, ३४५ चावड़ावंश, ३४६ चोदां, ३४७ चांचेरा, ३४८ चांदू, ३४९ चद्दिर, ३५० चंद, ३५१ चिन्तोला, ३५२ राजपूत, ३५३ चामकोटिया, ३५४ चोरयाल, ३५५ चाकर, ३५६ चोरवोला, ३५७ चमोली ।

छ

३५८ छकड़, ३५९ छैना, ३६० छावड़ा, ३६१ छत्री, ३६२ छतैरा, ३६३ छामोलाविष्ट ।

ज

३६४ जट, ३६५ जिट, ३६६ जमतसिंही, ३६७ जजी, ३६८ जजरीवा, ३६९ जैतवा, ३७० जुनगरी, ३७१ जनवार, ३७२ जसुइवाल, ३७३ जैसवाल, ३७४ जैचंदी, ३७५ जैन्द्रपालिया, ३७६ जोहिया, ३७७ जरायता, ३७८ जराल, ३७९ जसकरण, ३८० जादुवंशी, ३८१ जसरैया, ३८२ जीनतुर्वा, ३८३ जागलवा, ३८४ जेदरोढ़िया ३८५ जोरजा, ३८६ जनर्जुहा, ३८७ जंवारा, ३८८ जैतवा, ३८९ जोगू, ३९० जेतावती, ३९१ जैतसी, ३९२ जैसवार, ३९३ जैतशी, ३९४ जैठिया, ३९५ जसहरिया, ३९६ जसाहाड़ा, ३९७ जाटोड़ा,

३६८ जादू, ३६६ जड़िचा, ४०० जादम, ४०१ जाम, ४०२ जामका, ४०३ जुवल, ४०४ जासावत, ४०५ जालपोता, ४०६ जढेवा कम [जेटवा, वाकमरी] ४०७ जाड़ेजा, ४०८ जीपरा, ४०६ जालिया, ४१० जम्बर, ४११ जसंधोरा, ४१२ जसकोटी, ४१३ ज्योरा।

झ

४१४ झाला, ४१५ झकलोड़िया, ४१६ झूड़वाल, ४१७ झूमरिया, ४१८ झूमांठ, ४१६ झंगसिया, ४२० झिकार वटेरा।

ट

४२१ टावरिया, ४२२ टाक [तक्षक] ४२३ टीका।

ड

४२४ डागा, ४२५ डाबी, ४२६ डडुडिया, ४२७ डोड, ४२८ डाढाला, ४२६ डाभी, ४३० डाहल, ४३१ डाहलिया, ४३२ डोडमाडिया, ४३३ डोर, ४३४ डूंगरोत, ४३५ डावी, ४३६ डिंगोला।

ढ

४३७ ढांडू, ४३८ ढाडल, ४३६ ढनाक, ४४० ढुंढेरिया।

त

४४१ तक्षक, ४४२ तेहा, ४४३ तणोट, ४४४ तांबोल, ४४५ तंवर, ४४६ [तुंवर, ४४७ तोमर, ४४८ तुंबर, ४४६ तमर] ४५० तोसीना, ४५१ तेजाणत, ४५२ तोगी, ४५३ तुलुवा, ४५४ तिलोता, ४५५ तसेला, ४५६ तराड़, ४५७ तरेडिया, ४५८ तरकरे, ४५६ तस्सेरा ४६० तोगरू, ४६१ तातिया, ४६२ तिलोई, ४६३ तरियालठाकुर, ४६४ तिलाविष्ट, ४५६ तुलसारा।

थ

४६० थवक्रोरिया, ४६१ थपकौड़िया, ४६२ थर्हीम, ४६३ थिरचा, ४६४ थोरी, ४६५ [थोड़ी] थोक्ष ४६६ थापल।

द

४६७ दहिया, ४६८ दड़कीवाल, ४६६ दयाधाता, ४७० दयालदासी, ४७१ दृगवंशी, ४७२ (द्रुगवंशी) ४७३ दवालिये, ४७४ दाहोई ठाकुर, ४७५ दोवर, ४७६ दानिक, ४७७ दुजावत, ४७८ दीपसिंघी ४७६ दुर्जनशाली, ४८० दुसाध, ४८१ दुसाघोत, ४८२ दुसेना, ४८३ देगस्त, ४८४ दुहाना, ४८५ दूदा, ४८६ देवरा, ४८७ देरावरिया, ४८८ दुवलिया, ४८६ देवगिरिया, ४६० देवड़ा, ४६१ देयल, ४६२ देवमीड़, ४६३ दावी, ४६४ देवराज, ४६५ देवरिया, ४६६ दोदा, ४६७ दोहिया ४६८ दाहराया, ४६६ देवीदासोत, ५०० दोरोड़िया, ५०१ दालया, ५०२ देवत्त, ५०३ देघोत, ५०४ दरजी, ५०४ दसोध, ५०५ दुन्डा, ५०५ दंगवाल, ५०६ दोरचाल राजपूत, ५०७ दानू, ५०८ दारा, दालोनी, ।

ध

५०६ धनपति, ५१० धारवा, ५१३ धारवाला, ५१४ धूकड़, ५१५ धोलड़ी, ५१६ धुनदेटिया, ५१७ घोराणा, ५१८ धूकड़, ५१६ धामनेचा, ५२० धरोटवाले, ५२१ धर्मागंदी, ५२२ धकेरा, ५२३ धानपाली, ५२४ धोरणिया, ५२५ धुन्धदेवा, ५२६ धूता, ५२७ धायाराविए, ५२८ धुलेखी, ५२६ धूरिया, ५२६। धेकवान, ५३० धामवान,

न

५३१ निकुम्भ, ५३२ नकरोलड़, ५३३ नमोटड़, ५३४ नरपाल, ५३५ नरवीदया, ५३६ नरवदपोता ५३७ निकुम्य ५३८ नरा, ५३६ नेरालिया, ५४० नकोतर, ५४१ नागवंशी, ५४२ नवब्रह्म, ५४३ नागलू, ५४४ नोडाला, ५४५ नामका, ५४६ निनियाखार, ५४७ नारायणदासी, ५४८ नहारिया, ५४६ निवीण नियक, ५५० नीबावत, ५५१ नीलकोणंश, ५५२ नरुका, ५५३ ननवग, ५५४ नेरना, ५५५ नूरीया, ५५६ नेरहरी, ५५७ नोनहरिया, ५५८ नावरणा, ५५६ नादोज्या, ५६० नाधोत्या, ५६१ नायक, ५६२ नागकेशी, ५६३ नखानीरांवत,

प

५६४ पल्लव ५६५ परिहार (पुरिहार) पंचतोरिया ५६६ पचवाना ५६७ प्रतापीया ५६८ पाहा ५६९ प्रथवीराजीया ५७० पल्लीवार ५७१ पखड़िया ५७२ पचेया ५७३ परवतिया ५७४ पडेया ५७५ परिहाल ५७६ परियारिया ५७७ पाल ५७८ पलावाल ५७९ पलासिया ५८० पलानी ५८१ पेंचिया ५८२ पाण्डीवंश ५८४ पारथ ५८५ पोंकरा ५८६ प्रामी ५८७ पोखर ५८८ पराहु वाले ५८९ पाल ५९० पिलोरिया ५९१ पोखड़ ५९२ पाण्ड वंश ५९३ पंवार ५९४ पूरोत (प्रमार, परिमार) ५९५ पंडिया ५९६ पोरख ५९७ पोरच ५९८ पूया ५९९ पुगलीया ६०० पुरमीड ६०१ पुरवंश ६०२ पुरटवाल ६०३ प्याजे ६०४ पीपंड़ा ६०५ पूसया ६०६ पौसरा ६०७ पेशानी ६०८ पुरियार विष्ट ६०९ पयाल ठाकुर ६१० पटवाल राजपूत ६११ पैलोरा

फ

६१२ फाटक फकरचंदया ६१३ फूल भट्टी ६१४ फलासे ६१५ फरसवान

ब

६१६ वैस ६१७ वकसरिया ६१८ वजीतजी ६१९ वजावत ६२० बचोलड़ ६२१ वछगोती ६२२ वगांड़ ६२३ बगसरिया ६२४ वाला ६२५ वड़गूजर ६२६ वेडरिया ६२७ वखर ६२८ बदल गोती ६२९ वतसलाह ६३० बोमड़ा ६३१ वामेवत ६३२ वाजपना ६३३ बांचपना ६३४ बाघोड़ ५३५ वलवंत ६३६ वसेढिया ६३७ वरिहा ६३८ वरेसीर ६३९ वरियान वाले ६४० वरसिंघी ६४१ वरसिंघ ६४२ वालबघ ६४३ बिलर करिया ६४४ वालावत ६४५ बालिया ६४६ बालोत ५४७ बिजय नगरिया ६४८ बिजे राजिया ६४९ बींदा ६५० बिदमून ६५१ बघेला ६५२ वोरा ६५३ बिलादरया ६५४ वीरपालिया ६५५ विरमपालोत ६५६ वीले ६५७ वुदाना ६५८ बुंदेला ६५९ बरहईया ६६० वहोरिया ६६१ वहर कलिया ६६२ वोदरा ६६३ वांका ६६४ बांकेता ६६५ बंगड़ ६६६ वंगड़िया ६६७ बंग ६६८ वकढा ६६९ वोहदला ६७० बोरहान ६७१ वोड़ाना

भ

६७२ भमिला ६७३ भिजेलिया ६७४ भघेल ६७५ भनवग ६७६ भटारिया ६७७ भतारिया ६७८ भिलगवाल ६७९ भिजेलिया ६८० भाला सुलतान ६८१ भिजेनिया ६८२ भागडोल ६८३ भदोरिया ६८४ भारबूदी ६८५ भृगवेशी ६८६ भट्टी गूजर ६८७ भाटिया ६८८ भाके-डूवाल ६८९ भाकर ६९० भाईया ६९१ भूरमूंडा ६९२ भरतीया ६९३ भद्रोग वाले ६९७ भतेंड ६९८ भणक मेल ६९९ भटगोड़ा ७०० भाटी ७०१ भैरवाल ७०२ भगोतिया ७०३ भटगोड़ ७०४ भोजकरा ७०५ भटेवरा ७०६ भूरेचा ७०७ भावर ७०८ भूरता ७०९ भील ७१० भड ७११ भंगवाल ७१२ भीलगाड़ा

म

७१३ मगरोपा ७१४ महता ७१५ मोधारा रावत ७१६ मैन-कोली राजपूत ७१७ मनियारी रावत ७१८ मालेती राजपूत ७१९ मसौलिया रावत ७२० मसानिया ७२१ माहिल ७२२ मकवाना ७२३ मडलीफ ७२४ मानास ७२५ मद्वंश ७२६ मद्वाल ७२७ महरवार ७३८ मयाल ७३९ मांगलिया ७४० मलियाल ७४१ मंगाली ७४१ मदियां ७४२ माडेसा ७४३ मूंडियायी ७४४ मासोत्त्या ७४५ मतफोला ७४६ माला ७४७ मनभाका ७४८ मराहटे ७४९ मरोटिया ७४९ मल-काना ७५० मलैचा ७५१ मीना (मीणा) ७५२ मचकोली ७५३ मुर-सल ७५४ माटकोल ७५५ म्याल ७५६ मटकाल ७५७ मलहणा ७५८ मलियार ७५८ मोरी ७५९ मेठतियाल ७६० मलीना ७६० मेर (मेढ़) ७६१ महाजल ७६२ मेहर ७६३ मूसानी महेपावत ७६४ महानन्द ७६५ महान सिंघीया ७६६ महावर ७६७ म्हाला ७६८ मौर्य्यवंशी ७६९ मासैटो ७७० मोड़ैचा ७७१ महेचा ७७२ माकड़ ७७३ माणकराजी ७७४ मोदरेचा ७७५ मूरका ७७६ मोहिल ७७७मैया ७७८ मोरी ७७९ माणक ७८० माधारगी ६८१ मानकिया ७८२ मारू ७८३ मालखिया ७८४ मपावत ७८५ मालदे ७८६ मिढवान वाले ७८७ माहोरी ७८८ मौकर ७८९ माहेसिंघोत ७९० मालानी ७९१ मैपावत ७९२ मंडियाल ७९३ मेभमराव ७९४ मौता ७९५ मखानिया ७९६ मालिया ७९७ मालूनी ७९८ मोतदान ७९९ मंगल राव ८०० मोहता ८०१ मान्त-

वाल ८०२ मोहणोत ८०३ मोकम सिंघोत ८०४ मूनानेगी ८०५ मोखर ८०६ मोलेसलान ८०७ मोरेचा ८०८ मोररमि ८०९ मोढ़ ८१० मोकारा ८११ मोखरी वंश ८११ महार ८१२ मोकलोत ८१३ मोकला ८१४ मेवाती ८१५ मरे ८१६ मेनी ८१७ मेणाबाधरिया ८१८ मौहर ९१९ मैत्रक ८२० माइया ८२१ मेघपुरिया ८२२ मूलराजोत ८२३ मूलपसाघ ८२४ मालण ८२५ मौनस ८२६ मालासुलतान ८२७ मानखाल ८२८ मुकराना ८२९ मुकलाटा ८३० मुमारगी ८३१ मुयरावती ८३२ मूढ़ ८३३ मेत्री ८३४ मेघजी ८३५ मोतिया

य

८३६ यदुवंशी ८३७ यादव (जादव जदु) ८३८ योद्धेय

र

८३९ रायली ८४० राठोड़ ८४१ रघुरावत ८४२ रजका ८४३ रजोद ८४४ रणधीरोत ८४५ राथवा ८४६ रतन ८४७ सिंघोत ८४८ रतनसी ८४९ रतपालिया ८५० रणवालिया ८५१ ८५२ रवीय ८५३ रनियाल ८५४ राकेचा ८५५ राकसीया ८५६ राजकुँवार ८५७ राजड़ ८५८ राजवार ८५९ रानोत ८६० रामका ८६१ रायधरिया ८६२ रिखबवंशी ८६३ रायपालिया ८६४ रायमलोत ८६५ रैकवार ८६६ रोहेचा ८६७ रोहड़िया ८६८ रोड़ा ८६९ रोलियाल ८७० रघुवंशी ८७१ रोसया ८७२ राम्मपाद ८७३ रोतीवाल ८७४ राजवार ८७५ रायगवाल ८७६ रेवड़ा ८७७ रावत ८७८ रूद्रदत्ती ८७९ रेवारी ८८० रेहवर ८८१ रावका ८८२ राणकरा ८८३ रान ८८४ रुद्र ८८५ रौथान ८८६ रिंगवारा रावत ८८७ राना ८८८ रिखोला नेगी ८८९ रिवालटा ८९० रैता ८९१ रामोला ८९२ रानैटा ८९३ रुथ्योसाली ८९४ रदवोल

ल

८९५ लवारगा ८९६ लखनभाल ८९७ लूनकरण ८९८ लुद्रवा ८९९ लालावत ९०० लिख ९०१ मणसिंघोत ९०२ लाड़ ९०३ लाखणसेन ९०४ लघ्यांदज ९०५ लाख ९०६ लखावत ९०७ लिच्छवि ९०८ लोवया ९०९ लूनराव ९१० लोहारगां ९११ लोहराज ९१२ लूणिया (लूनीया) ९१३ लोधा ९१३ (लोध, लोधी) ९१४ लोहराजियो ९१५ लोमपादा ९१६ लंधा ९१७ लूतमारी ९१८ लंकवान

व

९१९ वाकाटक ९२० वेदी ९२१ वेदी खत्री ९२२ वावालयाल ९२३ वासती ९२४ वगदीवान ९२५ वोरा ९२६ वागलाना ९२७ वाला ९२८ वेस ९२९ वरवेरा ९३० वल्ला ९३१ विसेन ९३२ विदमन ९३३ वद्दा ९३४ वटिल ९३५ बुलहर ९३६ वालेचा ९३७ वकट ९३८ वीक ९३९ वोटीला ९४० वाचक ९४१ वसा ९४२ विरगोती ९४३ वटर ९४४ वागरी ९४५ विश्नोई ९४६ वाजल ९४७ वीथरगोलि ९४८ वच्छगोती ९४९ स ९५० वथवाल ९५१ वूतोलारावत ९५२ वाग-डूगलविष्ट ९५३ वंगारीरावत ९५४ विट्ठल

स

९५५ सदावर ९५६ सकरवार ९५७ सेसमलोत ९५८ सिघ-राव ९५९ सोवतसी ९६० सोखला ९६१ सौतियालनेगी ९६२ सभरीक ९६३ संभरिया ९६४ सिकरवाल ९६५ सूर्यवंशी ९६६ सिक्ख ९६७ सिसोदिया ९६८ रवगेलानेगी ९६९ सिद्धदेवराज ९७० सीहड़ ९७१ सिरनेत ९७२ सिहवच्छा ९७३ श्रीमात ९७४ सीहड़ ९७५ संगेलाविष्ट ९७६ सामेर ९७७ सिलभंडारी ९७८ सतियाल ९७९ सिलहाड़ा ९८० सिल्लर ९८१ सिरदार संघोत ९८२ सिनसिनयां ९८३ सिलोनी ९८४ सियत ९८५ सिघांरया ९८६ सावरिया ९८७ सालीग्राना ९८८ सिन्दू ९८९ सकरंका ९९० सिलवाल ९९१ सांर-थोत ९९२ सारंगिया ९९३ सारजा ९९४ स्याहीया ९९५ स्याम ९९६ सामवाल ९९७ सैंगर ९९८ सदिल ९९९ साचोरिया १००० सग-रिया १००१ सोमवंशी [चन्द्रवंशी] १००२ शोनकी १००३ सुखानी १००४ सगरायचा १००५ सवलसिंधी १००६ समरसिंघी १००७ सरवाड़ा १००८ पगजाल १००९ समराचक १०१० समरूप १०११ सरपरवरिया १०१२ सोनवाल १०१३ सिघेल १०१४ सेरा १०१५ सलारिया १०१६ सोढा १०१७ सेदसा १०१८ खोरा १०१९ सोलंकी १०२० सनगिरा १०२१ सोनपालिया १०२२ सोलंकी १०२३ सारविया १०२४ सोवेसरिया १०२५ संगजी १०२६ सनजीता १०२७ सिलारा १०२८ सिन्द १०२९ सेपट १०३० सुलाल १०३१ सुग १०३२ समेचा १०३३ सोहा १०३४ समूरा १०३५ सोनगरा १०३६ सचोरा १०३७

सूरा १०३८ सकरवा १०३६ सोलके १०४० सोरठिया १०४१ सिख-रिया १०४२ स्वरूरा १०४३ सोहागनी १०४४ सिमाला १०४५ सरूद १०४६ सितौले १०४७ सौनके १०४८ समर्थला १०४६ साजघान १०५० सरिया १०५१ सींकवान १०५२ सोगेलानेगी १०५३ सीसल १०५४ सिलवाल १०५५ सुनाई १०५६ सोपाल १०५७ सुतार १०५८ सेठो १०५६ सिलाभावकीला

श

१०६० शलवंश १०६१ शिशुपालवंशी १०६२ शलारिया १०६३ शिवरिया १०६४ शालौ १०६५ वाहनिझ्या १०६६ शिवदासिया १०६७ शिशुनाथ १०६८ शाक्यसेनी १०६६ शामोला विष्ट

ह

१०७० हरल्ला १०७१ हटारिया १०७२ हाड़ा १०७३ हड़ि-याल १०७४ हनुमानीयां १०७५ हमोरिया १०७६ हेयहेयवंशी १०७७ हरपालपोता १०७८ हरिया १०७६ हरीणा १०८० हरदवास १०८१ दन १०८२ हून १०८३ हापड़ा १०८४ हरेर १०८५ हरेरा १०८६ हर-पालिया १०८७ हाला १०८८ हिमकरिया १०८६ हन्ताल १०६० हेरगिया १०६१ हूल १०६२ हरतिया १०६३ हमीरे १०६४ हिम्मत-सिंहजी का १०६५ हंसावत १०६६ हापा १०६७ हंसावत १०६८ हसलाथिया ।

क्ष

१०६६ क्षत्रधारी ११०० क्षत्रोपेता

यह प्राचीन काल की एक क्षत्रिय जाति है, एक समय इनका

ओड़

भारत में राज्य था इन के पूर्वज राजा ओड़ू ने अपने नाम पर ओड़ू व उत्कल (उड़ीसा) देश बसाया था, परन्तु सहस्रों वर्षों के व्यतीत हो जाने से व बौद्धों के समय की वेदनायें व मुसल्मानी अत्याचार के कारण इनकी दशा में एक बड़ा भेद हो गया श्रीमद्भागवतादि पुराणों में कथित सूर्य्य-वंशी राजा सगर की यह जाति सन्तान है पर इतने महाकाल में कब कब य

कथा क्या विप्रकारी अत्याचार हुये इस का शृङ्खलावद्ध इतिहास तो कहीं मिलता नहीं है तो भी शास्त्रों के प्रमाण व तत्पोषक अनेकों सरकारी व ग़ैर सरकारी लेखों को देखकर व वर्ण व्यवस्था कमीशन के २५.१ प्रश्नों के द्वारा अन्वेषण कर के हम ने निश्चय किया है कि यह जाति क्षत्रिय वर्ण में है।

समय के हेर फेर के साथ २ जितनी यह जाति उच्च कोटि पर पहुंची थी उतनी ही यह नीचावस्था को पहुंच गई अर्थात् एक समय चक्रवर्ती राजराजेश्वर सगर जी की सन्तान होने का इन्हें सौभाग्य प्राप्त था तहां दूसरी ओर इस देश में ब्राह्मणों का अभाव होने से इस क्षत्रिय जाति को संस्कारादि कराने के लिये ब्राह्मण न मिले तिस से यह लोग शूद्र समान हो गये और इस दशा में भी इनकी कई पीढ़ियें बीत गयीं इस से लोग भी इन्हें शूद्र व एक छोटी जाति समझने लगे, जिस प्रकार हमने Research अन्वेषण करके इन का निर्णय किया है तैसे किसी अन्य समुदाय ने तथ्य जानने का कोई उद्योग ही नहीं किया वरन् इनके बाहरी कार्य्यों पर दृष्टि देकर इन को शूद्र समझ लिया। यह सच है कि अन्य उच्च जातियों की तरह इन में भी कई कुरीतियें संशोधन होने योग्य हैं। तथापि न्याय यह है कि जिस प्रकार उच्च वर्णीय सबल जातियों की शास्त्र विरुद्ध कुरीतियों की अवहेलना की जाती है तैसे ही हिन्दू समुदाय और विशेष कर ब्राह्मणों की कृपा की अधिकारिणी यह दीन हीन जाति भी है। क्योंकि ब्राह्मण न मिले और यह जाति संस्कार विहीन हो गयी तो इनका क्या दोष? अब राज्य स्थिति अनुकूल है शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त कराते हुए इनके संस्कार कराये जावें और इन्हें समझाया जावे कि "अय ओड़ो तुम उठो! और अपनी जाति की दशा सुधारो"

विपत्तिवश संस्कार न हो सकने से किसी का वर्ण नहीं बदल सका है अतएव संस्कार हीन हो जाने से कोई शूद्र तो नहीं होता है वरन वह शूद्र के समान हो जाता है जैसे कोई ब्राह्मण का लड़का बीस, पच्चीस व तीस वर्ष तक व कुछ कम अधिक काल तक बिना यज्ञोपवीत के रह जाय तो वह शूद्र के समान हो जाता

है न कि शूद्र ही हो जाय तैसे ही ओड़ जाति संस्कार विहीन रहने से शूद्रों के समान तो हो गई पर रज वीर्य्य व जन्म से क्षत्रिय वंशज होने से इनका क्षत्रियत्व कहीं नहीं गया, क्योंकि जिस प्रकार संस्कारों के न होने से शूद्रता आजाती है तैसे ही संस्कारों के होने से शूद्रता तत्काल भाग कर छू मंतर भी हो जाती है।

प्राचीन काल में इस जाति के लोग फौजों में नौकरी करते थे उस समय ये लोग बड़े बड़े विद्वान् होते थे और कूप, तालाव, महल, क़िले व युद्ध में मोरचे बनाया करते थे तोपों का काम इन्हीं के आधीन रहा करता था क्योंकि उस समय और अब भी उत्तरदायित्व Responsible Posts नौकरियों पर विश्वासनीय मनुष्य ही रक्खे जाते थे और रक्खे जाते हैं। श्री रामचन्द्रजी महाराज के साथ समुद्र का पुल बांधने वाले नल नील भी इस ही जाति के थे।

वैसे तो भारतवर्ष में अनेकों आपत्ति पड़ती रही हैं पर राजपूत समुदाय पर मुसलमानों के समय में बड़े २ अत्याचार हुए जिनको पढ़ कर पत्थर का हिया भी दाड़िम सा दरकने लगता है कलेजा फट जाता है और आह भरी सांसके साथ कहना पड़ता है कि हिन्दू जाति क्या तुझ में संगठन शक्ति नहीं आवेगी क्या तू पिटती ही रहेगी?

परस्पर की फूट व तेर मेर के कुभावों ने देश का नाश कर दिया! सच्चे उपदेष्टा नहीं रहे! आज कल हिन्दू जाति के गुरू, आचार्य्य व नेता ब्राह्मण हैं, परन्तु दुःख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे भाइयों का ध्यान सच्चे उपदेश व शिक्षा की ओर नहीं, किन्तु ये लोग देश काल व स्थिति से अनभिज्ञ हो कर लीक के फकीर होने व अपने जयमानों से येन केन प्रकार से पैसा खेंचने में चतुर होते हैं। यही कारण है कि देश शीघ्रगति से रसातल को जा रहा है।

मुसल्मानों के राज्यकाल के अत्याचारों से पीड़ित हो कर अनेकों राज वंशज लोगों ने ओड़ जाति में घुस कर अपनी प्राण रक्षा कीयी थी। क्योंकि, क्षत्रियत्व सूचक अनेकों नाम भेद ओड़ों

में पाये जाते हैं जिस से, इस जाति के क्षत्रियत्व पर विशेष श्रद्धा होती है।

जब ओड्र जाति दीनावस्था को प्राप्त हुई, तो विद्या के अभाव से यह जीविका वश भिन्न भिन्न धन्दे करने लगे उन में से जिन्हें कुछ नहीं आता था वे लोग मिट्टी खोदने का ही काम करने लगे और मूर्खता के कारण अपने को ओड्र ओड्र कहते कहाते केवल ओड़ कहने लगे और समयान्तर में वह ओड्र नाम छिपकर केवल ओड़ रह गया, जो विशेष रूप से खुदाई का काम करके निर्वाह करने लगे। इस जाति का वर्षों से चला आया धन्दा खोदने व मकान महलादि निर्माण करने कराने का था। तदनुसार (विद्या के अभाव से) विशेष रूप से इनमें खुदाई का काम होने लगा। तब से इस जाति का नाम 'बेलदार' प्रसिद्ध हुआ जिसका भाव ऐसा होता है कि गैंती (कुदाली) पावड़ा द्वारा जीविका करने वाले जो लोग हैं वे बेलदार कहे जाने लगे।

मुं० दे० प्र० जी ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ६०२ में हमारे उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हुये लिखा है कि "ये लोग फौजों के साथ खाई, खंदक, संगर, सुरंग खोदने व मोरचे लगाने तथा क़िले तालावादि बनाने में कार्य्य करते हैं।"

राजपूताने में खोदने को 'गोदना' भी बोलते हैं अतः गोदना से 'गोद' गोद' कहाते कहाते ओड़ ओड़ कहे जाना भी सम्भव प्रतीत होता है।

यह ओड़ शब्द संस्कृत शुद्ध शब्द 'ओड्र' का बिगड़ा हुआ रूप है और 'ओड्र जाति क्षत्रिय वर्ण में है लिखा है :—

शनकैस्तु क्रिया लोपा दिमाः क्षत्रिय जातयः ।
वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणा दर्शनेन च ॥४३॥
मनु०

अर्थः—धर्मशास्त्रकार कहते हैं कि, क्रिया के लोप हो जाने से याने संस्कार विहीन होने से ये क्षत्रिय जातियें ब्राह्मणों के अभाव से संस्कार रहित होकर शूद्रता को प्राप्त हो गयीं। इसका

भाव यह नहीं है कि शूद्र हो गयीं । इस श्लोक की टीका एक प्रसिद्ध विद्वान् ने इस प्रकार से की है:—

भाष्यः—इमा वक्ष्यमाणाः क्षत्रिय जातयः उपनयमादि क्रियालोपेन ब्राह्मणानां च याजनाध्यापन प्रायश्चित्ताद्यर्थं दर्शना भावेन शनैः शनैर्लोके शूद्रतां प्राप्ता ॥४३॥

भा०—नीचे लिखी क्षत्रिय जाति में उपनयन आदि आदि संस्कारों के तथा यजन याजन अध्ययनादि ब्राह्मणों के न मिलने से न हो सकने के कारण शनैः शनैः शूद्रता को प्राप्त हो गयीं अर्थात् लोक में शूद्र समझी जाने लगीं । वे जातियें कौनकौन सी हैं ?

पौण्ड्का औड्र द्रविड़ाः काम्बोजा यवनाः शकाः ।
पारदा पल्हवाश्चीनाः किराता दरदा खसाः ॥ ४४ ॥

मनु०

अर्थः—पौंड्र, औड्र, द्रविड़, काम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद और खस ये सब शूद्रत्व को प्राप्त हो गये ।

आज कल लोग अर्थाऽअर्थ के विषय उलट पुलट करके लोगों को भ्रम में डाल न दें अतएव एक अति प्रसिद्ध विद्वान् की टीका लिखते हैं:—

"भट्ट गोविन्द राजीया नामदार राव साहेब तथा कम्पेनियन आफ दी स्टार आफ इण्डिया इत्युपपदधारिणा, भारतवर्षीय गव्हर्नर जनरल कौंसलाभिधनीति शास्त्र व्यवस्था प्रणेतृ मण्डलान्तः पातिना, रायल एशियाटिक सोसाइटी, रायल जिओग्राफीकल सोसाइटी, स्टेटिस्टिकल सोसाइटी त्यभिधानां विद्वत्पर्षदां सभासदाऽऽद्यपर्षदो मुम्बापुरस्थ शाखाया उपाध्यक्षेण, मुम्बापुरस्थ हायकोर्टाभिधन्याया-धिष्ठान गत गवर्नमेन्ट वकील संज्ञकेन ।"

भावार्थः—इन्हीं श्लोकों की टीका भट्ट गोविन्द राजीया नामदार, राव साहब, कम्पेनियन आफ़ दी स्टार आफ़ इन्डिया पदवियें प्राप्त, भारतवर्ष के गवर्नर जनरल की व्यवस्थापिका सभा के प्रेसिडेन्ट, रायल एशियाटिक सोसाइटी तथा रायल जिओग्राफीकल सोसाइटी व स्टेटिस्टकल सोसाइटी के सभासद मुम्बई शाखा के उपाध्यक्ष तथा मुम्बई हाई कोर्ट के सरकारी वकील द्वारा अनुवाद।

इस उपरोक्त लेख में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग संस्कृत शैली में विशेष रूप से किया गया है अतएव उनको पाठकों के लाभार्थ अंग्रेजी में भी लिख कर प्रकाशित करते हैं यथा:—

Translated by Bhutta Gobind Rajiya Namdar Rao Sahib, Companion of the Star of India, President Supreme Legislative Council, Member Royal Asiatic Society, Royal Geographical Society & Statistical 'Society Assistant Superintendent of Bombay Branch and Government Wakil of High Court Bombay.

उपरोक्त गुण सम्पन्न महा पुरुष की सम्मतिः—

भाष्यः—इमा वक्ष्यमाणः क्षत्रिय जातयः सत्य उपनयनादि क्रिया लोपेन ब्राह्मणानांच याजनाध्यापन प्रायश्चित्ताद्यर्थं दर्शना भावेन शनैः शनैः लोके शूद्रतां प्राप्ताः ॥ ४३ ॥

पौण्ड्रकादयः क्षत्रियाः सन्त क्रिया लोपादिना शूद्रत्व मापन्नाः ॥ ४४ ॥ (Page 239)

भावार्थः—नीचे लिखी क्षत्रिय जातियें यथार्थ में उपनयनादि संस्कारादिकों की क्रिया लोप से और ब्राह्मणों के अदर्शन द्वारा यजन याजन और अध्यापन तथा प्रायश्चित्तादि कर्मों के अभाव से संसार में शूद्र समझी जाने लगीं ॥ ४३ ॥

पौण्ड्र, ओढ़, द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद और खस ये क्षत्रिय जातियें क्रिया लोप से शूद्र मानी जाने लगीं।

संस्कृत में राजा के अनेकों नाम हैं और कोषकारों ने राजा के अनेकों नाम लिखे हैं तदनुसार "भूमिपति' से भी राजा का ग्रहण होता है अतएव ये भूपति ओढ़ युद्ध होते २ जब सब कुछ हार गये तब इनका नाम 'भूमिहार' रक्खा गया अर्थात् जिन्होंने अपना राज्य पाट व भूमि हारी वे ओढ़ भूमिहार कहे जाने लगे इस ही लेख का समर्थन मिस्टर ई. आई. एस. ब्लान्ट आई० सी० एस० महोदय ने ऐसा लिखा है:—

In Moradabad there is a Caste called Bhuiyar, not to be confused with the Mirzapore Bhuiyar, else where they are called Orhs. In the same district however there is another class of Bhuiyar who resides in the Pargnah Thakurdwara who say they are descended from one Raja Jagdeo Singh and got their name because they "Lost their land," (Bhuinar, Bhumi=Land & Har=Losses) their occupation is weaving Coarse cloth.

[C. S. Report Page 464]

भा०—मुरादाबाद के ज़िले में एक जाति है जो भूमिहार ओढ़ कहाती है मिर्ज़ापुर के भूमिहारों से जिनका कुछ सम्बन्ध नहीं है। इसही ज़िले में पर्गनाह ठाकुर द्वारे में एक दूसरी तरह के भूमिहार रहते हैं जो अपने को राजा जगदेवसिंह के वंशज बतलाते हैं क्योंकि उन्होंने अपनी भूमि (राज्य) खो दी थी : जिसका अर्थ भी ऐसा होता है कि भूमि=पृथवी और हार=हार जाना, खो देना—इनका धन्दा मोटा कपड़ा तय्यार करना है।

कपड़ा बुनना व कपड़े का धन्दा करना कोई बुरा काम नहीं है, भारतवर्षीय All india National Congress कांग्रेस [महासभा] के नियमानुसार आजकल ब्राह्मण तक जो अपने आप सूत कतकार व कपड़ा बुनकर पहिनते हैं वे बड़ी मान्य दृष्टि से देखे जाते हैं।

उत्कल और ओड्र ये दोनों पर्य्यायवाची शब्द हैं अर्थात् उत्कल देश में जब ओड्र राजा का राज्य हुआ तब उत्काल देश का नाम ओड्र प्रसिद्ध हुआ।

Mr. Aptey M. A. ने लिखा है:—"Name of a people and their country,[The Modern Orisa] मिस्टर आपटे एम. ए. ने ओड्र शब्द का अर्थ करते हुये लिखा है कि आजकल के प्रसिद्ध देश (उड़ीसे के रहने वालों) तथा उसके निवासियों का नाम ओड्र है।

(see p. 419)

इस ही ओड्र शब्द का लघुतम रूप उड्र है जिसका अर्थ ऐसा किया है Name of a country modern Orisa. आज कल के उड़ीसा देश का नाम ही उड्र व ओड्र देश है।

page 358

उपरोक्त प्रमाण से सिद्ध हुआ कि उत्कल व उड्र एक ही देश है और यहां के रहने वाले भी ओड़ व उड़िया कहाये। इस ही उत्कल देश में किसी समय ब्राह्मणों का अभाव था अतएव उस समय के उत्कल राज्य के सब ही क्षत्रियादि पतित हो चुके थे।

यथाः—

उत्कलोहि नृपेयेन्द्रस्तु पुरास्वविषयेद्विजान्।
गंगातटस्थितान् कांश्चि दानाय विषय स्वके॥

अर्थः—उड़ीसा प्रान्त का उत्कल नामक एक राजा था जिसनें श्री गंगाजी के निकारे रहनेवाले विद्वान् कर्मेष्ठि ब्राह्मणों को बुलायें, क्योंकि उस समय उस देश में ब्राह्मणादि कर्मों का अभाव होनें से वहां के क्षत्रिय लोग शूद्रत्व को प्राप्त हो चुके थे यथाः—

पुरुषोत्तम पुर्यां वै जगदीशस्य सेवनें।
यज्ञान्तेस्थापयामास स्वनाम्ना तान्द्विजोत्तमान्॥

अर्थ—पुरुषोत्तम जगन्नाथपुरी में क्षत्रिय जातियों के उद्धारार्थ यज्ञ करवाया और फिर यज्ञानन्तर उन आये हुये वेदज्ञ कर्मेष्ठि ब्राह्मणों को दान दक्षिणा से तृप्त कर के उन्हें अपने उत्कल नाम से प्रसिद्ध कर के अपने देश में बसाया था।

गुंजल	अलकृत	चौगुले	च्यवन
डंडावत	तुकारे	पितलर	पल्लापुर
वल्लापुर	उपतलर	सतलर	रानापोर
अला कुंतलर	कियातनोर	रतनगोर	बयातनगोर
डंडनगर	दयारनग्लोर	नैदलोर	कूचांपोर
यादु	थोरत	मोहित	मंदकर
थोतरे	गैकवाड़	रठौड़े	सगरे
ससोदे	गहलोटे	उग्रवारे	सोलंखिये
पूर्वि	कुल्व्याशोप	सुठानिया	भोजिया
देशी	वघैया	निगोया	हाडा
परदेशी	बिलेधारिया	गुहवर	जाखेटिया
रतोमा	महैगया	स्मोरिया	भीमपुतिया
कतोना	सात्रोपागर	पोखरसार	हुजूरिया
बगेवरा	चौकिया	तरवैया	लवाण
रावणचरिया	मंडेला	जनवा	कटारिया
मदगे जादव	सिरमोरिया	पंड्या	कोहरिया

The Beldars or Orh of these provinces classified themselves at the last Census under the sub-caste. Bachhal, Chauhan and Kharat. The two former are of Course well-known Rajput tribes. Besides these among the most important sub-caste, we find the Mahul and Orh of Bareilly, the Desi, Kharebind and Sarwariya, Maskhauwa (Flesh eaters), Bachhgoti Bachhal, Baheliya, Bindwar, Chouhan Dikhit, Gaharwar, Gaura, Gautam Ghasi, Kormi, Luniya, Thakur, Agrawal Agrabansi, Ajudhyabasi, Bhadauria Dehliwal, Gangapari, Gorakhpuri, Kanaujia Kashiwala, Purabiya, Sarwariya, Utraha.

Page 338

भा०—यह गवर्नमेंट मंजूर शुदा जाति अनुसन्धान की रिपोर्ट जो सन् १८९६ में गवर्नमेन्ट से प्रकाशित हुई थी उसके पृष्ठ ३३८

में लिखा है कि "वेल्दार याने ओड़ मनुष्य गणना में ऐसे भेदों युक्त लिखे गये हैं यथाः—

१ बाछुल *	२ चौहाण *	३ खरोत
४ माहोल *	५ ओढ़ (ओड़) *	६ देशी
७ खारेबिन्द	८ सरवरिया	९ मसखौवा
१० बछुगोती *	११ वहेलिया	१२ बिन्दवार
१३ दीक्षित *	१४ गहरवार *	१५ गौड़ *
१६ गौतम *	१७ घोषी *	१८ कोरमी
१९ लुणिया	२० ठाकुर *	२१ अग्रवाल *
२२ अग्रवंशी	२३ अजुध्यावासी	२४ भदौरिया,
२५ देहलीवाल	२६ गंगापारी	२७ गोरखपुरी
२८ कन्नोजिया	२९ काशीवाला	३० पूरबिया
३१ सरवरिया	३२ उतरोहा	

इस * चिह्न वाले नाम प्रसिद्ध क्षत्रिय वंशों के हैं इससे भी प्रमाणित होता है कि ओड़ जाति समुदाय क्षत्रिय वंशज हैं।

ओड़ों के भेद उपभेदों पर दृष्टि डालने से प्रमाणित होता है कि इनके भेद (कई) क्षत्रियत्व प्रदर्शक हैं क्योंकि वे ही भेद आज कल के क्षत्रियों में भी पाये जाते हैं, देश भेद, व देश की भाषा के कारण उनमें ऊपरी भिन्नता अवश्य हो गयी है।

ये भेद भारतवर्ष के एक ही प्रान्त के नहीं हैं वरन सम्पूर्ण भारतवर्ष के समझने चाहियें। क्योंकि इनमें से कई भेद तो राजपूताने के प्रसिद्ध राजकुलों के राजपूताना में प्रसिद्ध हैं, कितने ही युक्त प्रदेश में, कितने ही पंजाब में कितने ही महाराष्ट्र तथा गुजरात काठियावाड़ में और कितने ही तैलंग आदि आदि प्रदेशों में प्रचलित हैं।

इनको हमने अनेकों सरकारी रिपोर्ट व गज़टों द्वारा देख कर लिखे हैं। विशेष विवर्ण भविष्यत में कभी लिखेंगे क्योंकि उपरोक्त भेदों में कई अपभ्रंश शब्द हैं जो यथार्थ में शुद्ध क्षत्रियों के भेदों से बिगड़ कर बने हैं।

मिस्टर C. S. W. C. कलक्टर सहारनपुर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है:—

They also eat pork, but in spite of this it is reported from Gorakhpur that Brahmans & Kshattriyas drink water from their hands.

भा०—ओढ़ लोग सूअर का मांस भी खाते हैं परन्तु ऐसा होते हुये भी गोरखपुर की रिपोर्ट से पता चलता है कि ब्राह्मण व क्षत्रिय लोग इनके हाथ का जल ग्रहण करते हैं।

राजपूताने के क्षत्रिय भी जंगली सूअर का मांस खाते हैं इसलिये कोई बुराई नहीं।

शा० का० पृ० ४०३ में 'ओड़' का अर्थ लिखा है कि "देश विशेषः उड़िस्या इतिख्यातः" अर्थात् ओड़ देश विशेष का नाम है जिसे उड़ीसा कहते हैं।

"पौण्ड्काश्चौड् द्रविड़ाः काम्बोजा जवनाः शकाः।"

अर्थः—पौण्ड्, ओड़, द्रविड़, काम्बोज, जवन और शक, इन जातियों के विषय में भाष्यकार ऐसा अर्थ करते हैं कि:—

पौण्ड्रादि देशोद्भवाः क्षत्रियाः सन्तः
क्रिया लोपादीनां शूद्रत्वमापन्नाः ॥

अर्थः—पौण्ड् औड् आदि आदि उपरोक्त देशवासी सब क्षत्रिय हैं क्रिया लोप होने से शूद्रों के समान हो गये। इसलिये ओड् देशवासी ओड व ओड़ लोग क्षत्रिय हैं और क्रिया लोप से शूद्र समझे जाते हैं अतएव प्रायश्चित्तादि द्वारा क्षत्रियत्व प्राप्त हो सकते हैं।

देश-स्थिति व राज्य-स्थिति के अनुसार भारतवर्ष कई बार कई भिन्न भिन्न नाम व सूबों तथा प्रान्तों में बांटा गया तदनुसार आजकल के उड़ीसा प्रान्त का प्राचीन नाम उत्कल देश है तहां के रहने वाले ब्राह्मणों की संज्ञा उत्कल व उस देश के राजपूतों की संज्ञा भी उत्कल ही प्रसिद्ध हुई जैसे बंगाल प्रान्तस्थ गौड़ देश में निवास होने व तहां से दूर दूर देशों में निकास होने से ब्राह्मण व क्षत्रिय की गौड़ ब्राह्मण व गौड़ क्षत्रिय संज्ञा हुई तैसे ही उत्कल देश की दशा जानिये।

उत्कल शब्द का अर्थ करते हुये कोषकार ने लिखा है कि उत्कल शब्द जब विशेषण होता है तब उस का अर्थ Excessive अधिक होता है और जब "उत्कल" विशेष्य होता है तब उस का अर्थ ऐसा होता है कि:—

Of a country, the modern Orissa or the inhabitants of that country. अर्थात् उत्कल आजकल के उड़ीसा को तथा उड़ीसा वासी द्विजों का नाम भी उत्कल है।

See English S, Dictionary P, 358

लिखा भी है:—

जगन्नाथ प्रान्त देश उत्कलः परिकीर्तितः।

अर्थात् जगन्नाथ पुरी का देश उत्कल देश कहाता है। उत्कल देश को ही उड़ीसा कहते हैं।

प्राची० भा० हिस्ट्री ६५७

रा० कान्त० देव० बहा० ने अपने ग्रन्थके २२३ पृष्ठ में लिखा है:—

उत्कलः—ओड्र देशः इति त्रिकाण्ड-शेषः। उड़िस्या इति भाषा, अर्थात् उत्कल देशका नाम ओड्र देश भी है जिसे भाषा में 'उड़ीसा' कहते हैं इस ही उड़ीसा देश की भाषा ओड़िया या उड़िया कहाती है।

कविवर कालिदास जी ने अपने काव्य में लिखा है:—

उत्कला दर्शित पथः कलिङ्गाभिमुखं ययौ।

रघु० ४०३८

Sradh Deo Manu had a son named Sadhyomna, who had three sons Utkal, Gaya and Binit,

History of Bharat Bhirman Vol, III P, 797,

भा०—श्राद्ध देव मनु के सुद्युम्न पुत्र हुआ और सुद्युम्न के तीन पुत्र उत्कल, गया और विनीत हुये।

भारत भ्रमण तृतीय खंड पृ० ७९७

उत्कलश्च गयश्चैव विनतश्च तथैवच ।
उत्कलं स्योत्कलं राष्ट्रं विनतस्यापि पश्चिमाम् ॥
दिक्पूर्वा तस्य राजर्षे गयस्यंतु गयापुरी ।
प्रविष्टे तु मनौ तस्मिन्प्रजाः सृष्ट्वादिवाकरम् ॥

ब्रह्माण्ड पुराण, मध्य भाग अनुषंग, पाद ३
वायु प्रोक्त वैवस्वत मनु सृष्टि नाम अध्याय ६०

भा०—उत्कल राजा ने उत्कल देश बसाया, गया राजा ने गयापुरी और विनता ने पश्चिम में राज्य स्थापित किया। उत्कल का लघुतम रूप उड़िया है जो यथार्थ में उड़ शुद्ध शब्द का अपभ्रंश है। ओड्र शब्द का लघुतम रूप उड्र और उड्र का लघुतम रूप उड़िया हुआ।

कुछ विद्वानों ने हमें ऐसी सम्मति दी है कि ओड्र शब्द भाषा में बदल कर 'ओड़' हो गया और ओड़ शब्द का लघुतम रूप 'ओड़िया' हुआ वही 'ओड़िया' शब्द किञ्चतसा बदलकर उड़ीसा की भाषा में 'उड़िया' कहा जाने लगा।

बाबू साधू चरण प्रसाद जी ने आदि ब्रह्मपुराण अध्याय २६ के आधार पर अपने ग्रन्थ भा० भ्र० भाग ३ के पृष्ठ ७६८ में लिखा है कि "दक्षिण के समुद्र के समीप में ओड्र देश विख्यात है जिस में कौर्णिक सूर्य्य रहते हैं। इस ही ओड्र देश का अपभ्रंश उड़ीसा देश है। उड़ीसे का नाम उत्कल है" इस से सिद्ध होता है कि राजा उत्कल ने उस देश को अपने नाम पर बसा कर 'उत्कल' देश नाम रक्खा और उस ही उत्कल देश को विद्वानों ने ओड्र देश भी माना है यथाः—

वि० कोष भा० ३ के पृ० ५३८ में लिखा है 'ओड्र उत्कल' उड़ीसा ये तीनों एक ही नाम हैं।

पुनः पृष्ठ ५५६ में ओड्र देशानां राजा ओड्र अर्थात् ओड्र देश का राजा 'ओड्र' था उस की सन्तान ओड़ प्रसिद्ध हुई। जान पड़ती है।

महाभारत में भी ओड्र नामक राजपुत्र का विवरण मिलता है जिसने अपने नाम पर अपने देश का नाम ओड्र रक्खा था। जैसे

अंग्रेजों के राज्य में आजकल के युक्त प्रदेश का नाम North West Provinces पश्चिमोत्तर देश [मग़रवी शुमाली] था, यह नाम अनुमान सौ वर्ष से ऊपर तक चलता रहा पश्चात् इस ही का नाम United Provinces of Agra and Oudh आगरा व अवध प्रान्त का युक्त प्रदेश रक्खा गया इस ही तरह राजा उत्कल के समय में उड़ीसा देश का नाम उत्कल था तो फिर उस ही देश में राजकुमार औड्र का दौर दौरा याने राज्य हुआ तब उस देश का नाम ओड्र रक्खा गया और उस ही राजा औड्र की सन्तान ओड्र व ओड लोक में प्रसिद्ध हुई। लिखा भी हैः—

उड़ (ओड़) राज पु० देशे

हिं० शब्द सागर खं० १ पृ० ३१७ लेखक श्याम सुन्दरदास

उड़ीसाः—संज्ञा० पु० (स–ओड्र + देश) उत्कल भारतवर्ष का समुद्र तटस्थ प्रदेश जो छोटा नागपुर के दक्षिण रास्ते में है।

हिं० श० सा० प्रथम खं० पृ० ३१८

ओड्र० संज्ञा० पु० उड़ीसा देशवासी।

हिं० श० सा० खं० प्र० ३६७

लक्ष्मण राजा ने औड्र के राजा से ली हुई रत्नजटित सुवर्ण की बनी नाग की मूर्ति हाथी, घोड़े अच्छी पोशाक माला और चन्दन से सोमेश्वर का पूजन किया ऐसा बिल्हारी का लेख भारत के प्राचीन राजवंश प्रथम भाग के पृष्ट ४२ में लिखा है।

Ep. India Vol P 260

सर्व पाप हरे बिन्ध्ये औड्रे तु पुरुषोत्तमम्॥ १३॥

अग्नि पु० अ० ३०५ श्लो० १३

इस उपरोक्त प्रमाण से भी ओड्र सिद्ध होता है।

सूर्यवंश में मनु आदि के पश्चात् राजा दशरथ हुये इससे नवां राजा लिच्छिव था इससे २५ वां राजा जयदेव हुआ इससे १२ वीं पीढ़ी में वृषदेव हुआ इससे क्रमशः ८ वीं पीढ़ी में राजा शिवदेव हुआ इसका विवाह मौखरी राजा भोगवर्मा की कन्या वत्सदेवी से हुआ इसके गर्भ से जयदेव हुआ इसकी उपाधि परचक्र काम थी

इसने गौड़, ओड़, कलिङ्ग और कौशल का राजा हर्षदेव की कन्या राजमति से विवाह किया था।

भारत के प्राचीन राजवंश पृ० ३७६

Indian Antiquary Vols. 9 P 178

The Rajput clans returned as represented in the Muttra in 1881 Rajputs Oria (उड़िया) 362 & female 188

Muttra Gazettier Vol. VII P. 70

भा०—सन् १८८१ में उड़िया लोग मथुरा जिले में राजपूत वंश में लिखे गये हैं। जिनमें पुरुष ३६२ और स्त्रियें १८८ थीं।

मिस्टर रेवरेन्ड शेरिंग ने अपने ग्रन्थके १२३ में लिखाहै कि:-

Utkal :—They are known by two designations Utkal and Udra, Gotras Kashyap. इनके दो नाम हैं उत्कल और उड्र इन राजपूतों का गोत्र कश्यप है।

श० चिन्तामणि कोष में लिखा है कि:—

ओड्राः उड़ीसा, उत्कलः, प्रसिद्धम्—अर्थात् ओड्र का दूसरा नाम उड़ीसा व उत्कल भी है। लिखा है :—

ओड्रः-पु० ओड्रदेशानां राजा, ओड्रदेश नृपे ओड्र शब्दे विवृतिः तद्देशवासिनीच । बहुषु अणोलुक् ।

वृहत् वाचस्पति वि० खं० २ पृ० १६६७

भावार्थः—ओढ़ देश का राजा ओढ़ तथा उस देशवासी द्विज अथवा राजा ओढ़ की सन्तान ओढ़ प्रसिद्ध हुई।

स्कं० महा० पुरा० वैष्णव खंडे पुरुषोत्तम क्षेत्र महात्म्ये जैमिनी ऋषि सम्वादे अ० १११ में लिखा है:—

ओढ्राधीशस्तदातस्य वच श्रुत्वा कृताञ्जलिः ।
उवाच प्रश्रुतं वाक्यं हर्ष विस्मय चंचुकः ॥ २२५ ॥

यह ओढ़ाधीश की कथा वहां बहुत विस्तृत रूप से लिखी है अतः विशेष न लिख कर इतना ही कहना पर्य्याप्त है कि ओढ़ राजा थे उनकी सन्तान ओढ व ओड प्रसिद्ध हुई।

पुनः और देखिये:—

पूजयित्वा जगन्नाथं सतंतार महानदीम्।
ओढ्र देशाधिपे नग्रे गच्छतादिष्ट पद्धतिः ॥१०७॥

भावार्थः—ओढ़ाधीश राजा के नगर में जाकर श्री जगन्नाथ-पुरी के दर्शन करने चाहिये।

ओड्रः—An inhabitant or the King of the Odra country. (Q. V. Sanskrit Dictionary 195)

भा०-औड्र का अर्थ ओड्र देशके निवासी व ओढ्राधीश। उपरोक्त अनेकों प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया जा चुका है कि ओड्र देश का राजा ओढ था और उसकी सन्तान ही आज कल के ओढ़ व ओड़ लोग हैं जो राज्य विहीन होने से जीविका वश नाना प्रकार के धन्दे करने लग गये हैं इनकी उत्पति विषय पर विचार करने से शास्त्र धारानुसार ये लोग राजपूत ठहरते हैं

ओढोत्पत्ति

पुराणों में राजा सगर एक चक्रवर्ती राजा हुये हैं उन्हीं के वंशज आज कल के ओढ राजपूतहैं यथाः-

हरितो रोहित सुतश्चम्पस्तस्माद्विनिर्मिता।
चम्पापुरी सुदेवोऽतो विजयो यस्य चात्मजः ॥१॥
भरुकस्तत्सुतस्तस्माद्वृकस्तस्यापि बाहुकः।
सोऽरिभिर्हृतभू राजा सभार्य्यो वनमाविशत् ॥२॥
वृद्धं तं पञ्चतां प्राप्तं महिष्यनुमरिष्यती।
और्वेण जानतात्मानं प्रजावन्तं निवारिता ॥३॥
आज्ञायास्यै सपत्नीभिर्गरो दत्तोऽन्धसा सह।
सह तेनैव संजातः सगराख्यो महायशाः ॥४॥
सगरश्चक्रवर्त्यासीत्सागरो यत्सुतैः कृतः।
यस्तालजंघान्यवनाञ्छकान्हैहयबर्बरान् ॥५॥

पञ्चम वेदे ६-८-१ से ५.

इन प्रमाणों से सगर राजा का चक्रवर्ती राजा होना सिद्ध होता है और यही सगर ओडों का पूर्वज था ।

सगरः स्वां प्रतिज्ञाञ्च गुरोर्व्वाक्यं निशम्य च ।
धर्म्मं जघान तेषां वै वेशान्यत्वं चकार ह ॥१९॥
अर्द्धं शकानां शिरसो मुण्डयित्वा व्यसर्जयत् ।
जवनानां शिरः सर्व्वं काम्बोजानान्तथैवच ॥२०॥
पारदा मुक्तकेशाश्च पह्लवाः श्मश्रुधारिणः ।
निःस्वाध्यायवषट्काराः कृतास्तेन महात्मनाः ॥२१॥
शका जवन काम्बोजाः पारदाः पह्लवास्तथा ।
कोल सर्प्याः समहिषा दार्व्वाश्चोलाः सकेरलाः॥२२॥
सर्व्वेते क्षत्रिया स्तात धर्मस्तेषां निराकृतः ।
वशिष्ठ वचनाद्राजन् सगरेण महात्मना ॥२३॥

एक सुपरण्डएट ने अपने ग्रन्थ के पृष्ठ ६०२ में लिखा है कि ओड़ जाति अपनी उत्पत्ति अज व विजय से लेती है इन के वंश में भागीरथ जी हुये जो अपने बड़ों के लिये प्रति दिन एक नया कूआ खोद कर पानी पिलाया करते थे इन के वंशजों ने भी ज़मीन खोदने का काम लिया यही लोग नल नील की अध्यक्षता में सेतु-पुल बांधने के लिये श्री रामचन्द्र जी के साथ गये थे। पुष्कर क्षेत्र को खोद कर भी इन्हीं ने द्विजत्व प्राप्त किया था। उपरोक्त विजय श्री रामचन्द्र जी से ३० पीढ़ी पूर्व और अज तो दशरथ जी के पिता ही थे ।

मा० से० रिपोर्ट में लिखा है कि मुसलमानों के अत्याचार समय अनेकों राजपूत जातियें व राजपूतगण अपनी प्राण रक्षार्थ ओड़ों में जा मिले ।

सहारनपुर के भूतपूर्व कलक्टर ने अपने जाति निबंध ग्रन्थ में लिखा है:—

They claim to Kshattriyas the descendants of Bhagirath son of Sagar अर्थात् ओड लोग सगर के पुत्र भागीरथ की सन्तान हैं।

नोटः—यहां कलेक्टर साहब ने तनिक सी भूल की है अर्थात् भागीरथ जी सगर के बेटे नहीं थे किन्तु लड़पोते थे अर्थात् सगर के बेटे केशी, केशी के बेटे असमंजस, असमंजस के बेटे अंशुमान, अंशुमान के बेटे दिलीप और दिलीप के बेटे भागीरथ थे।

इन के भेद उपभेदों की ओर दृष्टि देने से भी यह जाति क्षत्रिय सिद्ध होती है क्योंकि इन के भेद पंवार, सोलंखी, मोयल चौहाण, भाटी आदि आदि हैं।

एथनो० नामक ग्रन्थ में लिखा है किः—

They will not as a rule take Petty jobs but prefer small contracts on roads, canals, railways and the like, or will build a house of abode and dug a tank or even a well.

भा०—यह कोई नियम ही नहीं है कि ये लोग छोटे छोटे ही धन्दे करते हों वरन सड़क, मकानात तालाब और रेल आदि के बड़े बड़े ठेके भी लेते रहते हैं।

एक अँग्रेज़ अफसर ने अपने ग्रन्थ के पारा ६७३ में लिखा हैः-कि-They wear woollen clothes or at least one woollen garments. They claim descent from one Bhagirath who vowed never to drink twice out of the same well and so dug a fresh one day.

भा०—ये लोग प्रायः ऊनी कपड़े काम में लेते हैं जिन में से कम से कम एक ऊनी कपड़ा तो इन के पास ज़रूर रहता है, ये लोग अपने को भागीरथ की सन्तान मानते हैं जो नित्य एक नया कूआ खोद कर पानी पिया करता था। इस तरह एक दिन वह कूआ खोदता खोदता पाताल में घुस गया और फिर न निकला उस ही की याद में ये लोग ऊनी वस्त्र पहिना करते हैं और जो ग़रीब हैं वे ऊन का एक डोरा ही गले में रखते हैं।

पुनः—

They are said to claim Rajput or Kshattriya origin and to come from Marwar.

C & T. P 195

भा०—ये लोग राजपूत याने क्षत्रिय वंशज हैं और मारवाड़ से आये हैं। राजा सगर तथा गंधरानी की सन्तान हैं।

पुनः—

They marry in the way common to all respectable Hindu caste, इन में विवाह प्रणाली उच्च हिन्दु जातियों की जैसी ही है पुनः इनके क्षत्रियत्व की पुष्टि सम्बन्ध में लिखा है :—

They employ Brahmins as their priests and these are received terms of equality with other Brahmans.

ये ब्राह्मणों को पूजन पाठादि के समय बुलाते हैं और वे ब्राह्मण गण अन्य ब्राह्मणों में समान भाव से माने जाते हैं।

मिस्टर वी० सिंह ने अपने क्षत्रिय निबन्ध ग्रन्थ में "ओड-लिया" क्षत्रियों का एक भेद माना है यह राजपूताना की बोली में ओड शब्द का एक लघुतम रूप है। और यह नाम क्षत्रिय वर्ण की प्रसिद्ध गहलोत शाखा के अन्तर्गत है।

एक ऐतिहासज्ञ विद्वान् पं० जयलाल जी शर्मा ने हमें एक ग्रन्थ में राजपूतों की सूची में राजपूतों का एक भेद "डोड" दिखाया और सम्मति दी कि विक्रम सम्वत् १०७४ के युद्ध के पश्चात् डोड राज समुदाय ही अपने को 'ओड' कहने लग गये कि जिस से मुसलमान बादशाहों की पकड़ धकड़ से प्राण रक्षा हो।

मिस्टर D. I. डी. आई गवर्नर ने लिखा है किः—

They are said to claim Rajput or Khasttriya origin and to come from Marwar,

अर्थात् ये लोग राजपूत व क्षत्रिय अपने को बतलाते हैं और राजपूताना प्रदेशान्तर्गत मारवाड़ से आये हुये हैं।

R. E. Enthoven आर. ई. एन्थोवन साहब अपने जाति विषयक विवेक ग्रन्थ के भाग तीसरे के पृ० २३८ में लिखते हैं कि:—

The Ods claim a Kshattriya origin and state that they are descendents of Bhagirath.

ओड लोग क्षत्रिय होने का दावा करते हैं और भागीरथ की सन्तान अपने को बतलाते हैं।

इस ही की पुष्टि रासलीला नामक ग्रन्थ से भी होती है। जिस का विवरण सरकारी गज़ट में मिलता है। बाबू छे० ला० जी ने लिखा है कि बादशाह मुहम्मद गजनवी ने सन् १०१७ में युद्ध किया इस में बादशाह की विजय हुई और बुलंदशहर का राजा अहबरन जो डोड राजपूत था इस युद्ध में पराजय होकर मारा गया तब डोड राजपूत भी भागछूटे और अपने को "ओढ" कह कर बचाया।

ओढ जाति की स्थिति

हमने देश देश में जाकर प्रत्येक जातियों के रहन सहन, चाल ढाल, आदि को देखा है अतः शहरों में रहने वालों की दशा कुछ अच्छी है कारण उन्हें विद्वान् ब्राह्मणों का सत्संग मिलता रहता है तथा कहीं कहीं इन में पढ़े लिखे लोग भी मिलते हैं उनकी स्थिति कुछ सुधरी हुई उच्च जातियों की सी है परन्तु विद्या का अभाव विशेष रूप से इस जाति में देखा गया है और देहातों के ओडों की स्थिति साधारण है। विद्या के अभाव से इन में भी अन्य उच्च जातियों की तरह कुरीतियें व कुप्रथायें ऐसी प्रचलित हैं, कि, जिन से दूसरे लोगों को इन के क्षत्रियत्व पर सन्देह होता है। अतः स्थान स्थान पर सभायें करके इस जाति को अच्छे अच्छे उपदेश दिलाने की अत्यन्त आवश्यकता है जिस से उनका सुधार होकर वे लोग भी उच्च जातियों में चमकने लगें। जिन गांवों में पाठशालायें नहीं हैं वहां के ओढ राजपूत पुत्रों को शहरों में रखकर कम से कम हिन्दी मिडिल तक की शिक्षा अवश्य दिला देनी चाहिये और शहरों के रहने वाले ओडों को अपनी उन्नत्यर्थ पञ्चायती द्वारा ऐसा नियम पास करना चाहिये कि उन के प्रत्येक लड़के ८ वर्ष से १६ वर्ष तक अवश्य स्कूल पाठशालाओं में भेजे जायं और जो न

भेजें उन पर जाति दण्ड होना चाहिये जिस से कुछ काल में वे ही लड़के पढ़ लिख कर अपनी स्थिति व जाति पद तथा जाति मान मर्य्यादाके महत्वको समझ सकें और अपनी जातिकी सेवा कर सकें।

हमें पता चला है कि कुछ मुसल्मान ओड भी हैं जो अपने मुर्दों को गाड़ते हैं और खान पान से भी अन्य मुसल्मानों की तरह खाते पीते हैं पर उन में अभी तक राजपूती का अहंकार भरा हुआ है अतः ये लोग सुन्नत नहीं कराते और मसज़िदों में नहीं जाते हैं और जो जाते भी हैं तो खान पान में गो मांस का दर्शन तक नहीं करते चोटी भी रखाते हैं पूछने पर कह देते हैं मुसल्मान ओड हैं। हम लाहौर गये तो ट्रैन में ऐसे कुछ ओड भी अचानक हमारे पास आ बैठे पूछने पर उन्होंने ये सब कथा हमें कह सुनाई, हमने उन्हें शुद्ध हो जाने को कहा तब वे बोले कि "हिन्दू तो पिटोकड़े होते हैं मुसल्मानों से पिटकर व लुटकर मैदान में से भाग जाना जानते हैं। मैदान मे खड़े रह कर मरना नहीं जानते वे हमें शुद्ध नहीं करते" तब हमने कहा कि आर्य्य समाज से शुद्ध हो जाओ तब उन्हों ने कहा "आर्य्य समाज से हम शुद्ध होना नहीं चाहते यदि सभा करे तो हो सक्ते हैं" बस स्टेशन आ गया और वे उतर पड़े, उस समय आजकल की तरह "भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा आगरा" जैसी संस्थायें नहीं थीं अन्यथा हम उन्हें इस का पता बतला देते। ये लोग कहते थे कि हम जबरदस्ती मुसल्मान कर लिये गये थे और हम पहिले डोड राजपूत कहाते थे हमारे पूर्वज बुलन्दशहर में राज्याशन पर थे पर मुहम्मद गज़नवी के युद्ध में हम लोग भागे और अपने को ओड भी बतलाया फिर भी मुसल्मान कर लिये गये तब से हमारा नाम मुसल्मान ओड प्रसिद्ध हो गया है।

आज कल के हिन्दू ओड इन मुसल्मान ओडों के साथ कुछ व्यवहार नहीं करते अतः ये शुद्ध किये जाने योग्य हैं।

मुराव, मौर्य्य, मोरी, मुरई—यह एक क्षत्रिय जाति है इन का विशेष प्रसार युक्त प्रदेश व बिहार प्रान्त में है क्योंकि इनके पूर्वज चन्द्रगुप्त मौर्य्य की राजधानी मगध में पाटलीपुत्र (पटना) थी और उन का जन्म स्थान हिमालय की तलैटी है क्योंकि उन के

पिता का राज्य वहां ही था परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य्य कोई छोटे मोटे राजे नहीं थे किन्तु आप राज राजेश्वर महाराजाधिराज थे अतएव आपका राज्य भारतवर्ष के प्रत्येक कोने कोने में ही नहीं किन्तु काबुल, हिरात, कन्दहार, विलोचिस्तान और चीन, जापान तक में मुरावों का झण्डा फहराने लगा। चन्द्रगुप्त का मन्त्री चाणक्य नामक एक ब्राह्मण विद्वान् था जिस ने अर्थशास्त्र राजनीति आदि २ ग्रन्थ रचे हैं इन्हीं चाणक्य को शास्त्रों में कौटिल्य और विष्णु गुप्त नामों से भी सम्बोधन किया है।

चन्द्रगुप्त एक न्याय प्रिय महाराजे थे परन्तु उस समय ब्राह्मण धर्म की धींगा धींगी अर्थात् हम उच्च सम्पूर्ण संसार नीच, हम महा मूर्ख भी पूजनीय पर दूसरे विद्वान् भी आदरणीय नहीं, स्वार्थ की पराकाष्ठा भी उस समय अधिक बढ़ी हुई थी। जिन्हें आज कल लोग मूर्खतावश अछूत कर रहे हैं उनके साथ बड़े बड़े अन्याय होते थे उन्हीं से दुखित होकर चन्द्रगुप्त ब्राह्म धर्म को त्याग कर बौद्ध धर्मावलम्बी हो गये थे क्योंकि आपके विचार में समदृष्टि, परस्पर प्रेम, मनुष्य मात्र में समान भाव, ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के साधन भंगी से लेकर ब्राह्मण तक के लिये एक से, स्त्री जाति के साथ अन्याय न किये जाने आदि के शुभावों की पूर्ती ब्राह्मधर्म में रहते हुये न होती देख चन्द्रगुप्त ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया इस से चाणक्य बड़े रुष्ट हुये और जिस प्रकार कोई संस्कार विहीन ब्राह्मण शूद्र कहा जा सकता है तैसे ही चाणक्य ने व प्रहसन युक्त नाटकादि में चन्द्रगुप्त के मरणान्तर पश्चात् चन्द्रगुप्त के लिये 'वृषल' शब्द का प्रयोग अनेकों स्थलों में किया है जिस के अर्थ धर्मत्यागी, शूद्र, धर्मलोपक आदि आदि हो सकते हैं यह नहीं कि वह रजवीर्य्य से ही शूद्र था, ऐसे उदार हृदयी चन्द्रगुप्त मौर्य्य की सन्तान आज-कल के मुराव लोग हैं।

चन्द्रगुप्त का राज्य राजपूताने में भी था, राजपूताने के प्राचीन ग्राम मोरवन व मरला आदि आदि स्थान अभी तक विद्यमान हैं जहां चन्द्रगुप्त का सामन्त रहता था और मौर्यायान अर्थात् मौर्य्य-विमानों का केन्द्र स्थान यहां ही था।

मुराव व्युत्पत्ति

इस क्षत्रिय वर्णस्थ जाति का मुराव नाम कैसे पड़ा? इस पर अब तक देशी व विदेशी कई विद्वानों ने कुछ न कुछ लिखा है पर किन्हीं ने कुछ का कुछ और कइयों ने बिना सोचे विचारे आंख मींच कर 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' अर्थात् मक्खी की टांग की जगह मक्खी की टांग कर दी है यह न सोचा कि जो हम लिखते हैं यह कहां तक सम्भव ठीक है, हमारा जहां तक अनुभव है इस विषय की खोज हमारे देशी विद्वानों ने विशेष न की कि विदेशी एक अंग्रेज ने जो भूल वश कुछ लिख दिया तो उस ही को देख कर दूसरे ने लिख मारा और जैसा दूसरेने लिखा तैसा ही तीसरे ने और जैसा तीसरे ने वैसा चौथेने आदि आदि और इस ही तरह अनेकों ने ही लिख कर भूल की है, हां एक दो देशी विद्वानों ने कुछ अपना सिद्धान्त और भी लिखा पर वह विश्वासनीय नहीं जचता यथाः—

(१) Murao:—A tribe of cultivators and gardners
Caste & Tribes P. 107

भा०—कृषी कर्म व माली का कार्य्य करने वाली जातिः—

समीक्षाः—इस पर विचार यह है कि खेती व बगीचों का काम चाहे जो कर सक्ता है इसलिये यदि सत्य है तो खेती व बागादि का काम कोई ब्राह्मण करे तो यह भी मुराव कहा जाना चाहिये, यदि कोई बनिया इस काम को करे तो वह भी मुराव कहा जाना चाहिये इस ही तरह यदि कोई चमार भी खेती व बाग-बगीचे का काम करे तो वे भी मुराव कहे जा सक्ते हैं अतएव साहब बहादुर का यह कथन ठीक नहीं।

(२) मुंशी रामसरनदास ने लिखा है कि 'मूल' शब्द का अर्थ मूली होता है और जो मूली की खेती करे वह 'मुराव' कहाया पर यह ठीक नहीं क्योंकि मूली की खेती तो सब ही जाति करती हैं तब सब ही मुराव कहे जाने चाहियें पर हम देखते हैं कि सब मुराव नहीं कहे जाते अतः यह सिद्धान्त समझ में नहीं आता।

(3) They were created by Shiv to tend the Raddish (muli) whence the title of Murao, which is sometimes applied to them. C & T. 388.

भा०—शिवजी ने इन्हें मूली पैदा करने के लिये उत्पन्न किया जिस से इन का नाम 'मुराव' हो गया। यह भी ठीक नहीं क्योंकि जब शिव ने इन्हें मूली की खेती करने को पैदा किया तो क्या उस समय मूलों की खेती नहीं होती थी? यदि नहीं तो उस समय मूली आई ही कहां से? और शिव को रचने हीं की शक्ति थी तो मूली के ही हजारों खेत पैदा कर देता। फिर भी यदि बिना तर्क के इसे सत्य भी माने तो मूली की खेती से 'मुराव' नाम कैसे पड़ गया? मूली से मुराव नाम पड़ना समझ में नहीं आता।

[३] माननीय बाबू गंगाप्रसाद जी वर्म्मा ने भी लिखा है 'मुराव नाम मूल जड़ हिन्दी मूली से निकला है" पर यह भी ठीक नहीं यह सिद्धान्त उपरोक्त लेख की नकल मालूम होता है और जैसी भूल ऊपर हुई है वैसी ही यहां समझना चाहिये।

[४] श्रीमान् भट्टाचार्य्य जी महाराज ने अपने हिन्दू जाति निबन्ध में लिखा है "Said to be so named from the fact of their cultivating Mula or raddish.

भा०—मुराव नाम मूली की खेती से पड़ा है यह भी एक भूल का पिष्टपेषण मात्र है।

[५] एक पांचवें विद्वान् पं० शिवचरणजी डिपुटी इन्स्पेक्टर साहब ने लिखा है कि चौहाण वंश में मुरारीदास आगरे का राजा था उसकी याद में उसके वंशजों का नाम मुराव हुआ पर यह ठीक नहीं, ऐसा मान लेने से मुराव जाति चौहाणों की शाखा कहायेगी परन्तु इन्स्पेक्टर साहब ने यह प्रमाण कहां से उद्धृत किया व किस ग्रन्थ से लिया इसका कुछ पता न लिखा तब यह लेख किस आधार से ठीक माना जाय, क्या वंश भास्कर के लेख में राजा मुरारीदास का नाम पाते ही मुरारीदास से मुराव बना लिया? कुछ समझ में नहीं आता इस ही के आधारानुसार पं० जे० पी० चौधरी जी ने तथा बाबू छेदालाल जी ने भी अपने विचार प्रकट किये हैं यदि यह सच भी मान लें तो इसकी पुष्टि में किसी इतिहास में ऐसा प्रमाण मिलना चाहिये कि "मुराव लोग चौहाण वंश की शाखा है" पर ऐसा कोई प्रमाण नहीं देखने में आया, हां इसके

विरुद्ध राज्यस्थान इतिहास पृष्ठ १०५ में कर्नल टाड ने लिखा है कि "मौर्य वंश वाले भी प्रमार कुल की शाखा हैं" ऐसा अन्य ऐतिहासिक विद्वानों का भी मत है।

मिस्टर स्टेनली Stanely ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है:—

The Mouriyas are the branch of Pramar Rajput clan.

Indian Castes P. 377

भा०—मौर्य्य लोग प्रमार राजपूत वंश में से हैं इसलिये हमें भी यह जाति प्रमारवंश की शाखा प्रमाणित होती है।

[६] मुंशी रा० रमन जी ने लिखा है कि चन्द्रगुप्त की माता का नाम 'मूरा' था जो जाति से नाइन थी इस कारण इस जाति का नाम मुराव हुआ परन्तु यह उन्होंने किस आधार व प्रमाण से लिखा है कुछ समझ में नहीं आता प्रथम तो चन्द्रगुप्त 'मुरा' के पुत्र नहीं थे किन्तु चन्द्रगुप्त चित्रवती के पुत्र थे * यह कहना भी बड़ी भूल है कि चन्द्रगुप्त के पिता राजा मुरारदास आगरे के राजा थे किन्तु चन्द्रगुप्त महानन्द के पुत्र थे। यथा–पं० विशेश्वरनाथ जी ने लिखा है कि "कथावों में ऐसा भी प्रसिद्ध है कि नन्दवंश के राजा महानन्द से चन्द्रगुप्त का जन्म हुआ था † अतएव सिद्ध हुआ कि चन्द्रगुप्त मुरारदास का पुत्र न था किन्तु महानन्द का पुत्र था।

चन्द्रगुप्त के पिता के विषय में 'प्राचीन राजवंश' में लिखा है कि "चन्द्रगुप्त का पिता हिमालय प्रदेश के एक छोटे से देश का स्वामी था" इस प्रमाण से भी मुरारदास चन्द्रगुप्त के पिता नहीं ठहरते हैं। यथा:—

Chandragupta was connected on his fathers side with the Nand Dynasty of Magadh

U. D. Barodia
History and Literature of Jainism P. 114 } (2) History of Aryan Rule P. 166

---

* "देखो समाने डमरी" चन्दगुप्त पृष्ठ ६ छापाखाना राजपूत गज़ट

† भा० राज० पृ० १७४

भा०—उपरोक्त लेख दो प्रसिद्ध इतिहासों के लेख हैं इसका भावार्थ यह है कि चन्द्रगुप्त मगध का नन्द कुलोत्पन्न राजकुमार था इस आधारानुसार चन्द्रगुप्त का महानन्द का पुत्र होना प्रमाणित होता है। लिखा भी है:—

नवनन्दान् द्विजः कश्चित्, प्रपन्नानुद्धरिष्यति।
तेषांमभावे जगतीं मौर्य्या भोक्ष्यन्ति वै कलौ॥
सएव चन्द्रगुप्तं वै द्विजो राज्येऽभिषेक्ष्यति।

शा० क० पृ० ५२८

भा०—कोई द्विज * नवनन्दों का नाश करेगा, उनके अभाव में कलियुग में मौर्य्य लोग पृथिवी का राज्य करेंगे और वही द्विज (चाणक्य) चन्द्रगुप्त को राज्य पर अभिषेक करेगा। पुनः—

उद्धरिष्यति कौटिल्यः समा द्वादशभिः सुतान्।
भुक्त्वा महीं वर्षशतं ततो मौर्यान् गमिष्यति॥२१॥
भविता शतधन्वाच तस्य पुत्रस्तु षट समाः।
बृहद्रथस्तुवर्षाणि तस्यपुत्रश्च सप्ततिः॥२२॥
षट त्रिंशत्तुसमा राजा भविता शक एव च।
सप्तानां दश वर्षाणि तस्य नप्ता भविष्यति॥२३॥
राजा दशरथोऽष्टौतु तस्य पुत्रो भविष्यति।
भविता नववर्षाणि तस्य पुत्रश्च सप्ततिः॥२४॥
इत्येते दश मौर्य्यास्तु ये भोक्ष्यन्ति वसुन्धराम्।
सप्त त्रिंशच्छतं पूर्णं तेभ्यः शुङ्गान् गमिष्यति॥२५॥

मत्स्य पुराण अ० २७२ श्लो० २१ से २५.

अर्थः—यह भविष्य वाणी प्रतीति होती है इसका भावार्थ यह है कि नवनन्दों के अर्थात् नन्दवंश के नौ राजाओं के सौ वर्ष तक राज्य कर लेने पर उनको नष्ट करके चाणक्य नामक ब्राह्मण

* कदाचित् चाणक्य

मौर्य्य राज्य स्थापन करेगा जिस वंश में शतधन्वा बृहद्रथ आदि आदि दस राजा १३७ वर्ष तक राज्य करेंगे तिस के अनन्तर शुङ्ग वंश का राज्य होगा।

इस ही के अनुकूल और प्रमाण मिलता है:—

ततश्च नव चैतान् नंदान् कौटिल्यो ब्राह्मणः समुद्धरिष्यति। तेषामभावे मौर्य्याः पृथिवीं भोक्ष्यन्ति। कौटिल्य एव चन्द्रगुप्तमुत्पन्नं राज्येऽभिषेक्ष्यति। तस्यापि पुत्रो बिन्दुसारो भविष्यति। तस्याप्य शोकवर्द्धन स्ततस्सुयशास्ततश्च दशरथस्ततश्च संयुतः ततः शालिशूकस्तस्मात्सोमशर्म्मा। तस्यापि सोमशर्म्मणः शतधन्वा। तस्मानु बृहद्रथ नामा भविता। एवमेते मौर्य्या दश भूपतये। भविष्यन्ति, अब्दशतं ससप्तत्रिंशदुत्तरम्। तेषामन्ते पृथिवीं दश शुंगा भोक्ष्यन्ति।

(विष्णु पुराण)

अर्थः—इसके पश्चात् नव नन्द राजाओं का राज्य नष्ट करके चाणक्य नामक ब्राह्मण चंद्र गुप्त मौर्य्य वंश का राज्य स्थापन करेंगे तब मौर्य्यवंशज पृथवी पर राज्य करेंगे। १ चंद्रगुप्त चन्द्रगुप्त का पुत्र २ बिन्दुसार, बिन्दुसार का पुत्र ३ अशोकवर्धन तिसका पुत्र ४ सुयश. तिसका पुत्र ५ दशरथ, तिसका पुत्र ६ संयुत संयुत का पुत्र ७ शालीशूक तिसका पुत्र ८ सोम शर्म्मा तिसका पुत्र ९ शतधन्वा और शतधन्वा का पुत्र १० बृहद्रथ ये मौर्य्यवंशी दश राजा होंगे और १३७ वर्ष राज्य करेंगे तत्पश्चात् शुंगवंशियों का राज्य होगा।

मौर्य्य संज्ञा

अब इस बात पर विचार करना है कि चन्द्रगुप्त की मौर्य्य संज्ञा कैसे हुई? तो इस विषय में आधुनिक अनेकों पुस्तकें देखी गई परन्तु किसी ने इस का विवेचन नहीं किया हां 'चन्द्रगुप्त मौर्य्य' ऐसा लिखा तो मिलता है परन्तु प्रश्न यह है कि चन्द्रगुप्त सर्वत्र 'मौर्य्य' किस कारण से

कहा गया और बहुत ही ऐतिहासज्ञ विद्वानों ने चन्द्रगुप्त को 'मौर्य्य' कैसे लिखा ? तो इस का उत्तर यह है कि चन्द्रगुप्त की जीवनी में लिखा है कि 'चन्द्रगुप्त की माता चित्रवती चन्द्रगुप्त को कुछ दिन का ही छोड़ कर चल बसी थी और चन्द्रगुप्त की मौसी (दूसरी मां) सुन्दरी नाम्नी * ने इस का पालन पोषण किया था। ज्यों ही चन्द्र-गुप्त माता विहीन होकर पांच वर्ष का हुआ कि युद्ध में चन्द्रगुप्त के पिता महानन्द प्रथम मारे गये और राज्य पर तथा सम्पूर्ण राज्य सम्पति पर बौद्ध धर्मावलम्बि दूसरे महानन्द का अधिकार होगया तब चन्द्रगुप्त की खोज की गई कि राजकुमार भी मार दिया जाय जिस से भविष्यत में कोई कंटक न रहे। तब सुन्दरी ने राजकुमार को छिपा के अपने निज पुत्र को राजकुमार बतला कर शत्रुओं द्वारा अपने सन्मुख मरवा दिया और अपनी योग्यता का परिचय दिया। महानन्द दूसरे जब विहार में अपनी राजधानी पर पहुंचे तब उन्हों ने सुन्दरी (धाय) से कहा कि क्या आप विहार की रानी होना पसन्द करेंगी ? सुन्दरी ने कहा कि यदि मेरा लड़का चन्द्रगुप्त राज्य का स्वामी हो तो मैं स्वीकार कर सकी हूं'। ऐतिहा-सज्ञों ने लिखा है कि—The damsel was extra ordinarily beautiful यह युवती एक बड़ी ही मनहरण सुन्दरी थी अतएव महानन्द ने यह स्वीकार कर लिया जिस से वह भविष्यत में चक्र-वर्ती राज राज्येश्वर की माता कहाई।

यह सुन्दरी जैसी रूपवन्ती थी तैसी ही संस्कृत की बड़ी विदुषी थी जिस ने स्वयं चन्द्रगुप्त को नाना प्रकार की शिक्षायें दे कर चिरकाल में ही पूर्ण सुयोग्य बना दिया जिस ने अपनी शक्ति व बल बुद्धि से सम्पूर्ण संसार में अपना राज्य कर लिया।

(१) जिस प्रकार श्री रामचन्द्र जी पुष्पक विमान द्वारा आकाशमार्ग से जाया आया करते थे तैसे ही चन्द्रगुप्त के पास मयू-रयान था जो मोर (मयूर) की सी सूरत का था और आज कल

---

* किसी किसी आधुनिक ग्रन्थकार ने इस ही सुन्दरी का नाम मूरा नाइन लिखा है पर यह सत्य नहीं इसका समाधान 'मौर्य्य वर्ण परिचय' स्थम्भ में देखियेगा।

के हवाई जहाज़ की तरह आकाश मार्ग में चलता था अतएव चन्द्रगुप्त को कवियों ने मयूरवान लिखा है जिस से चन्द्रगुप्त मौर्य्य कहे गये।

(२) बौद्ध ग्रन्थों के आधार पर 'प्राचीन राजवंश, में लिखा है कि "चन्द्र गुप्त का पिता हिमालय प्रदेश के एक छोटे से राज्य का स्वामी था और वहां मोर बहुत थे अतः वह राजा भी मौर्य्य कहाया" पर यह हमारे समझ में नहीं आता क्योंकि मोर विशेष होने से राजा के राज्य की मौर्य्य संज्ञा कैसे हुई ? कुछ निश्चय नहीं होता।

(३) पं० राजेन्द्रलाल मित्र ने लिखा है कि:—

"Chandragupta's mother is said to have been the daughter of the kings peacocks (मयूर पोषाक) Mayur Poshak and his family name was Maurya.

भा०—चन्द्रगुप्त की माता बादशाह की 'मयूर पोषाक' को रखने वाले सरदार की लड़की थी इस ही से चन्द्रगुप्त की "मौर्य्य" पदवी हुई। उपरोक्त दोनों हेतुओं में किञ्चित सी भिन्नता होते हुये भी भावार्थ में कुछ समता है अतएव हमारे विचार में 'मौर्य्य' संज्ञा होने के लिये उपरोक्त पहिला हेतु 'मयूर यान' का ठीक जान पड़ता है क्योंकि उस समय 'मयूर यान' की समता करने वाला यान अन्य किन्हीं राजाओं के पास नहीं था अतएव चन्द्रगुप्त को मयूरयान व मयूरवान अथवा मौर्य्य कहा जाना सम्भव है।

मौर्य्य से मुगव बना

देश देश की भाषा के कारण जो लोग पूर्व के ज़िलों में जैसे- कानपुर, बनारस, अलाहाबाद, जौनपुर, मिर्जापुर, पटना, बांकीपुर आदि आदि स्थानों के रहने वाले हैं उनकी मातृभाषा (मादरी ज़ुबान) पूर्वी बोली है। और महाराज चन्द्रगुप्त मौर्य्य की राजधानी भी पाटली पुत्र पटना में थी और इन का राज्य तो हज़ारों कोशों की दूरी तक फैला हुआ था अतएव इनके राज्य की मुख्य बोलचाल में भी पूर्विया बोली का विशेषांश था। संस्कृत शास्त्रों चन्द्रगुप्त

को "मौर्य्य" अनेकों शास्त्रों में लिखा है अतएव चन्द्रगुप्त वंशी "मौर्य्य" शब्द पूरविया बोली में परिणित हो कर 'मुराव' कहा जाने लगा क्योंकि हिन्दी के शुद्ध प्रचलित शब्दों का पूरबिया भाषा में कैसे बदलाव हो जाता है उसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं जिससे पाठकों के समझ में सहज ही में आजावेगा कि 'मौर्य' शुद्ध संस्कृत शब्द का 'मुराव' कैसे होगया ?

पूरबिया बोली के उदाहरण

अकारान्त व आकारान्त शब्दों में प्रायः 'वा' लगाया जाता है जैसेः—

हिन्दी शब्द	पूरबिया शब्द
पेड़	पेड़वा
पान	पनवा
पैसा	पैसवा
लोटा	लोटवा
गगरा	गगरवा
घर	घरवा
भार	भरवा
मौर्य	मौर्यवा

ईकारान्त शब्दों में या लगाया जाता है जसेः—

पानी	पनिया	धोती	धोतिया
रोटी	रोटिया	डोरी	डोरिया
बेटी	बिटिया	बोरी	बोरिया
लड़की	लड़किया		

उकारान्त व ऊकारान्त शब्दों में भी वा लगाया जाता है जैसेः—

नाऊ	नौवा	हाऊ	हौव्वा
दाऊ	दौवा	मुल्लु	मुलुवा
ताऊ	तौवा	मोघु	मोघुवा
भाऊ	भौवा	जोतु	जुतवा

अतएव उपरोक्त आधारानुसार **मौर्य** शब्द बदल कर **'मौर्यवा'** हुआ और फिर वही **'मौर्यवा'** शब्द भाषा में बदलकर **'मोरयवा'** व **'मोरावा'** होगया और **'मोरावा'** से आजकल का प्रचलित नाम **'मुराव'** रह गया। यह मुराव शब्द भी एक दशा में न रहा और देश देश की भिन्नता के साथ साथ इसके भी कई भिन्न भिन्न नाम होगये। सरकारी अफसरों ने इस जाति का विवेचन करते हुये इनके भिन्न भिन्न नाम लिखे हैं जैसे Murao मुराव, Murai मुरई, Mori मोरी, Muri मुरी और Muryee मुरयी तथा Muravoo मुराऊ आदि आदि।

३ क्षत्रिय वं० निर्णय नामक ग्रन्थ के पृष्ठ १३७ में लिखा है कि "मुराव (मौर्य) वंश सूर्य्यवंशज क्षत्रिय समुदाय के अन्तर्गत है जिसकी एक शाखा शाक्यवंशी हैं–महाराज चन्द्रगुप्त व अशोक इस ही प्रसिद्ध कुल में पैदा हुये हैं मुरावों का लघुतमरूप 'मोरी' है। जो चहुवाणों की एक खांप है।

४ मिस्टर बी० सिंह ने अपने ग्रन्थ में 'मोरी' क्षत्रिय वर्ण का एक उपभेद माना है। * यह मोरी शब्द मुराव का लघुतम रूप है।

इस ही विषय में पृष्ठ २४२ में लिखा है कि मौर्य चन्द्र गुप्त ने नन्दवंश को नाश किया।

५ Colonel Mr. James Todd कालोनियल मिस्टर जेम्स टाड ने अपने ग्रन्थ Annals and Antiquities of Rajasthan राजस्थान इतिहास परिशिष्ट पृ० १४८ में लिखा है कि तक्षक वंश के चन्द्रगुप्त मोरीवंश से चौथी वंशावलि का आरम्भ होता है इस वंश में दश राजा हुये जिनका राज्य १३७ वर्ष रहा।

इस ही की पुष्टि में हमने शास्त्र प्रमाण भी इस ही ग्रन्थ में लिखे हैं।

---

* See K, Vans P. 186

वर्ण परिचय

किसी किसी आधुनिक ग्रन्थकार के लेख को देखकर लोगों को मौर्य्यवंशियों के क्षत्रियत्व पर ही सन्देह हो जाता है क्योंकि कहा जाता है कि "चन्द्रगुप्त मूरा नाम्नी नाइन के पेट से पैदा हुआ था अतएव विद्वानों ने चन्द्रगुप्त को 'वृषल' कहकर सम्बोधन किया था" परन्तु यह ठीक नहीं क्योंकि जैसा पहले दिखलाया जा चुका है चन्द्रगुप्त तो चित्रवती भूंसी के राजा की लड़की का लड़का था जो क्षत्रिय पुत्री थी। *

इस ही के सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक विद्वान् ऐसा लिखते हैं कि:—

A dwij of Champapuri presented him a daughter. It was foretold that she would be the wife of a great king and a mother of universal monarch, the father made the Present with a view to help the prophecy. The immediate fruit of this presentation did not however prove satisfactory. Immurred in the palace, she was through the jelousy Princesses of the Zenana doomed to menial service. Among other low occupations she was ordered to acquire the art of a barbar, whereby she was told, she will gain the good will of the king. When well proficient in the art, she was ordered by the Princesses to go and shave the king. She did so and acquitted her so well the king offered to grant her any boon she wished. She prayed for his society, but the king denounced her on account of being of the low caste of a barbar. She explained that she was only acting the part of a barbar, by order of the Princesses of the Palace, but she was a Rajput by

* देखो चन्द्रगुप्त का 'जीवन चरित्र' छापा लाहौर

birth, and had been presented to the king expressly with a view to his marrying her. The king thus reminded of her history granted her wish and made her the chief queen of the Palace.

भा०—चम्पापुरी के एक द्विज (राजपूत) के एक सुन्दरी लड़की थी उस की जन्म पत्री के ग्रहों को देख कर ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की कि "यह लड़की राजा की रानी तथा चक्रवर्ती राजा की माता होगी" अतएव उस कन्या के पिता ने उस छोटी लड़की को ही चन्द्रगुप्त के पिता को भेंट कर दी ज्योंही वह लड़की राज महलों में प्रवेश की गई त्योंही वहां की रानियें नाना प्रकार से उस से बैर भाव व ईर्ष्या द्वेष करने लगीं क्योंकि वह भेंट स्वरूप ही आई थी अतएव छोटी अवस्था की होने के कारण उस से दास कर्म सिर चोटी व बालकों की हजामत आदि आदि नाइयों के से काम कराये जाने लगे ज्योंही वह कुछ बड़ी व समझदार हुई उसे रानियों ने राजा की हजामत व धार्मिक सेवा चाकरी द्वारा राजा को प्रसन्न करके रानी समतुल्य पद्क प्राप्त करने की आज्ञा दी उस समय के राजा आज कल के जैसे नहीं थे किन्तु धर्मात्मा थे अतः उस युवती की उस सेवा चाकरी पर प्रसन्न होकर राजा ने उस से कहा क्या चाहती हो ? इस पर वह बोली कि भगवन् ! "मैं रानियों के समतुल्य मानी जाऊं" इस पर राजाने उससे कहा कि "तुम नाई की लड़की हो हम तुम्हें रानी नहीं बना सक्ते" । इस पर उसने अपना पुराना वृत्तान्त राजा को याद दिलाते हुये कहा कि "सरकार मैं राजपुत्री हूं नाई पने का काम तो रनवास की रानियों की आज्ञा से करती थी और मेरे पिता ने मुझे आप की रानी बनाने के निमित्त ही दी थी" राजा पुराने वृत्तान्त को स्मरण कर अपनी प्रतिज्ञानुसार उसे सन्मान पद्क देकर अपनी महारानी बनाली ।

इस आशय के अनुसार यदि चन्द्रगुप्त की मा को एक विद्वान् ने नाइन लिख दिया तो सब ही ने उस की पुनरावृत्ति (Repeatition) कर के देखा देखी अन्यों ने भी भूल की । और स्त्रियों का स्वभाव ही जलैतन होता है अतएव यदि अपनी सौक होने वाली से रानियों ने डाह करके कुछ काल उससे दास कर्म व नाई का काम करा लिया तो इस से चन्द्रगुप्त की माता नाइन नहीं हो सकती क्योंकि जन्म से तो वह राजपूत

कन्या थी। फिर भी हमारे निश्चित् अन्वेषण के अनुसार तो चन्द्रगुप्त चित्रवती के पुत्र थे और सुन्दरी जिसे किसी २ ने भ्रमवश मूरा नाइन लिखा है वह तो चन्द्रगुप्त की धाय व रक्षिका थी।

प्रश्न—क्या चन्द्रगुप्त शूद्र वर्णी था?

कुतर्की लोग किसी के ऐश्वर्य्य को न देख सक कर ईर्ष्या द्वेष द्वारा 'काक वृत्तिवत्' दोष देखा करते हैं तदनुसार लोगों का कहना है कि चन्द्रगुप्त के लिये 'वृषल' शब्द का प्रयोग नाटकों में मिलता है इस से चन्द्रगुप्त मौर्य्य शूद्र थे न कि क्षत्रिय यथा:—

१—भो! वृषल तेन किं कृतम्।

मु० रा० ना० अ० ३ पृ० १७६

२—नृपति करोन्मौर्य्यं वृषलम् ॥११॥

मु० रा० ना० अ० ३ पृ० १५७

३—वृषलो मां द्रष्टुमिच्छति।

मु० रा० ना० अ० ३ पृ० १६२

४—अथ क्व वृषलः।

मु० रा० ना० अ० ३ पृ० १६३

५—वृषल किमर्थं वयमाहूताः।

मु० रा० ना० अ० ३ पृ० १६४

इस तरह कई पाठ ऐसे मिलते हैं कि जहां चन्द्रगुप्त मौर्य्य को 'वृषल' शूद्र कहकर सम्बोधन किया गया है।

उत्तर—परन्तु यह ठीक नहीं, नाटकों के वाक्य व प्रहसन युक्त गाथायें, कोई सत्य सिद्धान्त नहीं होती हैं, नाटक व उपन्यासों में अणुमात्र वार्ता को पर्वतवत् व पर्वतवत् वार्ता को अणुवत दिखला देते हैं, कवि लोग उपमालङ्कार व प्रशंसा प्रकरण में कुछ की कुछ वार्ता को कुछ के कुछ रूप में दिखला देते हैं इसलिये यह वार्ता प्रमाणिक नहीं कही जा सक्ती।

वृषल शब्द का अर्थ शूद्र भी होता है तथा मेदनी कोष में वृषल शब्द का अर्थ "वाजी" भी लिखा है तथा "चन्द्रगुप्तराजः" ऐसा अर्थ किया है जिस का अर्थ ऐसा होता है कि राजपूत चन्द्रगुप्त याने क्षत्रिय वंशी चन्द्रगुप्त ऐसा होता है ।

जटाधर कोष में 'वृषल' शब्द का अर्थ 'अधार्मिकः' ऐसा किया है इस से सिद्ध होता है कि चन्द्रगुप्त शूद्र नहीं था। धार्मिक व अधार्मिक होना चारों वर्णों का गुण विशेष है न कि यह वर्ण बदलने का हेतु हो सकता है, अधार्मिक कहे जाने से कोई भी शूद्र नहीं हो सकता। और फिर भी नाटक व प्रहसन युक्त वाक्यों में कहा जाना कुछ प्रभाव नहीं रखता और वृषल शब्द का अर्थ केवल शूद्र ही नहीं होता है किन्तु " धर्मत्यागी " ऐसा अर्थ समझना चाहिये यथाः—

वृषोहि भगवान् धर्म्मस्तस्य यः कुरुते ह्यलम् ।
वृषलं तं विदुर्देवास्तस्माद्धर्म्मं न लोपयेत् ॥

श० क० पृ० ४८६

भावार्थः—धर्म के लोप करने वाले को विद्वान् वृषल कहते हैं इसलिये धर्मका लोप न करे। यह वृषलत्व संज्ञा आज भारतवर्ष में सब की हो सक्ती है क्योंकि आज भारत में एक मत नहीं किन्तु हजारों मत हैं अतएव एक के सिद्धान्त के विरुद्ध एक दूसरा होने के कारण एक दूसरे को वृषल कह सक्ते हैं अतएव चन्द्रगुप्त ब्राह्म धर्म को छोड़ कर बौद्ध धर्मावलम्बी हो गये थे अतः यदि चद्रगुप्त को ब्राह्मणों ने नाटकों में धर्मलोपक (वृषल) लिखदिया तो इस से चन्द्रगुप्त का वर्ण शूद्र नहीं हो सक्ता क्योंकि चन्द्रगुप्त के सिद्धान्त के अनुसार ब्राह्मधर्मी [वैदिक धर्म्मी] भी वृषल कहे जा सक्ते हैं ।

लिखा हैः—

अतः सिंहासनं योग्य पार्थिव उपसृत्य । विजयतां वृषलः

इस वृषल शब्द का अर्थ वैशाखदत्त द्वारा विरचित मुद्राराक्षस नाटक की ढुंढीराजीय टीका के फुटनोट पृष्ठ १६४ में "देव"

अर्थ किया है इससे प्रतीत होता है कि यह 'वृषल' शब्द मौर्य चन्द्रगुप्त के लिये देव अर्थ में उपयोग किया गया है अतएव सिद्ध होता है कि यदि चन्द्रगुप्त मौर्य्य शूद्रवर्णी होते तो 'देव' का प्रयोग कैसे किया जाता ? अथवा चन्द्रगुप्त को व्यङ्गरूप वाक्यों में वृषल कहा है सो कुछ हानि नहीं।

साहित्याचार्य्य पं० विशेश्वरनाथ जी ने लिखा है कि:—

"बौद्ध या जैन मतानुयायी होने के कारण ही पुराण आदि में इनको शूद्र लिख दिया होगा।"

भा० प्रा० रा० पृष्ट १५२

तथा— "चाणक्य चन्द्रगुप्त को 'वृषल' कह कर पुकारा करता था" इन कथाओं के विषय में विद्वानों का अनुमान है कि मौर्य्य वंशियों के बौद्ध हो जाने के कारण ब्राह्मण धर्म को बहुत कुछ हानि उठानी पड़ी थी इसी कारण उन लोगों ने मौर्य्यों को पतित और शूद्र प्रसिद्ध करने के लिये उक्त कथाओं की सृष्टि कर ली और उन्हें शूद्रा की सन्तान लिख मारी।

भा० प्रा० रा० पृ० १७६।

हमारी सम्मति में ऐसा होना सम्भव भी है।

लिखा है:—

योगानन्दे यशः शेषे पूर्वनन्द सुतस्ततः।
चन्द्रगुप्तः कृतो राज्ये चाणक्येन महौजसा ॥१॥
वंशे विशाल वंशामृषीणा मिव भूयसाम्।
अप्रति ग्राहकाणां यो बभूव भुविविश्रुतः ॥२॥
जातवेदा इवार्चिष्मान्वेदान्वेद विदांवरः।
योधीतवान्सुचतुरश्चतुरोप्येक वेदवत् ॥३॥

मु० रा० पृ० ५३

अर्थः—नन्द के पुत्र योगानन्द होने पर महा पराक्रमी चाणक्य सहित चन्द्रगुप्त राज्य करने लगा ॥ १ ॥ वह चन्द्रगुप्त विशाल वंशियों की गणना में बड़े महर्षियों के समान पृथ्वी पर विख्यात

हुआ ॥ २ ॥ वह चन्द्रगुप्त अग्नि के समान तेज वाला वेद वेत्ताओं में श्रेष्ठ ने वेद वेदाङ्ग पढ़े ॥ ३ ॥

इन प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध होता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य उच्च क्षत्रिय वंशी था अन्यथा यदि शूद्र वर्णी होता तो वह वेद वेदाङ्ग का जानने वाला कैसे हुआ क्योंकि शूद्र वेद पढ़ ही नहीं सक्ता है। क्योंकि जब 'वेद वेत्तावों में श्रेष्ठ' की उपाधि उस को मिली है तब वह शूद्र कैसे ? और जब चन्द्रगुप्त को 'विशाल वंशी' ऋषिवत् लिखा प्रमाण मिलता है तब शूद्र वर्ण को ऐसा कब लिख सक्ते हैं।

अब प्रश्न ऐसा होता है कि जब चन्द्रगुप्त वेद वेदाङ्गों का जानने वाला था तो उसे वृषल क्यों कहा गया ?

उत्तरः—

चन्द्रगुप्त के समय देश की कैसी स्थिती थी? जातक कथाओं से पता लगता है कि उस समय अछूत जातियों के साथ बड़ा बुरा बर्ताव किया जाता था तेर मेर व ऊंच नीच के भावों ने ब्राह्मणों के हृदयों में बहुत स्थान पा लिया था मनुष्य जाति के साथ समान व्यवहार, समान भाव, परस्पर मैत्री आदि उठ कर हम बड़े पूजनीय और सर्वोच्च हैं तथा सम्पूर्ण संसार नीच और घृणायुक्त है आदि आदि

'चित्त संभूत जातक' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जब ब्राह्मण और वैश्य वंश की दो स्त्रियें नगर के फाटक से निकल रहीं थीं तब उन्हें रास्ते में दो चंडाल दिखाई पड़े, चंडाल का दर्शन उन्होंने बड़ा अशकुन समझा और वे घर को लौट आईं। घर आ कर उन्हों ने इस दर्शन के पाप को मिटाने को अपनी आँखें धो डालीं। इस के पश्चात् लोगों ने उन चण्डालों को खूब पीटा और उन की खूब दुर्गति की।

मातंग जातक तथा सतधर्म जातक ग्रन्थों से भी पता चलता है कि चन्द्रगुप्त के पूर्व अछूत जातियों के साथ अमानुषी अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता था अतः वेदवेदाङ्गों के ज्ञाता चन्द्रगुप्त मौर्य्य के हृदय में इस सामाजिक अन्याय के प्रति अवश्य घृणा का भाव उत्पन्न हुआ होगा इस ही अन्याय को दूर करने के लिये ऊंच

नीच के भेद को मिटाने के लिये तथा अपनी प्रजा को सब जातियों के लिये समान भाव व समान अधिकारों का द्वार खोलने को वह बौद्ध होगया अतएव ब्राह्मणों ने जल भुंज कर चन्द्रगुप्त को 'वृषल' कहडाला ऐसा निश्चय होता है और निष्पक्ष विद्वानों का भी ऐसा ही मत है।

मुरावों का दौर दौरा

आज कल के फ़र्रुख़ाबाद के समीप मौर्य्य वंश के अनेकों प्राचीन स्थानों व तहां के शिला लेखों से पता चलता है कि एक समय यहां मुरावों के बड़े दौर दौरे थे क्योंकि फ़र्रुख़ाबाद के समीप व क़ायमगंज के नीचे बूढी गंगा के किनारे पर की पहाड़ी पर 'मुंडोल' एक, ग्राम है जो शुद्ध शब्द "मौर्योल" का बिगड़ा हुआ रूप है अर्थात् मौर्य+ओल के संयोग से 'मौर्योल' बनता है जिस का अर्थ मौर्य-वंश का समुदाय, मुरावों का गिरोह ऐसा होता है।

फ़र्रुख़ाबाद से दो मील बंगार नदी के किनारे दक्षिण की ओर मोरास एक ग्राम है जो 'मौर्यवास' शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप प्रतीत होता है, यह भी दो शब्दों के मेल से बना है अर्थात् मौर्य+वास=मौर्यवास जिस का अर्थ मौर्य्य वंश का वासस्थान व मुरावों का निवास ऐसा होता है।

तीसरा प्राचीन ग्राम 'मोरहाटी' है जो "मौर्य–हाटी" का बिगड़ कर बना प्रतीत होता है जिस का अर्थ 'मुरावों की हाट, ऐसा होता है फ़र्रुख़ाबाद व मैनपुरी जिलों की सीमाओं के मध्य 'मुरावलि' एक प्राचीन स्थान है जो मौर्य+अवलि मौर्यावलि शुद्ध शब्द का बिगड़ कर बना जान पड़ता है जिस का अर्थ 'मुरावों की बेल" ऐसा होता है। अर्थात् जहां बेलों की तरह से मुराव वंश खूब फैला हुआ था तहां के स्थान को "मौर्यावलि" कहा गया।

फर्रुक्खाबाद के समीप ही संकीसा एक प्राचीन स्थान है जहां मुरावों के पूर्वज राजा 'शाक्य' ने तपस्या की थी वही राजा शाक्य विद्वानों द्वारा शाक्य मुनि कहे जाकर सम्बोधन किये गये हैं और उन्हीं की सन्तान आजकल शाक्यवंशी मुराव याने 'सकसेना' मुरावों का एक भेद है। यहां राजा शाक्य मुनि का आश्रम था।

मेवाड़ राज्यान्तर्गत चित्तौड़ भी मौर्य्य वंशजों का बसाया हुआ है इस ही के समीप चन्द्रगुप्त की "मौर्य्ययान" शाला थी जहां के कारखाने Work shop में मौर्य्ययान बनते थे यहां ही मौर्य्य राजघराना विशेष रूप से रहता था और यह स्थान 'मौर्ययान' के नाम से प्रसिद्ध था जो आजकल "मोरवन" कहाता है इसके विषय में Colonel James Todd अपने ग्रन्थ के पृष्ठ १४६८ में ऐसा लिखते हैं:—

Morwun has some claims to antiquity, it derives its appelation from the mori tribe who ruled here before they obtained Chettore etc. etc.

Extract of Todd's Antiquitty of Rajastan English Pages 1468. 1470, 1482 and 1483.

(कर्नल जेम्स टांड साहब के "राज्यस्थान अंग्रेज़ी के पृष्ठ १४६८, १४७०, १४८२ और १४८३ का सारांश)

मोरवन मेवाड़ की सीमा पर एक ग्राम है गांव भर की पञ्चायत एक बरगद के नीचे मेरी प्रशंसा कर रही थी जब मैं वहां पहुंचा तो सब ने बड़े हर्ष से मेरा स्वागत किया और मेरे कुशल प्रश्न पर उत्तर दिया, "खुश हैं कम्पनी साहेब के प्रताप से" मोरवन नाम को एक परगना है इस परगने की मालगुजारी अनुमान सात हजार रुपये है इस ग्राम का स्थान रमणीक है ऊंची २ पहाड़ियों पर प्रकृति ने विचित्रमय नवीन से नवीन सुन्दर दृश्य रचे हैं पश्चिम की ओर एक विचित्र तालाव है जिस के तट पर इमली के वृक्ष शोभायमान हैं। भूमि उपजाऊ है और जल २५ फीट नीचे बहुतायत से पाया जाता है। परन्तु शोक है मनुष्यों की कमी है सब ओर उजाड़ और नष्ट भ्रष्टता है लम्बी लम्बी घास व पलाश के पेड़ ही दिखाई देते हैं पैदावार बहुत ही कम है।

मोरवन एक प्राचीन ग्राम है जिस के ऐतिहासिक दृश्यों से निश्चय होता है कि इस का यह नाम मोरीवंश के कारण पड़ा है। चित्तौड़ पाने से पहिले यहां मौरीवंशी (मौर्य्य वंशो) राज्य करते थे, चित्रांग मोरी के गढ़ के पुराने खंडहर अब तक विद्यमान हैं। प्रमार वंशी महाराजा धार का चित्रांग जागीरदार था उस की

जागीर में मोरवन व अन्य उस के समीपी ग्राम थे। एक दिन एक कृषक यहां खेत जोत रहा था तो अचानक हल का फाला किसी सख्त चीज से टकरा कर वह पीला पीला सोने का होगया इस से उसे बड़ा आश्चर्य्य हुआ कि लोहे का फाला सोने का कैसे होगया। वह झट पट उस पारस को उठा कर अपने स्वामी चित्रांग के पास ले गया, तब चित्रांग ने पारस प्राप्त कर के चित्तोड़ को अपने आधीन कर के वहां एक विशाल किला बनाया जो आज कल चित्तौड़गढ़ कहाता है।

धूलकोट या मोरीपत्तन (मौर्यपतन) आज कल के मोरवन के पश्चिम में बताया जाता है जो यहां के निवासियों के कुकर्तव्य के कारण अग्नि में भस्म होगया माना जाता है अर्थात् वहां एक तपस्वी ऋषि रहते थे उन को मौर्यवंशियों ने मूलियों का टोकरा बाजार में लेजा कर बेचने को विवश किया इस से उस के श्राप से यह स्थान जलके भस्म हो कर निरा बन रह गया तब से 'मौर्यथान' केवल 'मोरवन' कहा जाने लगा क्योंकि इस से पहिले जितना वह प्रफुल्लित व उन्नत दशा में था उतना ही वह जल जला कर नष्ट भ्रष्ट हो के निरा बन रह गया जो अब तक मोरवन के नाम से एक छोटा सा ग्राम चला आ रहा है।

यह आख्यायिका २॥ ढाई हज़ार वर्ष पहिले की इस देश की स्थिति बतलाने के लिये एक महत्व पूर्ण विवरण है अर्थात् जो लोग कहते हैं कि आलू गोभी और मूली पहिले भारतवर्ष में नहीं होती थी किन्तु अमेरिका से सौ दोसौ वर्ष पहिले से आई हैं उन्हें इस से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

जिन अँग्रेज़ी विद्वानों ने लिखा है कि "मूली की खेती के कारण मुराव नाम पड़ा है उन्हें भी समझना चाहिये कि मुराव जाति के पहिले भी इस देश में मूली की खेती होती थी तब मूली से मुराव होना मानना भ्रमपूर्ण वार्ता है।

मोरवन को तीन मन्दिरों का अभिमान है जिन में से एक शेषनाग जी का मन्दिर है जो बौद्धकाल का है और चन्द्रगुप्त भी

बौद्ध धर्मी थे । पहिले यहां नागाधिपति को इस मन्दिर में केशर चढ़ाई जाती थी पर अब चन्दन ही चढ़ाया जाता है जोकि मेवाड़ में पैदा होता है ।

मोरवन से पांच मील की दूरी पर दक्षिण पश्चिम उनेर एक स्थान है जहां एक शिला लेख का पता पा कर मैंने अपने गुरू को वहां नकल करने को सवारी पर भेजा यह मन्दिर आधुनिक था जिस में मुरावों की ओर से ब्राह्मणों को उमेर की भूमि दानकी फिर पुष्टि की गई थी, यह पत्थर चतुर्भुज के मन्दिर में था जिसे राना संग्राम सिंह ने विक्रम संवत् १५७० में बनवाया था और ठाकुर के भोग के लिये भूमि आदि की जीविका लगादी थी । इस दान पत्र की पुष्टि में राना जगतसिंह ने सम्वत् १७९१ में एक शपथ बढ़ा दी थी जिस से कभी कोई भूमि को न हरे ।

मौर्य्य राज्य काल

चन्द्रगुप्त मौर्य्य का राज्य काल कौनसा था इस का अन्वेषण करने से पता चलता है कि:—

हाथी-गुंफा (उदयगिरी उड़ीसा) में कलिंग के जैन राजा खारवेल का एक शिला लेख है उस में लिखा है कि:—

पनंतरिय सठि वस सते राजमुरिय काले वेछिने च चोयठ अगसति कुतरियं ।

आर्किओलाजीकल रिपोर्ट १९०५-१९०६ ।

इस से इस शिला लेख द्वारा मौर्य्य सम्वत् १६५ निकलता है ईस्वी सन् से ३२३ वर्ष व विक्रम सम्वत् से २६६ वर्ष पूर्व अर्थात् ईस्वी सन् १९२४ तथा विक्रम सम्वत् १९८१ से २२४७ वर्ष पूर्व बादशाह सिकन्दर भारत पर चढ़ाई कर के लौटते समय बेबीलोन (बगदाद) के पास वाले नगर में ज्वराक्रान्त हो इस असार संसार से चल बसा था तब उस के राज्य में बड़ी गड़बड़ी मची, पंजाब आदि देशों में यवनशासन दूर कर के स्वाधीन होने की चेष्टा करने लगे इस ही समय की छीना झपटी में मौर्य्य वंशी चन्द्रगुप्त बलवाइयों का मुखिया होगया और अन्त में धीरे धीरे भारत का महान प्रतापी राजा बन बैठा ।

ग्रीक लेखकों के लेखों से पता चलता है कि ईस्वी सन् से ३२५ या ३२६ वर्ष पूर्व सिकन्दर पंजाब फतह कर के जा रहा था तब नवयुवक चन्द्रगुप्त उस से मिला था और कई दिन तक उस के साथ भी रहा फिर वह उन के पास से चला आया।

(प्लुटार्क का अलेकजेन्डर चेप्टर ६२)

अधिकार प्राप्ति के समय चन्द्रगुप्त की आयु २५ वर्ष की बतलाई जाती है अतएव ईस्वी सन् १९२४ + ३२५=२२४९ + २५=२२७४ इस हिसाब से चन्द्रगुप्त मौर्य्य को पैदा हुये आज ईस्वी सन् १९२४ में २२७४ वर्ष हुये और राज्याशन पर आरूढ़ हुये आज २२४९ वर्ष हुये। पूर्वोक्त हिसाब से हम २२४७ वर्ष दिखला आये हैं दो वर्ष का फर्क अनुमान व युक्तिप्रमाण में होजाना सम्भव है।

इस शिला लेख विवरण तथा नीचे का ग्रीक लेख दोनों को मिलान करने से भी मौर्य्य चन्द्रगुप्त जन्म सम्वत् आज से २२५७ वर्ष पूर्व निकलता है जैसे ग्रीक लेखक के आधारानुसार ३२३ + १९२४= २२४७ वर्ष होते हैं तैसे ही ईस्वी सन् १९२४ में १६५ जोड़ने से २०८९ हुये और ३२३–१६५=१५८ हुये, ये ही १५८+२०८९=२२४७ हुये अतएव उपरोक्त आधारानुसार चन्द्रगुप्त को जन्मे आज ईस्वी सन् १९२४ में २२४७ वर्ष हुये।

भारत सम्राट् चन्द्रगुप्त की सेना में ६,००,००० पैदल छः लाख, ३०,००० तीस हज़ार सवार, ९,००० नौ हज़ार हाथी और असंख्य रथ थे। रथों में सारथी के अतिरिक्त दो योद्धा बैठा करते थे हाथी पर महावत के अतिरिक्त तीन सिपाही बैठा करते थे अतः ९००० × ४=३६००० छत्तीस हज़ार मनुष्य हाथी सेना में थे।

यद्यपि प्रसिद्ध इतिहासज्ञों ने असंख्य रथ लिखे हैं तथापि यदि कम से कम ११००० ग्यारह हज़ार रथ भी मानलिये जांगे तो ११०००+३=३३००० मनुष्य रथों में और यह सब सेना मिलाकर करीब ७,००,००० सात लाख सेना चन्द्रगुप्त के पास तय्यार रहती थी।

सम्राट् चन्द्रगुप्त ने अपने बल से अपना राज्य पृथ्वी तल के मुख्य २ सब ही भागों में फैलाया इन का अधिकार कौशल, मगध

तिरहुत, बनारस अङ्ग मगध, काबुल, कन्दहार, अफ़गानिस्तान, पंजाब युक्तप्रदेश, विहार, काठियावाड़, दक्षिण बंगाल आदि आदि स्थानों में इन का राज्य था।

करीब २४ वर्ष राज्य कर के भारत सम्राट् चन्द्रगुप्त ई० सन् से २९८ तथा विक्रम सम्वत् से २४१ वर्ष पूर्व ५० वर्ष की आयु के पूर्व ही स्वर्ग को सिधारा।

मुरावों के भेद

जाति अनुसन्धान कर्ताओं के मतानुसार काछी, कुइरी और मुराव ये तीनों जातियें एक ही हैं केवल नाम मात्र की भिन्नता समझनी चाहिये परन्तु लौकिक व्यवहारानुसार व कुछ कारण विशेषों से ये जातियें भिन्न भिन्न भी मानी जा सक्ती हैं अतएव ऐसा करना न करना लोकाचार पर निर्भर है इसलिये जैसा जिनका परस्पर व्यवहार हो वे लोग वैसी ही एक दूसरी जाति को समझे व मानें इसमें कोई हानि विशेष नहीं, हां एक रहने में व मानने में लाभ अवश्य है इसलिये इस विषय का निर्णय हम इन तीनों जाति के सभ्य सज्जनों की ही सम्मति पर छोड़ते हैं।

इन जातियों के भेद उपभेद प्रायः एक से ही हैं अतएव प्रत्येक जातिके साथ में इन्हीं भेदोंके विवरण को वार २ न लिख कर एक ही स्थान में एक ही जाति के साथ लिख दिया है तहां देख लेना चाहिये। हां भेद उपभेदों में जहां तहां भिन्नता है तहां तहां उनका विवरण उस ही जाति के साथ में दे दिया गया है।

भेदः—१ भदोरिया, २ भगत व भक्त, ३ हरदिया, ४ काछी, ५ कम्बोजिया, ६ शाक्यसेनी, ७ ठकुरिया, ८ तनराहा, ९ बागवान, १० वर्कइर, ११ मोठा, १२ भूकरवाल, १३ पूर्विया, १४ वहमन, १५ ढंकुलिया, १६ पछवाहा, १७ मालिकपुरी और १८ कलाफ़र तोड़। छोटे छोटे भेद सब लिखे जांय तो इस जाति के कुल २३२ भेद हैं।

भदौरिया—क्षत्रिय जाति की सूची में बड़े बड़े नामाङ्कित विद्वानों ने इस भेद को क्षत्रियों का एक भेद माना है. आगरे के जिले में भदावर एक पर्गना है तहां के राजपूतों ने विपत्तिवश कृषकों का सा खेतीबाड़ी का धन्दा कर के जीवरक्षार्थ मुरावों में आश्रय लेकर अपनी प्राण रक्षा की थी तब से मुरावों का एक भेद भदौरिया कहाया।

भगत व भक्त—इस देश में वाममार्ग व शाक्त सम्प्रदाय का विशेष जोर होने से देश में हत्याकांड व मांस मदिरा का प्रचार विशेष बढ़ा अतएव ऐसे ब्राह्म धर्म से चन्द्रगुप्त घृणा करके स्वयं बौद्ध धर्मी होगये और जिन मुराव राजपूतों ने बौद्ध धर्म स्वीकार न करके केवल हत्याकांड को त्यागने व मांस मदिरा न सेवन करने की शपथ ली थी वे भगत व भक्त नाम से सम्बोधन किये गये थे ऐसे मुराव समुदाय की भक्त व भगत संज्ञा हुई।

हरदिया—कई आधुनिक ग्रन्थकारों ने इसका भावार्थ यों लिखा है Growers of turmeric (Haldi) अर्थात् हल्दी की खेती करने से मुरावों का एक भेद हरदिया हुआ परन्तु यह बिलकुल ठीक नहीं, हल्दी की खेती हर जाति के लोग करते हैं तब इन ही का नाम हरदिया क्यों पड़ा? यथार्थ में इस नाम पड़ने का कारण यह है कि प्राचीनकाल में मुरावों के अग्रज एक हरित ऋषि हुये हैं इनके नाम से हरतिया कहाते कहाते 'हरदिया' कहाने लग गये, हरदिया समुदाय का गोत्र भी "हरतिया" है।

काछी—यह भी मुरावों का एक भेद है कछवाहा (कुशवाहा) शुद्ध शब्द का लघुतम रूप है जो कछवाहों की दीनावस्था के कारण से प्रसिद्ध हुआ इनका विवरण इस ही ग्रन्थ में अलग लिखा है तहां देख लेना।

कन्नोजिये—यह गोत्र सूचक क्षत्रियों की संज्ञा है अर्थात् कान्यकुब्ज देश में एक कान्यकुब्ज नामक गुरुकुल था जिसे कान्यकुब्ज मठ कहते थे तहां बड़े बड़े तपस्वी धर्माचार्य्य रहते थे तहां से जिन जिन राजपूतों ने गुरुदीक्षा ली वे वे राजपूत कान्यकुब्ज संज्ञक हुये। यह कान्यकुब्ज संज्ञा व भेद केवल काछी कोइरी और

मुराव इन तीन जातियों के साथ ही नहीं मिलेगा किन्तु अनेकों क्षत्रिय समुदायों में भी है।

शाक्य सेनी:—यह कोइरी, मुराव व काछी तीनों ही जातियों का एक भेद है अर्थात् जो राजपूत गण राजा शाक्य के वंशज थे वे 'शाक्यसेनी' कहाये थे जिसका अर्थ ऐसा होता है कि राजा शाक्य की सेना व राजा शाक्य की सन्तान अथवा शाक्य मुनि के वंशज वा यों कहिये कि शाक्य मुनि के सम्प्रदायी वा शिष्य गण शाक्यसेनी कहाते कहाते शकसेनी वा सकसेनी कहे जाने लगे। अन्वेषण से पता चलता है कि यह नाम भी कई राजपूत जातियों के भेदों में हैं जैसे सकसेना कायथ आदि।

राजा शाक्य कौन थे व किन किन नामों से यह राजा शाक्य पुकारे गये हैं तो इसका उत्तर यों मिलता है:—

सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथा गतः।
समन्त भद्रो भगवान्मारजिल्लोकजिज्जिनः ॥१३॥
षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः।
मुनीन्द्रःश्रीघनःशास्तामुनिःशाक्यमुनिस्तुयः ॥१४॥
स शाक्यसिंहः सर्वार्थ सिद्धः शौद्धोदनिश्च सः।
गौतमश्चार्क बन्धुश्च मायादेवी सुतश्चसः ॥१५॥

अ० को० पेज ४

अर्थः—सर्वज्ञ, सुगत, धर्मराज, तथागत, समन्तभद्र, भगवत्, मार्जित्, लोकजित्, जिन ॥१३॥ षड्भिज्ञ, दशबल, अद्वय, वादिन्, विनायक, मुनीन्द्र, श्रीघन, शास्तामुनिः ये बुद्ध के नाम हैं जिनसे बौद्ध धर्म प्रवृत्त हुआ है। शाक्यमुनि, शाक्यसिंह, सर्वार्थसिद्ध, शौद्धोदनि, गौतम अर्कबन्धु और मायादेवीसुत, ये सात नाम बौद्ध मत के प्रचारक शाक्यमुनि के हैं।

गौतम का अर्थ लिखते हुये हेमचन्द्र कोष में लिखा है कि:—

(गोतमोऽन्वयो वंश प्रवर्तको यस्य ।)
शाक्यमुनिः इति हेमचन्द्रः ।

श० क० पृ० ४५४

अर्थः—गोतम ऋषि जिसे शाक्यमुनि भी कहते हैं मुरावों के गोत्र प्रवर्तक ऋषि हुये ।

अँग्रेज़ ग्रन्थकारों ने लिखा हैः—

(१) सकसेना—यह भी काछी जाति का एक प्रसिद्ध भेद है लिखा हैः—

Who take their name from the famous Buddhist city of Sankisa on the boarders of Farrukhabad

(C. & F. P. 178.)

भा०—बौद्धों के प्रसिद्ध स्थान संकीसा से यह नाम पड़ा है जो फरुक्खाबाद के पास है ।

(२) पुनः—

From the old. town Sankisa on the Farrukhabad district.

Crookes C. & T. P. 106)

भा०—फरुक्खाबाद जिले के संकीसा स्थान से मुराव काछियों का यह एक भेद है । अंग्रेज विद्वानों ने इस स्थान को 'संकीसा' नाम से लिखा है परन्तु यथार्थ में इस स्थान का नाम 'शाक्येश' था जिसका अर्थ ऐसा होता है कि 'शाक्य वंशजों के स्वामी', यही शाक्येश शुद्ध शब्द बिगड़ कर जब एक अफ़सर ने संकीसा लिखा तो एक दूसरे की नकल करने वाले सब ही ने इसे संकीसा लिख दिया, इस ही में कपिल मुनि का आश्रम था जो आज कल 'कम्पिला' नाम से प्रसिद्ध है यहां ही महात्मा कपिलदेव तपस्या करते थे, यह स्थान फरुक्खाबाद से चलकर रुदाइन स्टेशन पर उतरना पड़ता है तहां से दो कोस की दूरी पर कम्पिला व उसके समीप शाक्येशा है । जहां परम पावनी श्री गंगा महारानी बहती है । प्राचीन कथा वार्ताओं तथा पुराणों में यह ही स्थान शाक्यपुरी करके लिखा गया है यहां ही पर परशुराम व सहस्रबाहु का युद्ध

हुआ था। इस नगर की प्राचीन बनावट के चिन्ह अभी तक १२ कोस की दूरी तक दिखाते हैं यहां के प्राचीनतम किले के फूटे टूटे खंडहर पहाड़ी स्वरूप में दो दो कोस की दूरी से दीखते हैं यहां थिशहरी देवी का मन्दिर है यहां ही महते मुरावों का राज्य था। यह स्थान ब्राह्मणों को दान दे दिया गया था इससे आज तक शाक्यवंशी काछी मुंराव लोग अभी तक इस स्थान का जल भी नहीं पीते हैं और कहते हैं कि दान की हुई वस्तु को वापिस ग्रहण कैसे करें ?

इस स्थान से दो तीन मील की दूरी पर शाक्यवंशी महाराज हमीरसिंह का खेड़ा है जो आजकल हमीरग्राम कहलाता है ये हमीरसिंह जी वही हैं जिनका राज्य एक समय चित्तौड़ में था जिनका 'हमीर हठ' प्रसिद्ध है। इनकी राज्यगद्दी पहिले १३६५ तक यहां ही संकीसा में थी। ये बड़े ही वीर क्षत्रिय हुये हैं। एक समय राणा हमीर यज्ञ करवा रहा था अतः दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने यह देखकर कि हमीर यज्ञ कार्य्य में संलग्न है युद्ध का ठीक ठीक प्रबंध न कर सकेगा अतः उस पर चढ़ाई की जावे तदनुसार अलाउद्दीन ने अपने भाई उगलखां को ८०००० सवारों के साथ रणथम्भोर पर भेजा इधर हमीर ने भी अपने सेनापति भीमसिंह व धर्मसिंह को भेजा युद्ध होने से हमीर की विजय हुई।

इसके कुछ काल पश्चात् हम्मीर का भाई भोज रुष्ट होकर दिल्लीश्वर अलाउद्दीन से जा मिला तब अलाउद्दीन ने एक लाख सवार देकर अपने भाई उगलखां को रणथम्भोर पर भेजा तब हम्मीर ने भी युद्धार्थ अपने प्रसिद्ध युद्ध नायक वीर महिमसाही जाजदेव, गर्भरुक, रतिपाल, तीचर मंगोल, रणमल्ल और वेचर आदि आदिकों को अलग अलग सेना के साथ युद्ध भूमि में भेजे, इन सभों ने एक दम उगलखां की फौजों को चारों ओर से जा घेरा और विजय प्राप्त की उगल खां अपनी बची बचाई फौज़ को लेकर दिल्ली की ओर वापिस लौट गया।

इस महापुरुष के क्षत्रियत्व के भाव स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं राणा हमीर अपने मातहत वीरों को अपने अन्त समय के लिये शिक्षा किया करते थे कि यदि किसी समय युद्ध में मैं मर

भी जाऊं तो मेरे मृतक शरीर को उठाते समय मेरी पीठ शत्रु को न दिखाना इस की प्रशंसा में उन के सम्बन्ध में संस्कृतज्ञ विद्वानों ने लिखा है:—

वयस्याः कोष्टारः प्रतिशृणुत बद्धोऽञ्जलिरियं ।
किमप्यां कांक्षामः चरति न यथा वीरचरितम् ॥
मृतानामस्माकं भवतु परवश्यं वपुरिदं ।
भवद्भिः कर्तव्यौ नहि नहि पराचीन चरणौ ॥

भा०—हे शृगालो ! युद्ध में मरने पर मेरा शरीर चाहे पराये के आधीन हो जाय पर तुम से यही प्रार्थना है कि तुम मरे हुये मेरे शरीर को अगाड़ी की तरफ ही खैंच कर लेजाना ताकि उस समय भी मेरे पैर पीछे की तरफ न हों ।

पाठक ! इस से इन महाराज की वीरता का अनुमान किया जा सकता है । इनका हठ भी बड़ा मशहूर था । फ्रांस देश के प्रतापी Nepolian Bonapart नेपोलियन बोनापार्ट की तरह यह भी जिस बात का विचार कर लेता था उसे कर के ही छोड़ता था । जब राणा हमीर ने युद्ध में मुसल्मानों को पराजय करके चित्तौड़ के किले की रक्षा की तब से इन के प्रति यह प्रसिद्ध है कि:—

सिंह गमन, सत्पुरुष वचन, कदली फल इकबार ।
तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार ॥

भा०—सिंह सिंहनी पर एक ही बार चढ़ता है सत्पुरुष लोग जो कहते हैं सो एक ही बार कह देते हैं, केला के जो फल लगने होते हैं वे एक ही बार लग जाते हैं, इस ही तरह लड़की के तेल भी एक ही बार चढ़ता है और हमीर हठ भी एक बार होता है अर्थात् ये सब बातें एक ही बार हुआ करती हैं न कि दूसरी बार ।

(देखो टाड०रा० खंड २ पृ० १७५)

शाक्य मुनि का नाम गौतम बुद्ध भी प्रसिद्ध हुआ महात्मा बुद्ध के जी० च० आगरे में सम्वत् १९६५ में छपे में लिखा है कि कपिलवस्तु याने कपिलवास में सूर्य्यवंशी क्षत्रियों की शाक्य शाखा का राज्य था ।

कर्नल टाड ने भाग २ के पृष्ठ १२३ में लिखा है कि मुसल्मान बादशाह कासिम ने भारतवर्ष के राजाओं को खूब सताया था अतः मौर्य्य वंशीय चित्तौड़नाथ मान राजा की सहायता करने के लिये जिन राजाओं ने तलवार खेंची थी उन का वर्णन उस समय के कवि चन्द्र भट्ट ने बहुत कुछ किया है। महाराजा मान ने मौर्य्य कुल में जन्म लिया था हिजरी पहिली सदी से लेकर चौथी सदी तक खलीफा लोगों के साथ मौर्य्य वंश वालों के प्रायः युद्ध होते रहे। खलीफा के अगुआ ईजिप्त कासिम ने मौर्य्य वंशी राजा मानसिंह महाराणा चित्तौड़ पर चढ़ाई की इस ही युद्ध से मौर्य्य वंशी वाप्पारावल की उन्नति का आरम्भ हुआ। वीर केशरी वाप्पा-रावल मानसिंह के भानजे थे जिन्हें चित्तोरनाथ मान ने अपना सामन्त (विश्वासपात्र सेनापति) नियत किया था और भरण पोषण के लिये उन्हें भूमि दी थी। विपत्ति वश येही मौर्य्यवंशी लोग मुराव, काछी और कोइरी कहे जाने लगे।

एक विद्वान् ने एच. सी. एस. नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ३७७ में लिखा है कि:—From the ancient town of Sankisa in Farrukhabad फर्रुखाबाद के प्राचीन नगर के कारण मुराव काछियों का नाम सकसेना पड़ा है।

शाक्य मुनि बौद्ध धर्मावलम्बी थे अतएव उन का व उन की सन्तान सकसेनियों का परमधर्म अहिंसा था तदनुसार आज कल फर्रुखाबाद की ओर सकसेने काछी जीव हत्यादि कर्म व मांसादि के भक्षण से दूर भागते हैं अतएव लिखा है:—

Who have permanantly settled in this country recognised the sacredness of the Shastras, and re-fraimed from eating forbidden food, they might be admitted into the Kshattriya clan under the name of Sakyaseni Rajputs.

भा०—जो इस मुल्क में सदा के लिये आ बसे हैं उन्होंने संस्कृत शास्त्रों के महत्व व पवित्रता को जानकर अभक्ष्य पदार्थों को खाने से दूर रहे वे शाक्यसेनी राजपूत कहाये।

आज विक्रम सम्वत् १६८१ * में २५४६ वर्ष पूर्व भारतवर्ष में अशान्ति का राज्य फैला हुआ था और भारतवासी अविद्यान्धकार में फंसे हुये थे चारों ओर बड़ा अन्धेर मच रहा था, वाममार्ग की देश में बड़ी प्रवृत्ति थी जीव हिंसा का बाजार भगवान के नाम पर बड़ा गर्म था अर्थात् बलि, होम, पूजा पाठ और यज्ञादिकों में हिंसा ने अपना बड़ा स्थान कर लिया था, नरमेध यज्ञ पशुयज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, गोमेध यज्ञ, गधे का यज्ञ करना, मेढ़ा मेढ़ी को मार कर बलि देना, सोमयज्ञ में बकरे का होम, गोमेध यज्ञ में गौ को मार कर होम विधि, यजमान की स्त्री के गुह्याङ्ग में घोड़े के लिंग प्रवेश का विधान आदि प्रचण्ड हिंसायें **वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति** आदि आदि कपोल कल्पित वाक्यों की रचना द्वारा देश में एक मात्र घोर अन्धकार छाया हुआ था, देश की दशा अस्त-व्यस्त हो रही थी, उस समय सब ओर लोगों के मन में नई नई शंकायें और नये विचार उत्पन्न हो रहे थे तत्कालीन प्रचलित धर्म में असन्तोष और अविश्वास फैला हुआ था। लोग नये नये भावों और विचारों से प्रेरित होकर परिवर्तन के लिये अति लालायित हो रहे थे, वे एक ऐसे पुरुष की प्रतीक्षा देख रहे थे जो अपने गम्भीर विचारों से उनके सन्देहों की निवृत्ति और उन की शङ्काओं का समाधान करे, जो अपने सदुपदेश से उन की आत्मिक पिपासा को शांत करे, जो उन के सामने एक ऊंचा आदर्श रखकर उनके जीवन को उन्नत करे जब देश में धर्म की ऐसी अस्त व्यस्त दशा हो जाती है तब किसी महापुरुष का जन्म व अवतार अवश्य हुआ करता है लिखा भी है:—

यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

श्रीमद्भ० अ० ४ श्लो० ७

भा०—भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे भारत ! जब २ धर्म की हानी होती और जब जब अधर्म बढ़ता है तब तब मैं शरीर धारण करता हूं। किस प्रयोजन के लिये ? तो भगवान् उत्तर देते हैं कि:—

* तदनुसार ईस्वी सन् १६२४

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥८॥

अर्थः—भक्तों की यानी श्रेष्ठ जनों की रक्षा के लिये तथा पापियों के नाश के लिये और धर्म की स्थापना के लिये मैं प्रत्येक काल में अवतार लेता हूं।

तदनुसार शाक्य वंश में महात्मा गौतम बुद्ध का अवतार हुआ जिन्होंने वाम मार्ग को नष्ट भ्रष्ट कर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक अहिंसा धर्म का प्रचार करते हुये वर्णाश्रम धर्म की आवश्यकता न जान कर एक वर्ण व मत स्थापित कर दिया। महात्मा बुद्ध ने देश में बिना रोक टोक सब में से सङ्कीर्ण व तेर मेर व छोटे बड़े के भावों को दूर कर लोगों में समान विद्या दान का प्रचार किया। महात्मा बुद्ध राज्य न करके विरागी हुये और धर्मप्रचार करने लगे उस समय शाक्य वंश के राजा चन्द्रगुप्त (मुराव) का राज्य था तब चन्द्रगुप्त का बेटा विन्दुसार * व विन्दुसार का पुत्र अशोक राज्याशनारूढ़ हुये जिन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार लंका, चीन, जापान और अमेरिका तक कराया।

शाक्यवंशियों के राज्य को विद्वानों ने पाञ्चाल राज्य नाम से भी लिखा है इसके दो भाग थे उत्तरी पांचाल और दक्षिणी पांचाल, उत्तरी पांचाल की राजधानी वर्तमान बदायु † और फरुक्खाबाद के बीच में वर्तमान काम्पिल्य नगर था जिसे आज कल 'कम्पिला' कहते हैं, जो कपिल मुनि का आश्रम बताया जाता है। भारतवर्ष में हिंसा कांड व धर्म की अस्तव्यस्त दशा देखकर राजा शाक्य विरागी होगये और संसार उद्धारार्थ शास्त्रार्थ व

---

* आजकल का बुलंदशहर राजा विन्दुसार का बसाया हुआ है।

† बदायु—यह ऐतिहासिक प्राचीन नगर है जो दो शब्द बुद्ध = बुद्धदेव और अयन = स्थान अर्थात् 'बुद्धदेव का स्थान' ऐसा अर्थ होता है इन्हीं दोनों शब्दों की व्याकरणानुसार दीर्घ सन्धी होने से बुद्ध + अयन = बुद्धायन ऐसा रूप हुआ जिस का बिगड़ कर बुद्धायुं कहाते कहाते आज कल का 'बदायु' प्रसिद्ध रूप बन गया।

उपदेश आरम्भ कर दिया * दक्षिण पाञ्चाल देश का मुख्य स्थान कन्नोज था। ये शाक्य वंशियों का राज्य प्रजातन्त्र राज्य था सब कार्य्य प्रजा की सम्मति से होते थे।

शाक्यों की जन सख्या १० लाख थी इन का देश नैपाल की तराई में पूर्व से पश्चिम को लग भग ५० मील और उत्तर से दक्खिन को ३० या ४० मील तक फैला हुआ था। उन की राजधानी कपिल वस्तु थी, उन के शासन का काम एक सभा Parliament के द्वारा होता था ऐसी सभा के स्थान Parliament House को संधागार कहते थे उस समय वृद्धे और जवान सब ही राज्य शासन में बराबर भाग लेते थे सब लोग मिल कर सभापति (राजा) का चुनाव करते थे।

ठकुरिया:—यह मुरावों का एक भेद है अर्थात् मौर्य्य काल में जो लोग 'भूमियें' याने छोटे छोटे जांगीरदार थे वे 'ठाकुर' कहाते थे उन्हीं टाकुरों के वंशज टाकुरिया व ठकुरिया कहाये आज क ल भी राजपूताने में ऐसे लोग टाकुर व ठाकुरिया ही कहाते हैं।

बागवान:—यह भी मुरावों का भेद है इस का अर्थ यह लगाया जाता है कि बागों (बगीचों) में काम करने वाले। पर यह अर्थ ठीक नहीं और ऐसा अर्थ करने वालों ने बड़ी भूल की यथार्थ में जिन लोगों के यहां बाग़ बगीचे थे वे बाग़वान कहाते थे।

पूरविये—पूर्व से आने से पूरविये, पश्चिम से पछवाहा आदि आदि।

अभूत् चन्द्र गुप्तो महानन्द पुत्रो ।
दिनेशस्यवंशोद्भव शूर सिंहः ॥
अयं पार्थिवः श्रेष्ठ धर्मावलम्बी ।
गुणज्ञः कृतज्ञः श्रुतिज्ञो विधिज्ञः ॥

भा०—सूर्य्यवंश में महानन्द के पुत्र अति पराक्रमी चन्द्रगुप्त नामक राजा हुये ये महाराज श्रेष्ठ धर्म का अवलम्बन करने वाले गुणज्ञ कृतज्ञ वेदशास्त्रवेत्ता और विधिज्ञ थे इन्हीं के वंश में आज कल की मुराव जाति है॥

---

* इन्हीं शाक्य मुनि को गौतम बुद्ध भी कहते हैं,।

मावी— यह मध्य भारत की एक क्षत्रिय जाति है इनका निकास स्थान बुंदेलखंड प्रदेशान्तर्गत महोबागढ़ से है, इनका आदि नाम बनाफुर ठाकुर था चन्देल चौहाण युद्ध के प्रसिद्ध वीर आल्हा ऊदल के वंश में से यह जाति है–यवनों से इस वंश का घमासान युद्ध होने से इन्होंने मुसल्मानों को कई वार बड़ी २ पराजय दी अन्त में मुसल्मानों के विशेष अत्याचार व जबरदस्ती मुसल्मान किये जाने के भय से ये लोग विपत्तिवश अपना देश महोबा छोड़ भागे और घूमते फिरते मध्य भारत में आ ठहरे इस वंश की वीरता के कारण इन्हें विद्वानों ने वनफोड़ नाम से सम्बोधन किया था जिसे सरकारी अफसरों ने सरकारी गज़ेटियर्स में वनफोर लिखा है कारण यह कि अँग्रेज़ी भाषा में 'र' और 'ड़' एक सा ही लिखा व पढ़ा जाता है इस नाम के पड़ने का कारण यह है कि आल्हा ऊदल ने बड़ी बड़ी वांकी लड़ाइयें लड़ लड़ कर और वन को फोड़ फोड़ कर छिपे हुये यवन शत्रुओं का नाश किया था तब दरबार में कवियों ने व विद्वज्जन मंडली ने इन्हें वनफोड़ ठाकुर की उपाधी दी थी। अन्त में युद्ध करते करते आल्हा ऊदल मारे गये और ये लोग महोवागढ़ से निकल कर मध्य भारत में आवसे तहां यह लोग महोविया कहाने लगे, यह ही महोविया वंश सैकड़ों वर्षों में बदलते बदलते 'महाविया' हुआ और (महाविया) से माविया व मावी व कहीं कहीं मायी नाम से प्रसिद्ध हुआ निश्चय होता है।

क्ष० वं० की सूचि में "मोउवा" क्षत्रिय वंश का एक भेद लिखा है (क्ष० वं० सू० पृ० २२६) इससे कई ऐतिहासिक विद्वानों ने हमें नोट कराया है कि 'मोउवा' का बिगड़ कर प्रचलित दशा में मावी व मायी प्रसिद्ध होगया है अतएव सैकड़ों वर्षों की उलट पुलट दशा व क्षत्रिय वर्ण पर विपत्ति पर विपत्तियें आने से इस विपत्तिग्रहस्त समुदाय ने अपने को महोविया व महोबी न कह कर केवल 'मावी' ही कह कहा कर प्राण रक्षा की थी।

जब मुसल्मान बादशाहों द्वारा महोवा का अन्तिम राजा मारा गया तब ये लोग जबरन मुसल्मान किये जाने लगे तब धर्म रक्षार्थ ये इधर उधर भाग निकले ये लोग चंदेलों के सामंत ९वीं शताब्दि से १४ वीं शताब्दि तक रहे हैं–महोबागढ़ चंदेलवंश का प्रधान पिछला राजा परमल था जो सन् ११८३ ईस्वी में दिल्ली

सम्राट् पृथिवी राज चौहाण से परास्त हुआ तब चंदेलों ने कालिंजर में अपनी राजधानी बनाई तब ईस्वी सन् १२४५ में शाहबुद्दीन गोरी के जनरल कुतबुद्दीन ने महोबा ले लिया तब से चन्देल कालिंजर में आ बसे इस प्रकार महोबा में ५०० वर्ष तक मुसल्मानों का राज्य रहा बनफोर ठाकुर कीर्तिसिंह जी के राज्य कालानन्तर मुसल्मानों के दुःख से यह लोग भाग निकलकर इधरउधर जा बसे और मावी कहे जाने लगे।

यह लोग महोवे से निकल कर कुछ तो जालून के आस पास आ बसे, कुछ दिल्ली की तलहटी में जा बसे कुछ मध्य भारत में आ बसे कुछ गढ़वाल की ओर चले गये।

इस क्षत्रिय जाति के बहुत से तो जबरन मुसल्मान कर लिये गये वे कहीं जुलाहे कहीं 'मोहर' आदि नामों से कहे व पुकारे जाने लगे क्योंकि इनकी खांपें व अल्ल अभी तक राजपूतों की सी हैं आचार विचार की रीति भांति भी बहुत सी राजपूतों से मिली जुली है यह नाम मात्र के मुसल्मान हैं।

जो लोग मुसल्मान न बने कुछ तो गढ़वाल की तराई में चले गये तहां यह लोग 'माइया ठाकुर' के नाम से प्रसिद्ध हुये और वहां से पीछे आकर बघेलखंड में आ बसे तहां ये अब तक माइया कहाते हैं।

कुछ लोग झांसी ओरछा तथा भोपाल की ओर चले गये और मावी नाम से ही प्रसिद्ध हैं।

और कुछ लोग मालवा प्रान्त में जाकर वहां भी मावी नाम से प्रसिद्ध हुये।

श्री भारतधर्म महामण्डल के महा० महो० पं० ज्वा० प्र० जी ने अपने ग्रन्थ जा० भा० के पृ० २१२ में 'माइया' क्षत्रिय जाति के भेदों में से एक भेद लिखा है ये ही लोग कहीं मावी व मायी कहे जाते हैं इस वंश के राम सिंह, केसर सिंह, दीपसिंह, धामसिंह और रामचन्द्र ये लोग 'सुखेत' नामक स्थान से निकल कर गढ़वाल प्रान्त में आ बसे थे तहां अनुमान ३०० वर्ष पूर्व वहां के राजा के Chief Military Officer फौजों पर उच्च पदाधिकारी हुये और सन्मान पाया था। आज कल ये ही लोग मावी व माथिया व माइया कहे जाते हैं, इन के उस प्रान्त में व्यवहार उच्च

अन्य राज कुल क्षत्रिय वंशजों केसे हैं ये लोग गढ़वाल प्रदेश में शुद्ध क्षत्रिय माने जाते हैं तैसे ही मध्यप्रदेश में भी जो लोग पढ़े लिखे उच्च पदस्थ हैं वे "ठाकुर साहब" कहे जाते हैं परन्तु इस के विपरीत जो विचारे ग़रीब व विद्याहीन हैं उन्हें उन की ग़रीबी के के कारण लोग कुछ और समझें तो यह उन का अज्ञान समझना चाहिये।

अन्य क्षत्रियों की अपेक्षा इन में मांस, मदिरा का प्रचार बहुत कम है और फिर भी विशेष रूप से इन में वैष्णव हैं और जाति प्रबन्ध द्वारा मांस, मदिरा को हटाते जाते हैं।

इस मावी जाति का कुल देव 'मनियादेव' है इस की मूर्ति महोबा में बनफूर राजपूतों में अभी भी पूजी जाती है इस ही अनुकरण को लेकर इस जाति ने देवालपुर में मन्दिर स्थापित किया है इस से इस जाति के बनाफोर होने का प्रमाण मिलता है।

अन्वेषण करने से पता चलता है कि सालवी जाति का व मावी जाति का धन्दा कपड़ा बुनने का एक ही है परन्तु अन्य कोई कोई रीत भांति में भेद है, इतिहासवेत्ता विद्वानों ने लिखा है कि यह जाति मांडवगढ़ की है। गुजरात से मारवाड़ के जालोर और गोडवाड़ के परगने में भी है ये लोग क्षत्रिय थे परन्तु परशुराम जी के भय से दूसरा काम ग्रहण कर लिया। पहिले ये लोग रेशम बुनते थे अब सूती कपड़ा बुनते हैं। परशुराम जी के क्षत्रिय संहार से डर कर ही इस जाति ने रेशम बुनने का काम ग्रहण किया था तब ही से इन्हें बांजा खत्री भी कहते हैं।

सालवी जाति

शाक्त सम्प्रदाय के हैं हिंगलाज देवी को पूजते हैं बहुत सी रीतियें भी इन में क्षत्रियों से मिलती जुलती सी हैं।

मावी जाति के रत्न एक मास्टर भीलचन्द नन्दराम जी हैं जिनके मार्फ़त मावी जाति की पंचायत ने २५१ प्रश्नों के उत्तर भिजवाये हैं। इन महाशय ने स्वजाति सेवा के अर्थ बहुत कुछ अपनी निजी हानि उठाई है और बड़ा परिश्रम किया है इसका फल भगवान् इन्हें दे यही मण्डलका आशीर्वाद है। (शेष भविष्य में)



भी जाऊं तो मेरे मृतक शरीर को उठाते समय मेरी पीठ शत्रु को न दिखाना इस की प्रशंसा में उन के सम्बन्ध में संस्कृतज्ञ विद्वानों ने लिखा है:—

वयस्याः कोष्टारः प्रतिशृणुत बद्धोऽञ्जलिरियं।
किमप्याकांक्षामः चरति न यथा वीरचरितम्॥
मृतानामस्माकं भवतु परवश्यं वपुरिदं।
भवद्भिः कर्तव्यौ नहि नहि पराचीन चरणौ॥

भा०—हे शृगालो! युद्ध में मरने पर मेरा शरीर चाहे पराये के आधीन हो जाय पर तुम से यही प्रार्थना है कि तुम मरे हुये मेरे शरीर को अगाड़ी की तरफ ही खैंच कर लेजाना ताकि उस समय भी मेरे पैर पीछे की तरफ न हों।

पाठक! इस से इन महाराज की वीरता का अनुमान किया जा सकता है। इनका हठ भी बड़ा मशहूर था। फ्रांस देश के प्रतापी Nepolian Bonapart नेपोलियन बोनापार्ट की तरह यह भी जिस बात का विचार कर लेता था उसे कर के ही छोड़ता था। जब राणा हमीर ने युद्ध में मुसल्मानों को पराजय करके चित्तौड़ के किले की रक्षा की तब से इन के प्रति यह प्रसिद्ध है कि:—

सिंह गमन, सत्पुरुष वचन, कदली फल इकबार।
तिरिया तेल हमीर हठ चढ़े न दूजी बार॥

भा०—सिंह सिंहनी पर एक ही बार चढ़ता है सत्पुरुष लोग जो कहते हैं सो एक ही बार कह देते हैं, केला के जो फल लगने होते हैं वे एक ही बार लग जाते हैं, इस ही तरह लड़की के तेल भी एक ही बार चढ़ता है और हमीर हठ भी एक बार होता है अर्थात् ये सब बातें एक ही बार हुआ करती हैं न कि दूसरी बार।
(देखो टाड०रा० खंड २ पृ० १७५)

शाक्य मुनि का नाम गौतम बुद्ध भी प्रसिद्ध हुआ महात्मा बुद्ध के जी० च० आगरे में सम्वत् १९६५ में छुपे में लिखा है कि कपिलवस्तु याने कपिलवास में सूर्य्यवंशी क्षत्रियों की शाक्य शाखा का राज्य था।

कर्नल टाड ने भाग २ के पृष्ठ १२३ में लिखा है कि मुसल्मान बादशाह कासिम ने भारतवर्ष के राजाओं को खूब सताया था अतः मौर्य्य वंशीय चित्तौड़नाथ मान राजा की सहायता करने के लिये जिन राजाओं ने तलवार खेंची थी उन का वर्णन उस समय के कवि चन्द्र भट्ट ने बहुत कुछ किया है। महाराजा मान ने मौर्य्य कुल में जन्म लिया था हिजरी पहिली सदी से लेकर चौथी सदी तक खलीफा लोगों के साथ मौर्य्य वंश वालों के प्रायः युद्ध होते रहे। खलीफा के अगुआ ईजिप्त कासिम ने मौर्य्य वंशी राजा मानसिंह महाराणा चित्तौड़ पर चढ़ाई की इस ही युद्ध से मौर्य्य वंशी बाप्पारावल की उन्नति का आरम्भ हुआ। वीर केशरी बाप्पा-रावल मानसिंह के भानजे थे जिन्हें चित्तोरनाथ मान ने अपना सामन्त (विश्वासपात्र सेनापति) नियत किया था और भरण पोषण के लिये उन्हें भूमि दी थी। विपत्ति वश येही मौर्य्यवंशी लोग मुराव, काछी और कोइरी कहे जाने लगे।

एक विद्वान् ने एच. सी. एस. नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ३७७ में लिखा है किः—From the ancient town of Sankisa in Farrukhabad फर्रुखाबाद के प्राचीन नगर के कारण मुराव काछियों का नाम सकसेना पड़ा है।

शाक्य मुनि बौद्ध धर्मावलम्बी थे अतएव उन का व उन की सन्तान सकसेनियों का परमधर्म अहिंसा था तदनुसार आज कल फर्रुखाबाद की ओर सकसेने काछी जीव हत्यादि कर्म व मांसादि के भक्षण से दूर भागते हैं अतएव लिखा हैः—

Who have permanantly settled in this country recognised the sacredness of the Shastras, and re-fraimed from eating forbidden food, they might be admitted into the Kshattriya clan under the name of Sakyaseni Rajputs.

भा०—जो इस मुल्क में सदा के लिये आ बसे हैं उन्होंने संस्कृत शास्त्रों के महत्व व पवित्रता को जानकर अभक्ष्य पदार्थों को खाने से दूर रहे वे शक्यसेनी राजपूत कहाये।

आज विक्रम सम्वत् १९८१ * में २५४६ वर्ष पूर्व भारतवर्ष में अशान्ति का राज्य फैला हुआ था और भारतवासी अविद्यान्धकार में फंसे हुये थे चारों ओर बड़ा अन्धेर मच रहा था, वाममार्ग की देश में बड़ी प्रवृत्ति थी जीव हिंसा का बाजार भगवान के नाम पर बड़ा गर्म था अर्थात् बलि, होम, पूजा पाठ और यज्ञादिकों में हिंसा ने अपना बड़ा स्थान कर लिया था, नरमेध यज्ञ पशुयज्ञ, अश्वमेध यज्ञ, गोमेध यज्ञ, गधे का यज्ञ करना, मेढ़ा मेढ़ी को मार कर बलि देना, सोमयज्ञ में बकरे का होम, गोमेध यज्ञ में गौ को मार कर होम विधि, यजमान की स्त्री के गुप्ताङ्ग में घोड़े के लिंग प्रवेश का विधान आदि प्रचण्ड हिंसायें **वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति** आदि आदि कपोल कल्पित वाक्यों की रचना द्वारा देश में एक मात्र घोर अन्धकार छाया हुआ था, देश की दशा अस्त-व्यस्त हो रही थी, उस समय सब ओर लोगों के मन में नई नई शंकायें और नये विचार उत्पन्न हो रहे थे तत्कालीन प्रचलित धर्म में असन्तोष और अविश्वास फैला हुआ था। लोग नये नये भावों और विचारों से प्रेरित होकर परिवर्तन के लिये अति लालायित हो रहे थे, वे एक ऐसे पुरुष की प्रतीक्षा देख रहे थे जो अपने गम्भीर विचारों से उनके सन्देहों की निवृत्ति और उन की शङ्काओं का समाधान करे, जो अपने सदुपदेश से उन की आत्मिक पिपासा को शांत करे, जो उन के सामने एक ऊंचा आदर्श रखकर उनके जीवन को उन्नत करे जब देश में धर्म की ऐसी अस्त व्यस्त दशा हो जाती है तब किसी महापुरुष का जन्म व अवतार अवश्य हुआ करता है लिखा भी है:—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

श्रीमद्भ० अ० ४ श्लो० ७

भा०—भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे भारत! जब २ धर्म की हानी होती और जब जब अधर्म बढ़ता है तब तब मैं शरीर धारण करता हूं। किस प्रयोजन के लिये? तो भगवान् उत्तर देते हैं कि:—

* तदनुसार ईस्वी सन् १९२४

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥८॥

अर्थः—भक्तों की यानी श्रेष्ठ जनों की रक्षा के लिये तथा पापियों के नाश के लिये और धर्म की स्थापना के लिये मैं प्रत्येक काल में अवतार लेता हूं।

तदनुसार शाक्य वंश में महात्मा गौतम बुद्ध का अवतार हुआ जिन्होंने वाम मार्ग को नष्ट भ्रष्ट कर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक अहिंसा धर्म का प्रचार करते हुये वर्णाश्रम धर्म की आवश्यकता न जान कर एक वर्ण व मत स्थापित कर दिया। महात्मा बुद्ध ने देश में विना रोक टोक सब में से सङ्कीर्ण व तेर मेर व छोटे वड़े के भावों को दूर कर लोगों में समान विद्या दान का प्रचार किया। महात्मा बुद्ध राज्य न करके विरागी हुये और धर्मप्रचार करने लगे उस समय शाक्य वंश के राजा चन्द्रगुप्त (मुराव) का राज्य था तब चन्द्रगुप्त का बेटा विन्दुसार * व विन्दुसार का पुत्र अशोक राज्याशनारूढ़ हुये जिन्होंने बौद्ध धर्म का प्रचार लंका, चीन, जापान और अमेरिका तक कराया।

शाक्यवंशियों के राज्य को विद्वानों ने पाञ्चाल राज्य नाम से भी लिखा है इसके दो भाग थे उत्तरी पांचाल और दक्षिणी पांचाल, उत्तरी पांचाल की राजधानी वर्तमान बंदायु † और फरुक्खाबाद के बीच में वर्तमान काम्पिल्य नगर था जिसे आज कल 'कम्पिला' कहते हैं, जो कपिल मुनि का आश्रम बताया जाता है। भारतवर्ष में हिंसा कांड व धर्म की अस्तव्यस्त दशा देखकर राजा शाक्य विरागी होगये और संसार उद्धारार्थ शास्त्रार्थ व

* आजकल का बुलंदशहर राजा विन्दुसार का बसाया हुआ है।

† बदायुं—यह ऐतिहासिक प्राचीन नगर है जो दो शब्द बुद्ध = बुद्धदेव और अयन = स्थान अर्थात् 'बुद्धदेव का स्थान' ऐसा अर्थ होता है इन्हीं दोनों शब्दों की व्याकरणानुसार दीर्घ सन्धी होने से बुद्ध + अयन = बुद्धायन ऐसा रूप हुआ जिस का विगड़ कर बुद्धायुं कहाते कहाते आज कल का 'बदायु' प्रसिद्ध रूप बन गया।

उपदेश आरम्भ कर दिया * दक्षिण पाञ्चाल देश का मुख्य स्थान कन्नोज था। ये शाक्य वंशियों का राज्य प्रजातन्त्र राज्य था सब कार्य्य प्रजा की सम्मति से होते थे।

शाक्यों की जन सख्या १० लाख थी इन का देश नैपाल की तराई में पूर्व से पश्चिम को लग भग ५० मील और उत्तर से दक्खिन को ३० या ४० मील तक फैला हुआ था। उन की राजधानी कपिल वस्तु थी, उन के शासन का काम एक सभा Parliament के द्वारा होता था ऐसी सभा के स्थान Parliament House को संथागार कहते थे उस समय बूढ़े और जवान सब ही राज्य शासन में बराबर भाग लेते थे सब लोग मिल कर सभापति (राजा) का चुनाव करते थे।

ठकुरिया:—यह मुरावों का एक भेद है अर्थात् मौर्य्य काल में जो लोग 'भूमियें' याने छोटे छोटे जांगीरदार थे वे 'ठाकुर' कहाते थे उन्हीं ठाकुरों के वंशज ठाकुरिया व ठकुरिया कहाये आज कल भी राजपूताने में ऐसे लोग ठाकुर व ठाकुरिया ही कहाते हैं।

वागवान:—यह भी मुरावों का भेद है इस का अर्थ यह लगाया जाता है कि वागों (वगीचों) में काम करने वाले। पर यह अर्थ ठीक नहीं और ऐसा अर्थ करने वालों ने बड़ी भूल की यथार्थ में जिन लोगों के यहां बाग वगीचे थे वे वागवान कहाते थे।

पूरविये—पूर्व से आने से पूरविये, पश्चिम से पछवाहा आदि आदि।

अभूत् चन्द्र गुप्तो महानन्द पुत्रो।
दिनेशस्यवंशोद्भव शूर सिंहः॥
अयं पार्थिवः श्रेष्ठ धर्मावलम्बी।
गुणज्ञः कृतज्ञः श्रुतिज्ञो विधिज्ञः॥

भा०—सूर्य्यवंश में महानन्द के पुत्र अति पराक्रमी चन्द्रगुप्त नामक राजा हुये थे महाराज श्रेष्ठ धर्म का अवलम्बन करने वाले गुणज्ञ कृतज्ञ वेदशास्त्रवेत्ता और विधिज्ञ थे इन्हीं के वंश में आज कल की मुराव जाति है॥

---

* इन्हीं शाक्य मुनि को गौतम बुद्ध भी कहते हैं।

मावी—यह मध्य भारत की एक क्षत्रिय जाति है इनका निकास स्थान बुंदेलखंड प्रदेशान्तर्गत महोबागढ़ से है,इनका आदि नाम बनाफुर ठाकुर था चन्देल चौहाण युद्ध के प्रसिद्ध वीर आल्हा ऊदल के वंश में से यह जाति है-यवनों से इस वंश का घमासान युद्ध होने से इन्होंने मुसल्मानों को कई वार वड़ी २ पराजय दी अन्त में मुसल्मानों के विशेष अत्याचार व जवरदस्ती मुसल्मान किये जाने के भय से ये लोग विपत्तिवश अपना देश महोबा छोड़ भागे और घूमते फिरते मध्य भारत में आ ठहरे इस वंश की वीरता के कारण इन्हें विद्वानों ने वनफोड़ नाम से सम्बोधन किया था जिसे सरकारी अफसरों ने सरकारी गज़ेटियर्स में वनफोर लिखा है कारण यह कि अँग्रेज़ी भाषा में 'र' और 'ड़' एक सा ही लिखा व पढ़ा जाता है इस नाम के पड़ने का कारण यह है कि आल्हा ऊदल ने वड़ी वड़ी वांकी लड़ाइयें लड़ लड़ कर और वन को फोड़ फोड़ कर छिपे हुये यवन शत्रुओं का नाश किया था तव दरवार में कवियों ने व विद्वज्जन मंडली ने इन्हें वनफोड़ ठाकुर की उपाधी दी थी। अन्त में युद्ध करते करते आल्हा ऊदल मारे गये और ये लोग महोवागढ़ से निकल कर मध्य भारत में आवसे तहां यह लोग महोविया कहाने लगे, यह ही महोविया वंश सैकड़ों वर्षों में वदलते वदलते 'महाविया' हुआ और (महाविया) से माविया व मावी व कहीं कहीं मायी नाम से प्रसिद्ध हुआ निश्चय होता है।

क्ष० वं० की सूचि में "मोउवा" क्षत्रिय वंश का एक भेद लिखा है (क्ष० वं० सू० पृ० २२६) इससे कई ऐतिहासिज्ञ विद्वानों ने हमें नोट कराया है कि 'मोउवा' का विगड़ कर प्रचलित दशा में मावी व मायी प्रसिद्ध होगया है अतएव सैकड़ों वर्षों की उलट पुलट दशा व क्षत्रिय वर्ण पर विपत्ति पर विपत्तियें आने से इस विपत्तिग्रहस्त समुदाय ने अपने को महोविया व महोवी न कह कर केवल 'मावी' ही कह कहा कर प्राण रक्षा की थी।

जब मुसल्मान वादशाहों द्वारा महोवा का अन्तिम राजा मारा गया तव ये लोग जवरन मुसल्मान किये जाने लगे तव धर्म रक्षार्थ ये इधर उधर भाग निकले ये लोग चंदेलों के सामंत ६वीं शताब्दि से १४ वीं शताब्दि तक रहे हैं-महोबागढ़ चंदेलवंश का प्रधान पिछला राजा परमल था जो सन् ११८२ ईस्वी में दिल्ली

सम्राट् पृथिवी राज चौहाण से परास्त हुआ तब चंदेलों ने कालिंजर में अपनी राजधानी बनाई तब ईस्वी सन् १२६५ में शाहबुद्दीन गोरी के जनरल कुतबुद्दीन ने महोवा ले लिया तब से चन्देल कालिंजर में आ बसे इस प्रकार महोवा में ५०० वर्ष तक मुसल्मानों का राज्य रहा बनफोर ठाकुर कोर्तिसिंह जी के राज्य कालानन्तर मुसल्मानों के दुःख से यह लोग भाग निकलकर इधरउधर जा बसे और मावी कहे जाने लगे।

यह लोग महोवे से निकल कर कुछ तो जालून के आस पास आ बसे, कुछ दिल्ली की तलहटी में आ बसे कुछ मध्य भारत में आ बसे कुछ गढ़वाल की ओर चले गये।

इस क्षत्रिय जाति के बहुत से तो जबरन मुसल्मान कर लिये गये थे कहीं जुलाहे कहीं 'मोहर' आदि नामों से कहे व पुकारे जाने लगे क्योंकि इनकी खांपें व अल्ल अभी तक राजपूतों की सी हैं आचार विचार की रीति भांति भी बहुत सी राजपूतों से मिली जुली है यह नाम मात्र के मुसल्मान हैं।

जो लोग मुसल्मान न बने कुछ तो गढ़वाल की तराई में चले गये तहां यह लोग 'माइया ठाकुर' के नाम से प्रसिद्ध हुये और वहां से पीछे आकर बघेलखंड में आ बसे तहां ये अब तक माइया कहाते हैं।

कुछ लोग झांसी ओरछा तथा भोपाल की ओर चले गये और मावी नाम से ही प्रसिद्ध हैं।

और कुछ लोग मालवा प्रान्त में जाकर वहां भी मावी नाम से प्रसिद्ध हुये।

श्री भारतधर्म महामण्डल के महा० महो० पं० ज्वा० प्र० जी ने अपने ग्रन्थ जा० भा० के पृ० २१२ में 'माइया' क्षत्रिय जाति के भेदों में से एक भेद लिखा है ये ही लोग कहीं मावी व मायी कहे जाते हैं इस वंश के राम सिंह, केसर सिंह, दीपसिंह, धामसिंह और रामचन्द्र ये लोग 'सुखेत' नामक स्थान से निकल कर गढ़वाल प्रान्त में आ बसे थे तहां अनुमान ३०० वर्ष पूर्व वहां के राजा के Chief Military Officer फौजों पर उच्च पदाधिकारी हुये और सन्मान पाया था। आज कल ये ही लोग मावी व माथिया व माइया कहे जाते हैं, इन के उस प्रान्त में व्यवहार उच्च

अन्य राज कुल क्षत्रिय वंशजों केसे हैं ये लोग गढ़वाल प्रदेश में शुद्ध क्षत्रिय माने जाते हैं तैसे ही मध्यप्रदेश में भी जो लोग पढ़े लिखे उच्च पदस्थ हैं वे "ठांकुर साहब" कहे जाते हैं परन्तु इस के विपरीत जो विचारे गरीब व विद्याहीन हैं उन्हें उन की गरीबी के के कारण लोग कुछ और समझें तो यह उन का अज्ञान समझना चाहिये ।

अन्य क्षत्रियों की अपेक्षा इन में मांस, मदिरा का प्रचार घहुत कम है और फिर भी विशेष रूप से इन में वैष्णव हैं और जाति प्रवन्ध द्वारा मांस, मदिरा को हटाते जाते हैं ।

इस मावी जाति का कुल देव 'मनियादेव' है इस की मूर्ति महोबा में बनफूर राजपूतों में अभी भी पूजी जाती है इस ही अनुकरण को लेकर इस जाति ने देवालपुर में मन्दिर स्थापित किया है इस से इस जाति के वनाफोर होने का प्रमाण मिलता है ।

अन्वेषण करने से पता चलता है कि सालवी जाति का व मावी जाति का धन्दा कपड़ा बुनने का एक ही है परन्तु अन्य कोई कोई रीत भांति में भेद है, इतिहासवेत्ता विद्वानों ने लिखा है कि यह जाति मांडवगढ़ की है । गुजरात से मारवाड़ के जालोर और गोडवाड़ के परगने में भी है ये लोग क्षत्रिय थे परन्तु परशुराम जी के भय से दूसरा काम ग्रहण कर लिया । पहिले ये लोग रेशम बुनते थे अव सूती कपड़ा बुनते हैं । परशुराम जी के क्षत्रिय संहार से डर कर ही इस जाति ने रेशम बुनने का काम ग्रहण किया था तव ही से इन्हें बांजा खत्री भी कहते हैं ।

सालवी जाति

शाक्त सम्प्रदाय के हैं हिंगलाज देवी को पूजते हैं वहुत सी रीतियें भी इन में क्षत्रियों से मिलती जुलती सी हैं ।

मावी जाति के रत्न एक मास्टर भीलचन्द नन्दराम जी हैं जिनके मार्फत मावी जाति की पंचायत ने २५१ प्रश्नों के उत्तर भिजवाये हैं । इन महाशय ने स्वजाति सेवा के अर्थ वहुत कुछ अपनी निजी हानि उठाई है और वड़ा परिश्रम किया है इसका फल भगवान् इन्हें दे यही मण्डलका आशीर्वाद है । (शेष भविष्य में)

कुइरी, कोइरी कोयरी।

यह एक क्षत्रिय जाति है, यह सूर्य्यवंशी-क्षत्रिय हैं, देश की भिन्न भिन्न भाषा व बोलीके कारण यह कहीं कुरी, कहीं कोइरी, कहीं कोयरी और कहीं कुइरी कहे जाते हैं, कुइरी व कोइरी नाम सुन कर अनपढ़ लोग इनको कोरी व कोली कहने लगते हैं यह उनकी भूल है, कोरी व कोली एक अलग वर्णसंकर जाति है अतएव कोरी कोली व कुइरी कोइरी में पृथिवी आकाश का सा भेद है अर्थात कोरी कोली कपड़ा बुनने वाले हिन्दु जुलाहे हैं तो कुइरी कोइरी एक शुद्ध क्षत्रिय वंश हैं।

नाम विवर्ण

आधुनिक देशी व विदेशी ग्रन्थकारों ने कोइरी नाम की व्युत्पत्ति करते हुये नाना प्रकार की अटकलों से काम लिया है पर वे सब सार-हीन व असङ्गत होने से ग्राह्य नहीं हो सक्ते हैं यथाः—

(१) मिस्टर सी॰ एस विलियम क्रूक ने लिखा है Perhaps from Sanskrit 'Krishi Kari' cultivating. कदाचित यह नाम संस्कृत शब्द 'कृषीकारी' से बना है जिस का अर्थ खेती करने वाले के होते हैं। परन्तु यह ठीक नहीं क्योंकि कृषीकारी और कोइरी इन दोनों शब्दों में बड़ी भिन्नता है और खेती तो भारत की अनेकों जातियें करती हैं तब खेती करने से इस का ही नाम कोइरी कैसे पड़ा? और यह भी सम्भव नहीं है कि ये सब लोग खेती ही करते हों इन में अन्य जातियों की तरह सब ही तरह के धन्धे करने वाले लोग विद्यमान हैं।

(२) युक्त प्रदेश की शिक्षाविभाग के भूतपूर्व डाइरेक्टर Mr. Nesfield मिस्टर नेस्फील्ड एम॰ ए लिखते हैं कि They are civilized Kols ये लोग सभ्य कोल हैं परन्तु यह नितान्त ऊटपटांग सी बार्ता है क्योंकि कहां कोल भील और कहां कोइरी अर्थात् कोले

भील जितने नीच होते हैं उतने ही कोइरी उच्च क्षत्रिय होते हैं अतः यह सिद्धान्त ठीक नहीं।

(३) विश्व कोष रचयिता कोषकार ने भी उपरोक्त सम्मतियों के आधारानुसार ही पिष्टपेषण किया है अर्थात् "कृषीजीवी, जाति विशेषः" एक काश्तकार कौम ऐसा अर्थ किया है पर यह ठीक नहीं काश्तकारी करने वाली अनेकों जातियें और भी हैं इसलिये ऐसा अर्थ समझ में नही आता।

(४) Mr. J. K. Samuel मिस्टर जे. के. समुएल ने लिखा है कि Descended from a kuwari girl. अर्थात् कुवांरी कन्या से पैदा हुयी जाति—पर यह प्रमाण शून्य केवल कल्पना मात्र होने से मानने योग्य नहीं।

(५) मिस्टर. डालन एस्क्वाइर अपने ग्रन्थ में कोइरियों को प्राचीन आर्य लिखते हैं पर इस पर शंका होती है कि क्या भारत के प्राचीन आर्य्य केवल कोइरी ही थे अथवा अन्य और भी कोई? अतः ऐसे कथन पर अत्युक्ति दोष आता है क्योंकि प्राचीन आर्य्य भारत वर्ष में कई-कई अन्य जाति समुदाय भी हैं।

यथार्थ में यह जाति कुशवाहा (कछवाहा) क्षत्रिय वंशज है।

आज विक्रम सम्वत १९८१ से २५४६ वर्ष पूर्व की राजनैतिक स्थिती का पता लगाने से पता चलता है कि उस समय महात्मा बुद्ध का काल था उस समय यह भारत वर्ष १६ भागों में बटा हुआ था यथाः—

१ अंगराज्य	६ मल्लराज्य	११ मत्स्यराज्य
२ मगधराज्य	७ चेदिराज्य	१२ शूरसैनराज्य
३ काशीराज्य	८ वत्सराज्य	१३ अश्मक राज्य
४ कोशलराज्य	९ कुरुराज्य	१४ अवंती राज्य
५ वज्जियों का राज्य	१० पाञ्चालराज्य-(शाक्य राज्य)	१५ गांधार राज्य
		१६ काम्बोज राज्य

ऊपर जो राज्यों की सूची दीयी गई है उनके सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य वार्ता यह है कि जब शाक्य वंश में महात्मा बुद्ध का अवतार हुआ तब देश में उपरोक्त नाम वाली राज्य सत्ताधारी क्षत्रिय जातियें थीं उन्हीं को राज्य सीमावों का नाम देश परत्व भी रक्खा गया था जैसे भागलपुर प्रान्त का नाम अंगराज्य, मगधराज्य की राजधानी राजगिरी में इस नाम से मगध प्रदेश बिहार में अभी तक है। काशी राज्य की राजधानी वाराणसी (Benares) थी, कोशल भी जाति थी जिसका राज्यस्थान गोंडा और बहराइच जिलों की सीमा पर साहेत माहेत नगर के पास श्रीवस्ती नगरी थी। वज्जी जाति का राज्य मुजफ्फरपुर जिले के पासवाले बसाढ़ ग्राम के पास प्राचीन वैशाली नगरी थी, चेदि जाति का राज्य बुंदेलखंड में था। वत्स जाति की राजधानी प्रयाग के समीप कौशाम्बी नगरी थी कुरी जाति का राज्य दिल्ली प्रान्तस्थ इन्द्रप्रस्थ में यही कुरी जाति उस समय बड़ी प्रतापवान व धन धान्य से पूर्ण थी जिससे किसी २ विद्वान ने सम्मति दी है कि इस क्षत्रिय जाति को धनकुबेर कहते थे 'कुरी' शब्द का अपभ्रंश कोइरी हो गया क्योंकि मुसलमानी अत्याचार के समय इन 'कुरियों' ने अपने को कोइरी कह कर अपना जीव व धर्म बचाया था ऐसा होना सम्भव है क्यों 'कुरी' शब्द का भाषा में द्वितीयान्त बहुवचन 'कुरियों' होता है और इस का बदलाव भाषा में कोइरियों सहज में ही हो सका है। * और ऐसा ही हो गया।

यह कुरु महाभारत वाले कुरु पाण्डु नहीं किन्तु दो ढाई हजार वर्ष पूर्व सूर्य्यवंश की कुशवाहा शाखा में भी "कुरु" नामक एक राजा हुये हैं जिन्होंने अन्त में राज्य पाट छोड़ करके महातप किया जिस से वे राजर्षि कहाये उनके सम्बन्ध में काव्यों में लेख मिलता है कि—

+ देखो मा॰ मा॰ पत्रिका व॰ १ ख॰ १ सं॰ ५

पुराच राजर्षि, वरेण धीमता
बहूनि वर्षाण्य, मितेन तेजसा
प्रकृष्ट मेतत्, कुरुणा महात्मनः
भ० का० स० २-३७

इससे निश्चय होता है कि आधुनिक काव्य रचना से पूर्व कुशवाहा शाखा में कुरु एक राजर्षि हुये जिनका राज्य दिल्ली प्रान्त व राजपुताने में था उस समय यह वंश बड़ी सम्पति वाला व ऐश्वर्य्यवान था।

इस ही वंश में एक राजा कुवेर हुये हैं जिनकी राजधानी दिल्ली प्रान्त में थानेसर के समीप थी जहां राजा कुवेर ने यज्ञ कराया था तिससे उस स्थान को कौवेर तीर्थ बोलते हैं यहां ही कुवेर का राज्याभिषेक हुओ था इन्हीं राजा कुवेर के वसाये हुये राजपुताना में Kowaris, कोवरीस, Kurripur, कुरींपुर Kuraira कुरैरा* आदि आदि प्राचीन स्थान हैं।

जहां पर प्राचीन मकानों के खंडहर व कुछ कुछ राज्य सता के उल्लेखनीय चिन्ह द्रष्टि आते हैं आज कल तो ये निरे गांव से रह गये हैं किसी समय तो यहां कुशवाहों की ही प्राधान्यता थी इन्हीं कुवेर की सन्तान 'कौवीर' भी कहाने लगी जो कालान्तर में बदल कर कोइरी व कोयरी व कुइरी कही जाती है। युक्त प्रदेश के जौनपुर जिले में कोइरीपुर कोइरियों का एक प्राचीन ग्राम है।

कछवाहा राजवंश आज कल जयपुर व अलवर हैं, विद्वानो ने यह भी लिखा है कि मध्यप्रदेस के रींवा सिरगुजा, विलासपुर और चांगवखार जिलों के वीच में कोरिया एक राज्य है‡ सम्भव है कि यह

* देखो Tods Annals and Antiquity of Rajasthan Vol. II, Pages 1474, 1528 and 1554.

‡ वि० को० भा० ५ पृ० ५७१

भी उपरोक्त कोयरियों का ही राज्य घराना हो क्योंकि अनुभवी विद्वानों ने हमें ऐसा ही बतलाया है।

हमारे अन्वेषण में जितने इतिहास हमें मिले उनके आधारानुसार विशेष सम्मतियें हमें इन तीनों जातियों के एक होनेके सम्बन्ध में मिली हैं हां मुराव जाति के सम्बन्ध में यदि चन्द्रगुप्त मौर्य्य को मुरारीदास का पुत्र मानें तो मुराव लोग चौहाणवंशी ठहरते हैं पर हमारे विचार में चन्द्रगुप्त महानन्द के पुत्र थे इनके लिये किसी किसी ऐतिहासिक विद्वान ने मुरावों को मोरी शाखा से प्रमारवंशी भी लिखा है ऐसी विवादास्पद समस्या को विद्वान लोग स्वयं ठीक ठीक समझलें। सम्भव है दोनों प्रकार के लेखकों में से किसी की भूल हो। पर हमारी श्रद्धा विशेषरूप से एक होने की ओर झुकती है यथा—

तीनों एक समान

मुराव जाति का अनुसन्धान करते हुये मिस्टर C. S. W. C. I. C. S. सी एस डवल्यू सी आई सी एस भूतपूर्व कलक्टर सहारनपुर ने लिखा है—

(1) They are really the same as the Koery and Kachhi with whom they agree in manners and customs.

भा० मुराव, काछी और कोइरी ये तीनों जातियें अपनी चाल ढाल, रीति भांति आदि आदि के कारण से एक ही प्रतीति होती हैं

The Koerias are the best of all cultivators and correspond to the Kachhi's and Muraos of other districts.

(B. S. B. G., Page 200.)

भा० कोइरी लोग कृषा कर्मियों में अपने कर्म धर्म से सब से अच्छे हैं जो काछी और मुरावादि के सजातीय हैं यह सरकारी अफसर का कथन है।

(२) काछियों में तथा मुरावों में व कोरियों में कई एक भेद उपभेद भी एक से ही हैं यथाः—कन्नोजिये, पूर्बिया, कछवाहा, हरदिया, भक्त, ढेंकुलिया, सकटिया (शक्तिया) मधेसिया, जौनपुरिया, ठकुरिया, रजोरिया, सकसेना, आदि आदि इन भेदों से भी प्रमाणित होता है कि ये दोनों जातियें एक ही हैं और कछवा वंश के उपभेद हैं।

(३) भक्तिया भेद काछी, मुराव, और कोइरी इन तीनों ही में है और इस भेद वाले तीनों ही तुलसी की माला पहिनते मांस मदिरा से अलग व अहिंसा धर्म के पालन करने वाले पक्के वैष्णव होते हैं। इसका विशेष विवरण काछी जाति के साथ देखिये।

(४) सरकारी मनुष्यगणना रिपोर्टों से पता चलता है कि कभी ये तीनों जातियें एक स्थम्भ में लिखी गयी तो कभी दो जातियें एक स्थम्भ में तो कभी तीनों अलग अलग लिखी गयी इसी से यह लोग भी कोई कोई अपने को एक व कोई कोई अपने को अलग अलग जाति समझने व मानने लगे।

(५) बड़े बड़े नामाङ्कित विद्वानों ने काछियों के भेद उपभेदों में मुराव, कोइरी, कछवाहा काछियों के भेद लिखे हैं तो मुरावों के भेद उपभेदों में काछी, कोइरी और कछवाहा मुरावों के भेद लिखे हैं और कोइरियों के भेदों में काछी, मुराव और कछवाहा भेद कोरियों के भेद लिखे हैं तब उलट फेर कर व घुमा फिराकर बात तो एक ही हुई इससे यह सब एक ही कछवाहा वंश की शाखा हैं।

(६) कोइरी जाति की ओर से वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए तदनुसार भी प्रमाणित होता है कि कोइरी, काछी, कछवाहा और मुराव ये सब एक ही हैं विपत्ति वश तथा किन्हीं कारण विशेषों से इनके नाम कोइरी, काछी, और मुराव

आदि अलग अलग पड़गये हैं यथार्थ में जाति निर्णय निदान रूप से यह चारों जातियें एक ही हैं।

(७) हमने विशेष रूप से अन्वेशण करके निश्चय किया है कि कोइरी, काछी, और मुराव, इन तीनों जातियों की रीतिभांति, कुलपृथा, खान पान, रहन सहन और चाल ढाल आदि आदि परस्पर मिलती जुलती सी हैं इससे निश्चय होता है कि ये तीनों एक ही हैं।

वर्ण निर्णय

कोइरी, काछी, मुरावादि के वर्ण निर्णय विषय में बहुत कुछ परस्पर का विवर्ण इन प्रत्येक जाति के साथ प्रसंगवश लिखना पड़ा है अतएव इन तीनो' जाति के वर्ण निर्णय के अर्थ यह आवश्यक है कि पाठक तीनो' जातियो' का विवर्ण पढ़ने का कष्ट उठावें तथापि

(१) एक एम० ए० एल० एल० बी० महाशय ने अपने ग्रंथ जाति और कौम के पृष्ठ २६१ में लिखा है कि Koeries are of Kuchhwaha clan. कोइरी जाति कछवाहा वंश में से है!

(२) डिस्क्रपटिव एथनालोज़ी नामक ग्रंथ के पृष्ठ ३१७ में लिखा है कि The koeries are the descendants of the earliest Aryans Colonists in Bengal. कोइरी लोग बंगाल के प्राचीनतम आर्य हैं। इससे कोइरियो' की श्रेष्ठता व उच्चता सिद्ध होती है।

(३) मिस्टर सी० एस० डबल्यु सी० अफसर ने अपने ग्रंथ के पृष्ठ ३८८ में कोइरी जाति के भेद उपभेदो' में 'कछवाहा' भी कोइरी जाति का एक भेद माना है।

(४) इसी तरह इस जाति के भेद जैसवार मधेसिया, मुराव

(उमरांव) बैसवाड़, राठोड़, सूरज वंशी, शवलेमी आदि आदि प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश हैं जिनसे यह जाति निश्चय रूप से क्षत्रिय वर्ण में है। There are again the Kachhwaha which asserts the connection with the Rajput clan of that name.

(५) यह मिस्टर C S. W.C. भूतपूर्व कलक्टर सहारनपुर की सम्मति है कि कोइरियों में एक भेद कछवाहा भी है जो प्रसिद्ध कछवाहा क्षत्रिय वंश से अपना निकास वतलाते हैं।

(६) कोइरी जाति के आचार विचार का अन्वेषण करके एक Civilian Government Officer सरकारी अफसर ने लिखा है " They maintain a fairly high standard of Social Purity.

(C. and T. Page 393.)

हिन्दु जाति में इन का जाति पद निश्चत रूप से वड़ा उच्च व पवित्र है।

(७) जा० भा० नामक ग्रन्थ के पृष्ठ १०५ में कोइरी जाति को 'कोरई' करके लिखा है और यह कोरई जाति क्षत्रिय खंड में लिखी जाकर निर्णीत भाव से क्षत्रिय वर्ण में मानी गई है, इस से प्रमाणित होता है कि कोइरी व कोरई ये दोनों शब्द एक ही हैं क्योंकि दोनों एक ही वर्ण के भी हैं। * पुनः और देखिये:—

Matapershad the owners of five Villages and portions of four others in Katehir with an area of 1,166 acres, and a revenue of Rs. 2,332. They are koeries by caste and migrated from Kanauj to Rai Bareilly, where one of them, Bodh Ram by name, took service under

* नोटः—इस जाति के विशेष निर्णय सम्बन्ध में इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ ७८ से ११ तक काशी निर्णय स्थम्भ को अवश्य देखिये।

Asaf-ud-Daula and obtained from him title of Raja. One branch of the family came to Benares, where Ramcharan Ram and his son Ghisa Ram accumulated wealth by trade. The latters son Ganesh Ram the father of the Present owner, bought the Property.

B. S. B. G. (321—322)

भा० यह एक गवर्नमेन्ट अफसर की बड़ी पुरानी रिपोर्ट का लेख है अर्थात् बाबू माताप्रसाद पांच गांव तथा चार दूसरे गावों के मालिक हैं जिनके पास ११६६ एकड़ जमीन है और आमद २३३२ रुपये हैं, ये जाति से कोइरी हैं जो पहिले कन्नोज से निकल कर रायबरेली आ बसे थे इनके बड़ों में से एक बोधराम आसफद्दौला बादशाह के यहां उच्चाधिकारी होकर 'राजा' की पदवी प्राप्त महाप्रतापी हुये हैं अर्थात् आप राज वंश में से हैं इन्हीं की शाखा बनारस में आयी जिन में से रामचरनराम और घीसाराम ने व्यापार से बड़ा द्रव्य पैदा किया था घीसाराम के पुत्र गनेशराम जो ही वर्तमान मालिक बाबू माता प्रसादजी के पिता थे जिन्हों ने ही यह जायदाद प्राप्त कियी।

इस से यह निश्चय होता है कि कोइरी जाति क्षत्रिय वर्ण व राजवंश में से है।

मुम्बई के छपे JA. BHA. नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ३०२ में कोइरी जाति के विषय में लिखा है कि "कोइरियों के कुछ भेद कछवाहा, बैसिया, राठोड़ जैसवार, सूर्य्यवंशी नाम वाले हैं यह अपने को क्षत्रिय कहते हैं"

अवर्तता स्यां जात्यान्तु भारतीये द्विवर्षके।
नृपति प्राग् धर्मयुतो यशश्वी शुभ लक्षणः॥ २४॥
रविवंशे ह्यभूद्भूपः कुरुनामा महाबलः।
तद्वंशजानां जातिस्तु कौरवी कथ्यते बुधैः॥ २५॥

भा० भारतवर्ष में कुरु राजा बड़े धर्मात्मा यशस्वी तथा शुभ लक्षण युक्त थे जो सूर्य्यवंशी महाबली राजा थे इन्हींकी सन्तान कौरवी कही जाती थी अतः सिद्ध हुआ कि हजारों वर्ष पूर्व की कौरवी जाति आज-

कल कहीं कौरवी कहीं कोरवी, कहीं कोइरी कहीं कुइरी और कहीं कुरी नाम प्रसिद्ध है अतः कोइरी जाति क्षत्रिय वंशज सिद्ध है।

भेद-उपभेद।

काछी, कोइरी और मुरावादि के कई भेद एक से ही हैं अतएव कोइरियों के कई भेद काछी व मुराव जाति के साथ भी लिखने में आ चुके हैं अतएव पाठक वहां देखकर समझ लें। जो जो भेद कुछ विशेषता रखते हैं वे अलग प्रतीति होते हैं उन्हें यहां लिखे हैं, इन नीचे लिखे भेदों पर दृष्टि देने से कई भेद ऐसे हैं जिन से कोइरियों का क्षत्रियत्व निश्चत रूप से प्रमाणित होता है यथाः—

सरवरिया	पूरविया	मगहिया
प्रयागहा	दखिनाहा	कछवाहा
कन्नोजिया	बनारसिया	नराईगना
ब्रजवासी	मगही	तोरो कोरिया
बरद्वार	हरदिया	भक्तिया
शक्तिया	अजुध्याबासी	अवधिया
अजमगढ़ियां	भीमपुरिया	देशी
ऊँसवार	जौनपुरिया	मधेसिया
रजौरिया	सकसेना	सरवरिया
पैरागी	घैसवार	हुड़किया
राठौड़	सूरजवंशी	

They are undoubtedly closely allied to the Kurmis, with whom according to Dr. Wise in Bengal they drink, but do not eat, while the Kurmis attend their marriages and partake of the feast.

(Tribes and Castes P. 500.)

भा० कोइरी लोग निस्सन्देह रूप से कुर्मियों में मिले जुले से हैं बंगाल में डाक्टर वाइज के कथनानुसार कोइरी लोग कुर्मियों के यहां का जल तो पीलेते हैं पर इनके यहा का भोजन नहीं करते परन्तु कुर्मि लोग कोइरियों के यहां विवाह शादी में आते जाते और भोजन कर लेते हैं। इससे कोइरियों का उच्चत्व सिद्ध होता है।

उच्च जातियों की तरह से इस जाति में शाखोच्चार प्रणाली भी है जो इन के क्षत्रिय होने का एक पक्का प्रमाण है।

पंचायत प्रणाली

जाति सम्बन्धी विवाह व झगड़े इस जाति में पञ्चायत द्वारा निश्चय किये जाते हैं, छोटे छोटे (खफीफ) मामले तो शहर की पञ्चायत ही निबटा देती है पर जब कोई बड़ा झगड़ा निबटाना होता है तब दूर दूर के लोगों की सभा इकट्ठी होती है उसे बावनी कहते हैं उसके सरपंच को चौधरी कहते हैं।

जिला पञ्चायत का चौधरी तो सदा के लिये मुकर्रर चला आया करता है परन्तु बावनी याने महासभा का समयानुकूल योग्यतानुसार चुनलिया जाता है। आज कल इस जाति की महा पञ्चायत **"कुशवाहा क्षत्रिय महासभा"** है जिस को प्रायः एक बड़ी बैठक सालाना किसी निश्चित शहर में हुआ करती है जिस में दूर २ के काछी, कोइरी और मुराव सज्जन गण एकत्रित होकर जाति सुधार की कई विवेचनायें करते हैं इस महासभा व कुशवाहा महा पञ्चायत के सञ्चालक कई माननीय पुरुष हैं उनके फोटो व जीवनी हमने प्रकाशित करने का विशेष उद्योग किया परन्तु समयाभाव व किन्हीं कारण विशेषों से हम ऐसा न कर सके।

सभा के सञ्चालकों में सबसे प्रथम नाम लेने योग्य स्वर्गवासी बाबू हरिप्रसाद जी वैष्णव थे जिन्हों ने जाति हित के लिये बहुत कुछ प्रशंसनीय उद्योग किये थे आप इस सभा के प्रधान पद पर सुशोभित रहे थे।

श्रीमान् बाबू मोताप्रसाद जी वर्म्मा रईस व आनरेरी मजिस्ट्रेट ईश्वरगंगी बनारस आज कल इस सभा के प्रसिद्ध कार्य्य कर्ता हैं गवर्नमेन्ट से नाना प्रकार की सनदें व सर्टिफिकेट प्राप्त व सन्मानित दरबारी सज्जन हैं आप इस सभा के प्रेसीडेन्ट (प्रधान) चुनार, गया और काशी आदि आदि स्थानों में प्रायः चुने जा चुके हैं कई वर्षों से लगातार आप जाति हित चिन्ता के लिये बहुत कुछ उद्योग करते रहते हैं। स्वजाति सेवार्थ जब जब सहायता की आवश्यक्ता पड़ती तब

तब आप प्रायः विशेष उदारता दिखलाया करते हैं जहां स्वजाति सेवा का आप में गुण है तहां पवलिक व सरकार के हितार्थ भी आप समय समय पर अच्छी सहायता देते रहते हैं इस ही तरह वनारस की पवलिक में जहां आपका आदर है तहां गवर्नमेन्ट के दरवारी और प्रिय भाजन भी आप हैं आप की योग्यता के कारण ही सरकार ने आपको सरकारी कृषी विभाग तथा पागलखाने का Honorary Visitor प्रतिष्ठित देख रेख करनेवाला नियत किया है, आप की योग्यता के कारण ही लेफ्टिनेन्ट गवर्नर साहब बहादुर ने आपको बनारस का Hotorary Magistrate आनरेरी मजिस्ट्रेट नियत किया है। आपके कार्यों से प्रसन्न हो सरकार ने सन १९२३ में आप को Second Class Magistrate सेकिंडक्लास मजिस्ट्रेट बनाया, आप अपनी जाति सभा के तीन बार प्रेसीडेन्ट President रह चुके हैं।

श्रीमान् पं० सीताराम जी शर्मा गौड़ ने इस सभा के मन्त्री पद पर रह कर वहुत कुछ लाभ पहुंचाया है।

स्वर्गवासी श्रीमान् बाबू अयोध्याप्रसाद जी वर्मा इस सभा के कार्यकर्ता रह चुके हैं जिन्होंने जाति सेवा में विशेष भाग लिया था।

श्रीमान् बा० प्रयागदत्त जी खजांची भी इस जाति के एक रत्न व सभा के प्रतिष्ठित सभ्य हैं।

श्रीमान् बा० रामनरायण जी वर्मा आश्रम व सभा के मंत्री हैं जिन्होंने सभा को बहुत कुछ सेवा की है।

श्रीमान् पं० जे० पी० चौधरी काव्यतीर्थ व साहित्याचार्य बनारस तो प्रायः जाति हितार्थ वहुत कुछ करते ही रहते हैं।

श्रीमान् बा० गुरुप्रसाद सिंह जी बी० ए० सम्पादक कुशवाहा मित्र भी एक होनहार जाति हितैषी व सभा के मुख्य अधिकारियों में से एक हैं।

श्रीमान् बा० ढोढाराम चूड़ामणि महतोनखासपिंड बेगमपुर पटना, श्रीमान् बा० गनेशीलाल जी वर्मा हेडक्लर्क गवर्नमेंट गन केरिज फेक्टरी जवलपुर, बा० छेदालाल जी वर्मा फरुखाबाद, बा० मातादीन जी वर्मा पोस्टमास्टर जसवंतनगर इटावा आदि अनेकों सज्जन बड़े परिश्रमी व पक्के देश हितैषी हैं आप सब ही सज्जनों को कुशवाहा वंश की उन्नति की विशेष चिन्ता रहा करती है इन महानुभावों के अतिरिक्त और भी अनेकों सज्जन हैं जिनकी नामावलि हम नहीं जानते किन्तु

जो जो कोइरी, काछी, मुराव सज्जनगण प्रायः कुशवाहा जाति हितार्थ हम से पत्र व्यवहार करते रहे हैं उन्हीं के धन्यवाद स्वरूप में कुछ शब्द उनके प्रति इस कारण से लिखे हैं कि उनका उत्साह स्वजाति सेवा करने के लिये दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता रहे।

श्रीमान् बा० सीताराम जी मुराव कनोजिया बी० ए० स्वर्णपदक प्राप्त, हेडमास्टर सरदार हाकिमसिंह हाई स्कूल डिंगा ज़ि० गुजरात पंजाब, भी इन पंचायत महासभा के एक सुयोग्य विचारशील अनुभवी सज्जन हैं आप ही मुराव जातीय महासभा लखनऊ के संस्थापक तथा अखिल भारतवर्षीय कोइरी हितकारिणी महती सभा के मुंगेर अधिवेशन के सभापति आप ही हैं। ईस्वी सन् १९२४ के दिसम्बर की कुशवाहा क्षत्रिय महासभा के काशी अधिवेशन के सभापति भी आप ही किये गए हैं।

विवाह प्रणाली।

विवाह इस जाति में धर्मशास्त्र की आज्ञानुसार गोत्रादि टाल कर ही होते रहते हैं जैसे राजपूताना के अन्य क्षत्रियों में गोत्रादि टालने की प्रथा है तैसे इनमें भी है।

हमारे भ्रमण में प्रायः देशकाल से अनभिज्ञ लोगों ने हम से पूछा कि "जब यह क्षत्रिय हैं तो इनमें विधवा विवाह कैसे होता है?" इसका उत्तर तो यह है कि प्रथम तो विधवा विवाह का किसी जाति में होना या न होना उच्चता व नीचता का चिन्ह नहीं है, क्यों कि हम शास्त्रों के आधारानुसार व बड़े २ नामाङ्कित विद्वानों से काशी तक में परामर्श करके निश्चय किया है कि आजकल देश स्थिति के अनुसार पुनर्विवाह व विधवा विवाह अवश्य होना चाहिये ऐसे वेद शास्त्रों में अनेकों प्रमाण मिलते भी हैं। पूर्वकाल में इतना पाप नहीं था बड़ी २ उमर में कन्याओं व बालकों के विवाह होते थे अतः पूर्ण ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणियों के विवाह होने से इतनी विधवायें भी नहीं होती थीं अतः पुनर्विवाह व विधवा विवाह कुछ काल से विशेष प्रचलित नहीं थे परन्तु मुसलमानी समय में हिन्दुओं की कुंवारी लड़कियों के साथ ज़बरदस्ती निकाह कर लेने से इस देश में बाल विवाह चलाया गया तिस से विधवाओं की संख्या बढ़ने लगी और एक एक प्रदेश में लाखों

की संख्या में बाल विधवायें आह मार मार कर मन ही मन में चीखने लगीं, ऐसे विकट व दुखदायी समय में उस समय के मुसलमान व अन्य अनाचारी मनुष्यों को उन विधवा अवलाओं को बहका कर नाना प्रकार से उन्हें धर्म भ्रष्ट करने व हत्यायें करा कर उनके कुलों के दाग लगाने का और भी समय मिला। ऐसी विकट समस्याओं को देखकर समझदार हिंदू येन केन प्रकार से पुनर्विवाह का प्रचार करने लगे जिससे हिंदुओं का धर्म तो बचे तदनुसार इस कोइरी जाति में विधवा विवाह का प्रचार आज विक्रम सम्वत १९८१ में २८४ वर्ष से हुआ है जिसका विवर्ण इस प्रकार है।

कोइरियों ने जब देखा कि इनके यहां की विधवायें वहकायी जाकर नाना प्रकार का महापाप करने में उद्यत की जाती हैं तो उनकी धर्मरक्षणार्थं ८४ शहरों के मुख्य मुख्य कुशवाहों की एक पंचायत मुरादपुर बांकीपुर में इकट्ठी हुई।

पुनर्विवाह होना चाहिये

और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि जो कन्यायें पुनर्विवाह कराना चाहें उनके पुनर्विवाह करादिये जांय और जो लोग दारू मांस खाते पीते है, व आचरण भ्रष्ट हैं उन्हें जाति पतित करके उनसे असहयोग किया जाय उस पंचायत नामे की पुरानी नकल हमारे पास भेजी गयीं जो सैकड़ों वर्षों का कागज होने से कहीं कहीं उसको कीड़े भी खागये थे उसकी नकल जैसी कुछ पढ़ी गई इस प्रकार से है:—

श्री शुभ १६२६ मिती चैत एक सु० के चौरासी पंच जमा मुरादपुर ववुंआजी के आगे सकल चौरासी भाई की राय ऐन कानून बनाया जाता है कि जो लड़का लड़की को शादी विवाह होगया हो और गौना न हुआ हो तो उसका पति मुक होगया हो तो उस लड़की का संगम किया जाय उसका मा वाप चाहे तो वह सकल पंच चौरासी की राय से विहोता के सेत को तोड़ा जाता है, काहे कि जिसमें वंश न मारा जाय व लड़की भ्रष्ट न होय, और जो भाई अपनी लड़की पर रुपैया लेगा तो चौरसी पंच से कसूरवार होगा और दो वर्ष सकल पंच से रहनबंद होगा और जो भाई दस रुपैया से ज़िआदा तिलक

पैसा कौड़ी चढ़ावेगा तो सकलपंच चौरासी से कसूरवार होगा और रहनबन्द होगा—एक वर्ष, और कोई भाई जगी भाई से नारियल न पीवे आज रोज़ से, और परसाद महतों दारू पाने के बारे में सकल पंच फैसला करते हैं कि पांच वर्ष के वास्ते अजाति, बाद गंगा जी सेवन कर व ब्राह्मण को भोजन कराके पाख होगा—और सकल में सरदार चिट्ठी लिखदें और कोई दारू पीवेगा तो १२ वर्ष अजात सकल चौरासी से बाद गंगा सेवन कर ब्राह्मण भोजन करके पाक होगा।

देखो क्षे० हि० प० काशी अं० ७ सन् १६१८

आज कल की देशस्थिती राज्य स्थिती व काल स्थिती को देखकर सैकड़ों उच्च वर्णीय ब्राह्मण क्षत्रियादि सनातन धर्मावलम्बि हिन्दु लोग अपनी अपनी लड़कियों का पुनर्विवाह करने लगे हैं और यही विषय भारत वर्षीय काशी की हिन्दु महा सभा में भी पास किये जाने के लिये पेश किया गया है, लिखने का भाव यह है कि हिन्दु पठित समाज अब अपनी कमजोरियों व हानियों को Feel करने (जानने, लगा है यही कारण है कि समझदार ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तक डंके की चोट अपनी अपनी लड़कियों का पुनर्विवाह करने लगे हैं राजपुतानामें सर्वमान्य उच्च क्षत्रियोंका भी एक समुदाय है जो पुनर्विवाह व विधवा विवाह करते हैं वे मारवाड़ में नातरायत राजपूत कहाते हैं।

इस ही तरह ८४ शहरों के कोइरी, काछी और मुरावादि ने मिल कर अपने में पुनर्विवाह प्रचलित करलिया तो इस से वे वर्णत्व से गिरकर छोटे नहीं माने जा सक्ते जैसेः—

भरतपुर में एक प्रतिष्ठित अगरवाल परिवार की विधवा का पुनर्विवाह।

ता० ८ फरवरी को भरतपुर के डिस्ट्रिक्ट और सिशन जज लाला बाबूपरसाद जी की (जो संयुक्त प्रान्त के प्रतिष्ठित अग्रवाल हैं) विधवा पुत्री का पुनर्विवाह यू० पी० के डिप्टी कलेक्टर बाबू महताब सिंह जी के भतीजे से सानन्द होगया इस विवाह में वर और वधू पक्ष के परिवारों के सब आदमी संमिलित हुए थे, जिन में अलवर राज्य के डिस्ट्रिक्ट और सिशन जज बा० मुक्ताप्रसाद न्यायरत्न,

मुंशी मिट्ठनलाल, राय बहादुर रामस्वरूप जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर आदि का नाम विशेष उल्लेख-योग्य है वधू के पिता और उनके जेष्ठ भ्राताओं ने यह कार्य्य कर जिस सत्साहस का परिचय दिया है वह धन्यवाद के योग्य है।

देखो आ० मा० भा० २ अंक ६ ता० ११ ३-२४

राजपूताने के राजपूतों में नाते होने की शुरूआत।

मारवाड़ की रिपोर्ट से उद्धृत।

इन राजपूतों में नाता कब और किस सबब से शुरू हुआ इसका कुछ ठीक पता नहीं हैं। जालोरी के राजपूत तो कहते हैं कि आदू-नातरायत दइया हैं और इसने दूसरे राजपूतों को भी इस जाल में फंसाया है इनके पास किसी ज़माने में भी ज़मीन नहीं रही है। हर जगह मारवाड़ में यह हल खड़ता है और इस से इसके बावत यह दिल्लगी ठेठ से चली आती है कि "दइया दे सांत क़देह नहीं" यानी दइया मुल्क का मालिक कभी नहीं था और जो दइया पूर्व मारवाड़ के परगनों में राजा हुए हैं वे और थे और ये और हैं। वे गोरे दइये कहलाते हैं और यह काले दइये कहलाते हैं। वे इस तरफ नहीं हैं और न उनमें नाता होता है यह काले और गोरे का भेद भी नाता होने और ज़मीन के न होने से हुआ है ऊपर लिखे हुए ७ परगनों में जो दइया राजपूत हैं वे तो कुल नातरायत ही हैं दूसरे राजपूतों में तो थोड़ नातरायत हैं और बहुत नहीं। मगर दाइयों में तो एक घर भी बिना नाते के नही पाया जाता और इस से यह आदि नातरायत माने गये हैं। जसवंतपुरे के नातरायत राजपूतों ने भी लिखाया है कि पहले नाता दइयों से शुरू हुआ है रावणा खांप का एक दइया राजपूत पूर्व का मुल्क छोड़ कर मारवाड़ आया था उसने जालोर के एक सोनिगरा राज की बेटी से नाता किया और राजा ने उसको ४८ गांव दिये जो अब जालोर में दैयापट्टी के नाम से मशहूर हैं और जिनमें उसकी औलाद अब तक आबाद है उसमें नाते का आम दस्तूर

चला आता है गोड़वाड़ के राजपूत नाता शुरू होने की एक कथा कहते हैं वह नीचे लिखी जाती है।

जालोर के चौहान राजा सौनिगरा खांप के राव कानड़देव की एक बेटी जो जेसलमेर के रावलजी को ब्याही थी बाल्यावस्था में विधवा हो गई थी वह जब तीज के त्योहार को देखती थी कि दूसरी लड़कियां अच्छे कपड़े और गहना पहिन कर सुसराल को जाती हैं तो वह भी नादानी से अपनी मा से कहती थी और हठ करती थी कि मैं भी इसी तरह कसूमल केसरिया कपड़े पहिन ओढ़ कर सासरे जाऊंगी। उसकी मा को इन बातों के सुनने से बहुत रंज होता था आखिर एक दिन उसने यह हाल रावकानड़देव से कहा। राव और कुंवर वीरमदेव ने उसके पुनर्विवाह कर देने की सलाह करके चितौड़ के राणा जी को दूसरे कुंआरे लड़के की शादी का नारियल भेज कर बुलाया जब बरात ले कर आये और जालोर के दरवाजे पर तोरण नहीं देखा तो राव जी से पूछा कि यह कैसा ब्याह है कि तोरण भी नहीं बांधा गया। रावजी ने कहा कि हमारे यहां बाहरी दरवाजे पर तोरण बांधने का दस्तूर नहीं है भीतर चंवरी में बांधते हैं फिर कुमार वीरमदेव आकर राणा जी को किले म ले गया और कटारी निकाल कर कहा कि या तो मेरी विधवा बहन से ब्याह कर लो नहीं तो तुम को मार डालूंगा और मैं भी मर जाऊंगा राणा जी ने कहा कि जो मे ऐसा करूंगा तो मुझको और तुम्हारी बहन को किले में कौन जाने देगा। वीरमदेव ने कहा कि मैं गोड़वाड़ का परगना देकर रहने के वास्ते दूसरा किला बना दूंगा। राणा जी ने कबूल किया और उस लड़की से ब्याह करलिया। फिर ३ दिन तक वहीं रहे और बाहर नहीं आये। चौथे दिन उनके आदमियों ने कानड़ देव को दबाया कि राजा जी को बाहर लाओ नहीं तो हम तुम को मार डालेंगे। राणा जी ने यह सुनकर अपने आदमियों को महल के नीचे बुलाया और झरोखे से मुंह निकाल कर उनको दर्शन दिया उस दिन से यह ब्याह की झांकी राणा जी के खानदान में मुकर्रर हुई है।

वीरम देव ने राणा जी को गोड़वाड़ का परगना देकर अपना इकरार पूरा किया और वहां शहर बसा कर उसमें एक किलो भी

बनवा दिया जिस का नाम अपनी वहन के नाम पर वाली रखा राणा जी उसमें अपनी महारानी को रख गये कभी २ उसके पास आ जाया करते थे। यह शादी मुल्क में नात्रा समजी गई और जिन राजपूतों का ब्याह नादारी या ज़ियादा उमर होजाने से अच्छे ठिकानों में नहीं हो सकता था उन्हों ने इसी नज़ीर पर विधवा औरतों से नाते कर लिये इससे उनके घर तो वस गये लेकिन भाई लोगों ने उनको छोड़ दिया तव उन्होंने अपनी जात अलग मुकर्रर करली फिर जिन राजपूतों ने इन में सगाई पन का नाता किया वह भी इन में मिलगये।

नाता वेवा औरत की मरज़ी से होता है जिसकी मरज़ी नाता करने की नहीं होती है वह अपने खाविंद के नाम पर वैठी रहती है कोई इसका जवरदस्ती नाता नहीं कर सकता और जो नाता कराना चाहती है वह सुसराल से अपने मा वापके पास चली जाती है और वे उसका नाता किसी रंडवे राजपूत के साथ जो उनकी और सुसराल वालों की खांप का न हो व्योहार के रुपये लेकर कर देते हैं। कुंवारे के साथ नहीं होता और जो कुआरा ही वड़ी उमर का हो जाने से व्याह नहीं होने पाया और किसी सवव से ब्याह करे तो पहिले उसको अपना कुवारा पन उतारना पड़ता है और उस का यह दस्तूर है कि किसी ६ महीने की लड़की से ३०) ३२) उसके वापको देकर फेरे खावे और फिर उसके वाप से यह कहदे कि "अव तुम्हें अपनी वेटी पर अखतियार है चाहे जिसे दे देना मुझे कोइ दावा नहीं है" मगर अव लड़की वड़ी होती है तो उसका भी व्याह नहीं होता। नाता ही होता है क्योंकि वह वेवा समझी जाती है।

नाते में न चंवरी होती और न तोरण वांधा जाता है नाता करने वाला मंगल या शनिश्चर की रात को जव कि सव लोग घर के और गांव के सो जाते हैं औरत को जोड़ा और चूड़ी पहिना कर चुपचाप अपने घर लेजाताहै और घर भी रात को पहुंचाता है क्योंकि लोगों में यह डर फैला हुवा है कि जो कोई नाते जाती हुयी औरत का मंह देख लेता है या उसके साम्हने आजाता है तो ६ महीने में मरजाता है। इस सवव से नाते की सारी कार्य्यवाही रात को चुपचाप की जाती है और घर पहुंच कर भी कई टोटके किये जाते हैं जैसे कहीं

औरत के हाथ से चक्की पहिले पिसाई जाती है और कहीं धान छटवाते हैं कि जिससे नाता करने का बोझ भार जो हो सो इन पत्थरों पर पड़े श्वसुराल वाले उसके मा बाप से कोई वास्ता नहीं रखते नाता के व्यवहार का रुपैया जो औरत के मा बाप लेते हैं उसकी भी तादात मुकर्रर नहीं है नाते ले जाने वाले की हैसियत व जरूरत देखी जाती है। गोड़वाड़ में ५० से १३० तक लेते देते हैं यही बात दूसरे परगने में भी है यह रुपैया नाता करने वाले से पहिले लेलिया जाता है और फिर औरत उसके साथ की जाती है। दायजा वगैरा कुछ नहीं दिया जाता सिर्फ अमल और रोटी एक दो रोज़ देते हैं। औरत के पास जो कोई गहना या लड़का वाला अगले खाविंद का होता है तो उसके घर भेज दिया जाता है।

इन नातरायतों में भी इकेवड़ा और दूवेड़ा सगपन होता है। इके वड़े गनायत जिस घर की बेटी लेते हैं उसमें अपनी बेटी नाते नहीं देते और उनके साथ खाते पीते हैं मगर परगने वाले में अब १६ गांव के नातरायत राजपूतों ने यह लिखत किया है कि जो बेटी नहीं दे उससे सगपननहीं करे और देवे उससे करे। इन्हों ने यह लिखत भी कर लिया है कि व्योहार ४०) से ज्यादा कोई नहीं ले और ले तो उसको सज़ा दी जावे।

नातरायत की दोहती तो उन अच्छे राजपूतों में जाय पहुंचती है और इसी वास्ते यह औखाणा याने कहावत चली आती है कि "नातरायत की तीजो पीढ़ी गढ़ चढ़े"। लोग इसका यह रास्तो बतलाते हैं कि मायल ईदा और मांगलिया राजपूत नाता तो नहीं करते हैं लेकिन राजपूतों की बेटियां व्याह लेते हैं और उनकी बेटियां चौहानों और भाटियों के साथ व्याही जाती हैं। इस तरह चलते चलते शायद कोई दोहती नातरायतों की किसी गढ़पति तक पहुंच जाती होगी और पहुंच जावेगी जिससे यह औखाणा बना है नाते की औरत और व्याहता लुगाई की औलाद का हक्क नातरायत राजपूतों में बराबर होता है और नाते आई औरत भी व्याहता लुगाई के बराबर समझी जाती है कुछ फर्क नहीं—कहीं कहीं तो अब नाता भी दिन धौले अब व्याह की तरह से होने लगा है और नातरायत के साथ दूसरे राजपूत भी हुक्का

पानी अब पीने लगे हैं। हमने वर्तमान राजपूतों, ब्राह्मणों आदि में पुनर्विवाह होना दिखला दिया"*

आजकल अग्रवाल वैश्य तथा महेश्वरियों में भी लड़कियों का पुनर्विवाह चल निकला है।

सारांश स्वरूप

इस विषय में शास्त्रीय प्रमाण भी मिलते हैं उन सबको यहां लिखने से यह ग्रंथ बहुत बढ़ जायगा अतः इस विषय पर हमने व्यवस्था स्वरूप अलग ग्रंथ प्रकाशित करने का निश्चय कर लिया है। तथापि नाममात्र की व्याही हुयी फेरों की गुनहगार कन्याओं के पुनर्विवाह अवश्य होने चाहियें, उनमें भी जो विधवा कन्यायें १६ व १८ वर्ष तक पहुंचने पर यदि वे स्वयं पुनर्विवाह नहीं करा कर साध्वीस्त्री रहना चाहती हैं उनका पुनर्विवाह आजन्म नहीं किया जाय किंतु जो भरण पोषण विहीन होने व अन्य किन्हीं कारण विशेषों से विवाह कराना चाहती हों उनके विवाह करा दिये जांय ऐसा शास्त्र मत है। इस विषय में हमने काशी तक में जाकर अनेकों विद्वानों से शास्त्र मत पर सम्मतियें सुनी हैं जिनका सङ्केतमात्र इस ही ग्रंथ के काशी निर्णय स्थम्भ में लिख आये हैं तिसके आधारानुसार हिंदू जाति के लिये हमारा कथन है कि पुनर्विवाह अवश्य हो जाने चाहियें।

क्षत्रियों का परम धर्म

आजकल भारतवर्ष में सब ही जातियें अपने तईं क्षत्रिय होने की दम भरती हैं परंतु हमने देखा है कि आजकल क्षत्रिय नहीं किंतु हिजड़े हैं क्योंकि अजमेर, सहारनपुर, आगरा, बरेली, शाहजहांपुर गोंडा, मुल्तान, हावड़ा आदि आदि स्थानों के ईस्वी सन् १९२३ के हिंदू मुसलमानों के दंगों में हमने अनेकों ऐसे लोगों को देखा जो इधर उधर भागते फिरे और उनके घरों पर उनकी स्त्रिआदि के साथ अन

*देखो मा० म० गु० रिपोर्ट सन् १८९१

होनी बातें होती रहें अन्यथा भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में क्षत्रियों का धर्म ऐसा बतलाया है:—

हतोवा प्राप्स्यासि स्वर्गं जित्वावा भोक्ष्यसे महीम्
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृत निश्चय।

श्री मद्भगवद्गीता अ० २ श्लोक ३७

भा० भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि हे कौन्तेय! धर्म युद्ध के लिये तू उठ, कारण कि धर्म की रक्षा करना ही क्षत्रियों का परम धर्म है क्योंकि धर्मयुद्ध में यदि तू मर गया तो तुझ को स्वर्ग लोक मिल जायगा और यदि तुमने विजय प्राप्त करली तो तुम राज्य ऐश्वर्य्य को भोगोगे।

दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि इस महामंत्र की शिक्षा हिन्दू पबलिक को सुनाने व समझाने वाले न रहें हां निरी कथा भागवत वांच कर अपनी स्वार्थ सिद्धि करने वालों की तो कमी नहीं है यदि यह बीज मंत्र हिंदू जाति के कानों में भरा हुआ होता तो आज सन् १६२३ में हिंदू मूर्तियों के मुंह में यवन लोग पेशाब की धार न लगाते, दो दो दिन तक हिंदुओं की लाशें कुत्ते व कौओं की तरह से सड़कों पर न पड़ी हुयी रहतीं, गर्भ वतियों के पेट में छुरी घुसेड़ कर बच्चे जीते जागते कूओं में न फेंक दिये जाते। हाय! हिन्दू जाति! तू कब तक तेर मेर व छुटाई बड़ाई के झगड़े में परस्पर घर की घर में लड़ती रहेगी? भगवान की इस महान आज्ञा का उल्लघंन तू कब तक करती रहेगी? हिंदू धर्म के झंडे के नीचे हिन्दू मात्र का कर्त्तव्य है कि पारस्परिक साम्प्रदायिक घरेलू विवाद को एक ओर रख कर Hindu Nation के नाते से धर्म युद्ध की लड़ाई में सब हिन्दूमात्र एक होकर

काम करें तब देश का कल्याण होगा अन्यथा हमारी भविष्यवाणी यह है कि विक्रम सम्वत २०३१ पहिले पहिले ५० वर्ष में हिन्दू जाति का नाश हो जायगा।

कर्म्म धर्म ।

सुराव, काछी और कोइरी ये तीनों जातियें क्षत्रिय वर्णस्थ होने से जनेऊ पहिनने सन्ध्या, अग्निहोत्रादि पञ्चमहायज्ञ करने व सोलह संस्कार करने की अधिकारणी हैं क्यों कि जनेऊ बिना सब की शूद्र संज्ञा होती है अतएव जो लोग, अज्ञान वश जनेऊ रहित हों उन्हें अति शीघ्र जनेऊ लेलेनी चाहिये, जो लोग जान बूझकर जनेऊ लेना नहीं चाहते हैं उन्हें धर्मशास्त्रों को देखना व सुनना चाहिये जिससे वे बढ़े फलें और फूलें तथा उनकी गिनती उच्च जातिया में होने लगे बिना जनेऊ के पितरों को पानी भी नहीं पहुंचता है। साथ ही में यह भी उपदेश है कि जो काम विधि पूर्वक किया जाता है वह फल दायक होता है अतः अच्छे योग्य विद्वनों से जनेऊ व गुरुदीक्षा लेने से ही कल्याण होता है अन्यथा गड़बड़ सड़रड़ ढंग से जनेऊ लेलेने से भी कुछ लाभ नहीं।

यदि आप लोगों के जनेऊ आदि संस्कार कोई न करावें व किसी प्रकार की इन्कारी करें तो आप हमें बुलावें हम विधि पूर्वक करादेंगे तथा कोई शङ्का समाधान व शास्त्रार्थ करेगा तो भी हम सब कुछ निवट लेंगे।

कोइरी, काछी, और मुराव इनके गोत्रादि एक ही हैं जिस प्रकार ब्राह्मणादि में गोत्र सूचक शासन होते हैं तैसे इनमें इनकी भेद गोत्र सूचक हैं जिनसे गोत्रों का काम चल सक्ता है तथापि इनके गोत्र इस प्रकार हैं—

गोत्र—भारद्वाज २ पूतिमाक्ष (जमदग्नि) ३ वशिष्ठ ४ हरति ५ विष्णु ६ गौतम ७ कौडिन्य ८ कौशिक ९ विश्वामित्र १० काश्यप ११ शौनक १२ माण्डव्य १३ शाक्य १४ शृंगो १५ वात्सल्य।

भेद—कन्वेजिये, सकसेने, हल्दिये, मुराव, काछी, जैसवार, भक्तिया, अयुध्यावासी, ठकुरिया, भदौरिया, सिगरोरिया, वाछल।

तम्बोली ।

यह क्षत्रिय जाति है संस्कृत में 'ताम्बूल' पान को कहते हैं और पान की जो जीविका करे वह लौकिक में तम्बोली कहा जाता है संस्कृत में तो इसकी व्युत्पत्ति विद्वानों ने ऐसी लिखी है कि—

"ताम्बूलानि सन्ति अस्य सःताम्बूली"

अर्थात् ताम्बूल (पान) जिस के पास हैं वह ताम्बूली कहाता है इसका भावार्थ किसी किसी विद्वान ने ऐसा भी लिखा है कि—

"ताम्बूलानि विक्रीणातीति ताम्बूल विक्री" ।

अर्थात् पानों को बेचता है वह 'ताम्बूल विक्री' कहाता हैं पर यह व्युत्पत्ति ठीक नहीं क्योंकि इससे ताम्बूल विक्री शब्द सिद्ध होता है उपरोक्त अर्थ के भाव को लेकर शुद्ध शब्द 'ताम्बूली' सिद्ध होता है जो भाषा में तम्बोली व तमोली कहा जाता है जिसका भावार्थ ऐसा होता है कि जो पानों को रखकर व्यवसाय करे वह तम्बोली कहाता है और ऐसा ही प्रायः देखने मे भी आता है कि जो पानों का धन्दा करे वही तम्बोली कहाता है हम ने अपनी यात्रा में भ्रमण करके पबलिक तहकीकात द्वारा निश्चय किया है कि इस धन्दे के व्यवसाय में कोई विशेष धन नहीं लगता और दस बीस पचास रुपयों में ही कुछ अच्छी आमद होने लगती है अतएव हरेक जाति के मनुष्य बड़े २ शहरों में पानों की दुकान करके बैठ जाते हैं और पान बेचने सेवे तम्बोली कहे जाने लगते हैं हमने अपने स्वनेत्रों से ब्राह्मण वनिये ठाकुर कहार माला आदि जातियोंके लोगों का पानोंकी दुकान करते देखा है और वे भी इस काम को करते २ कुछ समय में तम्बोली कहाने लगते हैं। अपने अन्वेषण में हमने पान की दुकान करने वाले एक महाशय से एक चौरासिया तम्बोली का नाम पता पूछा तब वह बोला "महाराज मैं तो ब्राह्मण हूं तम्बोली नहीं हूं, आप किसी तम्बोली से पूछिये तो आपको शीघ्र पता लग जायगा" ऐसी स्थिती में यह एक तरह का धन्दा व पेशा है जिसके आधार से जाति का नाम पड़जाता है ऐसी ही दशा अन्य दर्जी, सुनार, खाती आदि आदि काम करने वालों की जानिये इस से सिद्ध होता है कि तम्बोली कोई जाति विशेष नहीं

आधुनिक ग्रन्थ व पुस्तक जो कुछ ही काल की बनी हुई हैं उनमें से किसी किसी में तम्बोली जाति की उत्पत्ति भी ऊट पटांग लिख मारी है यथाः—

"वैश्यात्तु शूद्र कन्यायां जातस्ताम्बूलिकस्तथा" इससे ताम्बूलिक जाति की उत्पति संकरवर्णी लिखी है इस ही तरह वर्ण. ज्ञा. वि. नामक पुस्तक में इन की उत्पत्ति और ही क्रम से लिखी है पर वह और यह दोनों परस्पर विरुद्ध होने से दोनों ही मिथ्या व घड़न्त सिद्ध होती हैं इसलिये अमान्य हैं क्योंकि यह सब किसी द्वेषी की रचना है यदि थोड़ी देर के लिये तर्क बुद्धि रहित होकर विचार शून्यता से इसे मान भी लें तो आधुनिक संकरवर्णी ताम्बोली जाति दूसरी है क्योंकि इन से पहिले भी सतयुग में तम्बोली जाति एक उच्चवर्णी जाति थी क्योंकि यदि ये संकर वर्णी जाति होते तो उस समय के ब्राह्मणें क्षत्रिय लोग इनके हाथ का पान नहीं खाते क्योंकि पान में तम्बोली का हाथ लगता है, पानी लगता है कत्था चूना भी तम्बोली के घर का औटाया हुआ होता है इस लिये प्रमाणित होता है कि यह सब तम्बोली के यहां का ग्रहण किया जाता है तो तम्बोली जाति छोटी जाति नहीं मानी जा सक्ती यदि तम्बोली जाति शूद्र व छोटी जाति होती तो इनके यहां जल-पान चारों वर्ण ग्रहण नहीं करते। रामायणादि ग्रन्थों से भी पता चलता है कि उस समय भी तम्बोली जाति उच्चवर्णी जाति थी। यथाः—

अवधपुरी की तम्बोलिन बेही जनकपुर आय।
ताते जनक के महल को पान देन नित जाय॥

(तुलसी०)

अर्थात् अयोध्यापुरीकी एक तमोलिन थी जो अयोध्या से जनकपुरी में ब्याही गई थीं जो नित्य राजा जनक के महलोंमें पान देने जाया करती थी।

यदि संकर वर्णी ताम्बूलिक जाति को मान ही लें कि जो कुछ छोटी मोटी आधुनिक पुस्तक में लिखा है वह ठीक है तो भी अन्वेषण से पता चलता है कि यह संकरवर्णी तम्बोली जाति अलग है जैसा कि

श्री भारत धर्म महामंडल के महा महोपदेशक जी ने लिखा है "यह दूसरे ताम्बूलिक हैं यह भी पान बेचने का व्यवसाय करते हैं" (देखो JA, BHA, P. 299) इसलिये यहां हम उन तम्बोलियों का निर्णय करते हैं जो सतयुग से द्विज चले आरहे हैं और जो कुछ ही वर्षों से पानों का धन्दा करते रहने से अपने आपको तम्बोली मान बैठे हैं और तद्वत ही लोग भी उन्हें समझ रहे हैं।

जैसा कि हम ऊपर दिखलाआये हैं कि अयोध्या जी की तम्बोलिन जो जनकपुरी में ब्याही थी वह नित्य राजा जनक केयहां पान देने जाया करती थी और रानियों व सीता जी के पास बैठा ऊठा करती थी अतएव यदि वह शूद्र वर्ण संकर होती तो रनवास में कैसे आ आ सक्ती थी और कैसे उसका क्षत्रिय महारानियों के साथ सहवास होता? यथाः—

ये दोउ नृप दशरथ के ढोटा, बाल मरालन के कल जोटा।
मुनि कौशिक मख के रखवारे, जिन रण अजय निशाचर मारे।
श्याम गात कल कंज विलोचन, जो मारीच सुभुज मर मोचन।
कौशल्या सुत सो सुख खानी, नाम राम धनु शायक पानी।
लक्ष्मण नाम राम लघु भ्राता, सुन सखि तासु सुमित्रा माता। तु०

भा० यह उस समय की कथा है जब श्री रामचन्द्र जी व लक्ष्मण जी विश्वामित्र जी के यज्ञ की रक्षा करने गये थे तब जनक के बाग में दोऊ भाई टहल रहे थे तब महलों में सीता महारानी की माता आदि ने पूछा कि "यह दोनों लड़के किनके घूम रहे हैं?" तब वह तम्बोलिन जो अयोध्या जी की थी श्री राम लक्ष्मण जी को जानती थी अतः उसने इसका परिचय वहां दिया है। इस भावार्थ से ऐसा भाव निकलता है कि राज माताओं के पास बैठने उठने वाली उच्चवर्णी ही सखी सहेली हो सकती हैं शूद्र कदापि नहीं। स्कन्द पुराण के शिवसम्वाद में लिखा है।

ताम्बोल भूपतिर भूच्छुति शास्त्रशाली।
प्राग् भारते विशद राजकुला वतंसः ॥ ८७ ॥
तस्माद्भवा नृपति मण्डल मण्डिताङ्घ्रि।
ताम्बोलि भूमि पतयो जगती प्रसिद्धाः ॥ ८८ ॥

भा० पूर्वकाल में वेदशास्त्र के जानने वाले श्रेष्ठराज कुल भूषण ताम्बोल महाराज हुए हैं उनकी सन्तान संसार में ताम्बोली प्रसिद्ध है। अतएव तम्बोली जाति ताम्बोल महाराज की सन्तान होने से क्षत्रिय वर्ण में है। (२) प्राचीन क्षत्रियों की वंशावलि के पृष्ठ १६६ में ताम्बोल एक क्षत्रिय वंश लिखा है जो तंवर राजपूतों की एक खांप है अतएव तम्बोलियों की क्षत्रिय खांप भी सिद्ध होती है। (३) तम्बोली कहाने वालों में 'कटिहार' कुल भी एक क्षत्रिय वंश है जिसे कर्नल टाड ने क्षत्रियों के ३६ प्रसिद्ध भेदों में से एक लिखा है। (देखो लखनऊ छापा उर्दू टाड राज० जि० १ पृ० २३४ तर्जुमा द्वारका प्र०) (४) हिंदी टांड राजस्थान भाग पहिला छापाखाना मुम्बई में भी यह वंश क्षत्रिय वंश लिखा गया है। (५) कुंवर B. Singh बी सिंह ने अपने ग्रंथ के पृष्ठ १६६ में कटिहार को क्षत्रियों का एक भेद लिखा है। इन लोगों की वस्ती बुलन्दशहर, हर्दोई, एटा, और इटावा में विशेष पाई जाती है। (६) मिस्टर C. S. W. C. अफसर ने अपने ग्रंथ के पृष्ठ २८१ में कठियार क्षत्रियों का एक भेद लिखा है। (७) Mr. Edwin T. A. B. A. सरकारी अफसर ने अपने सरकारी गजेट में 'कटिहार' क्षत्रिय वर्ण का एक प्रसिद्ध भेद माना है जो तम्बोली कहाने वालों में एक प्रसिद्ध भेद है। (८) हमने काशी में व्याकरणाचार्य पं० चुन्नीलाल जी से पूछा तो उन्होंने सम्मति दी कि 'कटिहार' शब्द कष्टहार का विगड़ कर वना है अर्थात् धर्म रक्षार्थ जिस क्षत्रिय वंश ने वड़े वड़े कष्ट सहे वे 'कष्टहार' वोले जाते थे जिस का भाव ऐसा है कि कष्टों को जो नाश करदे, सहले वह कष्टहार कहा जा सकता है यह भाषा शैली है सम्भव है कि 'कष्टहार' का कठिहार होगया हो। (६) पं० हरिदेव जी ने 'कठिहार' शब्द को 'कटार' से वना लिखा है और कटार क्षत्रिय ही धारण कर सकते हैं।

श्रीमान बा० सुखीलाल जी प्लीडर इटावा।

आप कटिहार वंश के एक रत्न हैं अन्य देश के शुभचिन्तकों के साथ हम आपका भी फोटो इस ग्रंथ में देना चाहते थे, पर ग्रंथ के प्रकाशन की शीघ्रता के कारण भारतमाता के सपूतों में से हम किसी का भी फोटो न दे सके ऐसी दशा में हमने अपना फोटो भी नहीं दिया। जव से याने करीव दस पन्द्रह वर्ष से हमारे यहां जाति निर्णय मंडल की स्थापना हुई है तव से आप प्रायः देशहितैषिता पत्रादि हमें

देते हुए मंडल को कई प्रकार की सहायता दी है, स्वजाति सेवा के लिये हम आपकी क्यो क्या प्रशंसा करें क्योंकि आप सन १६१६ में भारतवर्षीय तमोली सम्मेलन जब्बलपुर के आप सभापति रहे हैं और स्वजातिसेवार्थ तन, मन, धन लगाया ही करते हैं आपने तम्बोली जाति के निर्णय के लिये कई बार मंडल को लिखा पर भगवान की कृपा से सब काम समय समय पर ही हुआ करते हैं अतः यह निर्णय भी आपके आग्रह पर भेंट है आप सच्चे आर्य्य हैं पबलिक के दुःख व विधवाओं तथा फेरों की गुनहगार कन्याओं के पुनर्विवाह व उनके उद्धारार्थ आप विशेष चिन्तित रहते हैं, आजकल आप प्लीडर एक अच्छी वकोलत की आमद को छोड़ कर आप युक्तप्रदेश के कई ज़िलों में भ्रमण किया और सोती हुई तम्बोली जाति को जगाया जिससे कुछ शिक्षा का प्रचार हो चला है। इनकी जाति वाले क्षत्रिय साखा के तम्बोली सहारनपुर, बुलन्दशहर, मथुरा, आगरा, इटावा, मैनपुरी, फरुखाबाद, हरदोई, खेड़ी, शांहजहांपुर, सीतापुर, पीलीभीत, बदायूं, अलीगढ़ और एटा आदि आदि ज़िलों में सदाचारी व प्रतिष्ठित समझे जाते हैं। कासगंज में हमने एक तम्बोली को जनेऊ धारी व पंचमहायज्ञ करने वाला देखा है। आप भी नित्य कर्म सदैव करते हैं।

बरई, बारै व बारैया:—यह क्षत्रिय जाति का एक भेद है, कुंवर B. Singh बी० सिंह ने अपने ग्रंथ में क्षत्रियों की सूची के पृष्ठ १२२ में 'बरहिया' एक भेद क्षत्रियों का लिखा है अतः देश देश की भाषा की भिन्न भिन्न दशाओं के कारण 'बरहिया' का बारै व कहीं कहीं बारैया व बरैया प्रचलित होगया। क्योंकि मिस्टरC. S. W. C ने भी अपने ग्रंथ में इसे तम्बोलियों का एक भेद लिखा है यह भी तम्बोली जाति का एक भेद है ये लोग पान की खेती करते हैं और पानों को थोकबंद बेचते हैं परन्तु तम्बोली लोग पान लगा कर फुटकर बिक्री करते हैं, कोई कोई लोग इसे अलग जाति समझने लगे हैं पर यह ठीक नहीं मिस्टर शेरिंग ने भी ऐसा ही माना है। यह नाम होने का कारण यह है कि जो लोग पानों की खेती करके ढेरों के ढेर सुरक्षित दशा में जहां रखते थे उसको 'बरैठा' कहते हैं जिस ही से बरई व बरैया बना प्रतीत होता है। (C. & T. P. 278)

जैसवार:—यह क्षत्रिय वंश है इसके लिये एक कलक्टर साहब ने लिखा है कि A Sept of Rajput यह एक क्षत्रिय कुल है जो तम्बोलियों में प्रचलित है। कुंवर B. Singh बी सिंह ने भी

"जैसवार" को क्षत्रियों का एक भेद लिखा है, ये चन्द्रवंशी हैं (देखो, क्ष० वं० १६४)। श्री वास्तवः—यह भेद तम्बोली जाति में है इसको विद्वानों ने क्षत्रियों का एक भेद माना है। भदेसियाः—यह क्षत्रिय वंश था आजिविका वश पान का धन्दा करने लगगया। मधेसियाः—मिस्टर कूक ने लिखा है कि who are resident of Madhyadesh. जो मध्यदेश के रहने वाले हैं। बघेलीः—यह क्षत्रिय वंश है इसे 'बघेलवाल' भी कहते हैं। (देखो क्ष० सू० पृ० २०६) मिस्टर C. S. W. C. ने भी अपने ग्रन्थ के पृष्ठ २०४ में इस जाति को राजकुल की एक शाखा लिखी है। M. C. R. Page 531 में भी यह भेद क्षत्रिय वंश का लिखा है। बैसवालः—इसे बैसवार भी कहते हैं। इतिहासों में 'बैस' एक राजपूत वंश लिखा है उस ही राजपूत वंश के लोग बैसवाल व बैसवार कहाये। छत्री, गौड़, गहरवारः—और जादों ये चारों क्षत्रियों के प्रसिद्ध भेद हैं अतः इनके प्रमाणित करने की कुछ आवश्यक्ता नहीं, इनका विस्तृत विवर्ण क्षत्रिय वंशावलि में लिखेंगे। नागवंशी, नन्दवंशी, रघुवंशी, राजपूत राठोड़, रावत और ठाकुरः—

ये भी तो प्रसिद्ध सर्वमान्य राजपूतों के भेद हैं अतएव निश्चय पूर्वक ये क्षत्रिय हैं। मुंशी जी ने लिखा है कि कूंवलावत, मरमट पीपरनीवाल, धामणिया और भंवरीलाल ये पांचों राजपूतवंश चौहाण खांप के तम्बोली हैं।

जातिपद।

The Tamboli from his connection with the production and sale of what is almost a necessity in Indian life, holds a fairly respectable position. They observe a high degree of personal purity, and will eat Kachchi only if cooked by a member of their own Caste and Pakki cooked by a Brahmin or Halwayee.

(C. & T., Page 458.)

भा० भारतवर्ष की जनता के लिये एक अत्यावश्यक पदार्थ (पान) की कृषि व विक्री करने के कारण तम्बोली जाति का पद निःसन्देह रूप से प्रतिष्ठि है ये उच्चत्तम कोटि की पवित्रता रखते हैं और कच्ची रसोई तो केवल अपनी जाति वालों के हाथ की खा सक्ते हैं और पक्की रसोई मिठाई पूरी ब्राह्मण व हलवाई के हाथ की खा सक्ते हैं।

(देखो सी. अन्ड. टी. पृ० ४५८)

Many of them are Bhagats and avoid the use of meat and spirituious liquor.

इस तम्बोली जाति में बहुत से "भगत" होते हैं जो शराब व मद्य मांस को स्पर्श तक नहीं करते हैं।

The Barai and Tambolies are the growers and sellers of Pan and most High Caste Hindus will take Pan from them and chew it. For this reason I originally prepared to class them with Halwai.

(C. S. R. 328.)

भा० बारई और तम्बोली पान पैदा करने वाले और बेचने वाले होते हैं और अनेकों उच्च हिन्दू जातियें उनके हाथ से लगी हुई पान बीड़ी ग्रहण कर उसे चबाते हैं इसलिये जाति का पद हलवाइयों के बराबर है। जो वैश्य वर्ण में माने जाते हैं।

Tamboli and Barai (sellers and Cultivators of Pan). The general opinion seems to be that the last three of these have been placed too high in spite of the fact that members of the twice born caste will take Pan from a Tamboli. (C. R. 326.)

भा० तम्बोली बरई:—पान की खेती करने व बेचने वाले बहुत ही ऊंचे पद के हैं क्योंकि: सम्पूर्ण द्विज इनके हाथ का पान खाते हैं। (देखो सी. आर पृ० ३२६)

ब्र० पुराण के कृ० खंड में तम्बोलियों के लिये लिखा है कि "ताम्बूलि स्वर्ण कारौच तथा वणिज जातयः" अर्थात तम्बोली जाति व्यापार करती है अतः वैश्य वर्ण को जाती है इस से भी तम्बोली जाति द्विज ही सिद्ध होती है।

In Agra we find the Barai, Chaurasia and Kathyar, who are brobably the Kathyar of the census emmeration and do not allow widow marriage.

(C. & T. Page 356.)

आगरे में बरई चौरासिया और कटिहार ये तीन तरह के तम्बोली विशेष हैं जो सरकारी मनुष्य गणना में कटिहार स्थम्भ में लिखे गये हैं जिनके यहां (अन्य क्षत्रियों की तरह) विधवा विवाह नहीं होता है।

Public Opinion लोकमत।

तम्बोली जाति का अन्वेषण मण्डलस्थ वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों द्वारा किया गया प्रश्नों के उत्तर इस जाति के यहां से लिये गये जिन से प्रमाणित हुवा कि यह जाति क्षत्रि वर्ण में हैं। हम ने विशेष रूप से इटावाह मैनपुरी आदि स्थानों में तहकीकात कियी और सर्व साधारण प्रतिष्ठित जनता से भी पूछ ताछ कियी जिन से भी इस जाति का क्षत्रियत्व प्रमाणित हुवा है।

प्रश्नों के उत्तरों से यह भी प्रमाणित हुवा कि इनमें पुत्र जन्मोत्सव पर तीर कमान पकड़ने की रीति और विवाह के समय कटार व तलवार रखने की रीति और इन के अभाव में छुरी का प्रयोग की रीति तथा दशहरे पर तलवार व छुरी का पूजन आदि आदि द्वारा स्पष्टतया प्रगट होती है कि लोग आदि से क्षत्रिय हैं क्योंकि इनमें संस्कारों की परिपाटी भी अन्य द्विजों के अनुकूल ही है क्योंकि इनमें कटिहार बघेले आदि आदि भेद भी क्षत्रियत्व बोधक हैं अतः यह क्षत्रिय हैं।

इन सब के अतिरिक्त हमने सर्वसाधारण जनता से इनका जाति पद की तहकीकात करके लिखित प्रमाण पत्र व पबलिक की सम्मति संग्रह किये हैं उनमें पं० मथुराप्रसाद जी चिकित्सक चूड़ामणि, पं० चुन्नीलाल जी मिश्र, बाबू सादीलाल जी मजिस्ट्रेट, मास्टर लक्ष्मीनारायण जी गवर्नमेन्ट कालेज, बाबू बाबूराम जी गुप्त वकील हाइकोर्ट, पं० मनोहर लाल जी, पं० रघुवीर सहाय जी, पं० बहादुर लाल जी शर्म्मा, पं० मक्खन लाल जी शर्म्मा आदि आदि महानुभावों के सर्टिफिकेट कटिहार कुली तम्बोलियों के क्षत्रियत्व प्रतिपादन करने के लिये बड़े प्रबल प्रमाण हैं।

हमारे पास एक लम्बा खरीता व्यवस्था स्वरूप वत अनेकों ब्राह्मणादि के हस्ताक्षरों युक्त आया जिसके आधार से भी प्रमाणित हुवा है कि युक्त प्रदेश के इटावा मैनपुरी, फरुखाबाद, कानपुर आगरा आदि आदि जिलों में क्षत्रिय वर्णस्थ तम्बोली विशेष हैं।

सरकारी रिपोर्ट से उद्धृत भेद।

अहरवार, अहर, अजुध्याबासी, कानपुरिया, पछवाहा, उत्तराहा, बनया, शेवर, गोंडर, कोकास, नानकशाही, उमर, पंवारिया रौतेली, संदिल, परतावगढ़ी, फुहिहारा, सोखवा, कन्नोजिया, वृन्दावनो, दखिनाहा, जौनपुरी, महोबिया, सर्जुपारी, बनजारिया, गड़रिया, गौरिया

कठेरिया, फरवार, महरवा, पंसारिया, राजवंशी, शुक्लवंश, भेरीहारा धनवरिया, सेमारिया, फतमार। (C. S. W. C. Report.)

चौरासिया, वारे, जैसवार, कठिहार, तेंदुहारा, श्रीवास्तव, जौनपुरिया, नासरखानी, भदेसिया, मथेसिया, मधेसिया, खारवाड़ा, अहेरिया, वघेली, घैसवाल, छत्री, गौड़, गहरवार, जार्दौ जनवार, कहार कायस्थवार, कल्वार, लूनिया, नागवंशी, नंदवंशी राजपूत, राठौड़ रावत, ठाकुर, अहरवार, अजुध्यावासी, बिन्द्रावनी, गंगाधारी, जमुनापारी, कन्नौजिया रघुवंशी मथुरिया (C. & T. P 455 & 456.) कुंवलावत, मरमट, पीपरनीवाल, घामणिया और भंवरीवाल चौं‿ाण। M. C. R. P 517

चौरासिया।

तम्बोलियों में चौरासिया भी एक भेद है, इनमें से किसी किसी का कहना है कि 'चौऋषिया' शुद्ध शब्द का बिगड़ कर चौरासिया होगया है पर चौऋषिया का भाव केवल मनोगत होने से माना नहीं जा सक्ता।

सहारनपुर व फैज़ाबाद के भूतपूर्व कलक्टर ने लिखा है:— "Who seem to take their name from Pargna chaurasi in Mirzapur District. अर्थात् मिर्ज़ापुर ज़िले के चौरासी परगने के कारण से इनका यह नाम पड़ा जान पड़ता है। इसकी जांच पड़ताल करने से हमें ऐतिहासिक विद्वानों ने ऐसा पता बतलाया है कि राजपूताना प्रान्त में 'चौरासिये' नाम की एक ब्राह्मण जाति है जो गौड़ ब्राह्मण समुदायान्तर्गत है * विक्रम सम्वत ६०० के आस पास राजा धर्मपाल ने उपरोक्त चौरासी परगने में एक यज्ञ कराया था उसमें सैकड़ों ब्राह्मण एकत्रित हुए थे उसमें जो बड़े बड़े विद्वान थे उन्हें बड़ी बड़ी दक्षिणायें मिलीं थीं और साधारण ब्राह्मण थे उन्हें एक एक पान व एक स्वर्ण मुद्रा दिया ऐसे चौरासी ब्राह्मण थे अतएव वे उस दक्षिणा के कारण परस्पर चौरासिये कहने कहाने लगे और ब्राह्मण लोग पान खाते नहीं थे अतः उन्होंने उन पानों को इकट्ठे करके बेच दिये जिससे पान के व्यापारी ने उन्हें कुछ द्रव्य दिया अतः उस व्यापारी को पान के व्यापार से धनाढ्य देख कर इन्होंने भी पान की खेती व व्यापार करने के हेतु ये लोग भी युक्तप्रदेश व बुन्देलखण्ड के उन शहरों में जब से, जहां पान की खेती व व्यापार विशेष होता था। इस तरह ये वहां रहने से इनके समूह का नाम 'चौरासिया' व इनके गोत्रों की पहिचान उनकी सन्तान ने अपने २ गावों के नामों पर

* चौरासिये ब्राह्मणों का हाल ब्राह्मण निर्णय में भी लिख आये हैं।

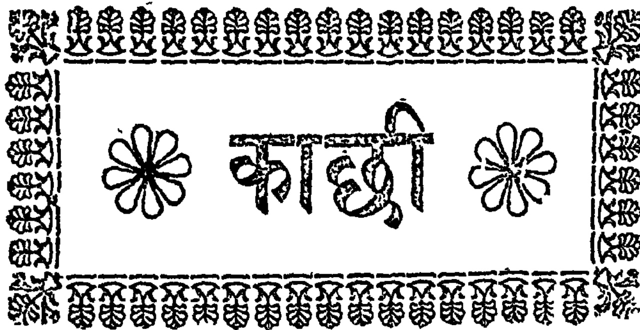
रखखी जिससे उनके चौरासी गोत हुए यथाः—

चौरासिया तम्बोलियों के ८४ गोत्र ।

१ कनवजिया २ कटारिया ३ कलेटा ४ कठेला ५ कलौजा ६ कुरकरिया ७ कुटा ८ कुल्हा ९ कुधना १० खजुआ ११ खीरसमदमलेरिया १२ खमेला १३ गढावार १४ गुडैया १५ गुनेरिया १६ गेडोलिया १७ गोहैलोत १८ गोरेडा १९ घटमेला २० चतेला २१ चुरेला २२ चूलिया २३ चक्की फेर स्लेटिया २४ चित्तौड़िया २५ जसरेला २६ जसमेला २७ जतेला २८ जैतुराह २९ झंडेला ३० झौंडेला ३१ डूंगरिया ३२ तवायत ३३ रवक सर्दार ३४ दवहा ३५ धपरिया ३६ धमूनिया ३७ धनेरिया ३८ धान कुधान ३९ धानुवैशनी ४० धनुकवंश ४१ नरसरिया ४२ नकलोटिया ४३ नकेला ४४ नौखरिया ४५ पचलोडिया ४६ पहारिया ४७ पटौंदिया ४८ पंचमोरी ४९ पचभय्या ५० पचपौंदिया ५१ परमेशरिया ५२ पारसिया ५३ वरहरिया ५४ वंदछोड़होविया ५५ विछूनिया ५६ दंवेला ५७ बघेला ५८ वसवरिया ५९ वनरेला ६० विद्रावनी ६१ वंदी छोड़ ६२ वैरहा ६३ वढ़कुल ६४ वनघेला ६५ वरवार ६६ वटरिया ६७ विन्द्रावन के खंभ ६८ भारद्वाज ६९ महोविया ७० मोहनिया ७१ भजोरिया ७२ मजमलिया ७३ मुरदिया ७४ रमेला ७५ रसेला ७६ रिछोरिया ७७ रौतेला ७८ लोहकरेला ७९ सलेटा ८० सजमेला ८१ सकरेला ८२ संदेला ८३ सरेला और ८४ हारसिहार मन्हेटिया ।

इस तरह तम्वोली जातिमें चौरासी ब्राह्मणों के कारण चौरासिया तम्बोली भी एक भेदहुवा, हम इनके लिये अन्वेषण करने को लखनउ, कानपुर, काशी आगरा, दिल्ली आदि आदि कई स्थानों में गये वहां चौरासियों से पूछने पर उन्होंने अपना वर्ण ब्राह्मण वतलाया उन के आस पास रहने वालोंसे पूछने पर किन्हीं किन्हीं ने कहा "ये लोग अपने को ब्रह्माण ही वतलाते हैं !" विशेष रूपसे लोगों ने इनके आचार विचार की वड़ी प्रशंसा कियी हमने अपने खनेत्रों से कटिहार, चौरासिये आदि अनेकों भेदवाले तम्बोलियों के ग्रहस्थ के याने चौके चूल्हे की बड़ी पवित्रता पायी अतएव निश्चय हुवा कि ये द्विज हैं ।

लोक संख्याः—वंगाल १०५४१६ पश्चिमोत्तर प्रान्त ५४१३४ मध्य भारत २४३८९ पश्चिमोत्तर प्रान्त की सन १९०१ की मनुष्य गणना के अनुसार यू० पी में कुल तम्वोली ८०५६१ हैं जिसमें ४२४७२ पुरुष और ३८०८९ स्त्रिये हैं कुल १२२ आर्य्य हैं जिनमें ५५ पुरुष व ६७ स्त्रियें हैं ।



इस जाति के विषय में बहुत कुछ जाति अन्वेषण प्रथम भाग में लिख आये हैं पर वह केवल (Research) अन्वेषण मात्र होने से निश्चित सम्मति नहीं मानी गई तथापि उस ग्रन्थ में सब सार-भूत ही बातें हैं अस्तु !

काछी नाम क्यों पड़ा ?

प्राचीन शास्त्र तथा इतिहासों में गूढ़ दृष्टि के साथ विचार करने से पता लगा है कि भारतवर्ष में हिन्दू जातियों पर कष्ट पर कष्ट आने, राज्य सत्ता की भिन्न भिन्न समय में उलट फेर होजाने के कारण प्रथम तो सच्चे इतिहास का पता ही नहीं चलता।

द्वितीय परशुराम जी महाराज द्वारा २१ बार क्षत्रिय संहार के विपत्ति के घाव भरे भी न थे कि यवनात्याचार के कारण हिन्दू जाति की और विशेष कर क्षत्रिय जातियों की दुर्दशा का चित्र खैंचा जाय तो इस ही प्रसंग का एक बड़ा पोथा बन जाय।

प्रसिद्ध ऐतिहासज्ञ विद्वान् मुं० देवीप्रसाद जी ने लिखा है कि "राजपूतों को मुसलमान बनाने का लग्गा मुहम्मद क़ासिम की चढ़ाई जो सम्वत् ७७० के करीब अरब की तरफ से सिंध पर हुई थी इस से आरम्भ कर के सम्वत् १७६२ तक याने औरंगजेब बाद-शाह के मरने तक के एक हजार वर्ष में लाखों ही राजपूत मुसल-मान कर लिये गये थे क्योंकि शाही ऐसे ही नियम थे कि युद्ध में हार जाने के पश्चात् या तो हिन्दु लोग मुसलमान हो जांय अन्यथा वे कतल करदिये जांय "* शरह की इस आज्ञा व मुल्लाओं के इस

* देखो मा० म० रिपोर्ट भाग ३

फतवे के अनुसार लाखों ही क्षत्रिय कतल कर दिये गये लाखों ही मुसलमान होगये और लाखों ही इधर उधर भाग कर व दूसरे २ धन्धों को कर के व अपने को दूसरी दूसरी छोटी छोटी जाति के बतला कर अपनी प्राण रक्षा की थी। तदनुसार कछवाहे कहीं पर अपने को काछी, कहीं पर कुइरी व कोइरी और कहीं पर अपने को मोरी व मुरई कह कर खेती व महनत मजदूरी में लग गये।

देश की ऐसी विचलित व दुखमई दशा में किसी जाति का यथार्थ पता पाना कठिनतम व दुस्साध्य था। तथापि गूढ़ अन्वेषण द्वारा हमने कई जातियों को क्षत्रिय वर्ण में निर्णय की हैं अतः हम से लोग कहने लगते हैं कि "आपने तो अमुक जाति को क्षत्रिय लिख दी क्या सब को क्षत्रिय व ब्राह्मण ही बना डालोगे?" इस का उत्तर यह है कि न कोई हमारे बनाने से क्षत्रिय होगा और न हमारे बनाने से ब्राह्मण ही हो सकता है वरन् यथार्थ में जो जैसा होगा वह वैसा ही रहेगा अर्थात् वह वैसा ही माना व लिखा जायगा न हम किसी को उच्च बनाने वाले हैं और न हम किसी को नीच वरन जैसे २ प्रमाण जिस जिस जाति के लिये मिले हैं उस उस को उन के प्रमाणाधार पर हम ने उन्हें वैसा ही लिख दिया है।

परन्तु भारतवर्ष में कुछ लोग हमें ऐसे भी मिले हैं जो जहां उन्होंने किसी जाति को उच्च सिद्ध की हुई देखी तहां ही वे हम से आकर कहते हैं कि "इस जाति को तो आपको इतना उच्च सिद्ध कर देना नहीं चाहिये" तब हमें उन के इस कृत्य पर हंसी आती थी और याद हो आता था किः—

चौपाई

खलन हृदय अति ताप विशेषी।
जरहिं सदा पर सम्पति देखी॥
जंह कहुं निन्दा सुनहिं पराई।
हर्षहिं मनहुं परी निधि पाई॥

भा०—खल लोगों का यह स्वभाव होता है कि जहां उन्होंने दूसरे को सुखी देखा कि उनके हृदय में बड़ी चिन्ता उत्पन्न होजाती है और पराये का भला देख कर जलते रहते हैं और जहां उन्होंने दूसरे की निन्दा देखी व सुनी तो वे ऐसे प्रसन्न होते हैं मानों उन्हें एक बड़ा ख़जाना पड़ा मिल गया। ठीक इस ही प्रकार से कई खल मनुष्यों ने हमें उलेहना दिया कि आप ने अमुक जाति को ऐसा उच्च लिख दिया। इस के उत्तर में हम प्रायः कह दिया करते थे कि "जैसे प्रमाण मिले वैसा लिखा गया है" पर इस से वे सन्तोषित न होते थे तब हमने उन से कहा "अच्छा आप इन के विरुद्ध प्रमाण पेश कीजिये" तब तो वे लोग चुप हो जाते थे।

लग भग ३० वर्ष से अन्वेषण करते करते व भारत के भिन्न२ स्थानों में भ्रमण कर के तथा अनेकों महामहोपाध्यायादि विद्वानों व ऐतिहासज्ञ सज्जनों से परामर्श तथा वर्णव्यवस्था कमीशन के २५१ प्रश्नों के उत्तर लेकर हमने निश्चय किया था कि कुइरी, मुराव और काछी ये तीनों नाम मात्र भेदवाली जातियें एक ही कछवाहा वंश के अन्तर्गत हैं तदनुसार निश्चय कर चुकने के अनन्तर हम ने अपने निश्चय को सोना व सुगंध बनाने की इच्छा से कानपुर, लखनऊ और काशी तक में जा कर शास्त्रार्थ का आम नोटिस छपवा दिया कि "जो कोई काछी, कुइरी, और मुरावादि को क्षत्रिय न मानते हों वे सज्जन शास्त्रार्थ कर लें" यह चर्चा काशी के दैनिक व सप्ताहिक पत्रों में भी छिड़ी तिसे देख कर आगरे के माननीय कुंवर हनुमंतसिंह जी रघुवंशी को इस से डाह उत्पन्न हुआ कि काछी कछवाहा क्यों होते हैं ? और तत्काल आप ने एक लेख अपने राजपूत पत्र में काछी कुइरी, मुराव व हमारे विरुद्ध निकाल दिया जिस का उत्तर पं० जे० पी० चौधरी जी तथा ठाकुर भगवंतसिंह जी ने अपने अलग अलग लेखों द्वारा दिया जो कुशवाहा मित्र में दोनों लेख छपे हैं। हमें जब मालूम हुआ कि कुंवर साहब ने हमारे विरुद्ध भी अपने लेख में बहुत कुछ कहा है अतएव विवश हो हमने कुंवरजी को आशीर्वाद स्वरूप में उन के लेख का उत्तर इस ही ग्रन्थ के पृष्ठ २७८ में "काशी निर्णय" स्थम्भ में दिया है तहां देख लेना चाहिये।

हमें अपने मित्रों से मालुम हुआ है कि माननीय रघुवंशी जी आर्य्यसमाजी सज्जन हैं तब इनके इस कर्तव्य पर हमें विशेष दुःख हुआ कि आर्य्यसमाज के सिद्धान्तानुसार तो आर्य्यसमाजी लोग मनुष्य मात्र में प्रीति का सञ्चार करते हैं तब रघुवंशी जी काछी कोइरी मुराव आदि क्षत्रिय जातियों को बुरा समझते हैं सो क्यों ? आर्य्यसमाज में रह कर आपने क्या यह ही सीखा ? और हमें भी बुरा भला कह डाला, पर आपको सोचना चाहिये था कि आपके ही सिद्धान्त के अनुसार हम बुरा क्या करते थे जो आप इतने चिड़े ? मान लीजिये कि आप ब्रह्मा हैं और आपकी समझ के अनुसार काछी कुइरी और मुरावादि सब शूद्र हैं फिर भी यदि हम अन्वेषण से सप्रमाण सिद्ध करते हुये इन्हें काशी में डंके की चोट कछवाहा सिद्ध करते थे तो आपका पेट क्यों दुःखा ?

काशी में भी विद्वानों के दो दल हैं संकीर्ण हृदयी और उदार-हृदयी, इनमें से अनेकों उदार हृदयी विद्वानों ने तो यह माना कि कुइरी, काछी और मुराव लोग अपने आचार विचार व जन्म द्वारा क्षत्रिय ही हैं पर लोगों को अज्ञानवश यह सहन नहीं होता है। संकीर्ण हृदयी समुदाय के लोग हमारे नियम के अनुसार लेखबद्ध शास्त्रार्थ न करके केवल हुल्लड़ करना जानते थे। अस्तु !

जिस प्रकार जातियों का विवेचन हमने किया है वैसे ही कई अन्य देशी व विदेशी विद्वानों ने भी किया है परन्तु प्रायः उन में से अनेकों ने अटकल पंजु ही लिख मारा है फिर भी किसी किसी के अन्वेषण में कोई न कोई बात सारभूत होती है।

काछी जाति के अन्वेषण करने में हमने बहुत कुछ खोज किया और बहुत समय लगा कर विद्वानों के मत संग्रह किये परन्तु सब एक मत नहीं किसी ने कुछ लिखा है तो किसी ने कुछ और ही लिखा अतएव ऐसे विवादास्पद प्रसंग पर हमें निर्णय करना है कि यथार्थ में सत्य क्या है ? धर्म शास्त्र में लिखा है :—

यस्तर्केणानुसन्धत्ते सधर्म वेद नेतरः।

अर्थात् जो तर्क द्वारा निर्णय हो वही वेद का धर्म है दूसरा नहीं। इस जाति का "काछी" नाम कैसे पड़ा ? इसके उत्तर में एक कलक्टर साहने लिखा है:—

Kachhi:—The tribe of opium growers and market gardners.

(C. S. W.C Page)

(१) काछी—अफ़ीमकी खेती करने व साग भाजी तथा फल फलेरी बेचने के कारण काछी नाम कहाया। यह एक कलेक्टर का लेख है।

समीक्षक—किसी एक वस्तु की खेती करना व साग तरकारी फल फलेरी बेचने का धन्दा कुल जाति समुदाय भर सब का सब एक साथ नहीं कर सकता जिससे कुल जाति का नाम "काछी" पड़ जाय। जिस प्रकार आज कल भी ये लोग बड़े बड़े उच्च पदों पर नौकरी, दुकान्दारी, व्यापार, लेन देन व्याज वट्टा और खेती आदि आदि सब तरह का धन्दा आजीवकावश करते हैं तैसे ही पहिले भी करते थे तब ये सब के सब काछी ही क्यों कहाये? कुछ समझ में नहीं आता और आज कल भी इन में भिन्न भिन्न धन्दे प्रचलित होते हुये केवल काछी ही क्यों कहे व माने जा रहे हैं इसका उत्तर भी कलक्टर साहब ही दें, इससे परिणाम निकलता है कि कलक्टरसाहब का उपरोक्त कथन युक्ति संगत न होने से अमाननीय है।

(२) हिन्दी शब्द सागर कोष में काछी नाम तरकारी बोने व बेचने वाले लिखे हैं।

समीक्षक—यह कोष प्राचीनतम विद्वानों का रचा नहीं है पर आजकल के किसी अँग्रेज़दास का रचा हुआ है अर्थात् कलक्टर साहब के लेख को देखकर ही यह ऊट पटांग अर्थ किया गया है क्योंकि संस्कृत शब्दों का अर्थ धात्वर्थ बोधक होता है इसलिये यह अर्थ ठीक नहीं कारण काछी तो अपने को माली कहाने में ही अपमान समझते हैं।

पुनः—

(2) Some connects this with Kachhar the low rich alluvial land which they usually cultivate.

(Crookes).

(3) Kachhar :—Moist low land which they (Kachhi) usually cultivate, the cultivators who till the Kachhar are termed Kachhi.*

(३) भा०—किसी किसी विद्वान् की सम्मति है कि 'कछार' से इस जाति का सम्बन्ध है जो बहुत ही नीची उपजाऊ भूमि होती है जिसे ये (काछी) लोग जोतते बोते हैं ।

(३) कछार एक नीची ज़मीन होती है जिसके जोतने बोने से ही यह (काछी) नाम पड़ गया ।

समीक्षकः—यह युक्ति भी ठीक नहीं, प्रश्न होता है कि क्या जाति भर के सबके सब ही कछार भूमि को जोतते बोते थे ? जब ये लोग कछार भूमि को जोतने बोने से ही काछी कहाये तो आज कल भी तो कछार भूमि को सब ही जोतते बोते हैं वे भी काछी क्यों नहीं कहाये जाते हैं ? और क्या कछार भूमि के जोतने बोने का इस ही जाति के नाम ठेका था जो ये ही काछी कहाये ? इसलिये सरकारी उपरोक्त कथन युक्ति युक्त न होने से अमाननीय है ।

(4) Other from Kachhua, the term for collecting the Opium off capsules of the Poppy.

(Castes & Tribes of C. P.)

(४) भा०—(अ) दूसरे दूसरे विद्वानों ने यह भी लिखा है कि पोस्ता की डोडियों पर से अफीम खुरच के इकट्ठा करने के कारण इन का नाम काछी पड़ा है ।

समीक्षक—काछी शब्द की यह मीमांसा भी एक विचित्रता रखती है क्योंकि पोश्त के ऊपर से अफ़ीम खुरच कर इकट्ठा भारतवर्ष में सब ही जातियें करती हैं इसलिये सब ही का नाम काछी होना चाहिये था पर सब अब तक अपने अलग अलग नामों

---

*Historical and statiscical memoir of Zila Buland-Shahr 1874.

से ही प्रसिद्ध हैं और उनका नाम नहीं बदला, तब इस ही जाति का नाम काछी अफीम खुरचने से क्यों कहाया कुछ समझ में नहीं आता और ग्रन्थकर्त्ता ने ऐसा होने का कोई प्रमाण भी नहीं दिया अतः प्रश्न होता है कि क्या उस समय भारतवर्ष भर में पोश्त से अफीम खुरचने का इस ही जाति के नाम ठेका था जो यह जाति ही काछी कहाई अतएव ये प्रमाण भी मानने योग्य नहीं है।

(5) Ethnological Hand—Book में काछी जाति की व्युत्पत्ति ऐसी लिखी है कि The Popular derivation is Kaha-achha because they speak so nicely.

(५) अर्थात् काछी नाम 'कहा अच्छा' से बना है पर मन घड़ंत सार रहित बात है क्योंकि जिस काछी जाति की लोकसंख्या १२,३५,२५५ है इतने बड़े समुदाय की जाति का नाम 'कहा अच्छा' शब्द से पड़े क्या यह किसी की समझ में आ सक्ता है? अर्थात् किसी के नहीं, ऐसा ज्ञात होता है कि उपरोक्त ग्रन्थकार का यह कथन अनुमानिक सुनी सुनाई बात के आधार पर है।

सरकारी मनुष्य गणना रिपोर्ट में काछी जाति की व्युत्पत्ति एक अनोखे ढंग की वर्णित की गई है कि:—

(6) That a Murao frequently used to interlard in conversation with the word Keachie. He accordingly was nick-named "Ke-achee" which subsequently became corrupted into Kachie.

(C. S. R. 1865.)

(६) एक मुराव बात बात में "कि अच्छी कि अच्छी" कहा करता था जिस से उस का बैंक (चिड़ने का नाम) कीछी कीछी लोग कहने कहाने लगे वही कीछी कीछी का शब्द काछी काछी में प्रचलित हो गया।

समी०—यह विवरण भी आंय शांय अटकलिया है और ऐसा समझ में नहीं आता एक मनुष्य को ऐसा चिड़ाने से लाखों की लोक संख्या का नाम काछी कैसे प्रसिद्ध हो गया? और जब

उस मुराव का वैंक काछी पड़ा तो सब ही मुराव जाति का नाम भी बदल कर "काछी" हो जाना चाहिये था पर न हुआ, तब आज कल की प्रसिद्ध काछी जाति का नाम ही इस वैंक पर से काछी कैसे हो गया कुछ समझ में नहीं आता क्योंकि चौबे जी तो चौबे जी ही रहे तब दुबे जी छब्बे जी कैसे हो गये ?

(७) एक अन्य विद्वान् ने अपनी सम्मति में काछी नाम पड़ने का मूल कारण अन्वेषण करते हुये लिखा है कि "कक्षा" शब्द से काछी शब्द बना है और कक्षा का अर्थ घेरा लिखा है कि ये लोग अपने अपने खेतों के डौर (डौली) लगा कर व घेरा खैंच कर उन की रक्षा करते थे इस से काछी कहाये पर यह युक्ति भी ठीक नहीं क्योंकि यदि ऐसा ही था तो अपने अपने खेतों की डौरी लगा कर व घेरा खैंच कर सब ही लोग अपने अपने खेतों की रक्षा करते हैं तब सब ही जाति के खेतीहार ऐसा करने वाले लोग इस युक्ति के अनुसार काछी कहे जाने चाहिये न केवल यह ही समुदाय अतएव यह युक्ति ग्राह्य नहीं

(८) एक आठवें ग्रन्थकार की सम्मति है कि "काक्षी" शब्द का अपभ्रंश काछी है परन्तु यह भी ठीक नहीं है ।

(९) एक नवें ग्रन्थकार ने लिखा है कि 'कक्षा' जिस का अर्थ घेरा के हैं इससे काछी नाम पड़ा है पर यह ठीक नहीं ।

(१०) हमने अपने जाति अन्वेषण ग्रन्थ में संग्रह मात्र भाव से दूसरे विद्वानों का मत ऐसा लिखा था कि कार्षी शब्द का बिगड़ा हुआ रूप 'काछी' हो गया है पर यदि यह कल्पना ठीक मानी जाय तो यह कल्पना सब ही 'कृषी' कर्मी जातियों के साथ उपयुक्त हो सकती है और इस सिद्धान्त के अनुसार सब ही खेती करने वाली जातियें काछी कही जा सकती हैं पर ऐसा प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा व माना जाता है अतएव यह कल्पना केवल अन्वेषण मात्र को ही संग्रह की गई थी न कि निर्णय रूप से ।

अब प्रश्न होता है कि जब उपरोक्त सब ही युक्ति व प्रमाण अमाननीय सिद्ध हुये तो काछी नाम कैसे पड़ा ?

उत्तर—

संसार में यह देखा जाता है और प्रत्यक्ष भी है कि:—

माया तेरे तीन नाम परस्या, परसी, परशुराम

अर्थात् मनुष्य व जाति का नाम उसके प्रभुत्व अनुपम शक्ति और ऐश्वर्य के अनुसार हुआ करते हैं अर्थात् जब कोई मनुष्य दीनावस्था को प्राप्त हो जाता व प्रभुत्वता व ऐश्वर्य रहित होता है तब लोग उसे ओछे (छोटे) नाम से जैसे 'परस्या' कह कर पुकारनें लगते हैं और जब वही मनुष्य थोड़ी सी अच्छी अवस्था में होता है तब उसे ही लोग **परसी** व **"परसी जी"** कहने लगते हैं। और यदि वही मनुष्य कोई उच्चतम दशा को पहुंच जाय तो उसे लोग **'परशुराम'** व **'परशुराम जी'** कह कर पुकारने लगते हैं चाहे वह कैसी ही नीच से नीच जाति का मनुष्य क्यों न हो। इसलिये जाति के नाम की संज्ञा उस के गुण अधिकार और प्रभुत्वता आदि आदि पर निर्भर है। जैसे नीच से नीच जाति का भी कोई मनुष्य हो और वह किसी प्रान्त का गवर्नर व भारतवर्ष का वाइसराय बना दिया जाय तो बड़े बड़े विद्वान् व सूर्यवंशी चन्द्रवंशी क्षत्रिय राजे महाराजे उन के बराबर बैठने, परस्पर हाथ मिलाने आदि आदि में अपना अहोभाग्य समझेंगे और यदि वह उच्चतमकुलीन, उच्चतम वर्णीय बनने का इच्छुक न भी हो तो भी सम्पूर्ण प्रजा के लोग एक स्वर से उसे उच्चतम बना देंगे और इधर उधर से ढूंढ़ ढूंढ़ कर नाना प्रकार के प्रमाण भी घड़ देंगे। और यदि यथार्थ में कोई उच्चतम क्षत्रिय वंश का पुरुष महा दीन भिखारी हो तो उसे लोग और भी नीचतम समझने लगेंगे। जिस प्रकार से आज कल महाराणा उदयपुर के स्वजाति भाई गोडुले लुहार जो यथार्थ में सीसौदिया राजपूत हैं वे अपनी दीनावस्था के कारण गाड़ी में लुहारपने के औज़ार व चक्की चूल्हा तथा अपने बाल बच्चों को लादे हुये एक गांव से दूसरे गांव दर दर फिरते हुये निर्वाह करते फिरते हैं पर उन्हें सीसोदिया राजपूत कहे व माने कौन? ठीक इस ही प्रकार से काछी जाति कछवाहा शब्द का लघुतम रूप है अर्थात् उपरोक्त आख्यायिका के

अनुसार जिन कछवाहों के पास आज तक राज्याधिकार है वे तो अनेकों अनेकों उपाधियों द्वारा विभूषित होकर **'कछवाहे'** ही कहे जा रहे हैं परन्तु जो मुसलमानी अत्याचार व अन्य सैकड़ों विपत्तियों के कारण राज्य सत्ता हीन होकर दरिद्री हो गये और अपने पेट भरने का कोई साधन न देख कर आपत्ति धर्म को पालन करते हुये कृषि कर्म करने लगे वे केवल **काछी** ही कहे जाने लगे और **"गरीब की जोरू सब की भाभी"** के अनुसार यह क्षत्रिय जाति केवल **'काछी'** ही नहीं कही जाने लगी बल्कि लोग काछी जाति की गणना नीच व छोटी जातियों में करने व समझने लगे और काछी जाति भी अपनी दीनावस्था व विद्या रहितता के कारण अपने को छोटी जाति ही समझने लगी । लिखा भी है:—

राजमान्यो धनाढ्यश्च विद्यावन्तो तपस्विनाम् ।
रणशूरो च दातारो कनिष्ठो ज्येष्ठ उच्यते ॥

भा०—सरकार में माननीय होने धनवान होने विद्यावान् होने, तपस्वी होने रण में शूर वीर होने और दानी होने से कनिष्ट (छोटा) भी बड़ा हो जाता है ।

अतएव कछवाहों व काछियों में केवल अन्तर इतना ही है कि जो कछवाहे इन गुणों युक्त हैं वे अब तक कछवाहे ही कहे व माने जा रहे हैं परन्तु जिन में यह गुण नहीं हैं वे अब तक **'काछी'** नाम से कहे व पुकारे जाते हैं ।

यही नहीं द्वेषी समुदाय ने इस जाति की उच्चता को सहन न कर के एक विदेशी अपरचित एक अंग्रेज विद्वान को यहां तक समझा दिया कि काछी जाति के लोग दासी पुत्र हैं और उस अंग्रेज विद्वान् ने भी हृदय कपाट को बन्द कर के काछी जाति के लिये लिख मारा "Descended from Kachhwaha Thakurs by a slave girl."

(C. & S. 179).

अर्थात् कछवाहा ठाकुर पुरुष व दासिन द्वारा पैदा होने से काछी जाति प्रसिद्ध हुई ।

समीक्षक—प्रथम तो हम ऊपर, लिख ही आये हैं कि यह बिलकुल द्वेषी समुदाय की करामात है हमारे अन्वेषण में अनेकों ग्रन्थ हमने देखे उन में से कई ग्रन्थों के प्रमाण तो हम ऊपर लिख आये हैं और कइयों के प्रमाण आगे इस ही प्रकरण में लिखेंगे परन्तु उन सब ग्रन्थों में यद्यपि बहुत कुछ अटकल पंजु बातें लिखी हैं तथापि उन सब की अपेक्षा **"चंडूखाने की गप्प"** केवल एक मात्र यह ही है।

यदि द्वेषी समुदाय व कोई भला मानुस यह कहे कि अन्य अन्य सब ग्रन्थकारों ने ठीक न लिखा और केवल यही बात ठीक है तो यह भी मानने योग्य नहीं क्योंकि प्रत्येक विषय न्याय कसौटी द्वारा बहुसम्मति पर निर्भर रहते हैं अतएव इस तरह की अकेली एक सम्मति मानने योग्य नहीं। यदि थोड़ी देर के लिये इसे ही प्रमाण मानलें तो भी खैर! क्योंकि फिर भी सत्य का आभास प्रकट हो ही जाता है अर्थात् इस प्रमाण से भी काछी जाति कछवाहा ठाकुर की सन्तान प्रमाणित होती है और वीर्य प्रधानता के नियमानुसार * जब ये कछवाहा ठाकुर के वीर्य से हैं तो ये लोग **कछवाहा ठाकुर अवश्य हैं।**

रही दासी के पेट की सो प्रथम तो यह गप्प ही है द्वितीय राजा, महाराजाओं के यहां अनेकों रानियां व स्त्रियें होती हैं जैसे राजा दशरथ जी के भी कौशल्या, सुमित्रा और कैकेई ये तीन रानियें थीं तैसे ही आज कल वर्त्तमान में राजपूताना के राजस्थानीय नगरों में आकर देखिये कि एक एक राजा के यहां कितनी कितनी रानियें, स्त्रियें, पासवान, दरोगनें, सेठानियें आदि आदि किस किस के यहां

---

* ब्राह्मण निर्णय ग्रन्थ में "वीर्य प्रधान" अध्याय में अनेकों शास्त्रीय प्रमाण द्वारा सिद्ध किया गया है कि जाति वीर्य के अनुसार होती है। देखो ब्रा० निर्णय पृ० २१ से २८ तक।

कितनी कितनी हैं और उन सब की सन्तान क्षत्रिय मानी जाती हैं या नहीं ?

यह तो काछी जाति के क्षत्रियत्व की सिद्धी प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा हुई अब इस विषय में शास्त्रीय मत इस प्रकार है।

सवर्णाग्रे द्विजातीनां प्रशस्ता दारकर्मणि।
कामतस्तु प्रवृत्तानामिमाः स्युः क्रमशोऽवरो॥

अर्थ—ब्राह्मणादि चारों वर्णों को अपने अपने वर्ण में विवाह करना श्रेष्ठ है और काम वश व सवर्ण न मिलने के अभाव में अपने से नीचे २ वर्णों की लड़कियों के साथ भी विवाह किया जा सकता है।

शूद्रैव भार्य्या शूद्रस्य साच स्वाच विशः स्मृते।
तेच स्वाचैव राज्ञश्च ताश्च स्वा चाऽग्र जन्मनः॥मनु०॥

अर्थ—शूद्र शूद्र की कन्या से, क्षत्रिय क्षत्रिय वैश्य और शूद्र की कन्या से वैश्य, वैश्य और शूद्र की कन्या से तथा ब्राह्मण ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र की कन्या से विवाह कर सकता है। यह परिपाटी पूर्व युग में थी आज कल नहीं अतएव यदि पूर्वकाल में किसी कछवाहे ठाकुर ने किसी दूसरे वर्ण की कन्या से विवाह करके संतान पैदा की और वह काछी कहाई तो दोष क्या हुआ इस से उन का कछवाहा क्षत्रियत्व तो बना ही रहा।

दासी रखना यह कोई नई चाल नहीं है किन्तु महाभारत रामायणादि के समय भी राजाओं के यहां दासी रहा करती थीं और अब भी राजाओं के यहां दासियें रहा करती हैं सदैव से विवाह सम्बन्ध सब ही कोई बराबर वाले के साथ किया करते हैं और ऐसा ही आज कल भी होता है किन्तु दासियें जो रहती हैं वे भी कोई नीच जाति की नहीं होती हैं किन्तु उस ही जाति व वर्ण की होती हैं जैसे चौहान राजपूत राजा अपना विवाह अपनी बराबरी की

हैसियत रखने वाले चौहान राजपूतके यहां करेगा परन्तु दासीके बतौर वह गरीब चौहाणों की ही लड़कियों को सेवा चाकरी के लिये रक्खेगा अथवा दहेज में उसे लेलेगा यह रीति हमारे राजपूताने में प्रचलित है अर्थात् राजपूत लोग राजपूत की ही लड़की को दासी बनाते हैं जो वहां दरोगिन कहलाती है और यह विवाह द्वारा दाइजे में ही आती हैं इसलिये यदि इस क्रम से कछवाहा राजपूत की दासी द्वारा सन्तान काछी कही भी गई हो तो भी क्षत्रिय माता पिता की सन्तान काछी जाति शुद्ध कछवाहा राजपूत वंश ठहरते हैं।

इस प्रथानुसार यदि किसी कछवाहे ठाकुर ने किसी दूसरे वर्ण की स्त्री को व्याह के दासीवत रखकर सन्तान उत्पन्न की तो वह भी राजपूत ही कहलाई जायगी। राजपूताने में आज कल दासी स्ववर्ण की स्त्रियों को ही राजा लोग रखते हैं और वे भी विवाही हुई रक्खी जाती हैं अथवा वे दहेज में आती हैं वे भी दासी कहाती हैं, राजा के व उन के संयोग से भी सन्तान होती हैं और वह सन्तान राजपूत ही मानी जाती है केवल भिन्नता इतनी होती है कि पाटवी रानी (पटरानी) की सन्तान राज्याधिकारिणी होती है तो अन्य भाइयों को छुट भैय्या व रावजी आदि की पदवियें दी जाकर जागीरें अलग अलग देदी जाती हैं। शास्त्र विधि के अनुसार मूल्य दे कर भी लड़कियें व्याह ली जाती हैं वे सब दासी ही कहाती हैं, आज-कल तो भारत वर्ष में चारों वर्णों में कन्या का मूल्य दे कर विवाह कर लेने की रीति प्रायः सुनने में आती है तदनुसार वे सब ही दासी कही जा सकती हैं इसलिये प्रथम तो यह लेख ही उचित व माननीय नहीं है क्योंकि यह तो किसी द्वेषी की षड़ंत्र है यदि यह ठीक हो तो भी काछी लोग क्षत्रिय ही सिद्ध होते हैं।

दो चार सरकारी अफ़सरों की ऐसी भी सम्मति है कि कच्छ देश के कारण यानी कच्छ देश से निकास होने से काछी कहे गये पर यह उचित नहीं जान पड़ता क्योंकि यदि ऐसा ही मानलिया जावे तो कच्छ देश के सब ही लोग सब ही जाति के दूसरे देशों में आ कर काछी कहे जा सक्ते हैं जैसे मारवाड़ के कोई भी जाति व वर्ण के

लोग दूर दूर देशों में जाकर "मारवाड़ी" कहे जाते हैं तैसे ही चारों वर्णों के कच्छ के रहनेवाले भी सब दूर दूर जाकर काछी कहे व माने जा सक्ते हैं तब इस कछवाहा जाति के साथ ही ऐसी क्या विशेषता थी कि ये कछवाहे कहाते कहाते कच्छ में चले जाने से व कच्छ से आने पर काछी कहे गये यह समझ में नहीं आता, काछियों का आदि स्थान भी कच्छ देश नहीं था किन्तु काछियों का आदि स्थान अयोध्या, नरवर, ग्वालियर, जयपुर और आम्बेर आदि प्रदेश हैं अतएव उपरोक्त कथन सत्य न होने से हमारे समझ में नहीं आता है, क्योंकि यह एक दूसरे की देखा देखी पिष्ट पेषण मात्र है। यही कारण है कि ऐसे असली (Quotations) कुटेशन्स को (प्रमाण) उद्धृत करना निरर्थक जान कर हमने छोड़ दिया है।

काछी जाति को क्षत्रिय (कछवाहा) सिद्ध करने के पूर्व आवश्यक है कि सर्व साधारण को यह समझा दिया जाय कि 'कछवाहा' कौन वर्ण में हैं ? इसका उत्तर सप्रमाण विवरणयुक्त लेख में दे कर समझाया जाय तो एक पुस्तक तो अलग 'कछवाहा' शब्द पर हो जाय अतएव अति सूक्ष्म रूप से इतना कहना ही पर्य्याप्त होगा कि भारतवर्ष के समग्र ऐतिहासिज्ञ विद्वान् गण सर्वसंम्मति से कछवाहा वंश को सूर्य्यवंशी क्षत्रिय वंश कहते व मानते चले आये हैं, इस कछवाहा नाम की व्युत्पत्ति भी अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार लोगों ने कई तरह से लिखी है परन्तु उन सब को देखने के उपरान्त अन्वेषण से निश्चय होता है कि श्री रामचन्द्र जी महाराज के पुत्र लव व कुश थे इन में कुश बड़े प्रतापी राजा हुये हैं इसलिये कुश के वंशजों का नाम कुशावह हुआ जैसे कुश=रामचन्द्र पुत्र+आवह= आया हुआ, चला हुआ अर्थात् जो श्रीरामचन्द्र जी के पुत्र कुश की सन्तान हैं वे "कुशावह" कहाते कहाते कुशवाहा व समयान्तर में कछवाहा कहे जाने लगे इन्हीं कछवाहों के पास जब तक राज्य बल रहा तब तक ये कछवाहे और पश्चात् राज्य विहीन व शक्ति विहीन होने से काछी कहे जाने लगे। जब काछियों की राज्य शक्ति जाती रही तब भी इन लोगों के पास कहीं कहीं राज्य की टुकड़ियें व छोटी

छोटी जागीर व गांव आदि थे ऐसे प्रमाण भी पुराने इतिहासों में मिलते हैं।

यथा:—

(1) Kulpahar (P. Panwari Jaitpur) First occupants were Kachhis, who when engaged in a quarrel with the Ahirs of a neighbouring village invoked the aid of Banafors and in return for the distruction of their enimies handed over to them the Zamindar of their village.

(U. P. Vol. XXII Hamirpur distt. 1909).

(१) भा०—हमीरपुर जिले की रिपोर्ट में सरकारी अफसर ने लिखा है कि हमीरपुर जिले के कुल पहाड़ पर्गने के पनवाड़ी जैतपुर ग्राम पहिले काछियों के थे परन्तु अहीरों से लड़ाई हो जाने के कारण बानाफोर राजपूतों की मदद काछियों ने ली तिसके बदले में यह गांव बानाफोरों को दे दिया गया।

हमारे देश देश के भ्रमण में कई शहरों में जन-श्रुति हमें ऐसी मिली कि काछी लोग यथार्थ में कछवाहे हैं पर आजकल इनके पास राज्य पाट न होने से बिचारे महनत मजदूरी से निर्वाह करते हैं अतएव इनके धन्दे को देख कर लोग इन्हें एक छोटी जाति भूलवश समझ रहे हैं।

(2) Kachhis were the first occupants and they being at feud with the Ahirs of some neighbouring village cattled in the Banafars to whom in return for the extirpation of their enimies the Kachhis made over the Zamindari of their village, but the time when this took place is unknown.

(Bundela G. P. 504).

(२) भा० इसका भावार्थ उपरोक्त लेखानुसार ही है। इस से प्रमाणित होता है कि "समुद्र सूख भी जाय तब भी कीचड़ तो रह ही जाती है" इस लोकोक्ति के अनुसार कछवाहे राज्य खोकर काछी कहे जाने लगे तब तक भी इनके पास गांव व जागीरें आदि थीं जो इन की हीन दशा में भी राजसत्ता को प्रमाणित करती हैं।

(३) श्री भारतधर्म महामण्डल के महामहोपदेशक पण्डित ज्वालाप्रसाद जी ने अपने ग्रन्थ में काछी जाति को 'क्षत्रिय खण्ड' में लिखी है और इनका विवरण लिखते हुए आपने सम्मति लिखी है कि "एक काछी नाम वाली शूद्र जाति है वह इनसे पृथक् है (क्योंकि) इनकी शाखायें कन्नोजिया; शाक्यसेनी, हरदिया, मुराव, कछवाहा, सलोडिया और अन्धर आदि २ हैं। शाक्य वंशियों की राजधानी फर्रुखाबाद जिले में संकीसा थी, आगरा, मथुरा, फर्रुखाबाद और रायबरेली आदि में विशेष रूप से हैं"।

(Ja. Bha)

(४) देश २ की बोली व भिन्न २ भाषा के कारण कछवाहा लोग कहीं काछी, कहीं कछार, कहीं कछवा और कहीं काशवा कहे जाते हैं।

(5) The Kachhar of Barabanki and Rao Bareilly and the Kachhwa of the Tarai are the same.

(Ethnographical Hand Book by C. S. W. C. I. C. S. 1890).

(५) भा०—बाराबंकी के और रायबरेली के कछार और तराई के कछवा (कछवाहा) ये सब एक ही हैं।

(6) The Kachhar and Kachhwaha against which only 1597 persons have been recorded respectively are not names of separate Castes, but merely variants of the name Kachhi. I have therefore included them in the same table.

(J. C. Nesfields works).

(६) भा०—कछार और कछवाहा जिनमें से कछार १९० और कछवाहा १५९७ मनुष्य मिले हैं ये कोई भिन्न २ जाति के नहीं हैं परन्तु ये काछियों में से ही हैं अतएव सिद्ध हुआ कि काछी, कछार और कछवाहा ये तीनों एक ही वंश के हैं। पुनः—

(7) The Kachhi and Kachhwaha a sept of Rajput allege that they take their names from the Kachchap.

(Folklore and Popular Religion of India Vol. II, P. 149).

(७) भा०—काछी व कछवाहा राजपूत कुलों के नाम कच्छप से पड़े हैं। इन कलक्टर साहब का निश्चय हमें केवल इतना ही ग्राह्य है कि काछी व कछवाहा राजपूत कुल हैं।

पुनः—

(8) Kachhi :—They claim, however some connection with the Kachhwaha sept of Rajputs.

T. and C. Vol. III P. 177).

(८) भा०—यह गवर्नमेण्ट अफसर की सम्मति है कि काछी लोग राजपूत कुल की कछवाहा शाखा के हैं।

पुनः—

(9) Claim connection with the Kachhwaha sept of Rajputs.

(Encyclopidia of Religion Vol. III P. 637).

(९) भा०—यह एन्सेक्लोपीडिया का लेख है कि काछी लोग कछवाहा राजपूत शाखा के हैं।

पुनः—

(10) The Kachhis of the Marhatta country state that they came as cavalry and infantry soldiers from Bundelkhand in the times of former-kings and of Alamgir.

(E. S. Glossary Vol. II P. 565).

(१०) भा०—महाराष्ट्र देश के काछी लोगों का कहना है कि वे बुन्देलखन्ड से आलमगीर व उससे पूर्व के बादशाहों के पल्टन रिसालों में सिपाही होकर आये थे।

पुनः—

(11) Thakuriya Kachhi of Rae-Bareilly, Lucknow and Unao claim descent from the Kachhwaha clan of Thakurs.

Mr. C. S. W. C. I. C. S.

(११) भा०—रायबरेली, लखनऊ और उन्नाव के ठकुरिया काछी लोग कछवाहा ठाकुर हैं।

पुनः—

(12) Thakuriya :—Claim descent from the Kachhwaha clan of Thakurs.

(Caste and Tribes P. 177.)

(१२) भा०-ठकुरिया काछी ठाकुरों की कछवाहा शाखा के हैं।

पुनः—

(13) Kachhwaha (Kachhi) who are considered to have a connection with the Rajputs to rank higher than the other.

(C. and T. by Russels.)

(१३) भा०-कछवाही (काछी) इनका सम्बन्ध राजपूतों से है इसलिये मध्य प्रदेश में अन्य जातियों से इनका जाति पद ऊंचा है।

पुनः—

(14) Kachhi :—They are descended from the Kachhwaha Rajputs. (Govt. Gazetteer Vol. A 1909).

(१४) भा०-मध्यप्रदेशान्तर्गत जब्बलपुर के काछी लोग कछवाहा राजपूत हैं।

पुनः—

(15) Several of the agricultural castes have Rajput names attached to some of their branches, thus corroborating in a measure the supposition already made that these castes bear considerable resemblance to the Rajputs and were partly derived from them, for examples the Koeries have a Kachhwaha clan and so have the Kachhis, the Kachhwaha being a well-known Powerful Rajputs tribe.

(H. T. and C. Vol. III, P. 360).

(१५) भा०-खेती करने वाली अनेकों जातियों में राजपूत नाम व शाखायें अभी तक विद्यमान हैं अतः विचार करने से इन में व अन्य क्षत्रियों में विशेष समता जान पड़ती है इससे ये भी राजपूतों में से ही जान पड़ते हैं उदाहरण के लिये कोइरी जाति कछवाहा वंश में से है वैसे ही काछी जाति भी कछवाहा वंश में से हैं जो एक प्रबल क्षत्रिय वंश है।

पुनः—

(16) A large portion of emigrants from the districts of the N. W. P. and the native states to the North and North-West of these provinces. Many persons of this caste were included in the immigrants of the recent famine year 1877—1878 from these tracts, while many brought their wives and children.

(C. S. Report of C. P. Page 183.)

(१६) भा०—आगरा युक्त प्रदेश तथा राजपूताना की रियासतों से निकल कर मध्य प्रदेश में आये हुये हैं सम्भवतः सन् १८७७ व ७८ के अकालों के समय व कुछ पूर्व से आये हुये है। विपत्तिवश तथा अकालग्रस्त दशा में ये लोग अपने बाल बच्चों सहित आ बसे हैं। अतएव इस सिद्धान्त का भावार्थ यह निकलता है कि ये लोग कछवाहा वंशज हैं और विपत्तिग्रस्त दशा में कछवाहा राजपूत लोग ही काछी कहाये।

(१७) वृद्ध अनुभवी सज्जनों ने बतलाया है कि एक समय आमेर पर विजातीय धर्मावलम्बी राजा ने चढ़ाई की तब सम्पूर्ण कछवाहों को सामना करने के लिये उद्यत होने की आज्ञा दी गई तब रात दिन के युद्ध व परस्पर कलह से दुखी हो कर बहुत से कछवाहों ने युद्ध में जाने से इन्कार कर दिया तब सबों की जागीरें जप्त करके सब को देश निकाला दे दिया वे दूर दूर देशों में जागीर विहीन दशा में जा कर अपने को कछवाहे न बता कर केवल "काछी" कहने लगे ऐसी दशा में इनके पास खेती करने के सिवाय और कोई धन्दा ही निर्वाहार्थ नहीं था अतः ये लोग सर्वत्र खेती ही करने कराने लगे तब से ही काछी नाम पड़ा।

(18) In the middle of the 10th century both places (Narwar and Gwalior) fell to the Kachhwaha Rajputs. They were expelled by Parihars in 1129 who held possession until 1234. (Gwalior Gazetter).

(१८) भा०—दसवीं शताब्दि के मध्य में नरवर और ग्वालियर इन दोनों जगहों में कछवाहों का राज्य हो गया था परन्तु ११२६ में परिहारों का अधिकार यहां हो गया जिन्होंने कछवाहों को

निकाल दिया । ऐसी ऐसी विपत्तियों से ही ये बिचारे दूर दूर देशों में जाकर अपने को कछवाहा न कह कर केवल काछी ही कहने लगे ।

पुनः—

(19) The Kachhis declare they came from Narwar some one thousand years ago, and are the descendants of the Union of the Kachhwahas.

(Bundela Edwin T. Page 367).

(१६) भा०–काछी लोगों का ऐसा प्रसिद्ध रूप से कथन है कि कोई एक हज़ार वर्ष बीते होंगे हम नरवर से आ बसे हैं और कछवाहा राजपूतों में से हैं ।

पुनः—

(20) Descended from the Kachhwaha Thakurs. They abound through out Agra District and are very old residents. They seem to have settled especially in Pergna Khandauli, Kheragarh and Pinahat. Those of the latter Pergnah state they came from Dholpur and this seems to have been their most recent movement. Others say they came some 30 years ago from Jaipur, They have many sub-divisions, the names of which clearly reveal their Rajput Origin.

(A. Sell's C. S. Report of N. W. P.)

(२०) भा०—ये कछवाहा ठाकुरों की सन्तान हैं । पर्गना खंदोली खेरागढ़ और पिनाहट में विशेषता से हैं, पिनाहट वाले अपने को धोलपुर से आये हुये बतलाते हैं जो हाल की घटना है । दूसरे अपना निकास ३० वर्ष पहिले का जैपुर बतलाते हैं इनमें कितने ही भेद उप भेद हैं जिनसे इनका क्षत्रियत्व प्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित होता है ।

पुनः—

(21) Of the several branches the more numerous are the Kachhi Kachhwahas who claim descent from the Rajputs of the latter (Kachhwah) tribe.

(H. and S. Memoir of Bulandshahr).

(२१) भा०-बुलन्दशहर की प्रसिद्ध क्षत्रिय जातियों में से काछी कछवाहा हैं जिनमें के काछी कछवाहा वंश में से ही अपने को बतलाते हैं ।

पुनः—

(22) Kachhi.—Claim descent from Kachhwaha Thakurs.

(N. W. Gazetteer Vol. IV, P. 559).

(२२) भा०-काछी लोग अपने को कछवाहा ठाकुर मानते हैं ।

(२३) हिन्दुओं के प्राचीन कुर्सीनामे व पीढ़ी दरपीढ़ी के नामों का बहुत कुछ विवरण प्रायः तीर्थ स्थानों की वहियों से भी मिल सका है तदनुसार सोरों (कासगंज) गंगा पुत्रों की बहियों से अन्वेषण करने से पं० रामसहाय चुन्नीलाल जी पुरोहित ने प्राचीन वहियों से देख कर लिखाया है कि मीर मजनूं जो बादशाह आलमगीर के समय में हुये हैं इन्होंने आमेर के कछवाहों से पंचायती की ओर से डोला मांगा था पर पंचायती ने डोला देने की जगह खड्ग दे दिया तब महा युद्ध हुआ और कछवाहोंकी पराजय हुई तब ९०० नौ सौ कछवाहों के घर आमेर से भग कर एटाह फर्रुक्खाबाद आदि आदि के आस पास जा बसे और हथियार छोड़कर खेती करने लगे तब से अपने को कछवाहा न कह कर काछी कहने लगे हैं ।

पुनः—

(24) Kachhaniya :—A Rajput tribe giving daughters to and taking those of Lautaniya Rajput—chiefly found in the Ballia and Ghazipur Districts of N. W. P.

(Rajput by Captain Bingley).

(२४) भा०-कछानिया:—एक राजपूत जाति जो लौटानिया राजपूतों को लड़की लेते देते रहते हैं जो विशेष रूप से बलिया तथा ग़ाज़ीपुर के ज़िलों में पाये जाते हैं ।

कछानिया काछी का लघुतम रूप है जब काछी लोग ग़ाज़ीपुर और बलिया की ओर लौटानिया राजपूतों के साथ परस्पर विवाह सम्बन्ध करते हैं तो काछी क्षत्रिय अवश्य हैं ऐसा प्रमाणित होता है ।

(25) They (Kachhi) claim however some connection with the Kachhwaha sept of Rajput.

(C. and T.).

(२५) भा०—काछी जाति अपने को कछवाहा राजपूतों की वंशज बतलाती है।

(26) Their most important local sub-caste are the Kachhwahas and Suksenas.

(C. and T.)

(२६) यह मिस्टर नेबी कलक्टर की सम्मति है कि काछियों के उपभेद कछवाहा तथा सकसेना हैं।

(27) Ghelot. This tribe is derived into 16 clans of which the most important are the Godal Medrat Kachhi Pinga etc. They consider themselves Rawat.

(Raj. Gazetteer)

(२७) भा०—प्रसिद्ध रापूत भेद गहलोत का उपभेद काछी है

(28) They belong almost entirely to the sub-division called Kachhwa Kachhi who declare they are descendants of Kachhwaha Rajputs of Narwar. Their tradition points to Narwar as their home and the fact that they are found in largest numbers in the same localities where Kachhwaha Rajputs predominates suggest that their claims are not wholly groundless.

(U. P. Gazetter by Drake Brokeman).

(२८) भा०—ये लोग कछवाहा राजपूत वंश में से हैं काछी लोग अपने को नरबर के कछवाहा वंश में से बतलाते हैं और कोई एक हज़ार वर्ष पूर्व अपने पुरखों का वहां निवास स्थान तथा वहां से निकास बतलाते हैं ये लोग उस प्रान्त में बहुत हैं जहां कि कछवाहा लोग रहते थे अतएव इनका यह दावा (कि हम कछवाहा हैं) प्रमाणिक बात है अर्थात् यह निरंतर असत्य नहीं है।

(29) That they (Kachhi) came from Narwar 1000 years ago. They claim descent from the Kachhwaha Rajputs.

(Memo. on the races of N. W. P.)

(२६) भा०-यह ग्रंथ सन् १८४४ का छपा है उसमें लिखा है कि काछी लोग नरवरसे निकलेहैं और इन्हें निकले करीब एक हज़ार वर्ष हुये होंगे। और ये लोग कछवाहा राजपूतों में से अपने को बतलाते हैं।

(30) Kachhi claim to be descended from the Kachhwaha Rajputs and affirn that their ancestors came from Narwar 1000 years ago.

(H. C. and Tribes, P. 372).

(३०) भा०-काछी लोगों का कछवाहा राजपूतों से निकास है और इनका ऐसा विश्वास है कि अनुमान एक हज़ार वर्ष बीते होंगे कि हमारे पूर्वज नरवर से निकले थे।

(31) These people (Kachhi) also assert that they came from Narwar 1000 years ago. They claim descent from the Kachhwaha Rajput. Their is nothing improbable in their being the descendants of a Rajput.

(Jenkinson C. S. Report of 1865).

(३०) भा०-काछी लोग यह भी कहते हैं कि हम लोगों का एक हज़ार वर्ष पूर्व नरवर से है। ये लोग अपने को कछवाहा निकास राजपूत वंश से बतलाते हैं इनके राजपूत वंशज होने में कोई सन्देह नहीं है।

(32) Vast majority belongs to the Divisions known as Kachhwaha and claim ;to be descendants of the Kachhwaha Rajputs of Narwar who migrated about 1000 years ago.

(U. P. Gazetteer A. & O.)

(३२) भा०-इनमें विशेषता कछवाहों की है और ये लोग अपने को नरवर के कछवाहो में से बतलाते हैं क़रीब एक हज़ार वर्ष पूर्व ये लोग वहां से निकले जान पड़ते हैं।

पुराण में लिखा हैः—

३३-कच्छवाही कुशावाही कच्छीनाम युतास्तथा।
एतेहि क्षत्रियाः शुद्धाः शुद्धाचार परायणाः ॥२६॥

अर्थः—कच्छवाही कुशावाही और काच्छी नाम युक्त जातियें शुद्ध क्षत्रिय हैं और शुद्धाचार परायण हैं इसका भावार्थ यह है कि कुश से चला हुआ वंश गुजरात प्रान्त में कच्छी व राजपूताना युक्त प्रदेश व विहार आदि आदि देशों में काछी कहाता है जो शुद्ध क्षत्रिय वंशज व आचार विचार युक्त सदाचार परायण हैं।

रीति भांति

काछी जाति की रीति भांति सम्बन्ध में २५१ प्रश्नों द्वारा तथा शहर व गांव वाले विजातीय पुरुषों से जांच करने से पता चला कि जन्म मरण त्योहर वार व होली, दिवाली तथा दहशरा आदि के समयों की कई रीतियें इन में ऐसी पाई जो केवल क्षत्रिय जातियों में ही पाई जाती हैं अन्य उच्च जातियों की तरह से इन में नथ व बिछुये जो सुहाग (सौभाग्यवती) के चिह्न हैं नहीं पहिने जाते हैं इस का कारण यह है कि कलावती नामक एक 'कछवाहिन' थी जो बड़ी पतिव्रता थी और अपने पति के साथ सती हुई थी वह जलते जलते और तो सब गहने अपने फैंक दिये पर नथ व बिछुये न फैंक सकी तब से नथ व बिछुये पहिनने की काछियों में आन चली आती है।

(३३) इस सम्बन्ध में प्रबल प्रमाण यह है कि सन् १२५१ में दिल्ली के बादशाह नसीरुद्दीन महमूद की चढ़ाई नरवर पर हुई उस समय नरवर में कछवाहों का राज्य था उस समय का कछवाहा राजा जाहिरदेव किला बना कर सामना करने को तैयार हुआ और अपने साथ पांच हज़ार सवार व दो लाख पैदल फ़ौज ले कर आगे बढ़ा पर अन्त में बादशाह की विजय हुई और नरवर मुसलमानों के हाथ में आ गया।

(३४) बुन्देलखण्ड प्रदेशान्तर्गत काछियों का निकास मिस्टर Edwin T ने कछवाहा वंश से लिखा है।

(३५) आगरा मैनपुरी प्रदेश के काछियों के सम्बन्ध में म० ग० रि० में लिखा है कि काछी लोग कछवाहा राजपूतों की सन्तान हैं।

काछियों के क्षत्रियत्व प्रबोधक भेद उपभेद ।

अमरिया	खीचर	ढोलुकिया
कछवाहा	चुड़ैला	ढेंकुलिया
कनौजिया	चौहान	नैनाई
कुशाह	चकचेनियां	पतरौता
कहरिया	ठकुरिया	पुनियां
खारीहा	डंगरहा	पुरविया
परनामी	भगत ✓	रोटिया
वहेनियां	भेमुआं	साकसेना
ग्रामनियां	निजकोतिया	सांकरिया
बाछल	मुरई	सलोरिया
बारामासी	मुनवर	(शृङ्गेरिया) सिंगरोरिया
भदौरिया	माली	साहनी
हरदियां (हर्तिया)	हरदानियां	अनवर

भगत:—यह भक्त शब्द का अपभ्रंश रूप है आज कल उच्च पदस्थ क्षत्रिय लोग मांस मदिरा को खूब ही खाते पीते हैं कुछ २ खुशामदी जी हजूर लोग कहने लगते हैं कि मांस मदिरा का सेवन क्षत्रियों का धर्म है परन्तु यथार्थ में शास्त्रीय व्यवस्था ऐसी है:-

ब्रह्म हत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः।
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तै सहः ॥

भा०—ब्राह्मण की हत्या मदिरापान [शराब खोरी] चोरी गुरू की स्त्री से व्यभिचार ये महापातकी कहाते हैं और इन शराबियों के साथ रहन सहन भी करना महा पाप है ।

अनृतं च समुत्कर्षे राजगामि च पैशुनम् ।
गुरोश्चालीक निर्बन्धः समानि ब्रह्महत्यया ॥५५॥
ब्रह्मोज्झता वेद निन्दा कौट साक्ष्यं सुहृद्वधः ।
गर्हिता नाद्ययोर्जग्धिः सुरापान समानिषट् ॥५६॥

भा०—अपनी बड़ाई के लिये असत्य भाषण करना राज में चुगली कर के किसी को फँसा देना और गुरू के सन्मुख झूठ बोलना आदि आदि का पाप ब्रह्महत्या के समान लगता है ॥ ५५ ॥ वेदों का त्याग और निन्दा करना, झूठी गवाही देना. मित्र को मार डालना लहसन प्याज आदि अभक्ष्य पदार्थों को खाना पीना ये सब कर्म करने से सुरापान के समान पाप लगता है ॥५६॥

रेतः सेकः स्वयोनीषु कुमारीष्वन्त्यजासु च ।
सख्युः पुत्रस्य च स्त्रीषु गुरु तल्प समं विदुः ॥५८॥

भा०—मा ज्याई बहिन, कुवांरी कन्या. भगिनी, मित्र और अपने पुत्र की स्त्री, इन के साथ व्यभिचार करने वालों को गुरू की स्त्री के साथ व्यभिचार करने वाले की तरह इन्हें भी महा पाप लगता है। धर्म शास्त्र की ये सब आज्ञायें सम्पूर्ण काछी जाति को मानने योग्य हैं।

अतएव काछियों में जो विवेकी धर्मात्मा समुदाय था उसने मांस मदिरा सेवन न करने की शपथ ली थी तब से यह समुदाय 'भक्त' नाम से प्रतिष्ठित हुआ इन के यहां की सदाचारिणी स्त्रियें तो मांस मदिरा को स्पर्श करने व दर्शन करने तक में पाप समझती हैं।

हरदियाः—इस भेद का विवरण एक कलक्टर साहब ने लिखा है Growers of turmeric (Haldi) अर्थात् हल्दी की खेती करने के कारण हरदिया व हलदिया कहाये इन्हीं की देखा देखी और भी कई सरकारी अफसरों ने ऐसा ही लिख मारा है परन्तु यह ठीक नहीं क्योंकि जब हल्दी की खेती करने से हरदिया व हल्दिया कहाये तो सोंठ की खेती करने से सोंठिया भी कहे जाने चाहियें थे इस ही तरह मिरच की खेती से मिरचियां धनियें की खेती से धनैया, आलू की खेती से अलुवैया सकरकन्दी की खेती से सकरकंदियां आदि आदि भेद भी होने चाहिये थे पर न हुये अतएव यह सरकारी रिपोर्ट का सिद्धान्त ठीक ठीक नहीं और आज कल अपनी जाति का इतिहास लिखने वाले जाति सभाओं के पुजारियों ने भी ऐसा ही लिख मारा है। यथार्थ में क्षत्रिय वंशज

हरित ऋषि की सन्तान होने से 'हरंतिया' कहाये थे वे ही समय के बदलाव के साथ २ "हरदिया व हल्दिया" कहाने लगे।

पं० गोपीकृष्ण नामक एक विद्वान् ने हमें बतलाया है कि काछियों में हरिदेव नामक एक प्रतापी पुरुष हुआ है जो दिल्ली के बादशाह के साथ युद्ध में मारा गया था उस ही के वंशज राज्य सत्ताहीन होकर इधर ऊधर जा कर बसे वे हरदेविया कहाते थे इस ही हरदेविया शुद्ध शब्द का बिगड़ कर 'हरदेया' हो गया।

भदोरिया—यह क्षत्रिय वर्ण का प्रसिद्ध भेद है इस का पूर्ण विवरण अलग ग्रन्थ में लिखेंगे।

(1) Who like the Rajput clan of the same name derive their title from the Pargnah of Bhadawar in Agra District.

(Crookes).

भा०—इस नाम वाले राजपूत वंश की तरह ये लोग अपना यह नाम आगरा ज़िले के भदावर ग्राम से बतलाते हैं।

(२) पंडित जे० पी० चौधरी ने लिखा है कि जो नाम आगरा के दक्षिण भाग भदावर परगने के नाम से पड़ा है। यह नाम एक प्रसिद्ध राजपूत जाति का है।

(3) Bhadauriya :—An important sept of Rajputs in India. (C. & T. Vol. III.)

भा०—भारतवर्ष में भदौरिया एक मुख्य राजपूत वंश है।

(४) मिस्टर बी० सिंह ने अपने ग्रन्थ पृष्ठ १८३ में इस वंश का विवेचन क्षत्रिय वंश से किया है।

चिथोरिया:—यह चित्तोरिया व चित्तोड़िया शुद्ध शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है-चित्तौड़ का किला कुशवाहा (कछवाहा) वंशजों का ही बनाया हुआ है जहां एक समय क़छवाहों की बड़ी भारी बस्ती थी युद्ध में पराजित होकर जो कछवाहे भाग छूटे वे इधर उधर जाकर अपने को चित्तोंड़िये कछवाहे न कह कर चित्तोड़िये काछी कहने लगे थे वही चित्तोड़िया शब्द बदल कर अंग्रेज ग्रन्थकारों द्वारा चिथोरिया लिखा गया और सम्भव है कि बोल चाल में भी बदल गया हो।

रोटियाः—जब अयोध्या में यवनत्याचार बढ़ा तब ८०००० अस्सी हजार राजपूत अयोध्या से स्वधर्म रक्षणार्थ भाग कर रोहटा नगर में आये जो सोन नदी के किनारे है पुनः इस ही रोहटा से निकास होकर इधर उधर विशेष रूप से कृषी कर्म करने से काछियों का एक भेद रोटिया हो गया। यथार्थ में यह रोटिया शब्द शुद्ध शब्द रोहटिया का विगड़ा हुआ रूप है अयोध्या के पश्चात् कुशवाहा वंशज लोगों ने अपना निवास रोहटा में ही स्थापित किया था यहां ही राजा नल भी हुये हैं मिस्टर टाड और टिकेन्थलर साहब की भी इसमें साक्षी है। यहां पर कछवाहों (काछियों का) गढ़ है जो रोहिताश्वगढ़ कहाता है। यहां से ये लोग नरवर निषिधा में आये और नल की मातहती में राज्य करते रहे यहां से ये हट कर लाहौर में आये और फिर ग्वालियर में किला बनवाया तहां से दसवीं शताब्दि के आस पास तित्तर बित्तर हो गये।

सिंगरोरिया :—Singrauriya derive their name from this town Sringravera is the modern Singraur of which the consequence has declined only lately. It lies on the left bank of the Ganges about 25 miles from Allahabad and is now included in the Pargna of Nawabganj (P. 274 Foot note Part I, Memoirs on the History Foklou etc.) by Elhot.

सिंगरोरिया—सिंगरोलिया गोत्र सिंगरोर नाम के नगर से पड़ा है जो इलाहाबाद से ऊपर गंगाजी के बायें तट पर नवाबगंज परगना में अवस्थित है।

यह ठीक नहीं क्योंकि शृंगी ऋषि का आश्रम फर्रुखाबादस्थ सिंगीरामपुर में था तहां एक समय कछवाहों की प्राधान्यता थी तहां से निकास होने के कारण दूर-दूर देशों में शृङ्गेरिया कहाते कहाते संगरोरिया कहे जाने लगे।

परनामीः—प्रणामी इस पंथ के संस्थापक देवचन्द और प्राणनाथ थे। प्राणनाथ जयनगर के दीवान के पुत्र थे सं० १७१० में वे धौलपुर राज्य के किसी उच्च पद पर स्थित हुये। वहां वह अपनी उच्च कोटि की राजनीति के कारण प्रजा का प्रेम सम्पादन करने में सफल हुये "बाद को देवचन्द भी वहां गये और उपदेश

आदि से प्रेम भक्त का प्रचार कर इस पन्थ की स्थापना की" इस पन्थ के साधु योग और आत्मज्ञान में कुशल होते हैं भारतवर्ष का धार्मिक इति० पृ० ३१६

ठकुरिया:—यह भी काछी जाति का एक क्षत्रियत्व प्रबोधक प्रसिद्ध भेद है ठाकुर शब्द से ठकुरिया बना है लिखा भी है:—

"Who clam descent from the Kachhwaha clan of Thakurs.

जो कछवाहा वंशी ठाकुरों की सन्तान होने का दावा करते हैं जाति और कौम पृ० १७६

महता व महतो:—यह क्षत्रिय वंशजों की मान्य सूचक एक पदवी है।

'मह' शब्द का अर्थ कवि कल्पद्रुम में "पूजे" पूजा याने सत्कार प्रतिष्ठा आदि अर्थ किये हैं और इस ही प्रतिष्ठा सूचक 'मह' शब्द से 'महत्' शब्द बनता है जिसका अर्थ ऐसा होता है कि "मह्यते पूज्यतेऽसौ इति" अर्थात् जो सत्कार के योग्य हैं वे महत् कहाते हैं इस ही संस्कृत महत् शब्द से 'महान्' जिसके अर्थ बड़े के होते हैं बनता है और इस ही महान् शब्द की तृतीया विभक्ति के एक बचन का रूप 'महता' बनता है और भाषा भाषियों द्वारा महता व महतो कहा जाने लगा हो।

प्रचलित प्रणाली के अनुसार हम देखते हैं कि क्षत्रिय लोग अपने नाम के अन्त में महता शब्द बड़े गौरव के साथ लगाया करते हैं।

यह नाम क्यों पड़ा? तो लिखा है:—

श्रुतेन श्रोत्रियो भवति तपसा विन्दते महत्।

महाभा० ३। ३१२। ४४

अर्थात् जिसने बहुत वेद शास्त्र देखे सुने व पढ़े हों वह श्रोत्रिय तथा जिन्होंने तप किये हैं वे महत्, महता व महतो कहाते हैं अतएव जिन क्षत्रियों के पूर्वजों में कोई तपस्वी हुआ था वह 'कुल नाम' महता व महतो कहाया।

श० क० खं० ३ पृ० ६५२

भेद उपभेद।

अ०

१ अखया
२ अनरहा
३ अत्ता
४ अजुध्यावासी
५ अटारिया
६ अठगया
७ अत्तिजारिया
८ अधराज
९ अनजरिया
१० अनवारिया
११ अनाजभांडी
१२ अनामिया
१३ अमराव
१४ अमैठिया
१५ अलीपुर के
१६ असमार
१७ अहारवार
१८ अहिरवार

आ०

१९ आकंसिया
२० आमुरिया
२१ आत्तलिया
२२ आवेरिया
२३ आमर

उ०

२४ उकरहा
२५ उरिया
२६ उजारहा
२७ उन्नाग्र

ए०

२८ पवार
२९ एहा

ओ०

३० ओझा
३१ ओरछा
३२ ओसारहा

क०

३३ ककपुरिसया
३४ ककरोवा
३५ कचेरा
३६ कच्छवंधिया
३७ कछवाहा
३८ कझतरिया
५१ कटिया
५२ कठैरिया
३९ कनवरिया
४० कनवारी
४१ कन्नोजिया
४२ कप्ता
४३ कवूतिया
४४ कमरिया
५८ करगोवा
५९ करहा
४५ करोतिया
४६ करोदिया
४७ करोदा
४८ करोड़िया
४९ करौल
५० करोलिया
६५ कपूसीरी
६६ कशा

५३ कतिता
५४ कहरिया
५५ काकुरिया
५६ काविरिया
५७ कारखाना
६० करिया
६१ कुंअर
६२ कासवगोत्र
६३ कासमिया
६४ किश्रोरिश
६७ कसरठ
६८ कुथोदिया
६९ कांकरी
७० कांजिया
७१ कुरिया
७२ कुचलख
७३ कुटार
७४ कुटिया
७५ कुसमरिया
७६ केदाती
७७ कुदरना
७८ कुदरिया
७९ कुदैना
८० कैथिया
८१ कुरैता
८२ कुरल
८३ कुश
८३ कुसिवा

ख०

८५ खतूरिया
८६ खलरिया
८७ खिजवाई
८८ खुमान
८९ खेतरहा
९० खेमानी
९१ खमिया
९२ खीचर
९३ खुरिया
९४ खंडेलिया
९५ खंगोत
९६ खांगारावत
९७ खुटिया
९८ खुलारी
९९ खोसरा

ग०

१०० गढ़ीवाला
१०१ गरीशा
१०२ गुनरिया
१०३ गोलापूरब
१०४ गोहगिया
१०५ गोंधिया
१०६ गरतैला
१०७ गुसिया
१०८ गोदिया
१०९ गोलार
११० गंगादीनदोवा
१११ गोरुवा
११२ गरदेलिया
११३ गोरखपुरिया
११४ गोरखाय
११५ गोवांश्रोता
११६ गंवरहा
११७ गोरेचा

घ०

११८ घमोतिया
११९ घरगांगी
१२० घासपुरिया
१२१ घुरुक
१२२ घोसिया
१२३ घुल

च०

१२४ चकसेना
१२५ चकिया
१२६ चमरुवारिया
१२७ चड़सिया
१३१ चारकरिया
१३२ चितोड़िया
१३३ चुटियां
१२४ चुस्मी
१३८ चैले
१३९ चौदस
१४० चौदहा
१४१ चौहान

१२८ चाखनलिया
१२६ चंदेल
१३० चांदूरिया
१३५ चूरेला
१३६ चंदोरिया
१३७ चूंदिया
१४२ चंगरार
१४३ चंदेलिया

छ०

१४४ छत्री

ज०

१४५ जौनपुरिये भगत
१४५ जौचाना
१४६ जौलिया
१४७ जौराबांसी
१४८ जामा
१४६ जसोवा
१५० जलेसरिया
१५१ जरदिया
१५२ जमादरिया
१५३ जखान
२५४ जक्कात
१५५ जौराइल
१५६ जोदा
१५७ जैसवार
१५८ जैतपुरी
१५६ जुथैरी
१६० जसेहा
१६१ जलवारिया
१६२ जरतिया
१६३ जनुकया
१६४ जकोदना
१६५ जकरा
१६६ जोरई
१६७ जुआरी
१६८ ज्वाहरिया
१६६ जारोलिया
१७० जाबाली
३७१ जवारहा
१७२ जरिया
१७३ जमनापारी
१७४ जगसिया
१७५ जकौथ

झ०

१७६ झंडा
१७७ झूंइया
१७८ झकोलता

ठ०

१७६ ठाकुरिया
१८० ठकुरोत

ड०

१८१ डकायी
१८२ डोकरिया
१८३ डभा
१८४ डंगरहा
१८५ डाकरहा
१८६ डांकलिया

ढ

ढांकलिया
ढेकुलिया
ढोलकिया
ढाकिया
ढेरिया
ढीमरी
ढलचा

त

समकुरिया	समघाती	सामड़िया
तमरी	तम्बूरिया	तरतीरिया
तरतिया	तरसिया	तलिया
तारा	तारोरिया	तूर
तोरोहिया	तोलिया	

थ०

थात्ररिया	थरजोलिया

द०

दसपुरिया	दतिया	दरिया
दांतोलिया	दिश्रारिया	दीखत
दतोरिया	गिरिगया	दिल्लीवाल
दिलोतिया	देवरिया	देउथा
देगरहा	देश	दोलरिया
दोहर		

ध०

धर्मधा	धागर	धागरिया
धागेलिया	धारवार	धौराहा
धौरिया	धोकिया	

न०

नगरेली	नरोनिया	नलदिया
नागल	नागिया	नागोरिया
नांमोलिया	नायकोठिया	निगारकी
निराहा	निरंजनी	नोधनका
नोंनिया		

प०

पछरिया	पतरिहा	पतिया
पनवारिया	परतामी	परनामी

परवतिया	परहार	पलहा
पलीयावार	पुनहाव	पुनिया
पुराय	पुरबिया	पोथा
पंवार		

फ०

फरुरिया	फुलवर	फुलवासी
फूल		

व०

बकतई	बकेररिया	बकिया
बगतिया	बचुहा	बछमा
बछोरुदिया	बतामी	बतिया
बतूलिया	बथमा	बदरथा
बदरेह	बदसिया	बदिया
बधा	बनकेरहा	बन्सा
बनोधिया	बनोलिया	बमरिया
बरम्हा	बरतियां	बरहुबरा
बरदिया	बरनामी	बरनाय
बरमियां	बरवा	बरवागया
बरसियां	बरही	बरहुल
बरावरिया	बरारिहा	बरूकिया
बरूरिया	बेरल	बरोलिया
बलकी	बलथाम	बलपुरिया
बलिया	बलियापुरिया	बसेरिया
बसैला	बसोलिया	बहेनिया
बाछल	बाछलपुरी	बानपुरिया
बाफुरिया	बाबरहा	बाबरिया
बारंभट्ट	बारा	बारासैनी
बारी	बारीवाला	बिकरमा
बिचालिया	बीस	बुन्देलखंडी

बैनरामपुरिया	बोल	बोसा
बंगराकी	बंगलाना	बंगिया

भ०

भगत	भगिया	भटूसा
भदौरिया	भरकना	भरजनका
भरगरिया	भरता	भरवार
भरवाहा	भरीजोधियां	भावसिया
भाटिया	भाळदारिया	भासपोळ
भीमळियारिया	भुरैतबार	भुसारिया
भूळ	भूसिया	

म०

मकरहा	मगरैना	मगरसैनी
मथरैळी	मथुरिया	मनदेतिया
मनोळा	मरगया	मरदौता
मरया	मरैळ	मरौथा
मल्हैया	मळोरिया	मसवापुरी
महापितरिया	महेश्वरिया	महोलिया
मानकुरिया	मानपुरया	मामूरी
मारवीय	मारोरिया	माळपुर
माहिलि	माहोरिया	मिश्रोलिया
मिठोलिया	मिथवा	मिळकपुरिया
मिश्रकवार	मिहावाळ	मिहरना
मीरजानी	मुबारकी	मुरवद
मुरछा	मुरतिया	मुरथान
मुराव	मुरानी	मुरायसी
मुरिया	मुळतैना	मेगरहा
मैनपुरिया	मोतिया	

र०

रघूपुरिया	रतनपुरिया	रसथान
रसिया	रसूलपुरिया	रहलिया

राखिया
राजौद
राठी तोधियां
रामानन्दी
रोरवी
रोहना

राजा
राजौरा
राठौर
रामावत
रोयसली
रोहरा

राजोरभट्ट
राजौरिया
रामपुरिया
रैकवार
रोया

ल०

लकरया
लखोमी
लहनवा
लालपुरिया

लकरहा
लखोरी
लहोमिया
लाहरिया

लखेरी
लहकरिया
लाओं
लोहरना

स०

सकचिया
सकटा
सकरना
सकरवार
सगहा
सतरवारिया
सतवारिया
समरगोती
समरिया
समेरिया
सरदिया
सवलमना
सहुधियां
साहदरसिया
सिमन्दिया
सिरौसा
सिलोइया
सुवरहा

सकरा
सकरैठा
सकसैना
सकिया
सतारिया
सथदुआ
सधा
सरथोरिया
सरनामी
सरवरिया
सरसन्तरिया
सिखोमार
सिखोती
सिखौरा
सिरधुमन
सुवरिया
सुदरी
सुन्दरिया

सकरेर
सकैना
सकोरिया
सगत्रां
सनजूरिया
सनघा
समदिया
सरखिहा
सलातिया
सलारिया
सह्योरिया
सिगियापुरिया
सिंगरोलिया
सिघौरा
सिरोधिया
सूरजवंसी
सूरहा
सूरै ता

सेरिया	सोमवंसी	संगरसिया
सेंगर	संकरपुरिया	संगरहा
सोइया	संगधा	संगलपुरिया
सम्बतिया	सांवरिया	श्रीवासत

ह०

हबुरा	हरदुआ	हरिया
हरगदा	हरदुलहा	हाड़ा
हरदत्तिया	हरवंसी	हांसिया
हरदिया	हरहावल	हिंगोवा
हिन्दूवंस	हेरिया	होरिया
हिन्दांया	हेलवा	

मध्य भारत एजेन्सी व ग्वालियर राज में भी काछी जाति का समुदाय विशेष रूप से विद्वानों ने उनके यहां भेदों की संख्या १८८ लिखी है परन्तु पूरे पूरे प्राप्त न हो सके जो प्राप्त हुये उनकी नामावलि सूचि निम्नलिखित है।

अ०

अखवैया	अटारिया	अमोल्या
अगरैया	अडोरिया	अलांपुरिया
अचौरिया	अधैया	अलैया
अजैपुरिया	अमाहिया	असैया
आमोरिया	इन्दोरिया	इहैया

उ

उघांड़िया	उमरैया	उरैया

क०

कौमल	कटरोलिया	कारोठ्या
कछुंपुरिया	कन्नोजिया	कटोइया
कटोरिया	करकिया	किरगैया
कड़माछिया	कलगैया	किरातया
कुटोरिया	कुडरिया	कुंढेले

कुरिया	कुरोथिया	कुलआरिया
कुलैथिया	कैथोदिया	कैथोरिया
कोढिया	कोसादिया	कौथरिया

ख०

खड़िया	खडोरिया	खंडोलिया
खियेलिया	खिपरिया	खिरकवाल
खरेरिया	खुरूरिया	खेरटिया
खोइयां	खमेरिया	खंचोहा

ग०

गड़ाचिया	गिरगया	गिरवासिया
गरदैलिया	गिरधौरिया	गिलोदिया
गुबारिया	गुघरिया	गुनोधिया
गैडोरिया	गैरैया	गांगोलिया

घ०

घटोया

च०

चित्तोड़िया	चिरैया	चिनोरिया
चुराटिया	चौरासिया	चौरदया
चंदवारिया	छकुरिया	

ज०

जखोल्या	जतावरिया	जमदरिया
जमनैया	जैतपुरिया	झाडोल्या
झिलमिलिया		

ट०

टहटवार	डोरिया	डंगरिया
डंगसरिया	डंडोलिया	ढोलिया

त०

तमोठिया	तारोलिया	तुतवसिया
तेरतिया		

द०

दतवरिया	दवरेया	दबोइया
दरदगइया	देवरिया	दोहरिया

ध०

धदैन्यां	धुपराया	धोरपुरिया

न०

नवलिया	नरवरिया	नरोल्या
निबरोन्या	नीरोल्या	नोर्धीगा

प०

पचोन्या	पडोलया	पतलोसया
पनामी	परादिया	परोसा
पलडिया	पवैया	पहाड़िया
पिपरैया	पोरिया	पोढरिया

ब०

बड़गइया	बड़गोरिया	बड़मुआ
बड़हेल	बड़ोनिया	बमोरूया
बरथ्या	बरथरिया	बराबर
बरया	बरेठया	बरैरड़िया
बलैया	बसनरिया	बहोल्या
बामोरुया	बासवार	बासोल्या
बिजोरिया	बिरथरिया	बिलारुया
बिरगैया	बिलेटिया	बिसावलिया
बिसोरुया	बीळोन्या	बुदरिया
बिहोरिया	बुढ़ेलिया	बेरिया
बेहटवार	बैज्या	बेरोट्या

भ०

भगेरिया	भयरिया	भदेरिया
भदोरिया	भेडुआ	भेडारिया
भैनिया	भैसोदिया	भांडेरिया
भिड्या		

म०

मगरैया	मघनिया	मजरेठिया
मटाल्या	मडरैया	मलेथरिया
मठसैनिया	मदगैया	मस्टेनिया
मडराल्या	मदनपुरिया	महादुआ
महारोन्या	महाविया	मांदिया
मानकपुरिया	मेवलिया	मैलोन्या
मैहोरिया	मोरिया	मोरेन्या
मांइन्या	मोड़रिया	मेडनिया

र०

रतवैया	रघोला	रमघैनिया
रिजोला	राजेरिया	रिठेरिया
रुहेरिया	रेदिया	

ल०

लहारिया	लाहरा	ललितपुरिया
लाटोरिया	लिलोरिया	सकरहा
सकरिहा	सामोनिया	सरवोरिया
सामोल्या	सिकरिया	सिजोरिया
सिघासिया	सिरवैया	सिरसोद्या
सिलारिया	सिलंघिया	सिरोटया
सीपुरिया	सिलूरिया	सोसरिया
सोहिया	संकरपुरिया	संभरवार
सांगोल्या	सिंगराडिया	हारैया

भोपावर की बरवानी रियासत में काछी जाति के मुख्य भेद तीन ही माने जाते हैं पर उपभेद ये हैं:—

अम्बाली	खाड़गोरा	गोडवानी
चोरीसंगर	जाजिनी	जिरायती
धारवाल	निरगुदी	पनयारी
बड़गूजर	मुंडी मंगर	रेघदी
साधुदी	सिरसोदया	(सिसोदिया)

हिण्डोन भीमतोड़ा निवासी जगा मांगीराम जी की बही से उतारी गई-कछवाहा जाति के प्रचलित गोत्रों की सूची।

अखवरियां	आदलिया	औड़
अनाजिया	आंवेरिया	कओदिया
असनावड़	ईखा	कडकौलिया
असनेडिया	उमरैया	कमैतिया
आकैला	उमेदिया	कावलिया
खिदरिया	खुडेला	गढ़वांधिया
गुदाउ	चाचोड़िया	जखोला
गुवरधनिया	चौया	जसोला
गुरवलिया	चांदपुरिया	जलोरा
गेहेंरिया	छदिया	ठड़ेसरियां
घेरवैया	छलेसरिया	तारौलिया
चपरैया	छापकलिया	दलेरिया
दालैया	पचांवरिया	पैडोतिया
दुतरिया	परवतसैया	पैरैया
देहगया	परसैलेया	वगैया
नादनपुरियां	पवरिया	वलाइया
नावड़ियां	पिपरौना	बड़ेलियां
पचगोती	पीचोनिया	वनरैया
वरसतिया	वसन्तपुरियां	महावरियां
वरसोड़ा	बावतिया	महारिया
वल्लभपुरिया	बिलासपुरिया	महरोला
वलमपुरिया	भैरवीय	मानपुरिया
मिसरिया	राउरिया	रायबरेड़ियां
मुंडवलाइयां	राजपुरिया	रीठोरिया
मुंडिया	राजोरिया	लाचपुरिया
रतनपुरिया	राघोरिया	लालपुरिया
शाहजहांपुरिया	सारंगपुरिया	सैलैया
शम्भूपुरिया	सुंडिया	सोनेद्रिया
ह.रसैया	संधलपुरियां	

रियासत गवालियर की कछवाहा जाति के गोत्रों की सूची ।

नूराबाद कमैटी से प्राप्त ।

अकबरिया, असनावर, ईखा, अखबरिया, असनेड़िया, उड़ेलरिया, अगरहा, आंकैसिया, उमेदिया, अटरिया, इसिया, उमेरिया, अटौलिया, ईखिया, उचहरिया, ओढ़, कहरौल, खिदरिया, ककरौला, कमैतिया, खुड़िला, कछौदिया, कारनलिया, गवरिया, करकोलिया, गुढ़ेनिया, गढ़चांपिया, कवलिया, खंगरिया, गुड़िया, गेहोरिया, चुटविलैया, जरेलिया, गोवरधनिया, चोकना, जलेसरिया, चपरैया, चौदहा, जारोलिया, चाचौनियां, छुपकलिया, जैपुरिया, चांदौलिया, जमादरिया, टंडैया, टिहेरिया, दैलोरिया, पपैया, ढुंडुआ नरवरिया, परिया, डण्डौलिया, नादौनपुरिया, पुरोलिया, तारोलिया, पचगोती, पिपरौना, देड़गैया, पचवरिया, पिचोनिया, परोसैया, बछैया, बलपुरिया, पासौनियां, वड़ेले, वलैया, पेलइया, घड़ेलिया, बलैयावार, पैड़ोतिया, बरेणिया, वरसोड़िया, पैपरैया, बरैया, वनौदिया, वनरोलिया, विग्धरया, भदोरिया, वाजरिया, विलासपुरिया, मलयागिरया, वांबतिया, वैजिया, महाराज, बासवार, वोरेलिया, महावरिया, विलोटिया, भटरिया, माहौल, मानपुरिया, मौरिया, राझोरिया, मिसरिया, रतनपुरिया, राजोरिया, मुड़िया, राजपुरिया, रीठोरिया, मुड़विलैया, रायवरेलिया, रुनधनियां मोरंगपुरिया, रावरिया, रैलैया, रौसैया, सलैया, संदलपुरिया, लहरी, सरसैया, सिंगरोलिया, लघुरिया, सहेड़िया, सिकरिया, लाटपुरिया, सनौदिया, सोसिया, लाचपुरिया, सनोरिया, सोरोठिया समरवार, सुणिया, सौनपुरिया, सुगारिया ।

॥ इति ॥

सुभीता

मंडल के चारों ग्रन्थ अर्थात् जाति अन्वेषण, ब्राह्मण निर्णय, ससखण्डी जाति निर्णय प्रथम भाग (नाई वर्ण मीमांसा) तथा ससखंडी जाति निर्णय द्वितीय भाग (क्षत्रिय वंश प्रदीप) ये चारों ग्रन्थ एक साथ मंगवाने से कुल रुपैयों पर ।) रुपैया कमीशन दिया जायगा । ये चारों ही ग्रन्थ श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा M. R. A. S. London. एम० आर० ए० एस लंदन व महामंत्री हिन्दु धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल फुलेरा जि० जयपुर द्वारा रचित हैं ।

निवेदक—

मैनेजर—वर्ण व्यवस्था मंडल

फुलेरा

जाति निर्णय के ग्रन्थ

जाति अन्वेषण—इसमें ४५० हिन्दू जातियों के विवरण का ६०० से अधिक पृष्ठों का सचित्र ग्रन्थ है जिसमें ओसवाल, महेश्वरियों का विवाह व तलाक पड़ा हुआ है उनके दूर करने के लिये यह बड़ा उपयोगी ग्रन्थ है। मूल्य ४) डाक० ।=)

ब्राह्मण निर्णय:—इसमें ३२४ प्रकार के ब्राह्मणों का विस्तृत विवरण है जिसमें १६ मनोहर रंगीन चित्र तथा ६०० पृष्ठ का ग्रन्थ है इस पर वर्षों मुकद्दमा चलता रहा है शीघ्र मंगा कर पढ़ें मूल्य ४) डाक खर्च ॥=)

सरवंगी जाति निर्णय प्रथम भाग: इसमें कलेक्टर, कमीशन के ५४२ एक जाति निर्णय निवाद तथा नाई जाति के ब्राह्मण बनने की नवीन चाल का खंडन, मुकदमा मंडन हिन्दू जाति के इतिहास का अनुसार नाइयों को ब्राह्मणों की शाखियों का समाधान तथा नाई जाति के मूल उदय का पता है, इसमें अनेकों प्रसिद्ध प्रसिद्ध विद्वानों के हस्ताक्षर व अदालत का फैसला तक दिया गया है। मूल्य १) डाक० ≡) तीनों ग्रन्थ एक साथ खरीदने वालों को ≡) के ग्रन्थ ९॥) में दिये जावेंगे।

हिन्दू धर्म बचाने की कुंजी (खतरे का घंटा) एक करोड़ हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के हथकण्डों का विवरण यथार्थ जानने योग्य इस पुस्तक का प्रत्येक हिन्दू के घर में रखना जरूरी है। मू० =)

पता—
मैनेजर,
हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मंडल,
डा० फुलेरा, जि० जयपुर